प्रकाशक
श्री सन्मति ज्ञानपीठ
लोहामंडी आगरा

●

प्रथम प्रकाश
वि सं ० १६
मूल्य मात्र तीन रुपये पचास नये पैसे

●

मुद्रक
श्रीकृष्ण भारद्वाज
मनोहर प्रिंटिंग प्रेस
ब्यावर

मेरे जीवन के निर्माता, भद्रहृदय, परमसन्त,
मरुधरा-मंत्री स्थविर, पूज्यपाद तपोधन
स्वामीजी श्री हजारीमलजी महाराज
के
कर-कमलों मे

मधुकर मुनि

प्रकाशक की ओर से

सन्मति ज्ञानपीठ के सुन्दर और चमकीले प्रकाशनों का समाज में जो समादर हुआ है, जो प्रशसा हो रही है, उस पर हमें अभिमान तो नहीं, परन्तु गहरा सन्तोष अवश्य है।

ज्ञानपीठ ने आज तक जो साहित्य सेवा की है, वह उदार एव निष्पक्ष भाव से की है। यह सब श्रद्धेय उपाध्याय कविरत्न श्री अमरचन्द्रजी महाराज की उदात्त प्रेरणा और दिशा-दर्शन का ही सुफल है।

'जय-वाणी' के रूप में एक नव्य एव भव्य प्रकाशन प्रेमी पाठकों के कर-कमलों में समर्पित है। प्रकाशन कैसा है? यह मै क्या कहू? पाठक स्वय ही इसका निर्णय कर सकेंगे।

'जय-वाणी' राजस्थान के एक महान् तप'पूत सन्त की अमर कृति है। भाषा कैसी है? इसकी अपेक्षा उसमें भाव कैसे हैं? इस पर यदि ध्यान दिया गया, तो निश्चित ही पाठक प्रस्तुत काव्य-सागर में से चमकीले मोती पा सकेंगे। त्याग और तपस्या के तथा विचार और विवेक के रत्न-कण पा सकेंगे।

श्रद्धेय पूज्य श्री जयमलजी महाराज कौन थे, कहा के थे, कैसे थे? इस सम्बन्ध में प्रेमी पाठक उपाध्याय श्री जी महाराज की भूमिका को पढकर अपनी जिज्ञासा को शान्त कर सकेंगे।

प्रस्तुत ग्रन्थ का सम्पादन, सकलन और आकलन पण्डित प्रवर श्री मिसरीमलजी महाराज 'मधुकर' ने किया है। राजस्थान के सन्तों में 'मधुकर' जी म० का अपना एक विशिष्ट स्थान है-विचार से भी और आचार से भी। प्रस्तुत सम्पादन में आपके पाण्डित्य की छाप स्पष्ट है। आप स्वयं भी एक कवि हैं। कवि होकर काव्य का आकलन करना—सौने में, सुगन्ध है। 'जय वाणी का

यह सुन्दर सम्पादन ज्ञानपीठ से प्रकाशित करते हुए मुझे महान् हर्ष है कि क्षेत्र-पक्ष से राजस्थानी तथा भाव-पक्ष से विश्व स्तर की यह अमर कृति राजस्थान के लोगों के लिये ही नहीं अपितु विश्व मानवता के लिए मंगलमय सिद्ध होगी।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन में श्रीमान् धीवराजजी चोरड़िया (मोखा-मद्रास) श्रीमान् चन्दनमलजी सुराणा (कुचेरा-सिकंदराबाद) श्रीमान् पारसमलजी मुकट (नागौर-हावड़ा) की ओर से क्रमशः ११००) ५) ५००) की सहायता मिली है, तदर्थ ज्ञानपीठ की ओर से उक्त बन्धु भूरि-भूरि धन्यवाद के पात्र हैं।

विजयादशमी
सं० २ १९

सोनाराम जैन
मन्त्री
सन्मति ज्ञानपीठ, लोहामंडी आगरा

कवि और कविता : एक मूल्यांकन . . .

●

भारतीय सस्कृति का मूल केन्द्र है—सन्त जीवन। सन्त जीवन से वढ़ कर यहा पवित्र अन्य कौन वस्तु है? सन्त क्या है? विचार में आचार, और आचार में विचार। सन्त का जीवन विवेक और क्रिया का-सुन्दर, सरस और पावन सगम है। भारतीय जन-चेतना सन्त की भक्ति करती है, सन्त की पूजा करती है, सन्त का समादर करती है। क्यों? क्योंकि सन्त के तप पूत जीवन से उसे प्रेरणा मिलती है, दिशा-दर्शन मिलता है। सन्त जीवन एक आलोक-स्तम्भ है, जिसके चारों ओर प्रकाश किरणें बिखर रही हैं। ससार अरण्यानी में भूले-भटके राही-उस आलोक को पाकर अपने गन्तव्य मार्ग का निर्णय करते हैं।

सन्त सस्कृति का प्रभाव बहु व्यापक है। काश्मीर से कन्या कुमारी अटक से कटक तक-भारत में सर्वत्र और सदा से सन्त जीवन का सौरभ फैलता रहा है। भारत का हर प्रान्त सन्त प्रेरणा से अनु-प्राणित रहा है। दक्षिण भारत के सतेज सन्त जीवन से कौन प्रभावित न होगा? गुजरात और महाराष्ट्र के सन्तों की ज्योति से कौन इन्कार करेगा? उत्तर-भारत और मध्य-भारत के सन्तों के अमर जीवन सगीत को कौन न सुनेगा? पजाव के सन्तो की जीवन गाथा को किसने नहीं सुना?

और राजस्थान? वह तो एक प्रकार से सन्तों का देश ही है। रण-बाकुरे राजस्थान के वे अल-बेले मस्त सन्त जो अपनी जीवन ज्योति से जन-जन के मन को जागृत करते रहे,—कौन उन्हें भुला सकेगा? वह राजस्थान, जिस में मीरा जन्मी थी, जिस में उत्पन्न मीरा की स्वर-लहरी सम्पूर्ण भारत मे बिखर गई थी। सन्त दादू की वह उदात्त विचार धारा, जिस से राष्ट्र कवि रविन्द्र भी प्रभावित थे वीर राजस्थान के उन अध्यात्म वीर सन्तों की अमर देन चिर-नवीन है। राजस्थान अमर है। जब तक उसके सन्तों की वाणी का जादू-भरा स्वर उसके कण कण में मुखरित है। राजस्थान के अमर सन्तो ने भारतीय सस्कृति को अपनी राजस्थानी भाषा में जो विचार सम्पत्ति दी है, वह इतिहास में अमर है। अमर रहेगी।

राजस्थान के उन्हीं तेजस्वी एव जीवन-सगीत के उद्गाता सन्तों में से एक तप -पूत अमर सन्त का परिचय हम इन पृष्ठों में देना चाहते हैं। जिसने उभरते

यौवन में ब्रह्मचर्य के असि-धारा-व्रत को अंगीकार किया कौटुम्बिक मोह को विश्व प्रेम में परिवर्तित कर दिया और जीवन के प्रत्येक क्षण को आत्म-संशोधन की प्रक्रिया में व्यतीत करते हुए भी माता सरस्वती के मन्दिर में अपनी श्रद्धा की एक सुरभित सुन्दर प्रसूनाञ्जलि समर्पित की। इस प्रसूनाञ्जलि से हमारा आशय उनकी प्रस्तुत रचना-संग्रह 'जयवाणी' से है। परन्तु पाठक-मधुकर इस प्रसूनाञ्जलि के पुष्प पराग का पान कर आप्यायित हों इसके पहले ही उसके शिल्पी सम्पर्क सन्त का संक्षिप्त जीवन परिचय देना अस्वाभाविक न होगा।

आचार्य श्री जयमलजी महाराज ने अपने पुण्य-जन्म से मरुप्रदेश के 'लांबियाँ' ग्राम को अलंकृत किया था। इनके पिता का नाम 'मोहनदास' तथा माता का नाम 'महिमा' बाई था। एक सम्भ्रान्त परिवार की कन्या लक्ष्मी के साथ बाईस वर्ष की अवस्था में उनका विवाह हो गया था। गौना होने वाला था कि किसी कार्य-वश वे 'मेड़ता' पहुँचे। वहाँ पूज्य श्री 'भूधरजी' महाराज के उपदेश सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महाराज श्री के श्रीमुख से उन्होंने सुदर्शन सेठ के ब्रह्मचर्य व्रत की अनन्य निष्ठा का संगीत सुना और फल स्वरूप वह वि सं १७८८ अगहन बदी दूज को दीक्षा लेकर साधु हो गये। अत्यन्त विस्मयावह था उनकी भावनाओं का यह परिवर्तन। एक ओर पत्नी के द्विरागमन की तैयारी और दूसरी ओर समस्त कुटुम्ब परिवार के नेह मोह से मुँह मोड़ कर मुनिमार्ग को स्वीकार कर लेना। परन्तु महापुरुष एवं सन्तों की जीवन धाराओं की गति-विधि का क्रम कभी भी एक-सा यथास्थान दृष्टि गोचर नहीं होता है। फल स्वरूप श्री जयमलजी महाराज की इस भाव-धारा को भी हम प्रस्तुत सन्त जीवन धारा से अपृथक रख कर ही देख रहे हैं और इसी कारण हमें उनका इस भाव परिवर्तन तनिक भी विस्मय विमुग्ध नहीं कर रहा है। अस्तु

नव दीक्षित साधु श्री जयमलजी महाराज ने दीक्षा लेते ही अपने जीवन-संशोधन की तैयारी प्रारंभ करदी। उन्होंने सोलह वर्ष तक अविराम एकान्तर तप का आचरण किया जिसमें एक दिन का उपवास तो एक दिन आहार लेने का क्रम चलता रहा। इतना ही नहीं वे अपने गुरु के स्वर्गारोहण के दिन से लेकर पचास वर्ष तक कभी भी लेट कर नहीं सोये। इस निरन्तर त्यागमयता एवं कठोर साधना से न केवल उन्होंने अपने अखण्ड ज्योतिर्मय आत्म-स्वरूप का विकास ही किया अपितु जनमन-विकासी उपदेश एवं काव्य-रचना द्वारा जन-साधारण एवं साहित्य की भी अपूर्व सेवा की।

अपने जीवन के अन्तिम क्षणों का आचार्य प्रवर को पहले से ही आभास हो गया था। फलत उन्होंने शाश्वत शान्ति लाभ की कामना से एक मास की निरन्तर समाधि (सथारा) स्वीकार की और वि० स० १८५३ की वैशाख शुक्ला चतुर्दशी की पुण्य वेला मे नश्वर शरीर का उत्सर्ग किया और मरुभूमि की इस धर्म प्राण जनता के सरस मानस को अपने वियोग से सहसा मरुभूमि-सा ही विरस बना दिया।

प्रस्तुत रचना, जिसका नाम जयवाणी है, इन्हीं आचार्य श्री जयमल्लजी महाराज की अनुपम कृति है। इसे (१) स्तुति, (२) सज्झाय, (३) उपदेशी पद तथा (४) चरित, चर्चा, दोहावली के रूप में चार खण्डों में विभक्त किया गया है।

'स्तुति' खण्ड मे उन्होंने अपने आराध्य देवों के सस्तवन में अपनी भक्ति-भाव-भरित अनेकश श्रद्धाञ्जलिया गुम्फित की हैं। 'सज्झाय' खण्ड में आत्म-स्वातन्त्र्य के मार्ग को प्रशस्त करने वाले अनेक गहन चिन्तनों को काव्यमयी भाषा में लिपिवद्ध किया गया है। इसी प्रकार 'उपदेशी पद' नामक खण्ड मे अनेक आत्म-विकासी एव मानवीय नैतिक धरातल को समुन्नत करने वाले उप-देश सहज-सुबोध शैली में ग्रथित किये गये हैं। और अन्तिम खण्ड में जिन महान् आत्माओं के पावन चरितों को काव्यामृत से सिंचित एव भावित किया गया है, उनके जीवन्त चित्र आत्मा को असत् से सत् की ओर, तमस् से ज्योति की ओर एव मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाने की अपूर्व क्षमता रखते हैं। इसी भाति इस खण्ड की चर्चा एव दोहावली भी जीवन के अनेक उत्कर्ष-विधायक तत्त्वों से आपूर्ण है।

यहा सक्षेप में श्री जयमल्लजी महाराज की अमर वाणी के काव्य सौंदर्य तथा उसकी मूलगत भावना के सम्बन्ध में प्रकाश डालना अनुपयुक्त न होगा।

पूज्य श्री जयमल्लजी महाराज का सन्त कवि हृदय श्री सीमधर स्वामी (विदेह क्षेत्र के एक विद्यमान तीर्थङ्कर) का सस्तवन करता हुआ उनके पुण्य स्मरण पर बल देता है और एक स्थल पर कहता है —

"राच रहा मिथ्यामत माही,
ए रुले जीव चारू गति माही।
भूला ने आणे ठामी,
सुमरो श्री सीमधर सामी॥"[1]

---

1 जयवाणी पृ० स० १३ (८)

कवि का आशय है कि यह जीवात्मा अनादिकाल से संसार परिभ्रमण करता हुआ चारों गतियों के असह्य दुःखों को भोग रहा है। दुःखों की ज्वाला में झुलसते रहने पर भी यह उसके मूल कारण की तह तक पहुँच नहीं पाता। फलतः मिथ्या मार्ग अपनाता रहता है और दुःखों की परम्परा उसका पिण्ड नहीं छोड़ती। कवि को जीवात्मा की इस स्थिति का यथार्थ परिचय है। यही कारण है कि वह सीमन्धर स्वामी के पुण्य स्मरण को उसके दुःखों के प्रतीकार का अमोघ साधन बतलाता है।

कवि श्री सीमन्धर स्वामी को आत्म एवं पर पदार्थों के यथार्थ स्वरूप का बोध कराने वाली दृष्टि का दान करने वाला निष्कलंक आत्मा मानता है और संसारी जीवात्मा की दुःख गाथा का मूल कारण उसकी अपनी आत्म-स्वरूप की विस्मृति मानता है। अपने आत्म स्वरूप का विस्मरण करने के कारण ही वह आत्मा पर पदार्थों से राग करता है, उनमें ममत्व बुद्धि रखता है उन्हें सुख का कारण मानता है और अन्त में सुखी न होकर स्वयं संक्लिष्ट होता है।

कवि सम्यग्दृष्टि है। उसका तत्त्वदर्शन सम्यक् है और जीवात्मा से भी वह यही अपेक्षा रखता है कि वह भी आत्म एवं पर का सम्यग्दर्शन करे और फिर पर-संग से मुक्त होकर आत्मा के सहज सुख स्वरूप को प्राप्त करने की चेष्टा करे। अतः इस प्रकार की दृष्टि का दान दृष्टि-सम्पन्न आत्मा से ही मिल सकता है अतः इसका श्री सीमंधर स्वामी का उक्त गुणगान वस्तुतः बड़ा ही अन्वर्थ है जो स्वयं कवि की भी सम्यग्दृष्टि-सम्पन्नता को इंगित करता है।

एक स्थल पर कवि ने साधु के व्यक्तित्व का बड़ा सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। उसका शब्द चित्र देखिए:—

> "एक एक मुनिवर परचाली चाले है अमृत वेण।
> राग न द्वेष कहसू नहीजी मन्न चीवरा सेण॥
> कांकर टाकर सम गिणजी सम गिणे धातु पाषाण।
> दया क्रिया समता गिणजी नहीं कुशासन काम॥
> बोलक वेरत भावनेजी बोलक मिरत भाव।
> बोलक वरत कावनजी राग रोष न मन मांय॥

अर्थात् साधु अपने अन्य असाधारण गुणों के अतिरिक्त मित-मित एवं सुधारस मधुर भाषा भी होता है। किसी भी प्राणी से राग-द्वेष नहीं करता है

१ भवभावनी पृ सं ३२ (२४ २५ २६)

और सब जीवों को समदृष्टि से देखता है। उसे मधुर तथा अमधुर रस में हर्ष-विषाद नहीं होता और सुवर्ण एव पाषाण को भी वह समान दृष्टि से ही देखता है। चाहे कोई उसकी निन्दा करे, चाहे स्तुति करे तथा चाहे उसे किसी प्रकार की शारीरिक पीडा भी क्यों न पहुँचावे, वह अपने मन में तनिक भी राग-रोष नहीं करता है।

साधु के जीवन का भला इससे अधिक व्यावहारिक आदर्श और क्या हो सकता है।

उनकी श्रद्धा में परिग्रह के प्रति तनिक भी आसक्ति नहीं है। वह परिग्रह को कर्म बन्धन का कारण और ससार परिभ्रमण का बीज मानते हैं और मानते हैं कि इसके परित्याग के बिना यह आत्मा सदा सुखी नहीं हो सकता।

सन्तों के सामान्य परम्परा-गत मत के अनुरूप ही उनका भी मत है कि ससार के बड़े से बड़े सग्राम कनक एव कामनी के कारण ही हुए हैं, कोई बिरला ही आत्म-जयी सन्त मोह-ममता को तोड़ कर इससे मुक्त रह सके हैं।

इसीलिये उन्होने कहा है कि आज के युग में बड़े से बडा योगी और यति भी, जो अपने को साधु कहलाने में गौरव एव गर्व का अनुभव करता है इस परिग्रह पिशाच के वशवर्ती होकर पता नहीं, कितने जघन्य अपराध करता है। स्वय कवि के शब्दों में ही उनका आशय देखिये —[1]

"कर्मतणो बध परिग्रहो ए, पटकावे ससार के ।
चारों ही गति माही ए, त्याग्यां हुवे भव पार के ॥
कनक कामनी कारणे ए, हुवे घणा सग्राम के ।
सत केई वच गया ए, तिण राख्यो मन ठाम के ॥
बडा बडा जोगी जति ए, नाम धरावे साध के ।
इण धन रे कारणे ए, करे घणा अपराध के ॥"

कवि की दिवाली भी अलौकिक दिवाली है। उन्होंने 'दीवाली' शीर्षक रचना में उसका बडा ही भावपूर्ण चित्र अङ्कित किया है।

कवि का कथन है कि यदि दिवाली मनानी है तो दया रूपी दीपक मे सम्यक्त्व रूपी ज्योति को प्रज्वलित करना चाहिये (कर्माश्रव-निरोध) रूपी आवरण से उसे आवृत किया जाय। इस स्थिति में आत्मा के साथ सबद्ध कर्म चक्र विगलित होगा और केवल ज्ञान का प्रकाश आलोकित हो उठेगा। दिवाली की

---

१ जयवाणी पृ० सं० ३७ (६२, ६६, ६६)

'चेतन ! चेत' नामक रचना में एक स्थल पर जाति-वाद की स्पष्ट शब्दों में भर्त्स्ना करते हुए कहा है कि जो आत्मा उच्च-कुल में जन्म लेने पर भी जघन्य आचरण करता है, उसे उच्च-कुलीन नहीं कहा जा सकता है। साथ ही जो आत्मा नीच कुल में जन्म लेने पर भी उच्च आचरण करता है, उसे उच्च-कुलीन ही माना जाना चाहिए। केवल ऊंच तथा नीच कुल में जन्म लेने से आत्मा ऊंचा अथवा नीचा नहीं कहलाता।
कवि की विवेक-वाणी सुनिए —[1]

> "ऊंचे कुल आय ऊपना रे,
> एतो हुआ रहे बड नींचो रे।
> माठा करतव लम्पटी अति घणा,
> ते तो लक्षण कहीजे नीचो रे॥
> नीचे कुल आय ऊपना,
> पिण ज्ञान विवेक शुद्ध धारो रे।
> तिका नीचा ही ऊंचा कह्या,
> सुद्ध समकित पामी सारो रे॥"

'मूरख-पच्चीसी' में कवि ने संसार-मूढ मानव को आत्म हित साधन का बड़ा ही दिव्य सन्देश दिया है। उन्होंने कहा है—"रे जडात्मन् ! तुझे इस संसार में अत्यन्त जागरूक एवं सावधान रहकर आत्म-कल्याण की साधना में संलग्न रहना चाहिए। क्योंकि जब काल झपट कर तुझे ले चलेगा, उस समय तेरे सगे स्नेही, पुत्र-पौत्र, पिता-काका, माता, बन्धु-बान्धव एवं स्नेही सब देखते ही रह जायगे-कोई भी तुझे संरक्षण नहीं दे सकेगा। फिर तू क्यों इन सबसे आत्मीय बुद्धि रखकर आत्म-हित-साधन से विमुख हो रहा है ?" कवि के शब्दों में ही उनका मङ्गलमय सन्देश सुनिए। वह कहते हैं —[2]

> "सगा सनेही बेटा पोतरा,
> काका बाप ने माय।
> बंधव त्रिया रे देखता रहे,
> जब काल झपट ले जाय॥"

इसलिए कवि की संबोधना है कि-आत्मन् ! जब तक तेरी इन्द्रियां शिथिल नहीं हुई हैं, तेरे शरीर मे जरा ने आकर बसेरा नहीं किया है और रोग

---

१ जयवाणी पृ० सं० १२० (६, १०)। २ पृ० सं० १४० (३)।

"मामल महाराजा, ब्राह्मण छाडी हो,
रिध मती आदरो।
राजा का मोटा भाग,
वमिया आहार की हो,
वाछा कुण करे?
करे छे,
कूतरो ने काग ॥मा०॥

काग ने कुत्ता मरीखा,
किम हुवो,
नहीं प्रममवा जोग।
भृगु पुरोहित अथ तज नीमर्यो,
थे जाणो आसी म्हारे भोग ॥मां०॥

सकल्प कियो पाछो किम लीजिए,
माभलजो महाराज ।
दान दियो थे पेला हाथ सू,
पाछो लेता नहीं आवे लाज ॥मा०॥

जग मगला गे हो धन भेलो करी,
घाले थारा राज रे माय ।
तो पण तृष्णा हो राजाजी पापणी
कदे तृप्ति नहीं थाय ॥मा०॥

एक दिन मरणो हो राजाजी यदा तदा,
छोडो नी काम विशेष ।
बीजो तो तारण जग मे को नहीं,
तारे जिणजी गे धर्म एक ॥मां०॥"[1]

आगे चल कर रानी स्वयं कहती है—राजन् तोते को आप भले ही रत्न-जड़ित पिंजडे मे बन्द कर दें, परन्तु वह उसे बन्धन ही समझता है। यही दशा मेरी भी है। आपकी यह इन्द्रोपम राज्य-विभूति भी मेरे लिए बन्धनमय ही है और मुझे एक क्षण के लिए भी इसमें रति एवं आनन्द की उपलब्धि नहीं हुई। अब राजन! इस व्यावहारिक स्नेह-बन्धन को तोड़ने के लिए और उससे सदा के लिए अबद्ध रहने के लिए मैं विरक्त होकर संयम को स्वीकार कर रही हूँ।

---

[1] जयवाणी पृ० स० १६३ (६-१०)।

आप भी शूर-वीर बनकर इसी मार्ग को अंगीकार कीजिए। रानी का सुचिन्तित विवेचन सुनिए वह कहती है —

"रक्तरंजित हो राजाजी सिंवरो
सुणो तो आखे है फेर।
इसकी पग हूं थांरी राज में
रति न पाऊं भावेर॥
स्नेह रूपिया तांतां तोड़ने
मोर बंधन सूं रहसूं दूर।
विरक्त थई ने संजम मैं मई
थे भी पग होय आज्यो सूर॥

भगवान नेमिनाथ के चरिताङ्कन में कवि ने बड़ी हृदय-द्रावक करुणा की धारा प्रवाहित की है। भगवान् नेमिनाथ जब अपने पाणि-ग्रहण को जाते समय बन्दी पशुओं का करुण क्रन्दन सुनते हैं तो उनका हृदय करुणा से आप्लावित हो जाता है और वह कह उठते हैं —

परणीजण में पापज-मोटो
जीव हिंसा से उपज खोटो।
प तो ईसे परतख तोटो
तो केई दयाधर्म रो चोटो॥

वह तुरन्त बन्दी पशुओं को मुक्त कर देते हैं और स्वयं भव-भोगों से विरक्त होकर मुक्ति श्री को वरण करने की तैयारी करने लगते हैं।

बन्दी पशु-पक्षियों के मुक्त हो जाने पर भगवान नेमीश्वर के लिए वे जिस आत्मीयता के साथ आशिष् देते हैं कवि ने इसका बड़ा ही हृदयग्राही चित्रण किया है। पशु-पक्षियों की आशिष् सुनिए —

"गगन जातां जीव देवे आसीस क,
पशु ने पंखिया कलजीरा।
आरण ! चिर चिरंजीव जो
अधिकारी सुम आप से मात के,
पुत्र रतन चिर जयसिंगो।

---

१ चन्दनबाला पृ॰ सं॰ १८४ (१५ १६)। २. पृ॰ सं॰ ११६ (२)।
३ पृ॰ सं॰ २२६-२२७ (डाल-१८)।

स्वामी ! थे सारिया, अम्ह तणा काज के,
तीन भवन रो पामजो राज के-
शील अखंडित पालजो ॥"

नेमीश्वर के दीक्षा लेते ही राजुल के जीवनाकाश में शोक के मेघ छा जाते हैं। उसके मनमें भगवान् नेमि के दर्शन की तीव्र उत्कण्ठा जाग्रत हो उठती है और वह उन तक अपना उपालभ भेजने तथा उनका पत्र लाने के लिए, देखिए-किस प्रकार अपनी सखियों को फुसलाती है—

"तरसत अखिया हुई द्रुम-पखिया !
जाय मिलो पिवसू सखिया !
यदुनाथजी रे हाथ री ल्यावे कोई पतिया,
नेमनाथजी-दीनानाथजी ॥
जिणकू ओलंभो एतो जाय कहणो,
थे तज राजुल किम भये जतिया ?
जाकू दूगी जरावरो गजरो,
कानन कू चूनी मोतिया ॥
अगुरी कू मूदड़ी, ओढण कू फमड़ी,
पेरण कू रेशमी धोतिया ।
महल अटारी, भए कटारी,
चद - किरण तन दामंतिया ॥"[१]

जब राजुल की माता उसे आश्वस्त करती है तो वह उत्तर में जो कुछ कहती है वह उसकी दृढ नेमि-निष्ठा एव महनीय शील का द्योतक है। कवि की वाणी में राजुल की उक्ति सुनिए—[२]

"किन के शरणें जाऊ, नेम बिना किनके शरणे जाऊ ।
इण जग माय नहीं कोई मेरो, ताकि मैंज कहाऊ ॥ नेम० ॥
मात पिता सुण सखी सहेल्या, लिख कर दूत पठाऊ ।
किण गुन्हे मोय तजी पियाजी मैं भी सदेशो पाऊ ॥ नेम० ॥
मैं तो पल एक सग न छोडू , छोड कहो किहां जाऊ ।
अब टुक धीरप-रथ हांको, चातो मैं भी थारे लार आऊ ॥ नेम० ॥"

---

१ जयवाणी पृ० स० २२६-२३० (ढाल-२३)
२ जयवाणी पृ० स० २३१ (ढाल-२६)

राजुल सर्वात्मना भगवान की अनुगामिनि होना चाहती है। अतः वह अपनी माता से निवेदन करती है कि वह इसके सम्बन्ध में किसी प्रकार का दुख न करे। वह अपनी माता से कहती है—

"मति मेरा दुख मत कर जननी।
मैं जाऊंगी गिरनार।
दीक्षा लूंगी भव तरणी॥
अरि मात-पिता कुटुम्ब सखी सहेली।
करो क्षमा जननी।
अब रत्न की मांग यही,
मैं बनूं श्याम-भिखारी॥"[1]

इसी प्रकार मेघ-कुमार की चरित-वर्णना में विशेषतः उनकी दीक्षा कालीन वर्णना में कवि-वाणी बड़ी ही हृदय-द्रावियी हो उठी है। एक ओर मेघ-कुमार प्रफुल्ल दीक्षा होने के लिए पालकी पर सवार होते हैं तो दूसरी ओर उनकी माता एवं आठों नवयुवती रानियां करुणा विलाप करती हैं। पर सम्यग्दृष्टि मेघ कुमार उसी भांति निश्चल भाव से घर से बाहर निकलते हैं जिस प्रकार एक शूरवीर समराङ्गण के लिए निष्कम्प होकर निकलता है। नगर की कुल-वधुएं उनके इस विराग भाव पर नाना कल्पनाएं करती हैं। कवि ने इस दृश्य का अत्यन्त सजीव शैली में चित्रण किया है। देखिए, कवि ने लिखा है—

"मोटी बणाई इक शीबिका रे
मांहि बैठो छे मेघकुमार रे।
माता रो हियड़ो फाटे अति घणो रे,
विल विल कर रही आठो नार रे॥
बोलओ कायर रो हियो थरहरे रे॥
संयम लेवा चालू नीसर्यो रे,
जिम रण मांहि निकसे सूर वीर रे।
वाजित्र बाजे राग सुहावणा रे,
कायर इण ठाम होवे दलगीर रे॥
कोईक कामण सुकसु इम कहे रे
दीसे नाजरियो सुकुमाल रे।
कुटुम्ब कबीलो छिटकिय छोड़ियो रे,
छिटकिय छोड़ियो माया जाल रे॥"

---

१ जयवाणी पृ सं २११ (ढाल-२७)। २ पृ सं १७६ (ढाल-१)

एक एक कहे वारी जाऊं एहनी रे,
इण वैरागे छोड्यो घर-सूत रे ।
जोवन वय में सुन्दर परहरी रे,
राजा 'श्रेणिक-धारिणी' केरो पूत रे ॥
जोइजो समकित नो रस परगम्यो रे ॥"

इस प्रकार 'जयवाणी' की सम्पूर्ण रचनाए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र एव उसके प्रत्येक पक्ष को उन्नत, विकसित एव मङ्गलमय करने की पुण्य प्रेरणा प्रदान करती हैं। श्री जयमलजी महाराज ने राजस्थान में लोक-प्रिय अनेक राग-रागनियों एव छन्दों में इन रचनाओं को ग्रथित करके जन-सामान्य का बड़ा कल्याण किया है। काव्य के भावपक्ष एव कलापक्ष-दोनों दृष्टियों से इस सग्रह का बडा मूल्य है। आशा है, राजस्थानी साहित्य के क्षेत्र मे जयवाणी' एक अपना विशिष्ट स्थान ग्रहण करेगी और उसकी रचनाओं का समुचित मूल्याङ्कन होगा।

हम यहा पडितरत्न मुनिश्री मिश्रीमल्लजी मधुकर' को हार्दिक साधुवाद दिये बिना नहीं रह सकते, जो 'जयवाणी' के रचियता श्री जयमलजी महाराज की ही शिष्य परम्परा के हैं और जिन्होंने उनकी बिखरी हुई रचनाओं को एकत्र सयोजित करके पाठकों के करतलगत 'जयवाणी' का सुन्दर रूप दिया। हम आशा करते हैं कि वह इसी प्रकार की अन्य महनीय रचानाओं का भी सम्पादन करके उन्हें प्रकाश में लावेंगे और साधु समाज के सन्मुख श्रुत-सेवा का एक अनुकरणीय एव अभिनन्दनीय आदर्श उपस्थित करेंगे।

विजयादशमी
२०१६

—उपाध्याय अमर मुनि
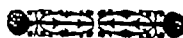
अन्तर्दर्शन

प्रस्तुत पुस्तक 'जय-वाणी' स्वर्गीय आचार्य-वर श्री जयमलजी महाराज की रचनाओं का संग्रह है। आचार्यश्री की रचनाओं को एक संकलन में प्रकाशित करने की आवश्यकता थी। प्रस्तुत प्रकाशन में उस आवश्यकता की पूर्ति की गई है।

आचार्यश्री अपने समय के एक परम-पुनीत संत पुरुष थे। उनके जीवन के कण कण से वैराग्य-रस की धारा बहती थी।

आचार्यश्री का जन्म राजस्थान की मरु-धरा में हुआ था। आज बीसवीं सदी है। कुछ पीछे की ओर चलिये। सत्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध तक पहुँचिए। आचार्यश्री के जन्म का वही समय है। श्री आनन्दघनजी जैसे योगिराज, श्री देवचन्द्रजी जैसे पण्डित पुरुष और श्री यशोविजयजी जैसे प्रकाण्ड विद्वान् भी लगभग उसी समय की देन है।

आचार्यश्री का जन्म 'लांबिया' गांव में हुआ था। जोधपुर राज्य के अन्तर्गत मेड़ता से बीकानेर की ओर जाने वाले राज-पथ पर यह गांव बसा हुआ है। अपनी पुरातन प्रभा से प्रभासित यह लांबिया गांव आज भी उस पथ से आने जाने वाले पथिकों के लिये विश्राम-स्थल बना हुआ है।

वे बीसा ओसवाल थे। गोत्र उनका समदड़िया मेहता था। मोहनदासजी पिता और महिमादेवीजी उनकी माता थी। उनके एक अग्रज भ्राता भी थे जिनका नाम रिड़मलजी था। बाईस वर्ष की अवस्था में वे विवाह-सूत्र में भी बंध गए थे। उनकी धर्मपत्नी का नाम लक्ष्मीदेवी था।*

एक बार व्यापार के सिलसिले में वे अपने साथी सहभागियों के साथ मेड़ता गए। वहाँ उस समय स्थानकवासी जैन-समाज के अन्तर्गत आचार्य श्री

---

* 'जैन जयमल गुणमाला' के पृ. सं. में आचार्यश्री की जन्म तिथि सं. १७६५ की भादवा शुक्ला त्रयोदशी और उनकी विवाह तिथि सं. १७८८ की ज्येष्ठ शुक्ला नवमी अंकित की गई है।

धर्मदासजी महाराज की शाखा के प्रशासक पूज्य-प्रवर श्री भूधरजी महाराज विराज रहे थे। मेड़ता पहुचने पर उन्हे भी पूज्यश्री भूधरजी महाराज के दर्शन व उनके प्रवचन सुनने का सु-अवसर मिल गया। सवत् १७८७ वें वर्ष की कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी की यह बात है। उस दिन श्री भूधरजी महाराज के प्रवचन में ब्रह्मचर्य व्रत की सुदृढता पर सेठ सुदर्शन के जीवन का प्रसग चल रहा था। उनके दिल पर पूज्यश्री के प्रवचन का प्रभाव बहुत गहरा पड़ा। सभवत वे प्रथम बार ही मुनिराजों की धर्म-सभा में पहुचे होंगे? फिर भी उनके हृदय में सयम ग्रहण करने की भावना प्रबल रूप से जागृत हो गई थी। इसीलिये तो उन्होंने वहीं बैठे बैठे आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अगीकार कर लिया था। ब्रह्मचर्य व्रत की अंगीकृति के साथ साथ उन्होंने सयम ग्रहण किये विना मेड़ता से बाहर न निकलने की प्रतिज्ञा को भी अपना लिया था। अततो-गत्वा हुआ भी यही। सयम लेकर ही वे अपने गुरु महाराज के साथ मेड़ता से बाहर निकले थे। स० १७८७ की मार्गशीर्ष कृष्णा द्वितीया के दिन *उन्होंने श्रमण-जीवन में प्रवेश किया था। विवाह के षट् मासों के बाद ही वे श्रमण बन गए थे।

उस समय की मारवाड़ी प्रथा के अनुसार विवाह के बाद श्वशुरालय में समागता पत्नी कुछ दिनों के बाद तुरन्त पीहर चली जाती थी। उस समय यह भी एक प्रथा थी कि शादी के बाद आने वाले प्रथम श्रावण व भाद्रपद में श्वश्रू और वधू साथ साथ नहीं रह सकती थी। शायद अभी भी यह प्रथा कहीं कहीं पर चल रही है। हा, तो विवाह के बाद कुछ दिनो तक श्वशुरालय में रहकर लक्ष्मी देवी अपने पीहर चली गई थी। उसका पुनरागमन होने ही वाला था कि इसी बीच जयमल्लजी साधु हो गए। पति के गृह-त्याग कर देने पर लक्ष्मीदेवी ने भी सयम ग्रहण कर लिया।

यद्यपि जयमल्लजी के प्रति उनके माता पिता व अग्रज भ्राता के अत करण में अत्यधिक ममता थी परन्तु उनकी दृढता पर उनको उन्हें सयम लेने की अनुमति देनी ही पडी।

अपनी कुशाग्र-बुद्धि के कारण अतीव अल्प समय में ही उन्होंने श्रमण-सूत्र याद कर लिया था। इसलिये सात दिनों के बाद ही उनकी बडी दीक्षा 'विकरणिया' गाव के बहिरवस्थित वट वृक्ष के नीचे हो गई।

श्रमण-जीवन में प्रवेश करते ही आचार्यश्रीजी ने एकान्तर तप की

---

*पूज्य जयमल्ल गुणमाला द्वि० सं० के अनुसार सं० १७८८ की मार्गशीर्ष कृष्णा द्वितीया।

आराधना प्रारम्भ कर दी थी। जब तक पूज्यश्री भूधरजी महाराज विराजमान रहे उनकी यह साधना निराबाध गति से निरंतर चलती रही। आपकी दीक्षा से सोलह वर्ष बाद पूज्यश्री भूधरजी महाराज दिवंगत हुए थे।

मड़ता-रोड से विहार कर मेड़ता पधारते समय मार्ग में तृषा-परीषह के कारण वे इस मौलिक रोग से ग्रस्त हुए थे। उस समय पूज्यश्री भूधरजी महाराज के पांच उपवास की तपस्या थी।

अपने गुरु महाराज के स्वर्गवास के बाद आचार्यश्रीजी ने लेटकर निद्रा लेने का परित्याग कर दिया था। पूरे ५० वर्ष तक उन्होंने लेटकर निद्रा नहीं ली। अपने जीवन के अंत तक वे इस नियम पर आरूढ़ बने रहे

आचार्यश्रीजी का स्वर्गवास नागौर में हुआ था। सं. १८५३ के वर्ष की वैशाख-कृष्णा चतुर्दशी उनकी स्वर्गवास तिथि थी। आपको ११ दिनों का संथारा आया था। शारीरिक अस्वस्थता के कारण अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में आप नागौर ही विराजमान रहे थे। संवत् १८ सौ के ४ वें वर्ष में आप नागौर पधार गए थे।*

आचार्य श्रीजी के चातुर्मास कहाँ कब हुए—

सोजत—सं. १७८८ १७९६, १८०६, १८०४ १८१९ १८४२।
नागौर—सं. १७९०
दिल्ली—सं. १७९१
मेड़ता—सं. १७९२ १७९८, १८०५, १८०९ १८००, १८२४ १८३०।
जोधपुर—सं. १७९३ १७९५, १७९७ १८ १८०१ १८१७, १८१९, १८२ १८२६ १८३१, १८३४, १८३६।
किशनगढ़—सं. १७९९ १८१२ १८ १ १८२ १८४०।
बोराबड़—सं. १८०८। जैतारण—सं. १८ ९।
पीपाड़—सं. १८११ १८३५। बीलाड़ा—सं. १८२२।
उदयपुर—सं. १८१३। अमररामपुर—सं. १८२७।
बीकानेर—सं. १८२० १८३३। जयपुर—सं. १८२८।
शाहपुरा—सं. १८३१ १८२१।
पाली—सं. १८३३, १८३०।
नागौर—सं. १७८४ १८ १ १८३७ १८३९ १८४८, १८४४ से १८५३ तक (स्थिरवास के कारण)

[पूज्य जयमल गुणमाला द्वि. सं. के अनुसार]

राजस्थान के अतिरिक्त दिल्ली, आगरा, पंजाब व मालवा की ओर भी आचार्यश्रीजी ने यात्रा की थी। बीकानेर पहुँच कर सबसे पहले आपही ने वहां स्थानकवासी समाज के सत्व को अकुरित और पल्लवित किया था।

पूज्यश्री रघुनाथजी म० श्री जेतसीजी म० श्री कुशलजी म० आचार्यश्रीजी के गुरु भ्राता थे। श्री कुशलजी म० आपके छोटे गुरु-भ्राता थे।

आचार्यश्रीजी के अनेक शिष्य थे। आचार्य-पद का उत्तराधिकार आपके योग्यतम प्रमुख शिष्य मुनिश्री रायचद्रजी को मिला था। अपने जीवन-काल में स्वय आचार्यश्रीजी ने उन्हें आचार्य-पद से विभूषित कर दिया था। आगे भी यह आचार्य परम्परा लंबे समय तक चलती रही।*

आपके प्रभावशाली महान् व्यक्तित्व के कारण आपकी आख्या पर ही आपकी सम्प्रदाय का नाम-करण हुआ और इसलिये उक्त सम्प्रदाय का नाम 'जयमल्ल सम्प्रदाय' आज तक प्रचलित है।

आचार्यों के अतिरिक्त अनेक सुयोग्य सत इस सम्प्रदाय में हुए हैं जिनकी गौरव-गाथा आज भी सुदूर-व्यापिनी बनी हुई है।

उत्तरोत्तर होने वाले आचार्यश्रीजी के उत्तराधिकारी और सम्प्रदाय के सुयोग्य सन्तों के सबल स्कंधों पर समारूढ इस सम्प्रदाय ने स्थानकवासी समाज में यत्र तत्र सर्वत्र बहुत अच्छा गौरव प्राप्त किया। अट्ठारहवीं सदी से लेकर बीसवीं सदी के नौवें वर्ष के प्रारम्भ काल तक बहुत अच्छे रूप में इस सम्प्रदाय का अस्तित्व बना रहा। इस सदी के नौवें वर्ष में जब सादड़ी में सम्मेलन हुआ तो अन्य सम्प्रदायों के साथ इस सम्प्रदाय ने भी श्रमण-सघ में मिलकर अपने अस्तित्व को अमर कर दिया।

हा, तो प्रस्तुत सग्रह में उन्हीं आचार्यश्रीजी की रचनाओं का सकलन किया गया है। उनकी सारी रचनाए मारवाड़ी भाषा में हैं। उन्होंने असीमित पद्य लिखे हैं। उनके पद्यों में जैनधर्म से अनुस्यूत अनेक विषयों के अवगाहन के साथ नीति, रीती तथा अनेक आख्यानों का भी चित्रण किया गया है। ससार की अस्थिरता और वैराग्य-भावना आचार्यश्रीजी के खास विषय रहे हैं।

प्रस्तुत सकलन में उनकी सारी रचनाओं का सग्रह हो गया हो, ऐसी बात नहीं है। मैं समझता हू, अब भी उनकी ऐसी बहुत-सी रचनाए होंगी, जिनको

---

*आचार्यश्री के क्रमश उत्तराधिकारी—१ पूज्य श्री रायचदजी म० २ पूज्य श्री आसकरणजी म० ३ पू० श्री शबलदासजी म० ४ पू० श्री हीराचंदजी म० ५ पु० श्री किस्तूरचंदजी म० ६ पू० श्री भीकमचदजी म० ७ पू० श्री कानमलजी म०

आराधना प्रारम्भ कर दी थी। जब तक पूज्यश्री भूधरजी महाराज विराजमान रहे उनकी यह साधना निराबाध गति से निरंतर चलती रही। आपकी दीक्षा से सत्रह वर्ष बाद पूज्यश्री भूधरजी महाराज दिवंगत हुए थे।

मेड़ता-रोड से विहार कर मेड़ता पधारते समय मार्ग में तृषा-परीषह के कारण वे इस भौतिक देह से अलग हुए थे। उस समय पूज्यश्री भूधरजी महाराज के पांच उपवास की तपस्या थी।

अपने गुरु महाराज के स्वर्गवास के बाद आचार्यश्रीजी ने लेटकर निद्रा लेने का परित्याग कर दिया था। पूरे ५० वर्ष तक उन्होंने लेटकर निद्रा नहीं ली। अपने जीवन के अंत तक वे इस नियम पर आरूढ़ बने रहे

आचार्यश्रीजी का स्वर्गवास नागौर में हुआ था। सं० १८५३ के वर्ष की वैशाख-शुक्ला चतुर्दशी उनकी स्वर्गवास तिथि थी। आपको ११ दिनों का संथारा आया था। शारीरिक अस्वस्थता के कारण अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में आप नागौर ही विराजमान रहे थे। संवत् १८ सौ के ४ वें वर्ष में आप नागौर पधार गए थे।*

आचार्य श्रीजी के चर्तुमास कहाँ कब हुए—

सोजत—सं० १७८८ १७९६, १८०३, १८०५ १८११ १८२९।
जालोर—सं० १७९०
सिवाणी—सं० १७९१
मेड़ता—सं० १७९२ १७९८, १८०२, १८०४ १८०७, १८२४ १८३०।
जोधपुर—सं० १७९३, १७९५, १७९७, १८०० १८०१ १८१०, १८१६, १८२० १८२६ १८३१ १८३४ १८३६।
किशनगढ़—सं० १७९९, १८१४ १८२१ १८३० १८३८।
बोरावड़—सं० १८०८। बैराठ—सं० १८ ६।
पीपाड़—सं० १८११ १८१५। भीलवाड़ा—सं० १८१२।
जयपुर—सं० १८१३। अमर रायपुर—सं० १८२७।
बीकानेर—सं० १८१७ १८२२। उदयपुर—सं० १८२८।
रायपुरा—सं० १८३१ १८३६।
पाली—सं० १८३३, १८३७।
नागौर—सं० १७९४ १८०६ १८२२ १८२५ १८२८, १८४० से १८५३ तक (स्थिरवास के कारण)

[पूज्य जयमल गुणमाला द्वि० सं० के अनुसार]

राजस्थान के अतिरिक्त दिल्ली, आगरा, पंजाब व मालवा की ओर भी आचार्यश्रीजी ने यात्रा की थी। बीकानेर पहुँच कर सबसे पहले आपही ने वहां स्थानकवासी समाज के सत्व को अकुरित और पल्लवित किया था।

पूज्यश्री रघुनाथजी म० श्री जेतसीजी म० श्री कुशलजी म० आचार्यश्रीजी के गुरु भ्राता थे। श्री कुशलजी म० आपके छोटे गुरु-भ्राता थे।

आचार्यश्रीजी के अनेक शिष्य थे। आचार्य-पद का उत्तराधिकार आपके योग्यतम प्रमुख शिष्य मुनिश्री रायचन्द्रजी को मिला था। अपने जीवन-काल में स्वय आचार्यश्रीजी ने उन्हें आचार्य-पद से विभूषित कर दिया था। आगे भी यह आचार्य परम्परा लंबे समय तक चलती रही।*

आपके प्रभावशाली महान् व्यक्तित्व के कारण आपकी आख्या पर ही आपकी सम्प्रदाय का नाम-करण हुआ और इसलिये उक्त सम्प्रदाय का नाम 'जयमल्ल सम्प्रदाय' आज तक प्रचलित है।

आचार्यों के अतिरिक्त अनेक सुयोग्य सत इस सम्प्रदाय में हुए हैं जिनकी गौरव-गाथा आज भी सुदूर-व्यापिनी बनी हुई है।

उत्तरोत्तर होने वाले आचार्यश्रीजी के उत्तराधिकारी और सम्प्रदाय के सुयोग्य सन्तों के सबल स्कधों पर समारूढ इस सम्प्रदाय ने स्थानकवासी समाज में यत्र तत्र सर्वत्र बहुत अच्छा गौरव प्राप्त किया। अट्ठारहवीं सदी से लेकर बीसवीं सदी के नौवें वर्ष के प्रारम्भ काल तक बहुत अच्छे रूप में इस सम्प्रदाय का अस्तित्व बना रहा। इस सदी के नौवें वर्ष में जब सादडी में सम्मेलन हुआ तो अन्य सम्प्रदायों के साथ इस सम्प्रदाय ने भी श्रमण-सघ में मिलकर अपने अस्तित्व को अमर कर दिया।

हां, तो प्रस्तुत सग्रह में उन्हीं आचार्यश्रीजी की रचनाओं का सकलन किया गया है। उनकी सारी रचनाए मारवाडी भाषा में हैं। उन्होंने असीमित पद्य लिखे हैं। उनके पद्यों में जैनधर्म से अनुस्यूत अनेक विषयों के अवगाहन के साथ नीति, रीती तथा अनेक आख्यानों का भी चित्रण किया गया है। ससार की अस्थिरता और वैराग्य-भावना आचार्यश्रीजी के खास विषय रहे हैं।

प्रस्तुत सकलन में उनकी सारी रचनाओं का सग्रह हो गया हो, ऐसी बात नहीं है। मैं समझता हू, अब भी उनकी ऐसी बहुत-सी रचनाए होंगी, जिनको

---

*आचार्यश्री के क्रमश उत्तराधिकारी—१ पूज्य श्री रायचदजी म० २ पूज्य श्री आसकरणजी म० ३ पू० श्री शबलदासजी म० ४ पू० श्री हीराचंदजी म० ५ पू० श्री किस्तूरचदजी म० ६ पू० श्री भीकमचंदजी म० ७ पू० श्री कानमलजी म

प्रकाश में लाने के लिये इधर उधर बिखरे पड़े हुए पन्ने संभालने पड़ेंगे। मुझे जितनी सामग्री मिली उसीके आधार पर यह संग्रह तैयार किया गया है।

मुझे याद है, मेरे स्वर्गीय श्रद्धेय पूज्य गुरुवर श्री जोरावरमलजी महाराज भी आचार्यश्रीजी की रचनाओं का संग्रह करना चाहते थे परन्तु दूसरी अनेक जिम्मेदारियों के कारण इस ओर समय देने में उन्हें सदा बाधाएं ही आती रहीं। इस सम्प्रदाय के एक और दूसरे विद्वान् मुनिराज श्री चैनमलजी महाराज थे। उनके अंतःकरण में भी यह लगन थी। उन्होंने इस ओर कुछ प्रयास भी किया था परन्तु वे अल्प अवस्था में ही दिवंगत हो गए थे इसलिये उनकी भावना भी पूर्ण न हो सकी। उनकी भावनाओं का मूर्त रूप यह संकलन अब पाठकों के कर-कमलों में है।

आचार्यश्रीजी की रचनाओं में जीवन को समुन्नत करने वाला वैराग्य-मय आध्यात्मिक संदेश मिलता है। संघर्षमय इस जीवन में इतस्ततः खींचे जाने वाले जन-समुदाय के लिये उनकी रचनाओं का यह चयन मार्ग-प्रदर्शन कर सकेगा ऐसी आशा है।

विषय के अनुसार वर्गीकरण कर प्रस्तुत संकलन स्तुति सम्बन्ध उपदेशी पद और चरित-चर्चा-दोहावली इन चार विभागों में विभक्त कर दिया गया है।

यद्यपि जन वाणी में संगृहित रचनाओं के चयन में मुझे करीब तीन वर्ष लग गए फिर भी जो सामग्री मिली उससे मुझे संतोष है।

आचार्यश्रीजी की अन्यान्य बिखरी हुई रचनाएं भी अनेक सन्तों के पास व ज्ञान-भंडारों में मिल सकती हैं, परन्तु इस संकलन में पीपाड़ कुचेरा और ब्यावर के ज्ञान-भंडारों में उपलब्ध सामग्री का ही उपयोग हो पाया है। मैं उन ज्ञान-भंडारों का तथा उनके अधिकारियों का पूर्ण आभारी हूँ।

मरु-धरा के मंत्री श्रीयुत श्रद्धेय पूज्यवर श्री हजारीमलजी महाराज व सेवा भावी पण्डित मुनिश्री ब्रजलालजी महाराज का मैं पूर्ण कृतज्ञ हूँ जिनकी असीम कृपा के कारण ही मैं इस कार्य को सानन्द समाप्त कर सका हूँ।

जैन-समाज के धुरंधर विद्वान् विश्रुत विचारक कविवर श्रीयुत श्रद्धेय अमरचंदजी महाराज ने इस पुस्तक पर जो भूमिका लिखने की महती कृपा की है वह मेरे लिये सदा संस्मरण की बात रहेगी।

श्रीयुत पंडित शोभाचन्द्रजी भारिल्ल से भी मुझे समय-समय पर अच्छा परामर्श मिलता रहा है। प्रस्तुत संकलन उनका भी बड़ा आभार मानता है।

जय-वाणी सन्मति ज्ञानपीठ से प्रकाशित हो रही है यह भी एक सोने में सुगध है।

श्रीमान् सेठ खींवराजजी सा चोरडिया (नोखा-मद्रास) की ओर से साहित्य-साधना की ओर अग्रसर होने के लिये मुझे सदा बलवती प्रेरणा मिलती रही है। श्रीयुत चोरडियाजी एक उदार-हृदय मनस्वी सज्जन हैं। श्रद्धेय पूज्य गुरु महाराज के वे अतेवासी श्रावक हैं। उनके हृदय में पूज्य गुरु महाराज के प्रति अपार श्रद्धा है। इस पुस्तक के प्रकाशन में उनका पूर्णतया सहयोग है।

छद्मस्थ होने के नाते प्रस्तुत-सम्पादन में त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। प्रेमी पाठक सुधार कर पढेंगे ऐसी शुभाशा के साथ विराम—

जैन स्थानक
पीपलिया बाजार, ब्यावर
शारदीया-पूर्णिमा
स० २०१६

मधुकर मुनि

२५—साधु-चर्या ... ९४

२६—पाप-पुण्य-फल ... १००

२७—श्री कृष्णजी नी ऋद्धि ... १०२

२८—भविष्यत् काल के तीर्थङ्कर १०६

उपदेशी पद १११-१८०

२९—पचम आरा .. १११

३०—यह मेला ११२

३१—विरक्ति पद ११४

३२—मिनख-जमारो ११५

३३—शिक्षा पद ११७

३४—कलि-युगी लोक ११८

३५—प्राणी ! ११९

३६—यह जग सपना १२०

३७—शिक्षा-पद १२२

३८—वैराग्य-पद १२४

३९—चेतन ! चेत १२६

४०—जीव-चेतावनी १३२

४१—वैराग्य-पद १३४

४२—नींद-पच्चीसी १३६

४३—मूरख-पच्चीसी १३९

४४—पर्यटन सप्तविंशतिका १४३

४५—उपदेश तीसी १४७

४६—उपदेश वत्तीसी १४९

४७—वैराग्य वत्तीसी १५१

४८—बाल प्रतिबोध चौतीसी १५६

४९—पुण्य छत्तीसी १६०

५०—आत्मिक छत्तीसी १६२

जय-वाणी

(१)

स्तुति

(१)

❀ चउवीसी स्तवन ❀

[तर्ज—ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं]

१— रे जीव ! जिनवर सुमरिये
सुमरयां जय जयकार ।
इण भव में सुख सम्पदा
पामें भवनों पार ॥

२— ऋषभ अजित सम्भव नमु
अभिनन्दन अभिराम ।
सुमति पद्म सुपासजी
पहुँता शिवपुर ठाम ॥

३— चन्द्रप्रभ जिन आठमा
सुविधि शीतलनाथ ।
श्रेयांस जिन अग्यारमा
वासुपूज्य विख्यात ॥

४— विमल अनन्त धर्मनाथजी
सोलसमा श्री शान्त ।
कुंथू अर मल्लीनाथजी
कीधो भवनो अन्त ॥

५— मुनि सुव्रत जिन वीसमा
नेमी अरिट्ठनेम ।
पास जिनेश्वर वीरजी
पहुँता शिवपुर क्षेम ॥

६— ए चउवीसी जिनवर तणा
ध्यावे हितकर नाम ।
रिख 'जयमल्लजी' इम वीनवे
पामे अविचल धाम ॥

———

८— प्रभु ये मोहा जाल सभी कापी
चतुर्विध संघ तिरथ थापी ।
चोथो दुखम सुखम आरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

९— बासठ सहस मुनिराज थया
वली सहस नव्यासी हुई अज्जिया ।
प्रभु तारो ने वली आप तरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

१०—दोय लाख नेवु सहस श्रावक गुणी
त्रण लाख तयासी सहस श्राविका सुणी ।
और चतुर्विध संघ खरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

११—चार हजार ओहीनाणी जती
वली त्रणशे हुवा विपुल-मती ।
नेवु गणधरनो पाप हरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

१२—चार हजार त्रणशे रे कह्या
मुनि केवल लहीने मुगति गया ।
छ हजार मुनि वैक्रिय-धरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

१३—चौतीस सौ वादी भारी
वली आठसौ चौदह पूरबधारी ।
आठ करम सु जाइ लडो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

१४—नव पदवी मोटी रे कही
जेणे एकण भवमाँ छए लही ।
ऐसो भरियो पुण्य घडो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो ॥

१५—पा पा लाख कुमर साध पणे
वलि अध लाख वरस रह्या राज पणे ।

(२)

❀ शान्ति जिन स्तवन ❀

१— नगर हस्तिनापुर अति रे भलो
ज्यां जनम्यां तीर्थंकर त्रिभुवन तिलो।
दाह प्रशम्यो चैन करो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

२— सर्वार्थ सिद्ध थकी रे चवी
तब देश मरकमां शान्ति हुई।
शान्तिजी नाम दियो सखरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

३— विश्वसेन' पिता 'अचिरा माता
जेणे जाये सुखदा मोटा पाया।
जनम्या तीर्थंकर अमित भरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

४— छप्पन कुमारिका उल्लास भर्यो
जेणे जनमोच्छव कियो कुमर तणो।
चौसठ इन्द्र आदि उच्छव करो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

५— भरतादि ई महोत्तर कथा
जेणे सहस चौसठ परणी महिला।
छ खण्ड साध्या इश्वीय परो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

६— सहस पिचत्तर वर्ष कथा
चक्रवर्ति पद-भरवास रह्या।
पद मिलाय दियो छायो ही भमरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

७— एक सहस पुरुष साथे रिक्षा
श्री जिनवरजी लीनी दीक्षा।
पाके सुरनर आदि मे पाय पड़ो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

८— प्रभु ये मोहा जाल मभी कापी
चतुर्विध संघ तिरथ थापी।
चोथो दुखम सुखम आरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

९— बासठ सहस मुनिराज थया
वली सहस नव्यासी हुई अज्जिया।
प्रभु तारो ने वली आप तरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

१०—दोय लाख नेवु सहस श्रावक गुणी
त्रण लाख तयासी सहस श्राविका सुणी।
और चतुर्विध संघ खरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

११—चार हजार ओहीनाणी जती
वली त्रणशे हुवा विपुल-मती।
नेवु गणधरनो पाप हरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

१२—चार हजार त्रणशे रे कह्या
मुनि केवल लहीने मुगति गया।
छ हजार मुनि वैक्रिय-धरो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

१३—चौतीस सौ वादी भारी
वली आठसौ चौदह पूरबधारी।
आठ करम सु जाइ लड़ो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

१४—नव पदवी मोटी रे कही
जेणे एकण भवमाँ छए लही।
ऐसो भरियो पुण्य घड़ो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

१५—पा पा लाख कुमर साध पणे
वलि अध लाख वरस रह्या राज पणे।

२३—मृग लछन सेवित ध्यान धरा,
श्री शान्ति जिनेश्वर सुगति सदा।
फंद मेट दियो भव जन्म मरे,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

२४—तुम नाम लिया सब पाप मरे
तुम नामे सुगति सफल सरे।
तुम नामे सुख भंडार भरे,
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

२५—ऋषि 'जयमलजी' आ विनति करी
प्रभु तोरा गुणनो पार नहीं।
मुझ भवभवना दुख दूर करो
श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो॥

---

(२)

❀ पार्श्वनाथजी का स्तवन ❀

१— बनारसी नगरी नामे,
अश्वसेन राजा रमे तिणठामे।
वामा तस घर पटराणी
श्री पास भजो पुरुषादानी॥

२— दशम देवलोक थी चव आया
जद माता चवद सुपन पाया।
गर्भ उपनो उत्तम प्राणी
श्री पास भजो पुरुषादानी॥

३— वद पोस दशम के दिन जाया
जद चोसठ इन्द्र मिली आया।
मेरु शिखर महिमा कर आणी
श्री पास भजो पुरुषादानी॥

४— छप्पन कुमारिया हुलास घणो
जद जनम कारज कियो कुमर तणो।

अशुचि टाल गई ठिकाणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

५— न्हाल मिली श्रीमण कीधो
मिल पास कुमर नामज दीधो ।
नाग शय्या सोवण आयी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

६— बधे जिम अधिकी चन्द्रकला
शुभ लक्षण पढिया देहे सगला ।
रूपी रेखा पग पांखी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

७— कला चतुराई अधिकी पाणी
भर मांहि बली तिहुं माया पाणी ।
गुण कला रत्नां खाणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

८— पांचे अगनी कमठ साधी
प्रगट भीड़ मिली आन्धी ।
नाग मे काढ्यो काष्ठांथी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

९— तीस वर्ष गृह वास रह्या
वर लोकांतिक सुर आय कह्या ।
वरसी दान दियो जाणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

१०— दसा भाव महिमा कीधी
वद पोस इग्यारस दीक्षा लीधी ।
तीन स संग हुआ गुण नाणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

११— दिवस चवांसी छद्मस्थ रह्या
वदि चैत चौथ केवल लह्या ।
चार कर्म किया हाणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

१२—गणधर आठ, सोले सहस मुणी
अडतीस सहस आरजिया रे सुणी ।
फन्द छोड दिया आफाणी
श्री पास भजो पुरुपादानी ॥

१३—एक लाख चौसठ सॅस श्रावक गुणी
तीन लाख सताई सॅस श्राविका सुणी ।
एक सहस हुवा केवल नाणी
श्री पास भजो पुरुपादानी ॥

१४—चवदेसे हुआ ओही नाण जती
साढा तेरेसे हुआ ज्यारे विपुल मती ।
इग्यारेसौ हुआ वेकराणी,
श्री पास भजो पुरुपादानी ॥

१५—छसो हुआ वादी भारी
साढा तीन सौ हुआ पूरवधारी ।
तज दीनी खाचा ताणी
श्री पास भजो पुरुपादानी ॥

१६—सीतर वर्ष दीक्षा पाली
शुद्ध दया धर्म ने उजवाली ।
कर्म किया सहूँ धूड धाणी
श्री पास भजो पुरुपादानी ॥

१७ एक मास तणो अणसण लीधो
समेत शिखर ऊपर कीधो ।
ध्याया शुभ शुक्ल झाणी
श्री पास भजो पुरुपादानी ॥

१८—श्रावण सुद अष्टमी सिद्धो
जद देव आय महोछव कीधो ।
तेतीस संग हुआ निरवाणी
श्री पास भजो पुरुषादानी ॥

१९—जसो कीर्ति नाम बाध्यो पेली
श्री पार्श्वनाथ तणी महिमा फेली ।

६— पाचसो धनुष देहीं साहू
चौरासी लाख पूरवनो आयू।
अतिशय जिनजीरा चौतीसो
श्री विहरमान वन्दू वीसो ॥

७— चार चार तीर्थङ्कर एक मेरु भारो
ज्यारो साध साधवियाँ रो परिवारो।
मुक्ति जासी आठू कर्म पीसो
श्री विहरमान वन्दू वीसो ॥

८— श्री विहरमान वीसूं ई जाणी
ज्यारो भजन करो उत्तम प्राणी।
जिम पूरो मनरी जगीसो
श्री विहरमान वन्दू वीसो ॥

६— शहर 'मेडते' शुभ गामो,
ऋषि "जयमलजी" कीधा गुण ग्रामो।
समत अठारे चौवीसो,
श्री विहरमान वन्दू वीसो ॥

---

(५)

❀ बीस विहरमानों का स्तवन ❀

विहरमान वीस नमू ॥ टेर ॥

१— सीमधरजी ने सुमरतॉं युग-मन्दिर देव।
बाहुजी स्वामी तीसरा, सुबाहुजी नी सेव ॥ विह० ॥

२— सुजात स्वामी पांचमा, स्वय-प्रभ जाण।
ऋषभानदन सातमां, अनतवीरजी बखाण ॥ विह० ॥

३— सूरप्रभ नवमा नमू, दशमां श्री विशाल।
वज्रधर चद्रानन, हूँ वदू त्रिकाल ॥ विह० ॥

४— चद्रबाहुजी स्वामी तेरमा, चवदमा श्री भुजग।
ईश्वर नेमिप्रभ नमू, राता धर्म-सुरग ॥ विह० ॥

नाथ हुवा मोटा नामी
सुमरो श्री सीमन्धर स्वामी ॥

७— एक-मना हुई सुद्ध भजे
काराने कलिया दूर तजे ।
हुवे मोक्ष तणा झट कामी
सुमरो श्री सीमधर स्वामी ॥

८— राच रह्या मिथ्यामत माही,
ए रुले जीव चारू गति माही ।
भूला ने आणे ठामी
सुमरो श्री सीमधर स्वामी ॥

९— मोक्ष तणा जो सुख चाहो
तो तपस्या करी ल्योनी लाहो ।
पाचूई इन्द्रिय दामी
सुमरो श्री सीमधर स्वामी ॥

१०—ए मानव भव दुरलभ लाधो
तुम दयाधर्म सुध आराधो ।
मुगती आवे ज्यू तुम सामी
सुमरो श्री सीमधर स्वामी ॥

११—तुम नामे दु:ख दोहग टले
तुम नामे मुगती सुख मिले ।
टल जाय नरक तणी धामी
सुमरो श्री मीमधर स्वामी ॥

१२—कदाच ससार माही रहे
तो उत्तम कुल में जनम लहे ।
ऋद्ध वृद्ध बहु धन धामी
सुमरो श्री मीमधर स्वामी ॥

१३—चौरासी लाख पूरब आयू,
वृषभ लछण पड्यो देह साहू ।
मोटा प्रभु अन्तरजामी
सुमरो श्री सीमधर स्वामी ॥

१४—चौतीस अतिसय पेंतिस वाणी
 बारूं दिशा मे सुण ही हो जाणी।
 ऊंची अति पदवी प्रभुजी पामी
 सुमरो श्री सीमंधर स्वामी॥

१५—जिनजी रा वचन हिया में धरो
 सुद्ध मारग है मरम करो।
 मिथ्या मत मे घो वामी
 सुमरो श्री सीमंधर स्वामी॥

१६—जगन्य साधु हुवे सो कोड़ी
 उत्कृष्ट अगन्य केवलि जोड़ी।
 मरजी माटानी महामी
 सुमरो श्री सीमंधर स्वामी॥

१७—हिंसा धर्म करी हुवो पहुंचा
 मन्नू नहीं पुरविन पहुंचो।
 दो हिय दुक्कड मिच्छामि
 सुमरो श्री सीमंधर स्वामी॥

१८—भाड़ा नदियां पहाड़ घणा
 जाणूं वचन सुणू जिनराज तणा।
 है भारी करार आगा हामी
 सुमरो श्री सीमन्धर स्वामी॥

१९—महाविदेह क्षेत्र सारो
 रहै सदा जिहां चौथो आरो।
 जिहां घणा जीव शिवगामी
 सुमरो श्री सीमंधर स्वामी॥

२०—रिख "जयमलजी" विनती एम कहै
 कोई भारी सरधा सांरी रहै।
 मन भावनी टल जाय खामी
 सुमरो श्री सीमंधर स्वामी॥

(७)

❀ वडी साधु-वंदना ❀

१— नमू अनत चोवीसी, ऋषभादिक महावीर ।
आरज क्षेत्र मा घाली, धर्म नी सीर ॥

२— महा अतुल बली नर, शूर वीर ने धीर ।
तीरथ प्रवर्तावी पहुँचा भव जल तीर ॥

३ — सीमधर प्रमुख, जघन्य तीर्थ कर वीस ।
छे अढी द्वीप मा, जयवता जगदीश ॥

४— एक सो ने सत्तर, उत्कृष्ट पदे जगीश ।
धन्य म्होटा प्रभुजी, तेहने नमाऊ शीश ॥

५— केवल दोय कोडी, उत्कृष्टा नव कोड ।
मुनि दोय सहस कोडी, उत्कृष्टा नव सहस कोड ॥

६— विचरें विदेहे, म्होटा तपसी घोर ।
भावे करी वदू टाले भव नी खोड ॥

७— चोवीसे जिन ना, सगला ही गणधार ।
चौदसे ने बावन, ते प्रणमू सुखकार ॥

८— जिन शासन नायक, धन्य श्री वीर जिनद ।
गौतमादिक गणधर, वर्तायो आनद ॥

९— श्री ऋषभ देवना, भरतादिक सो पूत ।
वैराग्य मन आणी, सयम लियो अद्भूत ॥

१०—केवल उपजाव्यू कर करणी करतूत ।
जिनमत दीपावी, सगला मोक्ष पहूत ॥

११—श्री भरतेश्वर ना, हुआ पटोधर आठ ।
आदित्य जसादिक, पहुँत्या शिवपुर वाट ॥

१२—श्री जिन अतर ना, हुआ पाट असंख ।
मुनि मुक्ति पहुँत्या, टालि कर्म नो वक ॥

१३—धन्य 'कपिल' मुनिवर, नमि नमू अणगार ।
जेणे ततक्षण त्याग्यो, सहस्र रमणी परिवार ॥

१४—मुनिवर हरि केशी 'चित्त' मुनीश्वर सार।
शुद्ध संयम पाली पाम्या भव नो पार॥

१५—'वलि 'इषुकार' राजा घर 'कमलावती' नार।
'भृगु' ने 'जसा' तेहना दोय 'कुमार'॥

१६—छयें छती ऋद्धि छांडी लीधो संयम भार।
इण अल्प काल मां पाम्या मोक्ष दुवार॥

१७—'वलि संयति राजा हिरण-आहिड़े जाय।
मुनिवर 'गर्दभाली' आण्यो मारग ठाय॥

१८—चारित्र लेई ने भेट्या गुरु ना पाय।
'क्षत्री' राज ऋषीश्वर चर्चा करी चित्त लाय॥

१९—वलि दशे चक्रवर्ती राज्य रमणी ऋद्धि छोड़।
दशे मुक्ति पहुँत्या कुल ने शोभा चढ़ोड़॥

२०—इण अवसर्पिणी मां आठ 'राम' गया मोक्ष।
'बलभद्र' मुनीश्वर, गया पंचमें देवलोक॥

२१—'दशार्णभद्र' राजा वीर वांद्या धरि मान।
पछि इन्द्र हटायो दियो छकाय अभयदान॥

२२—'करकंडू' प्रमुख चार प्रत्येक बुद्ध।
मुनि मुक्ति पहुँत्या जीत्या महाजुद्ध॥

२३—धन्य मोटा मुनिवर, 'मृगापुत्र' जगीश।
मुनिवर 'अनाथी' जीत्या राग ने रीश॥

२४—वलि 'समुद्रपाल' मुनि 'राजमती' 'रहनेम'।
'केशी' ने 'गौतम' पाम्या शिवपुर खेम॥

२५—धन्य 'विजयघोष' मुनि 'जयघोष' वलि जाण।
श्री 'गर्गाचार्य' पहुँत्या छे निर्वाण॥

२६ श्री उत्तराध्ययन माँ जिनवर कर्या बखाण।
शुद्ध मन से ध्यावो मन में धीरज आण॥

२७—वलि 'खंधक' संन्यासी राख्यो गौतम-स्नेह।
महावीर समीपे पंच महाव्रत लेह॥

२८—तप कठिन करीने झौंसी आपणी देह।

२६—वलि 'ऋषभदत्त' मुनि, सेठ 'सुदर्शन' सार ।
'शिवराज' ऋषीश्वर, धन्य 'गांगेय' अणगार ॥

३०—शुद्ध संयम पाली, पाम्या केवल सार ।
ये चार मुनिवर पहुँत्या मोक्ष मझार ॥

३१—भगवत नी माता, धन्य धन्य सती 'देवा नन्दा' ।
वली सती 'जयती', छोड दिया घर फन्दा ॥

३२—सती मुगति पहुँत्या, वलि ते वीर नी नन्द ।
महासती 'सुदर्शना' घणी सतियों ना वृन्द ॥

३३—वलि 'कार्तिक' सेठे पडिमा वही शूर वीर ।
जीम्यो मोरा ऊपर तापस बलती खीर ॥

३४—पछी चारित्र लीधू, मित्र एक सहस आठ धीर ।
मरी हुओ शक्रेन्द्र, च्यवि लेसे भवतीर ॥

३५—वलि राय 'उदायन', दियो भाणजा ने राज ।
पछी चारित्र लेईने मार्या आतम काज ॥

३६—'गंगदत्त' मुनि 'आनन्द', तारण तरण जहाज ।
मुनि 'कौशल' 'रोहो' दियो घणा ने साज ॥

३७—धन्य 'सुनक्षत्र' मुनिवर, सर्वानुभूति अणगार ।
आराधक हुई ने, गया देव लोक मझार ॥

३८—चवि मुगते जासी, वलि 'सिंह' मुनीश्वर सार ।
बीजा पण मुनिवर भगवती मा अधिकार ॥

३९—'श्रेणिक' नो बेटो, म्होटो मुनिवर 'मेघ' ।
तजी आठ अंतेउर, आण्यो मन संवेग ॥

४०—वीर पै व्रत लेई ने, बांधी तप नी तेग ।
गयो विजय विमाने, चवि लेसे शिव वेग ॥

४१—धन्य 'थावच्चा पुत्र', तजी बत्तीसों नार ।
तेनी साथे निकल्या पुरुष एक हजार ॥

४२—शुकदेव संन्यासी, एक सहस्र शिष्य लार ।
पांचसो से 'शेलक' लीधो संजम भार ॥

४३—सब सहस्र अढाई, घणा जीवों ने तार ।
पुंडरिक गिरि ऊपर, कियो पादोपगमन संथार ॥

४४—आराधक हुई ने कीधो खेवो पार ।
हुआ मोटा मुनिवर, नाम लियां निस्तार ॥

४५—धन्य 'जिनपाल' मुनिवर दोय 'धन्ना' हुआ साध ।
गया प्रथम देवलोके, मोक्ष जासे आराध ॥

४६—श्री 'मल्लीनाथ' जी ना छह मित्र, 'महाबल' प्रमुख मुनिराय ।
सर्वे मुक्ति सिधाव्या म्होटी पदवी पाय ॥

४७—वलि 'जितशत्रु' राजा सुबुद्धि नाम प्रधान ।
पोते चारित्र लई ने पाम्या मोक्ष निधान ॥

४८—धन्य 'तेतली' मुनिवर, दियो छकाय अभयदान ।
'पोटिला' प्रतिबोध्या पाम्या केवल ज्ञान ॥

४९—धन्य पांचे 'पांडव' तजी 'द्रौपदी' नार ।
थवर नी पासे लीधो संयम भार ॥

५०—श्री नेम वंदन नो एहवो अभिग्रह कीध ।
मास मास खमण तप शत्रुंजय जई सिद्ध ॥

५१—'धर्मघोष' तणा शिष्य 'धर्मरुचि' अणगार ।
कीड़ियों नी करुणा आणी दया अपार ॥

५२—कड़वा तूंबा नो कीधो सगलो आहार ।
सर्वार्थ सिद्ध पहुंच्या चविसे भव पार ॥

५३—वलि 'पुंडरिक' राजा कुंडरिक डिगियो जाण ।
पोते चारित्र लेई ने न घाली धर्म मां हाण ॥

५४—सर्वार्थ सिद्ध पहुंच्या चविसे निर्वाण ।
श्री ज्ञाता सूत्र मां जिनवर कह्यो वखाण ॥

५५—'गौतमादिक' कुंवर, सगा अठारे भ्रात ।
सब अंधक वृष्णि सुत धारणी ज्यांरी मात ॥

५६—तजी आठ अंतेउर, काढी दीक्षा नी वात ।
चारित्र लई ने कीधो मुक्ति नो साथ ॥

५७—श्री 'अनीकसेनादिक' छये सहोदर भ्रात ।
वसुदेव ना नंदन देवकी ज्यांरी मात ॥

५८—भद्दिलपुर नगरी, नाग गहाबई जाण ।
सुलसा घर वधिया, सांभली नेमिनी वाण ॥

५६—तजी बत्तीस बत्तीस अतेउर, नीकल्या छिटकाय ।
नलकूबर समाना, भेटया श्री नेमिना पाय ॥

६०—करि छठ छठ पारणा, मन में वैराग्य लाय ।
एक मास सथारे, मुक्ति विराज्या जाय ॥

६१—वलि 'दारुक' 'सारण', 'सुमुख' 'दुमुख' मुनिराय ।
वलि कु वर 'अनाधृष्ट', गया मुक्ति गढ माय ॥

६२—वसुदेव ना नदन, धन्य धन्य 'गजसुकुमाल' ।
रूपे अति सुन्दर, कलावत वय बाल ॥

६३—श्री नेमि समीपे, छोड्यो मोह जजाल ।
भिक्षुनी पडिमा, गया मसाण महाकाल ॥

६४—देखी 'सोमल' कोप्यो, मस्तक बाधी पाल ।
खेरा ना खीरा, शिर धरिया असराल ॥

६५—मुनि नजर न खडी, मेटी मन नी झाल ।
परीषह सही ने, मुक्ति गया तत्काल ॥

६६—धन्य 'जाली' मयाली', 'उवयाली' आदिक साध ।
'साब' ने 'प्रद्युम्न', 'अनिरुध' साधु अगाध ॥

६७—वलि 'सत्यनेमि' 'दृढनेमि', करणी कीधी निर्बाध ।
दशे मुक्ति पहुँत्या, जिनवर वचन आराध ॥

६८—धन्य 'अर्जुनमाली', कियो कदाग्रह दूर ।
वीर पे व्रत लई ने, सत्यवादी हुआ सूर ॥

६६—करी छठ छठ पारणा, क्षमा करी भरपूर ।
छह मासा माही, कर्म किया चकचूर ॥

७०—कु वर 'अइमुत्ते' दीठा गौतम स्वाम ।
सुणि वीरनी वाणी, कीधो उत्तम काम ॥

७१—चारित्र लेईने, पहुत्या शिवपुर ठाम ।
धुर आदि 'मकाई', अत 'अलक्ष' मुनि नाम ॥

७२—वलि कृष्ण रायनी अग्र महीषी आठ।
पुत्र बहू दोय संच्या पुण्य ना ठाठ॥

७३—जादव कुल सतियां टाल्यो दुःख संताप।
पहुँती शिवपुर मां ए छे सूत्र नो पाठ॥

७४—श्रेणिक नी राणी काली आदिक दश जाण।
दश पुत्र वियोगे सांभली वीर नी वाण॥

७५—चंदनबाला पे संयम लई हुई जाण।
तप करी देह झोंसी पहुँती छ निर्वाण॥

७६—नंदादिक तेरह, श्रेणिक नृप नी नार।
सगली चंदनबाला पे लीधो संयम भार॥

७७—एक मास संथारे पहुँती मुक्ति मंझार।
ए नेवुं जणा नो अंतगड मां अधिकार॥

७८—श्रेणिक ना बेटा जाली' आदिक तेवीस।
वीर पे व्रत लई ने पाल्या विसवावीस॥

७९—तप कठिन करीने पूरी मन जगीश।
देवलोक पहुँत्या मोक्ष जासे तजी रीश॥

८०—काकंदी नो धन्नो तजी बत्रीसे नार।
महावीर समीपे लीधो संयम भार॥

८१—करी छठ छठ पारणा आयंबिल उज्झित आहार।
श्री वीर वखाण्या धन्य धन्नो अणगार॥

८२—एक मास संथारे सर्वार्थ सिद्ध पहुँत।
महाविदेह क्षेत्र मां करसे भव नो अंत॥

८३—धन्ना नी रीत हुआ नवे संत।
श्री अनुत्तरोववाई मां भाखि गया भगवंत॥

८४—सुबाहु प्रमुख पाँच पाँच सौ नार।
तजी वीर पे लीधा पाँच महाव्रत सार॥

८५—चारित्र लईने पाल्या निरतिचार।
देवलोक पहुँत्या सुखविपाक अधिकार॥

८६—श्रेणिक ना पोता, 'पौमादिक' हुआ दश।
वीर पे व्रत लेई ने, काढ्यो देहनो कस॥

८७—सयम आराधी, देवलोक मां जई वस।
महाविदेह क्षेत्र मा, मोक्ष जासे लई जस॥

८८—बलभद्र ना नंदन, 'निषधादिक' हुआ बार।
तजी पचास अतेउरी, त्याग दियो ससार॥

८९—सहु नेमि समीपे, चार महाव्रत लीध।
सर्वार्थसिद्ध पहुँत्या, होसे विदेह सिद्ध॥

९०—'धन्नो' ने 'शालिभद्र', मुनीश्वरों नी जोड।
नारी ना बधन, तत्क्षण नाख्या तोड॥

९१—घर कुटुम्ब कबीलो, धन कंचन नी कोड़।
मास मास खमण तप, टाल से भवनी खोड॥

९२—श्री 'सुधर्म' स्वामी ना शिष्य, धन्य धन्य 'जबू' स्वाम।
तजी आठ अतेउरी, मात पिता धन धाम॥

९३—'प्रभवादिक' तारी, पहुँत्या शिवपुर ठाम।
सूत्र प्रवर्तावी, जग मा राख्यू नाम॥

९४—धन्य 'ढढण' मुनिवर, कृष्ण राय ना नद।
शुद्ध अभिग्रह पाली, टाल दियो भव-फद॥

९५—वलि 'खदक' ऋषिनी, देह उतारी खाल।
परीषह सहीने, भव फेरा दिया टाल॥

९६—वलि 'खदक' ऋषिना, हुआ पाच सौ शीस।
घाणी मा पील्या, मुक्ति गया तज रीष॥

९७—'सभूतिविजय' शिष्य, 'भद्रबाहु' मुनिराय।
चौदहपूर्व धारी, 'चन्द्रगुप्त' आण्यो ठाय॥

९८—वलि 'आर्द्रकु वर' मुनि, 'स्थूलभद्र' 'नदिषेण'।
'अरणक' 'अइमुत्तो', मुनीश्वरों नी श्रेण॥

९९—चौवीसे जिन ना, मुनिवर सख्या अठावीस लाख।
ऊपर सहस अड़तालीस, सूत्र परपरा भाख॥

१००—कोई उत्तम वांचो मोंहि अपछा राख।
उणासे मुख बोल्यां पाप कमें इम भाख॥

१०१—धन्य 'मरुदेवी माता ध्यायो निर्मल ध्यान।
गज होदे पायो निर्मल केवलज्ञान॥

१०२—धन्य आदीश्वरनी पुत्री 'ब्राह्मी 'सुन्दरी दोय।
चारित्र लेने मुक्ति गई सिद्ध होय॥

१०३—चौवीसे जिनजी बड़ी शिष्यणी चौवीस।
सती मुगते पहुँत्या पूरी मन जगीस॥

१०४—चौवीसे जिनना सर्व साधवी सार।
अड़तालीस लाख ने आठ से सत्तर हजार॥

१०५—चेड़ानी पुत्री राखी धर्मे श्री प्रीत।
'राजिमती 'विजया 'मृगावती' सुविनीत॥

१०६—'पद्मावती' मयण रेहा 'द्रोपदी 'दमयंती 'सीता।
इत्यादिक सतियाँ गई जमारो जीत॥

१०७—चौवीस जिनना साधु साधवी सार।
गया मोक्ष देवलोके हृदय राखो धार॥

१०८—इण अढ़ी द्वीप मां घरड़ा तपसी बाल।
शुद्ध पंच महाव्रत धारी नमो नमो त्रिकाल॥

१०९—इण यतियों सतियों ना लीजे नित प्रति नाम।
शुद्ध मनथी ध्यावो, एह तिरण नो ठाम॥

११०—इण यतियों सतियों सू राखो उज्ज्वल भाव।
इम कहे ऋषि 'जयमल' एह तिरण नो दाव॥

१११—संवत अठारे न वर्षे सावे सिरदार।
शहर 'जालोर मांहि एह कह्यो अधिकार॥

——

卐 च्यार मंगल 卐

प्रथमं-मंगलम्

[अरिहन्ता-मंगलम्]

दोहा—

१— अरिहत सिद्ध साधु नमु, सकल जीव सुख-कार ।
भव्य जीव उपकार हित, भणसू मगल चार ॥
२— प्रथम मगल अरिहत नो, दूजो सिद्ध मगलीक ।
तीजो मंगल साधु नो, चोथो दया-धर्म ठीक ॥

ढाल

[१]

१— मगल पहिलो अरिहत नो ए, भावसूं भणो नरनार तो ।
विघन दूरे टले ए, पामिए भव-जल पार तो ॥
अरिहत मोटको ए ॥
[मगल मोटको ए]
२— सद्‌गति नो दातार तो—
विघन-निवारणो ए, तीन भुवन में सार तो ॥
चौतीस अतिशय सू परवर्या ए—

३४ अतिशय

३— 'वधे न नख रोम असोभताए' 'लेप न लागे डीले' जास तो ।
'लोही ने मास ऊजलाए' 'सुगध ज्यांरा श्वास उच्छ्‌वास' तो ॥
४— "आहार नीहार करता थकाए, नम्र पणा तणी सोय तो ।
चर्म चक्षु नो धणी ए, नजरे देख न सके कोय तो" ॥
५— 'चक्र' 'छत्र' 'चामर ढुरे' ए, 'स्फटिक सिंहासन सज्ज' तो ।
"आगे पताका चले ए सहस, सु अधिक है धज्ज" तो ॥

३५ वाणी

२१—पेंतीस गुण वाणी तणा ए, उच्च स्वर करे है वखाण तो ।
भ्रम विना भाषा कही ए, सरस मधुर मीठ वाण तो ॥

२२—राग रहित भाषा ऊचरे ए, भवियण ने हितकार तो ।
चमत्कार चित ऊपजे ए, गभीर स्वर अतिसार तो ॥

२३—दोष कोई काढी ना सके ए, अमिलतो न कहे विरुद्ध तो ।
यथा योग्य मिलतो कहे ए, वचन अपेक्षाए शुद्ध तो ॥

२४—व्याख्यान नहीं सुस्त उतावलो ए, मधु सताव कहत तो ।
मर्म मोसो ना कहे ए, लज्जा ए शरम रहत तो ॥

२५—बाल ने वृद्ध समझे सहु ए, मीठी है अमृत वाण तो ।
भविक चेते घणा ए, हुवे ते भव तणा जाण तो ॥

२६—इत्यादिक वाणी तणा ए, पेंतीस नो प्रमाण तो ।
पूरव पुण्य प्रभावथी ए, उदय हुई छे इह आण तो ॥

तीन गढ

२७—देवता आय तिगढो रचे ए, अरिहत-महिमा ने काज तो ।
बाजे देव दु दुभि ए, समवसरण तणो साज तो ॥

२८—पहलो प्राकार रूपा तणो ए, सोवन कोशीशा सुरग तो ।
चारों पोला भली ए, तोरण मणि माहि चग तो ॥

२९—पावड्या गढ पहला तणा ए, दश हजार प्रमाण तो ।
सोवन में गढ दूसरो ए, रत्न ना कागरा जाण तो ॥

३०—रतना तणो गढ तीसरो ए, मणिमय कोशिशा सार तो ।
पोला चारों शोभती ए पावड्या पाच पाच हजार तो ॥

३१—साधिक तेतीस धनुषनी ए, भीतिया चौड़ी है जोय तो ।
तेरस धनुष तणो ए, गढ गढ़ आतरो होय तो ॥

३२—पहला ने रे ऊचा पणे ए, हाथ हाथ प्रमाण तो ।
पचास धनुष लांबा कह्या ए, पावड़िया रत्न मय जाण तो ॥

३३—गढ मा भींत ऊची कही ए, पचिसय धनुस प्रमाण तो ।
सरवाले कोश अढी तणो ए, ऊचो दीपे जिम भाण तो ॥

४६—अनन्त चौबीसी इसडी हुई ए, होवे होसी आगे ही अनत तो ।
मुक्ति सिधावसी ए, कर्म तणो कर अत तो ॥

५०—चार कर्म बाकी रह्या ए, गलीय जेवडी जेम तो ।
पण मुक्त सिधावसी ए, ऋषि 'जयमलजी' कहे एम तो ॥

---

* द्वितीयं-मंगलम् *

[सिद्धा-मंगलम्]

दोहा—

१— दूजो मगल मन शुद्धे, समरू सिद्ध भगवत ।
आठों कर्म खपाय के, कीधो भवनो अत ॥
२— अनत सिद्ध आगे हुवा, ढालि कर्म नो छोत ।
अनत आगे होवसी, मिलसी ज्योति में ज्योत ॥

ढाल

[२]

[राग—आदर जीव क्षमा-गुण आदर]

१— बीजो मगल शुद्ध मन ध्याइये, मुक्ति तणा दातारजी ।
जे भव्य जीव हृदय में धरसी ज्यारो खेवो पारजी ॥
बीजो मगल सिद्ध नमो नित ॥

२— चौदह राज तणे छे ऊपर, सिद्ध शिला तिहा ठामजी ।
गुण-निष्पन्न ए ज्यारां ज्ञानी, भाष्या सूत्र में बारह नामजी ॥

३ — लाख पेंतालिस जोजन पुहुली विच दल जोजन आठजी ।
माखी री पांख सु छेहडे पतली, समा छत्र रे घाटजी ॥

४—सर्वार्थ सिद्ध से बारह जोजन, शिला ऊची जाणजी ।
ऊपर गाऊ ने छट्टे भागे, सिद्ध तणी अवगाहणजी ॥

५— सदाकाल शाश्वतो थानक, शिला ऊजली जाणजी ।
अर्जुन सोवन में घणी, दीपती जिनवर किया वखाणजी ॥

६— मनुष्य तणा भव मांयली करने आठों कर्म खपायजी ।
अनंत सिद्ध हो मुक्ति पहोंता अनंत जासी वहु आयजी ॥

७— तीर्थ अतीर्थादिक बहु सिद्धा पहला पन्नर भेदजी ।
अनन्त सुखों में विराज्या जन्म मरण नहिं खेदजी ॥

८— दग्ध बीज जिम धरती बहायां नहिं मेले अंकूरजी ।
तिम बीज सिद्धजी जन्म मरण रौ करसी उत्पत्ति दूरजी ॥

९— आठ गुणां कर सिद्ध विराज्या अथवा गुण इकतीसजी ।
अतुल सुखों में विराज्या जीत्या राग ने रीसजी ॥

१०—अठारा जातरा भोजन जीम्यां मानव धापतो थायजी ।
तिमहीज सिद्ध सदा रहे तृपता ऊणारत नहीं कांयजी ॥

११ —तीनों ही काल ना देव तणा सुख अधिक घणा अथागजी ।
एकण सिद्ध तणा रे सुख ने नाव अनंत में भागजी ॥

१२—जिम कोई भील वस्तु-गुण जाणे ज्यारी वां कवर कथांयजी ।
तिम सिद्धों ना सुख की उपमा नहीं तीन लोक रे मांयजी ॥

१३—जघन मध्यम ने उत्कृष्टी मनुष्य तणी अवगाहनजी ।
तिण थी सिद्ध तणी अवगाहना तीजे भागे जाणजी ॥

१४—ज्योति स्वरूपी ज्योति विराजे निरंजन निराकारजी ।
एसी वस्तु नहीं कोई दूजी तीन लोक में सारजी ॥

१५—जन्म मरण ने रोग शोक नहीं नहीं गुण ठाणो जोगजी ।
केवल ज्ञान ने केवल दर्शन, केवल दोय उपयोगजी ॥

१६—चौथा मंगल सिद्धों ने सहुँ वांदो वारंवारजी ।
एसी स्तुति करे ऋषि 'जयमलजी' जो चाहो सुख सारजी ॥

* तृतीयं-मंगलम् *

[साहू-मंगलम्]

दोहा—

१— तीजो मगल साधु नो, साधे आतम काज ।
शुद्ध सम्यक्त्व श्रद्धहे, धन धन ते मुनिराज ॥
२— अथिर जगत ने जाण ने, छोड्यो कुटुम्ब ने वित्त ।
उत्तम मगल साधुनो, ते सुणजो इक चित्त ॥

ढाल

[३]

[राग —वीर बखाणी राणी चेलणा]

१— पांच महाव्रत पालवेजी, पाले हैं पचाचार ।
पाच समिते समिता रहे जी तीनों ही गुप्ति दयाल ॥
२— मुनि तणो मंगल तीसरोजी, भाव सू वादो नरनार ।
मन सवेग आणनेजी, छोडी ने अथिर ससार ॥
३— मोह माया सहु परिहरेजी, विचरे है आरज खेत ।
दया-मारग दीपावताजी, सकल जीवों पर हेत ॥ मुनि० ॥
४— पीहर छे छकायना जी, रखे जीव आतम जेम ।
बुरो न वाछे ते केहनोजी, चाहे छे कुशल क्षेम ॥ मुनि० ॥
५— सगपण सहु य ससार ना जी, काम भोग ने सयोग ।
सहु छिटकाय ने नीसर्याजी, जाणी ने मोटको रोग ॥ मुनि० ॥
६— काम ने भोग ससारनाजी, जाण्या छे जहर समान ।
फल किंपाक नी ऊपमाजी, त्यागी ने दियो अभय दान ॥ मुनि० ॥
७— वाणी सुण भगवतनी जी, आव्यो वैराग्य मन जोर ।
नारी नो नेह साकल जिसोजी, तटके से नाख्यो तोड़ ॥ मुनि० ॥
८— धन माल मदिर मालियाजी, निबिड़ सज्जन तणो नेह ।
छत्ती ऋद्धि छिटकायनेजी, खखर कीधी देह ॥ मुनि० ॥
९— बावू तणा भय टालनेजी, ऐसा है, माई तणा पूत ।
ज्ञान आचार में ऊजलाजी दीसता काकड़ा-भूत ॥ मुनि० ॥

२४—माहणो माहणो जीवने जी, ऐसो है ज्यांरो उपदेश ।
हेतु युक्ति कर पर तणीजी, घाले है दया नी रेश ॥ मुनि० ॥

२५—सदा ही काल ऊंचो रहेजी, कमल नो फूल जल मांहि ।
तिम साधु ऊचा रहेजी, लिप्त ससार में नाहि ॥ मुनि० ॥

२६—[1]नव पाले [2]नव परिहरेजी, [3]नव तणी करत है हाण ।
[4]नव नामां चित्त में धरेजी, ऐसा है चतुर सुजाण ॥ मुनि० ॥

२७—गुण सत्ताइस दीपताजी, पाले है निरतिचार ।
भवि जीवा रा तारकाजी, कर दियो खेवो पार ॥ मुनि० ॥

२८—चर्चा ने वाद पड़यां थकाजी, नहिं करे आलस जेज ।
पाखंड्या रा मद गालदेजी, ऐसो ही बरते तप तेज ॥ मुनि० ॥

२९—करे उपकार भव्य जीवनोजी, ज्ञान पिटारो खोल ।
विकथा लबार करे नहींजी, बोले है गिणिया बोल ॥ मुनि० ॥

३०—शिष्य शिष्यणी नो सग्रह करेजी, पूछे सगलां नी सार ।
शिष्य विनीत इसा मिल्याजी, निर्वाहे गच्छ तणो भार ॥ मुनि० ॥

३१—बोल ने चर्चा हिय में धरेजी, सूत्र अर्थ तणा जाण ।
परिषद मांहे नि शकसू जी, बिधी सू करे व्याख्यान ॥ मुनि० ॥

३२—देवे सूत्र तणी वाचनाजी, शका न राखे कोय ।
पच्चीस गुण ज्यारा परवर्याजी, चोथे पद उवज्झाय ॥ मुनि० ॥

३३—हुवे हुवे ने वली हुसीजी, द्वीप अढी माहे साधु ।
गुण सत्ताईस सोभताजी, सफल जन्म जिण लाधु ॥ मुनि० ॥

३४—एक एक मुनिवर एहवाजी, बोले है अमृत वेण ।
राग ने द्वेष केह सू नहींजी, सकल जीवा रा सेण ॥ मुनि० ॥

३५—साकर टाकर सम गिणेजी, सम गिणे धातु पाषाण ।
तृण त्रिया सरखा गिणेजी, नहीं खुशामद काण ॥ मुनि० ॥

३६—कोयक वंदत आयनेजी कोयक निंदत आय ।
कोयक छेदत कायनेजी, राग रोष न मन माय ॥ मुनि० ॥

३७—पहले पहर सज्झाय करेजी, बीजे पहर करे ध्यान ।
तीजे पहर करे गोचरीजी, ना करे जीवांतो हान ॥ मुनि० ॥

---

१ नव ब्रह्मचर्य गुप्ति । २ नव नियाणा । ३ नव नो कषाय ।
४ नव तत्त्व या नव पद ।

३८—एक एक मुनिवर पख्खाजी सूत्र में कहिये निरत ।
छंमरन भापमिया पढ़ेजी थगिमा पढ़े निरत ॥ मुनि० ॥

३९—सगला मुनि नहीं मारखाजी गरवा तपसी ने बाल ।
अवसर देखी ने गोचरीजी ल्ठे है कालो काल ॥ मुनि० ॥

४०—बाले नहीं ध्याभसाजी निदू पथ भम पाप ।
बाधतो बाल करे नहीजी पावे है मवभव मात ॥ मुनि ॥

४१—साधु है अधन्य मम्मभिगाजी ओहुक उत्कृष्टा बाणु । —
समकित सत बांधे नहींजी पामसी पद निर्वाण ॥ मुनि० ॥

४२—तीजो ह मंगल साधुनोजी विनय करो अनुकूल । —
सात प्रकारे जिन कह्योजी विनय शासन रो मूल ॥ मुनि ॥

४३—त्रिविध छकाय हणवा तणाजी सुस किया नव कोटि ।
तिरिया तिर तिरसी कवाजी ज्ञान क्षमा तपी मोट ॥ मुनि ॥

४४—मुनि तणो मंगल मोटकोजी सुणो भणी धर प्रेम ।
ऋषि जयमलजी इम कहेजी वरते कुशल ने क्षेम ॥ मुनि ॥

---

* चतुर्थ—मंगलम् *

(केवली पन्नत्तो धम्मो मंगलम्)

दोहा—

१— चौथो मंगल चित धरो जो चाहो शिव-शर्म ।
समकित सहित समाचरो केवली भाखित धर्म ॥
२— केवली धम इसो कह्यो भाव सम्य ने दाय ।
त्रिविध त्रिविध धर्म कारणे मारणो जीव छकाय ॥

ढाल

(४)

(राग—देशी—हिवे आश्चर्य थयो ए)

१— चौथो मंगल धर्म नो ए, धर्म दयामय जाण ।
केवली इम कह्यो ए, न कर्यो छकाय नी घात ॥

२— धर्म आराधिये ए, धर्म ना चार प्रकार ।
ज्ञानी देवा इम कह्यो ए, दान शियल तप भाव ॥ धर्म० ॥

३— पाच महाव्रत आदरो ए, पालो पचाचार ।
बारे भेदे तप करो ए, श्रद्धा सेंठी धार ॥ धर्म० ॥

४— विरत करो श्रावक तणी ए, आदरो समकित सार ।
नव तत्व चित्त धरो ए, जो उतर्यो चाहो पार ॥ धर्म० ॥

५— अणगार ने आगार नो ए, धर्म तणा दोय भेद ।
शुद्ध करणी करो ए, राखो मुक्ति-उम्मेद ॥ धर्म० ॥

१-अहिंसा (दया)

६— देव गुरु धर्म कारणे ए, मत हणो छह काय ।
बोध छे दोहलो ए, इम कह्यो जिनराय ॥ धर्म० ॥

७— अग उपाग छेद में ए, मूल निश्चय व्यवहार ।
कोई जीव हणवो नहीं ए, ज्ञान तणो ए सार ॥ धर्म० ॥

८— सूत्र कुरान पुराण में ए, कह्यो दया धर्म सार ।
साचे मन श्रद्धहो ए, ज्यू पामो भव--पार ॥ धर्म० ॥

९— न हुवो न हुए न होसे वली ए, जैन सरीखो माग ।
झीणो कह्यो केवली ए, ऊडो घणो अथाग ॥ धर्म० ॥

१०—देवल प्रतिमा कारणे ए, पृथ्वी हणे ते नहिं शुद्ध ।
केवली इम कह्यो ए, विवेक विकल मद बुद्ध ॥ धर्म० ॥

११—कायरां रा हिया पड़े ए, मार्ग कठिन करूर ।
भाख्यो श्री केवली ए, इम श्रद्धसी कोइक सूर ॥ धर्म० ॥

१२—द्वीप समुद्र पल्य सागरू ए, सख्य असख्य अनत ।
पाला पुद्गल तणी ए, श्रद्धा राखो मति मत ॥ धर्म० ॥

१३—पुण्य योगे नर-भव लह्यो ए, सुणवो लह्यो सुलभ्य ।
केवलिया इम कह्यो ए, श्रद्धा परम दुर्लभ्य ॥ धर्म० ॥

१४ - छकाय री रक्षा करो ए, मेटो मन रो भर्म ।
आतम ने ऊधरो ए, धर्म तणो ए मर्म ॥ धर्म० ॥

१५—धर्म धर्म सहू को कहे ए, धर्म नो नाम छे मीठ ।
दया धर्म आदरो ए, कर्म हुवे छीट छीट के ॥ धर्म० ॥

३०—साचा रा सयण हुवे घणा ए, साचा रे न वधे वैर के ।
छल छिद्र नहीं हुवे ए, साच सू उतरे जहर के ॥ धर्म० ॥

३१—साहब रीझे साच सू ए, साच सू पण्डित रीझ के ।
गोली ठडो पडे ए, साच सूं उतरे धीज के ॥ धर्म० ॥

३२—शिष्य सुगुरु राजी हुवे ए, इण साच तणो परताप के ।
अलगो परिहरो ए, झूठ वचन महा पाप के ॥ धर्म० ॥

३३—तिण कारण इण सत्त सू ए राखो अधिको रग के ।
लाभ कह्यो घणो ए, ज्ञानी दश में अग के ॥ धर्म० ॥

३४—कर्म कटक दल मोडवा ए, झाली सत शमशेर के ।
देवी ने देवता ए, सत्य सू हुय जावे झेर के ॥ धर्म० ॥

३५—'अरणक' ने 'कामदेव' ने ए, देवता दु ख दीधो आय के ।
धर्म छोडन तणो ए, मुख सू न काढ्यो वाय के ॥ धर्म० ॥

३६—इत्यादिक मानव घणा ए, राखी अपणी लाज के ।
कष्ट सह्या घणा ए सत्य वचन के काज के ॥ धर्म० ॥

३—अस्तेय

३७—अण दीधो कोई ले तिणो ए, तिण में बतायो पाप के ।
अदत्त ने परिहरो ए, देवो मुगत री छाप के ॥ धर्म० ॥

३८—'अबड'रा शिष्य सातसे ए, राख्यो अचौर्य सू नेह के ।
उनाला रा जल विना ए, त्याग दीधी है देह के ॥ धर्म० ॥

३९—अन्न पाणी मिलवा तणो ए, नहीं देख्यो कोई सूल के ।
अदत्त ने कारणे ए, मरणो कर्यो कबूल के ॥ धर्म० ॥

४०—सूत्र सिद्धान्त में इम कह्यो ए, पाच प्रकार अदत्त के ।
जाणी ने परिहरो ए, शूरवीर मतिमत के ॥ धर्म० ॥

४—ब्रह्मचर्य

४१—चोथो व्रत छे मोटको ए, तेहनी छे नव वाड़ के ।
कठिन कह्यो केवली ए, दुक्कर दुक्कर कार के ॥ धर्म० ॥

४२—कायर सेती किम पले ए, मन्न रहे किम ठाम के ।
व्रत छे दोहिलो ए, शूरा हंदो काम के ॥ धर्म० ॥

३०—साचा रा सयण हुवे घणा ए, साचा रे न वधे वैर के ।
छल छिद्र नहीं हुवे ए, साच सू उतरे जहर के ॥ धर्म० ॥

३१—साहब रींझे साच सू ए, साच सू पण्डित रींझ के ।
गोलो ठडो पड़े ए, साच सू उतरे धीज के ॥ धर्म० ॥

३२—शिष्य सुगुरु राजी हुवे ए, इण साच तणो परताप के ।
अलगो परिहरो ए झूठ वचन महा पाप के ॥ धर्म० ॥

३३—तिण कारण इण सत्त सू ए राखो अधिको रग के ।
लाभ कह्यो घणो ए, ज्ञानी दश में अग के ॥ धर्म० ॥

३४—कर्म कटक दल मोडवा ए, झाली सत शमशेर के ।
देवी ने देवता ए, सत्य सू हुय जावे मेर के ॥ धर्म० ॥

३५—'अरणक' ने 'कामदेव' ने ए, देवता दु:ख दीधो आय के ।
धर्म छोडन तणो ए, मुख सू न काढ्यो वाय के ॥ धर्म० ॥

३६—इत्यादिक मानव घणा ए, राखी अपणी लाज के ।
कष्ट सह्या घणा ए सत्य वचन के काज के ॥ धर्म० ॥

३—अस्तेय

३७—अण दीधो कोई ले तिणो ए, तिण में बतायो पाप के ।
अदत्त ने परिहरो ए, देवो मुगत री छाप के ॥ धर्म० ॥

३८—'अवड'रा शिष्य सातसे ए, राख्यो अचौर्य सू नेह के ।
उनाला रा जल विना ए, त्याग दीधी है देह के ॥ धर्म० ॥

३९—अन्न पाणी मिलवा तणो ए, नहीं देख्यो कोई सूल के ।
अदत्त ने कारणे ए, मरणो कर्यो कबूल के ॥ धर्म० ॥

४०—सूत्र सिद्धान्त में इम कह्यो ए, पाच प्रकार अदत्त के ।
जाणी ने परिहरो ए, शूरवीर मतिमत के ॥ धर्म० ॥

४—ब्रह्मचर्य

४१—चोथो व्रत छे मोटको ए, तेहनी छे नव वाड़ के ।
कठिन कह्यो केवली ए, दुक्कर दुक्कर कार के ॥ धर्म० ॥

४२—कायर सेती किम पले ए, मन्न रहे किम ठाम के ।
व्रत छे दोहिलो ए, शूरां हदो काम के ॥ धर्म० ॥

४३—त्यागी वैरागी हुवा प संवेगी महाधोर के।
तिकांई शुद्ध पालमी प ओयो महाव्रत घोर के॥ धर्म ॥

४४—एह व्रत छे मोटको प लिया में पग आवे चूक के।
तो टिक्यो दोहिलो प हुय जावे टूक टूक के॥ धर्म ॥

४५—मर्यादा सू पालवो प, इण व्रत में नहीं आवे चूक के।
ओछो ही पग आवहे प तो मू डो जावे सूक के॥ धर्म ॥

४६—पछ्या पछ्या मे पग गया प हुय गया चकनाचूर के।
व्रत शुद्ध पालमी प, सत्यवादी कोई शूर के॥ धर्म ॥

४७—वाड सहित शुद्ध पालमी प न पडे वालुक पेच के।
वाड ने लोपसी प तो होसी गुरहा पंच के॥ धर्म ॥

४८—इण व्रत सू पडियां पछे प, कारी न लागे काम के।
कहा न जो पाळो मंडे प नवा देव न लखी माव के॥ धर्म ॥

४९—मर माटी आगे हुवा प व्रत पाळ्यो अणगार के।
कष्ट पडियां बकां प कर दीवा खेवो पार के॥ धर्म ॥

५०—कष्ट पडियां कायम रह्यो प, दृढ 'सुदर्शन सेठ के।
राणी 'अभया' मयी प कायद न दीनी फेट के॥ धर्म ॥

५१—शूळी देवा लाविया प, राजा कोप्यो आप के।
शूळी सिंहासन बण्यो प, शील तणा प्रताप के॥ धर्म ॥

५२—'राजमती' मोटी सती प राख्यो व्रत सू प्रेम के।
हेतु दृष्टान्त सू प, दृढ राख्यो 'रहनेम' के॥ धर्म ॥

५३—विजय सेठ 'विजया' सती प शुक्ल कृष्ण पख सार के।
सूस प्रगट हुवे प, व्रत पाळ्यो बहु वार के॥ धर्म ॥

५४—'मयण रेहा' ने 'नागिला' प, 'चंदना' 'सीता' 'द्रौपदी' नार के।
कष्ट में दृढ रही प जस फैल्यो संसार के॥ धर्म ॥

५५—बड़ा बड़ा जोगी अति प, दीवाई मर नार के।
शील व्रत पालने प, पाम्या भव सो पार के॥ धर्म ॥

५६—शील जिण शुद्ध पालियो प, समता रस भर पूर के।
पाम्या सुख शास्वता प, दुख सहू गया दूर के॥ धर्म ॥

५७—देव दानव ने गंधवा प, दीवाई सुर राय के।
ब्रह्मचारी तणा प गुणग्राई प्रणमें पाय के॥ धर्म ॥

५८—मोटा ब्रह्मचारी तणा ए सौंठा व्रत ना सूत के ।
मत्र मूठ नवि चले ए न लागे डाकण भूत के ॥ धर्म० ॥
५९—पाणी अगनी ने जहर नो ए, जोर न चाले कोय के ।
हाथी सूधो हुवे ए, सिंह बकरी सम होय के ॥ धर्म० ॥
६०—गुण ब्रह्मचर्य तणा घणा ए, पूरा कह्या नहीं जाय के ।
बत्तीसे उपमा ए, दशमा अंग रे माय के ॥ धर्म० ॥

५—अपरिग्रह

६१—परिग्रह व्रत पाचमो ए, तिण रा छे *तीन भेद के ।
परिग्रह परिहरो ए, राखो मुक्ति उम्मेद के ॥ धर्म० ॥
६२—कर्म तणो बध परिग्रहो ए, पटकावे ससार के ।
चारो ही गति माही ए, त्याग्या हुवे भव पार के ॥ धर्म० ॥
६३—पाप अठारे जिन कह्या ए, तिण में परिग्रह मोटो दाख के ।
इण सू छूटा विना ए, ओ जाय न सके मोक्ष के ॥ धर्म० ॥
६४—इसा परिग्रह के कारणे ए, देश विदेशों जाय के ।
जिके धन मानवी ए, छती दिये छिटकाय के ॥ धर्म० ॥
६५—साधुपणो जिन आदर्यो ए, तीन करण तीन जोग के ।
परिग्रह परिहर्यो ए, जाण ने मोटको रोग के ॥ धर्म० ॥
६६—कनक कामिनि कारणे ए, हुवे घणा सग्राम के ।
रात केई बच गया ए, तिण राख्यो मन ठाम के ॥ धर्म० ॥
६७—परिग्रह नी ममता थकी ए, तोड़े जूनी प्रीत के ।
तजि ने केई नीकल्या ए, गया जमारो जीत के ॥ धर्म० ॥
६८—भक्त सन्यासी सेवड़ा ए, लग्या परिग्रह री लार के ।
विटल हुवा घणा ए, गया जमारो हार के ॥ धर्म० ॥
६९—बडा बडा जोगी जति ए, नाम धरावे साध के ।
इण धन रे कारणे ए, करे घणा अपराध क ॥ धर्म० ॥
७०—परिग्रह रे वश मानवी ए, तिणा ऊपर लो तेह के ।
वाहला सज्जन भणी ए, तडके तोडे नेह के ॥ धर्म० ॥
७१—धन तणी मूर्छा थकी ए, देवे छे जीव जलाय के ।
कामण ने टूमणा ए, देवे गर्भ गलाय के ॥ धर्म० ॥

* सचित्त, अचित्त और मिश्र परिग्रह ।

८७—खोटा खत वणायने ए, खोसे पर नो माल के ।
इण धन रे कारणे ए, भव भव खोटा हवाल के ।। धर्म० ।।

८८—कूडा तोला मापला ए, ताकडी अतर काण के ।
इण धन रे कारणे ए भाजे राजारी डाण के ।। धर्म० ।।

८९—छींपा तेली तेरमा ए, भड़-भूजा लोहार के ।
इत्यादिक लोभथी ए, ज्यासू विणज व्यवहार के ।। धर्म० ।।

९०—मान वसे वेचे घणा ए, पन्द्रह कर्मादान के ।
लोभ के कारणे ए, विणजे सुलिया धान के ।। धर्म० ।।

९१—सात व्यसन सेवे घणा ए, इण परिग्रह के काज के ।
न्याती सजना तणी ए, काई न राखे लाज के ।। धर्म० ।।

९२—इण परिग्रह के कारणे ए, पेट जमारे जोग के ।
गले घाले मरे ए, घणा निकाले सोग के ।। धर्म० ।।

९३—परिग्रह में अवगुण घणा ए, पूरा कह्या नहीं जाय के ।
चतुर केई मीखजो ए, तीन मनोरथ माय के ।। धर्म० ।।

९४—परिग्रह रा प्रराग थी ए, भव भव में दुःख शूल के ।
ज्ञानी देवा इम कह्यो ए, परिग्रह अनर्थ रो मूल के ।। धर्म० ।।

९५—एहवो परिग्रह जाणने ए, ज्ञानी कर दीधो दूर के ।
शुद्ध साधु हुवे ए, समता-रस भरपूर के ।। धर्म० ।।

९६—भड उपगरण ने पातरा ए, गिणती सू अधिका होय के ।
ज्ञानी परिग्रह कह्यो ए, मुर्छा मत करो कोय के ।। धर्म० ।।

६—रात्रि—भोजन—विरमण

९७—छट्ठो व्रत रयणी तणो ए, भोजन रो परिहार के ।
करो कोई मानवी ए, खेवो हुय जावे पार के ।। धर्म० ।।

९८—साभ पडया भोजन करे ए, तथा आथमते सूर के ।
केवलिया इम कह्यो ए, साधुपणा सू दूर के ।। धर्म० ।।

९९—भूख तृषाथी पीडिया ए जीवडो नीकल जायके ।
पाणी रयणी समे ए, नहीं घाले मुख माय के ।। धर्म० ।।

१००—रात्री-भोजन करतां थका ए मकड़ी कुलातरो खाय के ।
गलित कोढ उपजे ए, गलरस थी भर जाय के ।। धर्म० ।।

जय–वाणी

(२)

सज्झाय

५— इरियावही पडिक्कमणो करता, मत आणो मन खेदो।
कहता मिच्छामि दुक्कड़ लागे, भिन भिन सुणजो भेदो ॥ भवि० ॥

६— 'कर्म-भूमि' ना पनरे लेखा, तीस 'अकर्मी' लेख।
छप्पन होय 'अतरद्वीप' ना सर्व एक सौ ने एक' ॥ भवि० ॥

७— 'अपर्याप्त' 'पर्यापत' करता नरना 'दोय से दोय'।
'असन्नी' नरना अपर्यापता, 'एक सौ ने एक होय' ॥ भवि० ॥

८— 'भवनपति' 'व्यतर' ने 'जोतषी', भेद 'विमाणिक' पावे।
सुर वर ते मिलने सगला, नाम 'निनाणू' आवे ॥ भवि० ॥

९— अपर्यापता पर्यापता करता, 'एक सौ ने अठाणु'।
'तीन सो ने तीन' लारला मेल्या, 'पाच से एक' जाणु ॥ भवि० ॥

१०—इण रीते अपर्यापता पर्यापता, 'सात नरक' ना लेवा।
'पाच से ने पनरे' उपरे, एवा जीव कहेवा ॥ भवि० ॥

११—'पृथ्वी' 'अप' तेऊ' ने 'वायु', 'वनसपति ने 'विगला'।
'पाच से तियालीस' ऊपर, जीव थया छै सगला ॥ भवि० ॥

१२—'जलचर' 'थलचर' 'उरपर 'भुजपर', पाचमा 'खेचर' आया।
'पाच से ने त्रेसट' ऊपर, सर्व जीव धड़े लगाया ॥ भवि० ॥

१३—'अभिहया' ने आद देई ने, 'वत्ररोविया' तक लीजे।
'पाच हजार' ने 'छ से' ऊपर, 'तीस' मिच्छामि दुक्कड़ दीजे ॥भवि०॥

१४—'राग' 'द्वेष' वस जीव हणे छे, प्राणी एहले 'साठ'।
'इग्यारे हजार दोय से' ऊपर, वली मेलीजे 'साठ' ॥ भवि० ॥

१५—'करण' 'करावण' ने 'अनुमोदन', एह ने त्रिगुणा लेणा।
'तेतीस हजार सात से असी', मिच्छामि दुक्कड देणा ॥ भवि० ॥

१६—एक भेद ने तिगुणा करता, 'मन' 'वचन' ने 'काया'।
'एक लाख ने एक हजार, तीन से चालीस' आया ॥ भवि० ॥

१७—'अतीत' 'अनागत ने 'वर्तमान', हण्या हणे ने हणसी।
'तीन लाख ने च्यार हजार, वीस' ऊपरे भणसी ॥ भवि० ॥

१८—'अरिहतादि पाच' पदांनी, 'आतम' नी वलि साख।
'सहस चोवीस एक सो वीस, धुर अठारे लाख' ॥ भवि० ॥

८—'नदाश्कि' तेरे हुई बीजी
ज्यारी धर्म माहे भीजाणी मींजी
राजम ले इन्द्रिय वश करती ॥ समरू ॥

९—'तेविस' श्रेणिकनी भज्जा
चदनवाला पे थई श्रज्जा
मुक्ति गई सब कर्म हती ॥ समरू ॥

१०—'भग्गू' घर 'जस्सा' घरणी
'कमलावती' आतम उद्धरणी
प्रतिबोध्यो 'इखुकार' पती ॥ समरू ॥

११—राजम लीधो धर्म प्रेमी,
जिण डिगतो राख्यो 'रह नेमी'
जगमें जस लीधो 'राजमती' ॥ समरू ॥

१२—छोड दिया सब घर फदा
श्री वीर तणी माता 'देवा नदा'
पाली समिति सब गुपती ॥ समरू ॥

१३—'चदणा' कष्ट सह्या रे घणा
भावे कर बाकुला उड़द तणा
प्रतिलाभ्या जेणे वीर जती ॥ समरू ॥

१४—प्रथम थानक नी दाता
पाली शुद्ध प्रवचन माता
प्रश्न पूछिया जिण जयवती ॥ समरू ॥

१५—बेटी सहसानिक राय तणी,
राणी 'मृगावती' नणद भणी
'जयंती' कर्म जीत करी फती ॥ समरू ॥

१६—नारद आया नहीं ऊठि जरे,
'द्रोपदी' ने ले गयो समुद्र परे ।
मरजाद न मूकी मतिवती ॥ समरू ॥

१७—छठ छठ पारणो कीधो
पाणी माही घोली अन्न लीधो ।
सील पाल्यो द्रुपदी सती ॥ समरू ॥

२८—शीले कर अजना धुर साची,
जिणरी कीरत जुग में चाची।
जायो जिणे 'हनुमत्' वीर जती ॥ समरू ॥

२६—वधविये वेहरखा आप्या,
शका पडया कन्ते कर काप्या।
नवा कर आया 'कलावती' ॥ समरू ॥

३०—काचे तार सू जल काढ्यो
चंपापुरी 'सुभद्रा' जस चाढ्यो।
परशसे परजा भूमिपती ॥ समरू ॥

३१—'जबू' नो कही 'आठे नारी',
मारग पामी सुध तत सारी।
साभल जम्बूनी आठ कथी ॥ समरू ॥

३२—तीर्थ कर पदवी पासी,
भव एक करी ने मुगति जासी।
शुद्ध पाक विहरायो 'रेवन्ती' ॥ समरू ॥

३३—'चेलणा' राणी अने 'ज्येष्ठा'
श्रुत धर्म तणी रही शुद्ध चेष्टा।
'शिवा' 'सुज्येष्ठा' 'प्रभावती' ॥ समरू ॥

३४—'सुभद्रा' शालिभद्रनी बहिन सती,
पारख्या कीधी 'धन्ने' परती।
चित्त चूक न बोली मुख चलती ॥ समरू ॥

३५—राय हरिचदनी 'तारा' राणी,
मोल लेइ ने ब्राह्मण घर आणी।
पिण राख्यो शील डिगी न रती ॥ समरू ॥

३६—'कौशल्या' दशरथ नी कान्ता,
महिमा घर राम तणी माता।
ससार सराई शीलवती ॥ समरू ॥

३७—लका सुख छोडी व्रत लीधो,
करणी कर करम दूरे कीधो।
'मदोदरी' शील सदा सुगति ॥ समरू ॥

५— देवादिक उपसर्ग न्याप्यां सू, विल विल न करे हारी रे ।
मूंढा माहे थी गाल न काढे, खमेज समता भारी रे ॥

६— समता भावे शीलज पाले, कुबुद्धि संग निवारी रे ।
आराधीजे मोख रो मारग, करमा ने परजारी रे ॥

७— मुहादाई ने मुहाजीवी ले, निर्दूषण आहारी रे ।
निर्जरा हेते करे तपस्या, फिर फिर न करे हारी रे ॥

८— माहो माहे थलावे न भातो, न करे तोड़ा फाडी रे ।
मोटा जोध मोह में वासी, तेहने दे विड़ारी रे ॥

९— आगे आगे रे बोत डिगाया, ए कामणी कामण गारी रे ।
ऋषि 'जयमलजी' कहे इण ने त्यागी, ज्यारी जाऊ बलिहारी रे ॥

---

(५)

❁ दीवाली ❁

१— दिवाली दिन आवियो, राखो धर्म सू सीर ।
'गोतम' केवल पामिया, मुगत गया 'महावीर' ॥

२— भजन करो भगवत रो, गणधर 'गोतम' स्वाम ।
तिरण तारण जग परगस्या, लो नित्य प्रत्ये नाम ॥

३— दिवाली रो दिन बड़ो, जाडा मत करो पाप ।
निद्रा विकथा परिहरो, करो जिनजी रो जाप ॥

४— सामायिक पोसा करो, पडिक्कमणो दोय काल ।
इम आतम ने ऊधरो, भूठी मत करो भिकाल ॥

५ — 'नवमल्ली' ने 'नवलच्छी', देश अठारे ना राय ।
श्री वीर समीपे आय ने, दीधा पोसा ठाय ॥

६— काती वद अम्मावसे, टाली आतम दोष ।
भवजीवा ने तार ने, श्री वीर विराज्या मोख ॥

७— देव देवी तिहा आविया, लागी जगमग जोत ।
वले विशेषे वहु हुवो, रतना तणो उद्योत ॥

८— 'देव-श्रमण' प्रतिबोधवा, गयाज 'गोतम' स्वाम ।
'वीर' मोख गया [illegible] ॥

५— देवादिक उपसर्ग व्याप्या सू, चिल चिल न करे हारी रे ।
मूंढा माहे थी गाल न काढे, खमेज समता भारी रे ॥

६— समता भावे शीलज पाले, कुबुद्धि राग निवारी रे ।
आराधीजे मोख रो मारग, करमा ने परजारी रे ॥

७— मुहादाई ने मुहाजीवी ले, निर्दूपण आहारी रे ।
निर्जरा हेते करे तपस्या, फिर फिर न करे हारी रे ॥

८— माहो माहे थलावे न भातो, न करे तोडा फाडी रे ।
मोटा जोध मोह में वामी, तेहने दे विडारी रे ॥

९— आगे आगे रे वीत डिगाया, ए कामणी कामण गारी रे ।
ऋषि 'जयमलजी' कहे इण ने त्यागी, ज्यारी जाऊ बलिहारी रे ॥

---

(५)

❀ दीवाली ❀

१— दिवाली दिन आवियो, राखो धर्म सू सीर ।
'गोतम' केवल पामिया, मुगत गया 'महावीर' ॥

२— भजन करो भगवत रो, गणधर 'गोतम' स्वाम ।
तिरण तारण जग परगस्या, लो नित्य प्रत्ये नाम ॥

३— दिवाली रो दिन बडो, जाड़ा मत करो पाप ।
निद्रा विकथा परिहरो, करो जिनजी रो जाप ॥

४— सामायिक पोसा करो, पडिक्कमणो दोय काल ।
इस आतम ने ऊधरो, झूठी मत करो झिकाल ॥

५ — 'नवमल्ली' ने 'नवलच्छी', देश अठारे ना राय ।
श्री वीर समीपे आय ने, दीधा पोसा ठाय ॥

६— काती वद अम्मावसे, टाली आतम दोप ।
भवजीवा ने तार ने, श्री वीर विराज्या मोख ॥

७— देव देवी तिहा आविया, लागी जगमग जोत ।
वले विशेषे बहु हुवो, रतना तणो उद्योत ॥

८— 'देव-श्रमण' प्रतिबोधवा, गयाज 'गोतम' स्वाम ।
'वीर' मोक्ष गया जाण ने, पाछो आया तिण धाम ॥

२३—हिंसा सू देव राजी हुवे, इसड़े भरोसे मत भूल ।
साचे मन नवकार गुण, इसा चढावो फूल ॥

२४—दुःख किणने देणो नहीं, प्रवचन शुद्ध दढाय ।
ज्ञान दर्शन चारित्र भला, ए तू आखा चढाय ॥

२५—श्री सीमधर आदि दे, जघन्य तीर्थङ्कर वीस ।
अढी द्वीप में प्रगट्या, जयवन्ता जगदीश ॥

२६—नीपण चोलण माडणे, जीवा रा करो रे जतन्न ।
भव भमता दुलहो लह्यो, मानव भव रतन्न ॥

२७—कहे दिवाली दिन मोटको, वाधे पापा रा पूर ।
इम करता रे प्राणिया, शिवपुर रहेला रे दूर ॥

२८—काया रूपी हवेलिया, तपस्या करने रेल ।
[1]सूस वरत कर माण्डणों, विनय भाव वर वेल ॥

२९— क्षमा रूप खाजा करो, वैराग्य घृतज पूर ।
उपशम मोवण घालने, मन्वो मोतीचूर ॥

३०—भाव दिवाली इम करो, उतरया चाहो पार ।
जप तप किरिया भाव सू, लाहो लोनी लार ॥

३१ —दिवाली दिन जाणने, धन पूजे घर माय ।
इम तू धर्म ने पूज ले, ज्यों अमरापुर में जाय ॥

३२—राखे रूप चवदश दिने, गहणा कपड़ा री चूप ।
ज्यों चूप राख धर्मसू, दीपे अधिको रूप ॥

३३—परव दिवाली जाण ने, तिलकज काढे सार ।
ए जैनधर्म तिलक समो, आदरया खेवो पार ॥

३४—पर्व दिवाली ने दिने, पूजे वही लेखण ने दोत ।
ज्यू तू धर्म ने पूजले, दीपे अधिको जोत ॥

३५—पर्व दिवाली जाण ने, उजवाले हवेली ने हाट ।
इम तू व्रत उजवाल ले, बन्धे पुनारा ठाट ॥

३६—धन धान त्रिया बालक सजन, व्हाला लागे तोय ।
जैसो नेह कर धर्म सू ज्यों मुगति तणा सुख होय ॥

---

[1] सोगन, व्रत, प्रत्याख्यान

३७—आम्बो बर्ये उतावळो बहुली सब वो रात ।
कोई धर्सेवाळी चालसी तो बरसी झकाबा री पात ॥

३८—ध्यान सम्यक्त्व तणा गुणो गुण्यो बोल मैं चाक ।
भो दिन है देवां तयां । तू देवाळो मन चाव ॥

३९—गरज दिखाळी जाय मे, सारी पासा मन चूक ।
धर्म ध्यान करो मझो भो तू लखे छे चूक ॥

४०—चैत सुदी तैरस दिने जन्म्या श्री महावीर ।
काती बद अमावस दिने गौतम केवल धीर ॥

४१—मनुष्य जन्म है दोहिलो पाम्यो आरज खेत ।
जोग मिल्यो साधु तणो राख धर्म सू हेत ॥

४२—सेवा करो सुगुरां तणी गयो मन पाछो फेर ।
शेष बची ग्रह माम सू ‾ नाकरवाळी फेर ॥

४३ भंग उपांग मन्थ छेर में जीव दया परधान ।
ऋषि 'जयमलजी' इम कहे पेसी दिखाळी तू माम ॥

---

(६)

❀ चन्द्रगुप्त राजा के सोलह सपने ❀

दोहे—

१— पाटली पुर नाम नगर, चन्द्रगुप्त तिहाँ राय ।
सोलह सपना देखिया पाछली पोयह माँय ॥

२— तिण काल ने तिण समे बंध सर्व परिवार ।
'भद्रबाहु' समोसर्या पाटली बाग मझार ॥

३— 'चन्द्रगुप्त' वन्दन गयो, बैठी परिषदा आय ।
मुनिवर दे धर्म देशना सगळा ने हित लाय ॥

४— चन्द्रगुप्त कहे कर जोड़ने सांभळो मुनिराय ।
मैं सोले सपना देखिया म्हारा अर्थ दीजो सुणाय ॥

५— बसता मुनिवर इम कहे सांभळ तू राजान ।
सोळ सुपनां रा अरथ दक चित राखो ध्यान ॥

प्रारम्भ

(१)

१— दीठो सुपनो पेलडो, 'भागी कल्पवृक्ष' डालो रे ।
राजा राजम लेसी नहीं, दु खमी पाचमें कालो रे ॥
२— चन्द्रगुप्त राजा सुणो, कहे भद्रबाहु स्वामी रे ।
चवदे पूरबना धणी, तीन ज्ञान अभिरामी रे ॥

(२)

३— 'सूरज अकाले आथम्यो', जेहनो ए फल जोयो रे ।
जाया पंचम कालना, ज्याने केवलज्ञान न होयो रे ॥चद्र०॥

(३)

४— तीजे 'चन्द्रमा चालनी', तिणरो ए फल आसी रे ।
समाचारी जुई जुई, बारोल्या धर्म थासी रे ॥चद्र०॥

(४)

५— 'भूत भूतणी दीठा नाचता, चोथे सुपने राय जोसी रे ।
कुगुरु कुदेव कुधर्मनी, घणी मानता होसी रे ॥चद्र०॥

(५)

६— 'नाग दीठो बारे फुणो, पाचमें सुपने भाली रे ।
कितराइक वरसा पछे, पडसी बारे काली रे ॥चद्र०॥

(६)

७— 'देव विमाण वल्यो' छठे, तिणरो सुणो राय भेदो रे ।
जघा विद्या चारणी, जासी लब्धि विछेदो रे ॥चद्र०॥

(७)

८— 'ऊगो उकरडी मध्ये, सातमें कमल' विमासी रे ।
च्यारु ई वर्णा' मध्ये, वाण्या जिनधर्मी थासी रे ॥चद्र०॥
९— हेतु कथा ने चौपाई, तवन सभाय ने जोडी रे ।
इण में घणा प्रतिबोधसी, सूतरनी रुचि रेसी थोडी रे ॥चद्र॥
१०— एको न होसी सऊवाणियाँ, जुदा जुदा मत थापी रे ।
खांच करसी आपो आपणी, करसी थाप उथापी रे ॥चद्र०॥

(८)

११— दीठो सुपनो आठमो, 'आगिया नो चमत्कारो' रे ।
अल्प उद्योत [illegible] रे ॥चद्र०॥

२५— कितराइक साधु साधवी, द्रव्ये लेमी भेपो रे ।
आम्रा थोडी मानसी, सीख दिया करसी धेपो रे ॥चद्र०॥

२६— आकुल व्याकुल वाछसी, गुरवादिक नी घातो रे ।
शिष्य अविनीत इसा हुसी, गलियार गधानी जातो रे ॥चद्र०॥

(१३)

२७— महारथ जुत्या वाछडा वालुडा धर्म थासी रे ।
कदाचित् बूढा करे तो, परमाद में पड जासी रे ॥चद्र०॥

२८— बालक बहु घर छोडसी, आणि वैराग भावो रे ।
लज्जा सजम पालसी, बूढा द्वेप स्वभावो रे ॥चद्र०॥

२९— सहु सरल नही बालका, घेटा नहीं सब बूढा रे ।
समचे ही ए भाव छै, अर्थ विचारो ऊडा रे ॥चद्र०॥

(१४)

३०— 'रतन भाखा' दीठा चवदमे, तिण सुपना रो ए जोरो रे ।
भरतक्षेत्र ना चारों सघमें रे, हेत मिलाप होसी थोडो रे ॥चद्र०॥

३१— कलह कराडवर करा, असमाधिक रा विपेको रे ।
ऊँधाकडा निरबुद्धिया करसी, वाका धेको रे ॥चद्र०॥

३२— वैराग्य भाव थोडो हुती, द्रव्य लिङ्गी भेप धारो रे ।
भली सीख देता थका, करसी क्रोध अपारो रे ॥चद्र०॥

३३— करसी प्रशसा आपरी, कपट वचन बहु गेरी रे ।
आचारी साधा तणा, उलटा होसी वेरी रे ॥चद्र०॥

३४— सूधो पथ प्ररूपसी, तिणसू मच्छर भावो रे ।
निंदक बहु साधा तणा, होसी द्वेप स्वभावो रे ॥चद्र०॥

३५— एक एक जीवडा एहवा, घाले घणाने शका रे ।
भेद घलावे साधा मध्ये, करमारे वश वका रे ॥चद्र०॥

(१५)

३६— 'रायकवर चढियो पाडिये' सुपने पनरमें देख्यो रे ।
गज जिम जिन धर्म छोडने, और धर्म विपेखो रे ॥चद्र०॥

३७— न्याय मार्ग थोडो हुसी, नीची गमसी वातो रे ।
कुबुद्धि घणा मानीजसी, तांच ग्राही पर घातो रे ॥चद्र०॥

५२— अथिर माया ससार नी, आप कह्यो जिनरायो रे ।
दयाधर्म सुध पालने, अमरा पदमें जायो रे ।।चद्र०।।

५३— ए सोले सुपना सुणी करी, सिंह जेम पराक्रम करसी रे ।
जिनजी रा वचन आराधसी, ते शिव रमणी ने वरसी रे ।।चद्र०।।

५४— व्यवहार सूत्रनी चूलिका मध्ये, भद्रबाहु कियो विचोरो रे ।
तिण अनुसारे माफके, रिख 'जयमलजी' करि जोडो रे ।।चद्र०।।

---

(७)

❀ धर्म महिमा ❀

दोहे—

१— देव, गुरु ने धर्मनी, सरधा राखो ठीक ।
मुक्ति मार्ग में जावता, मोटो एह मगलीक ।।

२— मगल नाम कहिये घणां, ए संसार ने माय ।
मोटो मगल धर्म है, मुक्ति नगर ले जाय ।।

प्रारम्भ

१— धम्मो मगल महिमा नीलो, धर्मे नवनिध होय ।
धर्मे दु ख दोहग टले, रोग सोग नहीं कोय ।।

२— धर्म धर्म बहुला करे, धर्म तणा बहु भेद ।
एक रुलावे संसार में, एक मुक्ति उमेद ।।

३— 'चक्रवर्ती दशे' हुआ, धर्म तणे परताप ।
आरभ परिग्रहो त्यागने, मोख विराज्या आप ।।

४— 'आदेशरजी' एडी कही, 'भरतादिक' सो भाय ।
धर्म तणे परभाव सू, मुगत विराज्या जाय ।।

५— 'दर्शाणभद्र' राय रिद्धतणों, अभिमान कीधो आप ।
'इन्द्र' ने पगे लगावियो, धर्म तणों परताप ।।

६— 'परदेशी' नृप पापियो, अविनीत ने अभिमान ।
इण धर्म तणे प्रसदथी, लह्यो 'सूर्याभ' विमान ।।

२२— नाण दर्शन चारित्र तणो मन वचन न काय ।
लोक व्यवहार वलि सातमो, विनय मार्ग दीपाय ॥

२३— साज सवारे बिहु टका, पडिकमणो शुद्ध ठाय ।
गोत्र तीर्थकर बाधसी, सदाज सुखिया थाय ॥

२४— मननी थिरता राख ने, ध्यान शुकलजी ध्याय ।
उतकृष्टो रस ऊपजे, तो तीर्थकर पद थाय ॥

२५— अणसण तप पहिलो कह्यो, छेलो विउसग्ग जाण ।
बारे भेदे तपस्या करो, ज्यों पहुचो निर्वाण ॥

२६— तन धन जोवन कारमो, न करो कोई गुमान ।
गोत्र तीर्थकर बांधसी, दोरे सुपात्र दान ॥

२७— वेयावच दश प्रकारनी, करजो चित्त लगाय ।
काइयक रसायण ऊपजे, दुःख दालिद्र दूरे जाय ॥

२८— मनुष्य जमारो पायने, कजियो राखो काय ।
चार तीर्थ सर्व जीव ने, सुख शाता उपजाय ॥

२९— ज्ञान विना ए जीवडो, रड़वडियो ससार ।
जो थारे तिरणो हुवे ज्ञान अपूर्व धार ॥

३०— रस त्यागो तपस्या करो, जिसी होवे सगत ।
टालो अविनय अशातना, सूत्रनी करो भगत ॥

३१— मिथ्यात मार्ग उथाप ने, समकित मारग थाप ।
गोत्र तीर्थङ्कर बाधसी, कटसी सगलो पाप ॥

३२— साचे मन आराधसी, खुलसी ज्ञान की जोत ।
वीसू ही बोलज सेवतां, बाधे तीर्थङ्कर गोत ॥

३३— दानशील तप भावना, शिवपुर मारग चार ।
साचे मन आराधता पामीजै भव पार ॥

३४— दान तणे परभावथी, पाम्यो 'सुबाहु' मान ।
सुमुख' ने भव साधु ने दीधो उत्तम दान ॥

३५— गवाल तणे भव साधुने, दीधो खीर नो दान ।
'शालिभद्र' नामे हुवो, 'श्रेणिक' दीधो मान ॥

३६— दीधा उडदना बाकला, वीर ने 'चन्दनबाल' ।
वृष्टि हुई सोवन्न तणी, वरत्या मगल माल ॥

३७— शास्त्र मांही इम भाख्यो दया प्रकारया चार।
समता मांही बताविओ अभयदान परचार॥

३८— 'जम्बू' कुंवर शील पालियो, छूटा भोग संजोग।
आठ रमणी प्रतिबोध ने छोड्यो दीमाएयो भोग॥

३९— 'विजय' सेठ 'विजया' सती सेठ 'सुदर्शन' सार।
आपस्थी आतमा उद्धरी शील तणो उपकार॥

४०— 'राजमती' ने 'चंदना' 'द्रोपदी' ने वलि 'सीत'।
यश फेल्यो संसार में शील तणो परतीत॥

४१— चेडानी सात सती वीर बतायी भात।
अती सती मो यश फल्यो, शील तणा परताप॥

४२— बेले बेले पारणो आंबिल अभिग्रह आहार।
वीर जिनेन्द्र बताविओ धन धन्नो अणगार॥

४३— 'खंदक' मुनिवर आपथी उतार गाली देह।
अच्युत देवलोके ऊपना चाव बासी मन नेह॥

४४— खाइ मवासा छीपिया कटे कर्मों का पाप।
लक्ष्मी अठाविस रूपसे तपस्या तणे परताप॥

४५— भावना भावतां 'भरतजी' 'कपिल' ब्राह्मण जाण।
केवलज्ञान उपाय ने पहुंता छे निर्वाण॥

४६— हाथी तणे होदे चढी प्रथम तीरथ ने जाण।
साथ सबी मुगती गई धन 'मोरा' देवी माय॥

४७— 'खंदक' ऋषि ने पांच सौ मुनि, 'सनत' 'गजसुकुमाल'।
बेहु भाई भावना मुगत गया तत्काल॥

४८— ए बारह मंगलीक है उत्तम चारु ही जाण।
चारों तणो सरणो करो भवों पहुंचो निर्वाण॥

○ कलश ○

१— ए मंगल आराधिने अनन्त जीव मुगते गया।
आप न समक्ता जावती सूत्र कथा में इम कह्या॥

२— अठारे से चिमालीसरे वर्षे कार्तिक सुद नवमी तणे।
पूज्य 'मुधरजी गुरु प्रसादे रिख 'जयमलजी' इम पर भणे॥

---

(८)

❀ चौबीस दंडक नी सज्झाय ❀

१— भगवन्त भाखे गोयमा रे लाल,
'गति आगति' नो विचार हो भविक जन ।
श्री जिनधर्म बाहिरे रे लाल,
जीव रुल्यो अनन्ती वार हो भविक जन ॥

२— पहिलो दण्डक 'नरक' नो रे लाल,
'भवनपति दश' जोय हो भविक जन ।
'पाच कह्या थावर' तणा रे लाल,
ए गिणती में सोले होय हो भविक जन ॥

३— 'बि' 'ति' 'चोइन्द्री' जीवडा रे लाल,
तिर्यञ्च ने नर ठीक हो भविक जन ।
'वाण व्यन्तर' ने 'जोतिपी' रे लाल,
चौविशमा 'विमाणीक' हो भविक जन ॥

४— छऊ ही नरका तणी रे लाल,
आगत गत दोय जाण हो भविक जन ।
सातमी री दोय आगती रे लाल,
गति एको परमाण हो भविक जन ॥

५ — 'भवणवई' 'व्यन्तर' 'जोतिपी रे लाल,
पहिलो दूजो देवलोक हो भविक जन ।
आगत कही दोनों तणी रे लाल,
गत पाचो नो थोक हो भविक जन ॥

६— पृथवी पाणी वनस्पति रे लाल,
चवने दशमें जाय हो भविक जन ।
नरक टले तेविसा तणो रे लाल,
इणमें उपजे आय हो भविक जन ॥

७— तेऊ ने वाऊ तणी रे लाल,
आगत कही दश हो भविक जन ।
गत कही नवा तणी रे लाल,
ए जीव रुल्यो परवस होय हो भविक जन ॥

८— थि ति चोइन्द्री जीवनी रे लाल
दश आगल मे गत हो भविक जन ।
तिर्यंच नी चोवीस कही रे लाल
गत आगत कही एम हो भविक जन ॥

९— चोवीसे गत मनुष्यनी रे लाल
बावीस मांहि थी आय हो भविक जन ।
समकित ना धर्म वाहिरा रे लाल
जीवड़ो एम भमाय हो भविक जन ॥

१०— दीशा सूं जे आतमा जगे रे लाल
गति आगति कही होय हो भविक जन ।
सब मांही से स्वार्थ सिद्ध थी रे लाल
एक मनुष्य हिज होय हो भविक जन ॥

११— दंडक चोवीसां ऊपरे रे लाल
भाव कथा सूत्र बार हो भविक जन ।
ऋषि जयमलजी जोड़ इम करे रे लाल
गर्व न करजो कोय हो भविक जन ॥

---

(९)

दृढ़-सम्यक्त्व

(तर्ज—ते गुरु मेरे उर बसो)

१— दृढ़ समकित नर थोड़ला इम भाख्यो जिनराय ।
दृढ़ समकित पावे जिके, जाणा शिवपुर जाय ॥ दृढ़

२— सर सर कमल न नीपजे वन वन चंदन न होय ।
घर घर सम्पति न पाइये जन जन पंडित न कोय ॥ दृढ़०

३— हीरां की हूंडी नहीं नहीं सूरां रा गाम ।
सिंहां का टोला नहीं साध नहीं ठाम ठाम ॥ दृढ़०

४— साधु राजा न्यायी नहीं नहीं राखे मरजाद ॥
सुगंध नहीं सहू फूल में फल फल मीठ सवाद ॥ दृढ़

५— पुरुष सहू सूरा नहीं, सती नहीं सहू नार ।
क्षमावत मुनि सहू नहीं जुदो जुदो आचार ॥ दृढ० ॥

६— समकितवत कहिये घणा, मरम जाणे छे कोय ।
कुल-रूढ़ि भुरसी पछे, लोह-वाणिया जोय ॥ दृढ० ॥

७— एक लाख उनसठ सहस, वीर ना श्रावक कहाय ।
लाख इग्यारे इगसठ सहस, गोशाला ना सुणाय ॥ दृढ० ॥

८— कुल जैनी कोडां हता, साधा ने माने न कोय ।
खोड़ काढे वर्तमान में, समकित किणविध होय ॥ दृढ० ॥

६— कुगुरा का बेहकाविया, हणे धरम-हित प्राण ।
जल थल भगी परवता, भटकत फिरे अजाण ॥ दृढ० ॥

१०—नाचे कूदे मोक्ष माग के, आरभ करे अनेक ।
जैन नहीं श्रो फैन है, आणो हिये विवेक ॥ दृढ० ॥

११—पाप अठारे नवि परिहरे, पढे पाठ ने अर्थ ।
ज्यां में ज्ञान जाणो मति, नहीं छे वे निर्ग्रन्थ ॥ दृढ० ॥

१२—पर ने परचावे घणू, पोते पाले नाहि ।
कुण माने जग की बातडी, मूढ पड़े फन्द माहि ॥ दृढ ॥

१३—आचारी शुद्ध आहारी भला, सत्यवादी विनीत ।
ते शुद्ध धर्मज भाखसी, जोवो सूत्र नचीत ॥ दृढ० ॥

१४—[1]तीजे सुपने चद्रमा, दीठो चालनी रूप ।
टोला साधां का जूजुवा, साचो धरम-सरूप ॥ दृढ० ॥

१५—भगवती में जूजुवा, क्यू हिक बोल में फेर ।
निन्हव सहु ने उथपे, ऐसो करे अधेर ॥ दृढ० ॥

१६—'सूयगडग' तेरमें (अ)ध्ययने, आगू च भाख्यो एह ।
जिण साधां पे धरम लही, निन्हव होवे तेह ॥ दृढ० ॥

१७—मद भाग्य करम के उदय, अहकार के वसि जोर ।
सीखविया दाखे छिद्र, गुरू ने कहे कठोर ॥ दृढ० ॥

१८—'गोष्ठमहिल' नी परे, गुरुनी [illegible]णा छोड ।
अहकारी आपणे मने, झूठी [illegible]नी झोड ॥ दृढ० ॥

---

1 चद्रगुप्त राजा का तीसरा सपना

३— लोक आछो कहे नहीं, लडता लिछमी नासे रे ।
दुख दारिद्र घरमें धसे, गुण रा पूर विणासे रे ॥ क्षमा० ॥

४— कोई वचन करड़ा कहे, अथवा आघा पाछा रे ।
क्षमा कियाँ शका नहीं, आगेई फल आछा रे ॥ क्षमा० ॥

५— क्रोधी नर कालो थको, विध री बात विगारे रे ।
आगो पाछो देखे नहीं, लाखिणी प्रीत गमारे रे ॥ क्षमा० ॥

६— क्रोध किया नफो नहीं, क्षमा किया सुख सारो रे ।
क्षमा करे क्रोध टाल ने, ते पामे भव पारो रे ॥ क्षमा० ॥

७—क्रोधी काम विगाड दे, रीस कियां देही छीजे रे ।
व्हाला पण वेरी हुवे, ऐसो काम किम कीजे रे ॥ क्षमा० ॥

८— शस्त्र ने विष खाई मरे, ओकर वचन रा बाधा रे ।
दव रा दाधा पालवे, नहीं पालवे जीभ रा दाधा रे ॥ क्षमा० ॥

९— क्रोध-दाहे दाधा नहीं, तिके रहे डेहडायमानो रे ।
सदा खुशाली ज्या रे खरी, क्षमा करो धरो ज्ञानो रे ॥ क्षमा० ॥

१०—मरण समय मूके नहीं, क्रोधी क्रोध विशेषो रे ।
नहीं खमावे चौमासी छमछरी, ऐसो राखे मूरख द्वेषो रे ॥ क्षमा० ॥

११—बाप, बेटो, सासु, बहू, गुरु चेलो भाई भाई रे ।
क्रोधे इसडा ऊबले, न गिणे नेड़ी सगाई रे ॥ क्षमा० ॥

१२—रोग सोग आवे नहीं, वैरी सज्जन होवे जेहो रे ।
सुख पावे सद्‌गति लहे, क्षमा किया फल एहो रे ॥ क्षमा० ॥

१३—क्रोधी फल पामे इसा घणो रोग ने सोगो रे ।
व्हाला सज्जन वीछड़े, मिले दुषमण रो जोगो रे ॥ क्षमा० ॥

१४—दुख पावे नर रीस थी भव भव में गति भूडी रे ।
हाण बढे, लोकां में हासो, थे अकल विचारो ऊडी रे ॥ क्षमा० ॥

१५—रूडो नर ते रीस थी, बोले करडा वेणो रे ।
हिलणा होवे लोक में, शत्रु करे सेणो रे ॥ क्षमा० ॥

१६—गुरु मावीत गिणे नहीं अविनीत ओगुण गारो रे ।
छादे चाले आपणे, बरज्यां करे विगारो रे ॥ क्षमा० ॥

१७—गुरु काढे गच्छ माहि थी, बाप काढे घर बहारे रे ।
लोक माहे फिट फिट हुवे, आलेय जमारो हारे रे ॥ क्षमा० ॥

३३—क्रोध किया नरके पडे, जिहा तो दुःख अपारो रे ।
छेदन भेदन वेदना, तिहा नहीं किण रो सारो रे ॥ क्षमा० ॥

३४—घर छोडी केई लडे, भावे गृही ज्यू बोले रे ।
भेख लजावे लोक में, वधे कठासू तोले रे ॥ क्षमा० ॥

३५—केई साध ने साधवी, देवे दुरासी ने गालो रे ।
मरम मोसा दाखे रीस थी, बोले आल पपालो रे ॥ क्षमा० ॥

३६—भेख लेई भोला थका, करे कजिया ने कारा रे ।
काण न राखे लोकरी, ते साधु नहीं ठगारा रे ॥ क्षमा० ॥

३७—जोम मांहे मावे नहीं, क्रोध अध विकरालो रे ।
न गिणे बडा रो कायदो, ते साधु नहीं चडालो रे ॥ क्षमा० ॥

३८—केई वडा सू वेढा वहे, सरस आहार ने हेतो रे ।
गुरू सू पिण गुदरे नहीं, लड काढे पाधरे खेतो रे ॥ क्षमा० ॥

३६—वस्त्र आहार काजे कजिया करे, वले नाम धरावे साधो रे ।
रसना रा लोलुपी थका, अजेम वरते असमाधो रे ॥ क्षमा० ॥

४० —केई देखता चाले आछी तरे, अण देखता चाल ऊधी रे ।
केवल ज्ञानी इम कह्यो, इणरी क्रिया कपट बूंदी रे ॥ क्षमा० ॥

४१—अवगुण काढ़े पार का हेता हेत न जाणे रे ।
परपूठे हलकी करे, ज्यारो विश्वास कोई न आणे रे ॥ क्षमा० ॥

४२—कोई बात कांई समचे कहे, क्रोधी आप में खांचे रे ।
तक्तो ने बकतो रहे, चोर तणी पर राचे रे ॥ क्षमा० ॥

४३—बाप बेटा दोनू लड पडे, गालम गाल्या आवे रे ।
रीस थकी सूझे नहीं, उल्टी माम गमावे रे ॥ क्षमा० ॥

४४—माय बेटा न कूटती, ले लकडी ने दौड़े रे ।
क्रोध सू पीड़ जां नहीं, नान्हा चूट पासु तोडे रे ॥ क्षमा० ॥

४५—भाई दुख दायी हुवे, अणख ईसको आणे रे ।
क्रोध मान माया लोभे भर्या, आप आपरी ताणे रे ॥ क्षमा० ॥

४६—बूढा ते लडता थकां लक्षण छोरा ना थायो रे ।
नान्हा पण क्षमा करे, ते वडा माणस कहवायो रे ॥ क्षमा० ॥

४७—सासु बहु ते लड़ पड़े, चुट्टा माहो माहिं झाले रे ।
लाज लोपी लोका तनी, हमें कहो कुण पाले रे ॥ क्षमा० ॥

६३—कालो मूंडो क्रोधी तणो, न गिणे सेण सगाई रे ।
काग ज्यूं कजिया करे, मुख सोभा देवे गमाई रे ॥ क्षमा० ॥
६४—रीस बसे कजिया करे, तोड़े जूनि प्रीतो रे ।
हेत मिलाप गिणे नहीं, नहीं राखे कोई रीतो रे ॥ क्षमा० ॥
६५—कौडी कारण लड़ पड़े, तोडे तिण सूं प्रीतो रे ।
रुपैये राड करे नहीं, ए उत्तमा की रीतो रे ॥ क्षमा० ॥
६६—मार कूट बाथा पड़े, देवे नरक री साई रे ।
ज्ञानी कहे ए मूरखा, यूं ही करे छोराई रे ॥ क्षमा० ॥
६७—धिग धिग क्रोधी जीवने, लड़ता लाज न आवे रे ।
वरजे तिण ने वेरी गिणे, कुढ कुढ रोस उठावे रे ॥ क्षमा० ॥
६८—क्रोधी जावे नरक में, सिंह सरप होवे नीचो रे ।
जिहा जाइ तिहा पर जले, मरेज भूंडी मीचो रे ॥ क्षमा० ॥
६९—तप जप युद्ध सब सोहिलो, पिण सभाव मरणो दोरो रे ।
पर ने परचावे घणो, आपो रमीजे ते थोरो रे ॥ क्षमा० ॥
७०—भूंडी भूंडी सहु ओपमा, दीधी क्रोधी नर ने रे ।
थोडे कह्या समझे घणो, सुख लो क्षमा करने रे ॥ क्षमा० ॥
७१—आछी आछी सब ओपमा, क्षमावत ने दीधी रे ।
अनत गुण छै एह में, गाढा चतुरा लीधी रे ॥ क्षमा० ॥
७२—रीस बसे मोटो मुनि धर्म ध्यान थी चूको रे ।
'प्रसन्नचद्र' मुनि तिण समे, मन सूं जूझण ढूको रे ॥क्षमा०॥
७३—'गजसुकुमार' कीवी क्षमा, तुरत फल लह्यो आछो रे ।
'सोमल' पापी दुर्मती, लही दुर्मति की लाछो रे ॥ क्षमा० ॥
७४—'खधक' कुंवर, मोटो मुनि, क्षमा कीधी भारी रे ।
मन माहे रोस आणी नहीं, देहनी खाल उतारी रे ॥ क्षमा० ॥
७५—'खधक' रिसी ना शिष्य पाच से, महा बुद्धिवता तापी रे ।
ज्या ने घाणी में पीलिया, ब्राह्मण 'पालक' पापी रे ॥ क्षमा० ॥
७६—रीस हुती खधक ऋषि सूं, पाच सौ पील्या साथे रे ।
तिणां मुनि क्षमा आदरी उण बांध्या करम माथे रे ॥ क्षमा० ॥
७७—क्रोध ने अलगो टालिये, अकल हिया में आणो रे
क्षमा करी सुख लो खरो, आच्छो मिलियो टाणो रे ॥ क्षमा० ॥

४८—नर्यांद मोखाचो मासखी करे देवरायी बेठाणी रे ।
पकड़ा कमावे रीस थी न गियां समरथ सहनांथी रे ॥ क्षमा ॥

४६—राज बड़े कुरी गारसू बास ग्राम मंडीजे रे ।
गम खाऊ गुण आगला क्यांमि लोक में शोभा कहीजे रे ॥ क्षमा ॥

५०—ठाम ठाम झगड़ा करे, बोले रीस रा भरिया रे ।
सु शुभ पाव बापड़ा क्रोध—आग में बलिया रे ॥ क्षमा ॥

५१—खिण तोला मासो खिणे बादी बड़ो विरोधी रे ।
पूरो किणसू न ऊतरे, भिरगो निपट क्रोधी रे ॥ क्षमा ॥

५२—टाटी रे टूटी पड़े भींत सहेती भारी रे ।
धोखा इस रा नहीं कम सके, करमेस भारी सारी रे ॥ क्षमा ॥

५३—मझो गमावे क्रोध सू आवे नरक दुवारे रे ।
सूलां के रे साथ सू ऊपर गुरजां की मारे रे ॥ क्षमा ॥

५४—क्रोधी सू क्रोधी मिले करड़ा करड़ा करम बंधावे रे ।
क्रोधी सू क्षमा करे, तो वेर बिखन सहि जावे रे ॥ क्षमा० ॥

५५—झगड़ो लगावे पर घरे, ते पापी दुख पासी रे ।
झगड़ो मिटावे पारको ते साधना सुख वासी रे ॥ क्षमा० ॥

५६—अधीरा नर अज्ञान वसे क्रोध अंध अपारो रे ।
वचन कहे अविचारियो पछे पिछतावे बारंबारो रे ॥ क्षमा ॥

५७—क्रोधी कुल कुल ने मरे, अवसर गमावे भारी रे ।
मूंडा दीसे लोक में नहीं देवे दोही पाडी रे ॥ क्षमा० ॥

५८—निज अवगुण सूझे नहीं पर ने लगावे दागो रे ।
सीख दियां झगड़ो पड़े आप भागो जागे रे ॥ क्षमा ॥

५६—सीख दियां क्रोधी माने लागो किस्सो संतापो रे ।
बतलांता बिलगे घणो बांभ कोप्यो काळो सांगो रे ॥ क्षमा ॥

६०—अपावृत्ता अवगुण करे आप देवे कोई धूरो रे ।
पर न संतावे द्वेष थी दुखी क्रोध में पूरो रे ॥ क्षमा ॥

६१—मूंडी मूंडी बोले गाळियां लाज आवे नहीं काई रे ।
लोक कहे ए सांभळा निठ्ठी करे लड़ाई रे ॥ क्षमा ॥

६२—बापा पण जाले बीक रे कुल दुख ने होवे काळो रे ।
पूंछी मनाड़ी सब पड़े पाले पंथी होंडी काळो रे ॥ क्षमा ॥

६३—कालो मूंडो क्रोधी तणो, न गिणे सेण सगाई रे ।
कागा ज्यूं कजिया करे, मुख सोभा देवे गमाई रे ॥ क्षमा० ॥

६४—रीस बसे कजिया करे, तोड़े जूनि प्रीतो रे ।
हेत मिलाप गिणे नहीं, नहीं राखे कोई रीतो रे ॥ क्षमा० ॥

६५—कौडी कारण लड पड़े, तोडे तिण सू प्रीतो रे ।
रूपैये राड़ करे नहीं, ए उत्तमा की रीतो रे ॥ क्षमा० ॥

६६—मार कूट बाथा पड़े, देवे नरक री साई रे ।
ज्ञानी कहे ए मूरखा, यूं ही करे छोराई रे ॥ क्षमा० ॥

६७—धिग धिग क्रोधी जीवने, लडतां लाज न आवे रे ।
वरजे तिण ने वेरी गिणे, कुढ कुढ रोस उठावे रे ॥ क्षमा० ॥

६८—क्रोधी जावे नरक में, सिंह सरप होवे नीचो रे ।
जिहा जाइ तिहा पर जले, मरेज भूंडी मीचो रे ॥ क्षमा० ॥

६९—तप जप युद्ध सब सोहिलो, पिण सभाव मरणो दोरो रे ।
पर ने परचावे घणो, आपो रमीजे ते थोरो रे ॥ क्षमा० ॥

७०—भूंडी भूंडी सहु ओपमा, दीधी क्रोधी नर ने रे ।
थोड़े कह्या समझे घणो, सुख लो क्षमा करने रे ॥ क्षमा० ॥

७१—आछी आछी सब ओपमा, क्षमावत ने दीधी रे ।
अनत गुण छै एह में, गाढा चतुरां लीधी रे ॥ क्षमा० ॥

७२—रीस बसे मोटो मुनि धर्म ध्यान थी चूको रे ।
'प्रसन्नचद्र' मुनि तिण समे, मन सू जूझण ढूको रे ॥क्षमा०॥

७३—'गजसुकुमार' कीवी क्षमा, तुरत फल लह्यो आछो रे ।
'सोमल' पापी दुर्मती, लही दुर्मति की लाछो रे ॥ क्षमा० ॥

७४—'खधक' कुंवर, मोटो मुनि, क्षमा कीधी भारी रे ।
मन माहे रोस आणी नहीं, देहनी खाल उतारी रे ॥ क्षमा० ॥

७५—'खधक' रिसी ना शिष्य पाच से, महा बुद्धिवता तापी रे ।
ज्या ने घाणी में पीलिया, ब्राह्मण 'पालक' पापी रे ॥ क्षमा० ॥

७६—रीस हुती खधक ऋषि सू, पाच सौ पील्या साथे रे ।
तिणा मुनि क्षमा आदरी उण बाध्या करम माथे रे ॥ क्षमा० ॥

७७—क्रोध ने अलगो टालिये, अकल हिया में आणो रे
क्षमा करी सुख लो खरो, आच्छो मिलियो टाणो रे ॥ क्षमा० ॥

(११)

❀ पन्द्रह परमाधर्मी देव ❀

[राग.—कोयलो पर्वत धूंधलो रे लाल]

१— परमाधर्मी देवता रे लाल,
ज्यां की पनरे जात हो-भविक जन ।
मार देवे पापी जीवने रे लाल,
करे अनन्ती घात हो-भविक जन ।
नरक तणा दुख दोहिला रे लाल ॥

२— 'आमे' देवता कोप करी रे लाल,
हण ने उछाले आकाश हो-भ० ज० ।
पडता ने मेले त्रिशूल सू रे लाल,
देवे पापी ने त्रास हो भ० ज० ॥नरक०॥

३— 'आमरसे' देवता कोपियो रे लाल,
कुटका करे तिल मात हो भ० ज० ।
कलकलता ऊना करी रे लाल,
पकडी पापी ने खवात हो भ० ज० ॥नरक०॥

४— 'सामे' देवता कोप सू रे लाल,
कर धरे करिखात हो भ० ज० ।
पेट फाड़े ऊभो राखने रे लाल,
काढे पापी री आंत हो भ० ज० ॥नरक०॥

५— 'शबले' देवता ऊतावलो रे लाल,
नाडी कूसे ले हाथ हो भ० ज० ।
मार पछाडे तडफडे रे लाल,
वलि चपेटा लात हो भ० ज० ॥नरक०॥

६— 'सद्दे देवता रीस सू रे लाल,
शस्त्र खड्गविस्तार हो भ० ज० ।
छेदे भेदे शरीर ने रे लाल,
देवे पापी ने मार हो भ० ज० ॥नरक०॥

७— 'विसद्दे' देवता कोप सू रे लाल,
ऊठ्यो असुर करूर हो भ० ज० ।

मुद्गर मही लोकन्य रे लाल
मांहि करे चकचूर हो म व ॥नरक॥

८— 'काले' देवता कोपियो रे लाल
एकल कुम्भी में बाल हो म व ।
अगनी लगावे आकरी रे लाल
करे भवारी हाल हो म व ॥नरक॥

९— महाकाले देवता कोप सू रे लाल
मांस काटी सुला-सेक हो म व ।
खवावे पापी जीवने रे लाल
जब बल तो विरोध हो म व ॥नरक॥

१०—'असि' देवता रीस सू रे लाल
खड्ग आयुध ले हाथ हो म व ।
कटका करीने बिखेर दे रे लाल
करे पापी की घात हो म व ॥नरक॥

११—'धनु' देवता कोपियो रे लाल
पान जिसा शस्त्र बनाय हो म व ।
माथा सू मांसे उपरे रे लाल
छिन छिन करे काय हो म व ॥नरक॥

१२—'कुम्भ' में देवता कोप करी रे लाल
पकुम चढाई ने तीर हो म व ।
वाये वायस लोचने रे लाल
बींधे पापी को शरीर हो म व ॥नरक॥

१३—'बालु' देवता कोप सू रे लाल
करेव लाली सार हो म व ।
मड़लो करे पापी जीवनो रे लाल
ऊपर लगावे मार हो म व ॥नरक॥

१४—'वैतरणी' देवता कोपियो रे लाल
वैक्रिय वैतरणी बणाय हो म व ।
दुर्गन्ध भरी काया नीचले रे लाल
नाखे पापी ने मांय हो म० व ॥नरक॥

१५—'खरसरे' देवता कोप करी रे लाल
करे सिलाली आसार हो म व ।

घींसे पापी रा पग बाधने रे लाल
नाखे ले दूसार हो भ० ज० ॥नरक०॥

१६—'महाघोसे' देवता कोपियो रे लाल,
कूटी घाले कुभी माय हो भ० ज० ।
न्हासण ने सेरी नहीं रे लाल,
मार देवे यम राय हो भ० ज० ॥नरक०॥

१७—ऐसा दुखा सूं डरपने रे लाल,
कीजो धरम सू प्रेम हो भ० ज० ।
सत शील दया आदरो रे लाल,
रिख 'जयमलजी' कहे एम हो भ० ज० ॥नरक०॥

---

(१२)

*गौतम-पृच्छा

(*राग—ढोला रामत ने परी छोडने*)

१— गौतम सामी पूछा करे,
सूत्र भगवती माय हो ।
स्वामी ! प्रत्येक मास रो बाल को,
नरक किसी विध जाय हो ॥
सामी अर्ज करूं थासू विनती ॥

२— वीर कहे राय ने घरे,
कोई राणी रा गर्भ माय हो ।
गौतम ! बालक आइने,
उपनो दोय महिना रो थाय हो ॥
गौतम ! वीर कहे गौतम सुनो ॥

३— उण बालक रा तात ऊपरे,
फोजा मारण धाय हो ।
गोतम ! माता ने चिंता घणी,
जब गर्भ में वैक्रिय वणाय हो ॥गो० वीर०॥

---

* *भगवती शतक १ उद्देशक ७*

(१८)

*गौतम-पृच्छा

दोहा—

१-- गौतम साम पूछा करे, सूत्र भगवती माय ।
तीनू ही इन्द्रा तणी, ते सुणज्यो चित्त लाय ॥

[राग —सामी म्हारा राजा ने धरम सुणावजो]

१— हाथ जोडी गौतम कहे,
नामी वीर ने सीम हो सामी० ।
दोनू इन्द्रज मोटका,
शक्र ने वली ईश हो सामी० ॥

२— हू अरज करू थासू वीनती,
दोनू ही देवलोग हो सामी० ।
ऊचा नीचा किम अछे,
कह्यो हथेली नो जोग हो सामी० ॥
गौतम उपगारी इम उपदिसे ॥

३— दोनूं ही इन्द्रा के हुवे,
माहो माही मेलाप हो सामी० ।
हा, गौतम ! मेलो हुवे,
कहे जिणेसर आप हो ॥ गौ० उ० ॥

(प्र०) ४-- पहिला देवलोक को धणी,
ईशान पे जाय चलाय हो सामी० ।
आदर के अण आदरे,
पैसे दोढी माय हो ? ॥सा० हू अरज०॥

(उ०) ५— वीर कहे आदर दिया,
विण आदर नहीं जाय हो गोयम० ।
'ईशो' शक्रनी दोढिया,
विना कह्या धस जाय हो ।
गोतम पुण्याई ईसा की घणी ॥

---

* भगवती ३-१ ।

४— सेवा काढ मे मुख करे,
फोडा ओहली होय हो।
गौतम ! वीर कहै मारका लगी
तीव्र प्रमाने बोल हो ॥ गौ वीर ॥
५— आर्त रौद्र ध्यान की
मरने मरके जाय हो।
गौतम ! प्रत्येक मास रो बालको
बमतो गर्भ के मांय हो ॥ गौ वीर ॥
६— वले गौतम पूछा करे,
बालक गर्भ के मांय हो।
सामी ! प्रत्येक मास रो मर करी
देव लोके किम जाय हो ॥ सा स्वर्ग ॥
७— बलता वीरजी इम कहे,
धर्म कथा सुणे साय हो।
गौतम ! सुणने वैराग ऊपजे
हिवडे हर्षित थाय हो ॥ गौ० वीर ॥
८— जैसा प्रणाम माता तणा
तेसा गर्भ रा होय हो। _
गौतम ! केहनो मन ते धर्म सू
सरवा इम जोय हो ॥ गौ वीर ॥
९— इसरा में जो काल करी
गर्भ मांहि करे काल हो।
गौतम ! देव लोके जाय ऊपजे
पाम सुख रसाल हो ॥ गौ वीर ॥
१०—इम जाणी धरम कीजिये,
राखो ऊजल प्रणाम हो।
भविजन पोसह पडिकमणा करो
पामों अविचल ठाम हो ॥ सा भ ॥
११—जोड करी छे गुणा सू
साभल जो चित लाय हो।
रिख 'जयमल'जी इम कहे
एसा धर्म री चाय हो ॥ भ वीर ॥

(प्र०) १४—वलि गौतम पूछे वीर ने,
विनय करी शुभ विध हो सामी० ।
तीजे सुर इन्द्र पूर्वे,
कैसी पुन्याई कीध हो ॥ सा० हू० ॥

(उ०) १५—घणा साधु ने साधवी,
श्रावक श्राविका सार हो गौतम ।
साता सुख पथ्य को
हितनो वाछण हार हो ॥ गौ० उ० ॥

(प्र०) १६—कहे गौतम आयु कितो,
चवने जासी केत हो सामी० ।
(उ०) वीर कहे सागर सात को,
चव जासी महाविदेह खेत हो ॥गौ० उ०॥

१७—इम जाणी ने चेतजो,
कीजो धरम रसाल हो गौतम ।
रिख 'जयमलजी' इम कहे
पामो सुख रसाल हो ॥ गौ० उ० ॥

---

(१४)

❀ पाप-फल ❀

[राग —चित्तोड़ी राजा रे]

१— सुसाडा करता रे,
सुर शेष धरता रे,
दश दिन का भूखा रे,
खावण ने टूका रे,
कूकारे पाड़े-कहे देव छोडावजो रे ॥

२— साभल बहु आया रे,
दोड़ी ने धाया रे,
दांतां सू काटे रे,
वेर आगला वाढे रे,
कुण काढ़े-ए नर बलवंत इसो रे ॥

६— हा हा मुख जपे रे,
थर थर ने कपे रे,
न्हासी जो जावे रे,
पिण जावण न पावे रे,
हा हा मैं हिंसा रे पाप कैसा किया रे ॥

१०— आसूडा झरता रे,
घणी रीवां करता रे,
भाला सूं भेदे रे,
तरवार सू छेदे रे,
केई मार पचावे कुंभी माहे घाल ने रे ॥

११— जीव मार्या हितियारे रे,
पाप लागा लारे रे,
झूठ बहुला बोल्या रे,
मरम पारखा खोल्या रे,
कीधा वले खोटा कर्मज चीकणा रे ॥

१२— देव कहे किण भरमायो रे,
तू किण विध आयो रे,
मानव भव पायो रे,
मूरख यूं ही गमायो रे,
नर भव लाधो धर्म करि सक्यो नहीं रे ॥

१३— कुगुरां भरमायो रे,
अधर्म पापे आयो रे,
द्वेष धरमी सू धरता रे,
निंदा अछती करता रे,
सतगुरां रा वचन हिये नहीं भणिया रे ॥

१४— पछतावो करता रे,
मन खेद धरता रे,
कदि छूटका थावा रे,
नरभव अमें पावा रे,
कदे मनुष्य जनम लही सफलो करां रे ॥

९— हा हा मुख जपे रे,
थर थर ने कपे रे,
न्हासी जो जावे रे,
पिण जावण न पावे रे,
हा हा मैं हिंसा रे पाप कैसा किया रे॥

१०— आंसूड़ा झरता रे,
घणी रीवा करता रे,
भाला सू भेदे रे,
तरवार सू छेदे रे,
केई मार पचावे कुंभी माहे घाल ने रे॥

११— जीव मार्या हितियारे रे,
पाप लागा लारे रे,
झूठ बहुला बोल्या रे,
मरम पारखा खोल्या रे,
कीधा वले खोटा कर्मज चीकणा रे॥

१२— देव कहे किण भरमायो रे,
तू किण विध आयो रे,
मानव भव पायो रे,
मूरख यूंही गमायो रे,
नर भव लाधो धर्म करि सक्यो नहीं रे॥

१३— कुगुरां भरमायो रे,
अधर्म पापे आयो रे,
द्वेष धरमी सू धरता रे,
निंदा अछती करता रे,
सतगुरां रा वचन हिये नहीं भणिया रे॥

१४— पछतावो करता रे,
मन खेद धरंता रे,
कदि छूटका थावा रे,
नरभव अमें पावां रे,
कदे मनुष्य जनम लही सफलो करां रे॥

१५— पहला मरक दुलां सूं करमी र
करणी धरम की करमी रे,
साधां की सेवा रे,
जिण सूं शिव सुख लेवा रे,
तिण सूं रिख 'जयमलजी' कहे धरम न च्यारो रे ॥

---

(१५)

❀ पाप-परिणाम ❀

[राग—हम चला मत ने परवाने]

१— धरम के हेत करे जीव की हाँसा
ते होसी आँधा न काणा रे ।
फिर फिर माँगसी घर घर दाणा
वेचसी ईंधण-काणा रे ॥

२— पाप तणा फल देखो रे प्राणी
पाप सम दुख कोई रे ।
रोता रोता बीते दुमना
मार न पूछे कोई रे ॥ पाप ॥

३— रोग आवे बले बहरा ने बोला
गूंगा मूंगा बहका बोला रे ।
लूला टूटा फरत डोला
कूबड़ा कूबड़ा भोला रे ॥ पाप ॥

४— बेटी में निकले कुलखण खोड़ा
मार आवे माथा जोरा रे ।
दिन निकले नहीं भोका टोरा
[illegible] काटे फेरा रे ॥ पाप ॥

५— रोग आवे दारिद्री दोमागी
सूं जीवां घड़े लागी रे ।
नहीं मिले कपड़ा ने माथे पागी
चिरत हिंसा की लागी रे ॥ पाप ॥

६— पूर्वे पूरी दया नहीं पाली,
नारी मिली कंकाली रे ।
नाक में नहीं मिले पहिरण वाली,
जीमण ने नहीं मिले थाली रे ॥ पाप० ॥

७— इण भव परभव सू नहीं डरती,
बोल घुरका करती रे ।
बात बात माहे लडती,
आ कुवे बावडी पडती रे ॥ पाप० ॥

८— नारी आख्या काढे राती,
परतख बाले छाती रे ।
अरु वरु थे देखो वाती,
मरने दुर्गती जाती रे ॥ पाप० ॥

६— मरि जाये पिता ने माता,
पुत्र त्रिया राता रे ।
मरि मरि पावे नीची जाता,
अनत ससारी थाता रे ॥ पाप० ॥

१०—इम जाणी ने दया पालो,
हिंसा जीवा की टालो रे ।
हिंसा सू दुर्गति में जासी,
दया सू शिव पद पासी रे ॥ पाप० ॥

११—किण रा काका ने किण री काकी,
मूल न जाणो बाकी रे ।
जो स्वारथ पूगे नहीं जाको,
तो सगला ही जावे थाकी रे ॥ पाप० ॥

१२—किण री बेटी ने किण रा बेटा,
जीवन चेतो धेठा रे ।
करि रह्यो घणा सट्टा पट्टा,
ले रह्यो काल लपेटा रे ॥ पाप० ॥

१३—बेहती वेला में धरम कीजो,
दान सुपातर दीजो रे ।
रिख 'जयमलजी' कहे मति खीजो,
लाहो सुकृत नो लीजो रे ॥ पाप० ॥

———

(१६)

❀ न सा जाई न सा जोणी ❀

दोहा—

१— आदि अनादि जीवड़ो भमियो चउ गति मांय ।
अरहट घटिका नी परे, मरि आवे ईली जाय ॥

२— पृथिवी पाणी अग्नि में वायु वनस्पति काय ।
त्रस रा भेद अनेक छे ते सुणजो चित लाय ॥

(१)

(राग—मने म्हल लपेट्या लेतो)

१— विकलेन्द्रिय की बहु जातो रे
न्यारा न्यारा भेद कहातो ।
पांचे जात रा तिरजंचो रे
ज्यां रे न्यारो न्यारो संचो ॥

२— मनुष्य तणा बहु भेदो रे,
चौमास को करि उमेदो ।
जीव कुण कुण जाती पामी रे,
जिसड़ा बताया स्वामी ॥

३— न सा जाई न सा जोणी रे
इत्यादिक सूत्र मांहि भाखी ।
श्री जिनराज—धर्म नहीं कीनो रे,
तिण भव भवा सांगज कीना ॥

४— एको मेण्या जोरी मे मीलो रे,
चोर भेर कहावे जीलो ।
बाम्बरी कोली भंगी मेनासिया रे,
आहेड़ी मांस रा रसिया ॥

५— गासीगर ने ठगवाजी रे
चीड़ीमार सुरता ने काजी रे ।
कहिया कबीक मे कसाई रे
तुरक हूम धंधी ने नाई ॥

६— धोबी सवणीगर न्यारा रे,
नाई नीलगर पींनारा ।
सकलीगर गाछा ने घोसी रे,
कल्लाल तरमा मोची ॥

७— रेबारी कावर ने वारी रे,
गूजर दरजिया ने वाजारी ।
कीरतन्या गांम करासी रे,
हुओ कीर कुजरो घासी ॥

८— मसाणिया ने कारटिया रे,
वले जट वणे ते जटिया ।
कुभार सिरावा सोनारो रे,
हुवो नायक भार-लदारो ॥

९— एतो सोदागर गचारा रे,
खारोल लखारा कचारा ।
जट जाट सीखी कायथ रे,
चारण भोजक ने नायत ॥

१०— वले वेश्या दूती ने दाई रे,
भाटण देवी महमाई ।
केई कूड़ा बोला कपटी रे,
पर-दारा काछ लपटी ॥

११— कुव्यसनी ने वले चुगलो रे,
तुरक मुसलमान ने मुगलो ।
एतो मेघवाल बेजारा रे,
ओड सिलावट चेजारा ॥

१२— वणकर जुलावा ने सैदो रे,
दीवान फकीर ने कैदो ।
गतराडा कागा जलाल्या रे
वले भाड भगेरा ने काल्या ॥

१३—नट गोडिया ने गवार्या रे,
एतो वहीभाट पचार्या ।
डवगर डूम डाहर ने भरवा रे,
कवहीक भाट जीभका सरवा ॥

(१६)

❀ न सा जाई न सा जोणी ❀

दोहा—

१— आदि अनादि जीवड़ो भमियो चउं गति मांय।
अरहट घटिका नी परे, भरि आवे रीती जाय॥

२— पृथिवी पाणी अग्नि में वायु वनस्पति काय।
त्रस रा भेद अनेक छे ते सुणज्यो चित लाय॥

(१)

(*तर्ज—थारे झाल लपेटा लेतो*)

१— विकलेन्द्रिय की बहु बातो रे
न्यारा न्यारा भेद बतायो।
पांचे जात रा तिर्यंचो रे,
ज्यां रो न्यारो न्यारो संचो॥

२— मनुष्य तणा बहु भेदो रे,
सांभल जो धरि उमेदो।
जीव कुल कुल जाता पांमी रे,
भिमता भटका नामी॥

३— न सा जाई न सा जोणी रे,
इत्यादिक सूत्र मांहि भाखी।
श्री जिनराज-धर्म नहीं कीनो रे,
तिण नव नवा सांगड़ कीना॥

४— ज्यो नया चोरी में भीनो रे,
चोर भेद बणाड़े डीको।
बावरी कोली भंगी भमभिया रे,
भाड़ली मांम रा रसिया॥

५— गामीगर में ठगबाजी रे,
चीड़ीमार मुल्ला ने काजी रे।
खटिका खटीक ने कसाई रे
तुरक डूम नमी ने नाई॥

६— धोबी सवणीगर न्यारा रे,
नाई नीलगर पीनारा ।
सकलीगर गाछा ने घोसी रे,
कल्लाल तरमा मोची ॥

७— रेवारी काबर ने बारी रे,
गूजर दरजिया ने बाजारी ।
कीरतन्या गाम करासी रे,
हुओ कीर कुंजरो घासी ॥

८— मसाणिया ने काराटिया रे,
वले जट वणे ते जटिया ।
कुंभार सिरावा सोनारो रे,
हुवो नायक भार-लदारो ॥

९— एतो सोदागर रचारा रे,
खारोल लखारा फचारा ।
जट जाट सीखी कायथ रे,
चारण भोजक ने नायत ॥

१०— वले वेश्या दूती ने दाई रे,
भाटण देवी महमाई ।
केई कूडा बोला कपटी रे,
पर-दारा काछ लपटी ॥

११— कुव्यसनी ने वले चुगलो रे,
तुरक मुसलमान ने मुगलो ।
एतो मेघवाल बेजारा रे,
ओढ सिलावट चेजारा ॥

१२— वणकर जुलावा ने सैदो रे,
दीवान फकीर ने कैदो ।
गलराडा कागा जलाल्या रे
वले भाड भंगेरा ने काल्या ॥

१३—नट गोड़िया ने गवार्या रे,
एतो बहीभाट पवार्या ।
डबगर डूम डाहर ने भरवा रे,
कवहीक भाट जीमका सरवा ॥

१४— हुआ माजीगर रावलिया रे
मद मांस खावण न हिसिया ।
गायन-कंचनियां पातर रे,
मालजादां मीठुव पंसारा ॥

१५— गंधप भटियारा कठियारा रे
भराघा कसारा ठंठारा ।
मढिया ने बिणजारा रे,
बले नायक मार-कतारा ॥

१६— पखा मणिहार ने पसारी रे
रूपरिया चमीवरा-भारी ।
कुमारा कपारा कासडिया रे,
रैवयमीदार वसडिया ॥

१७— रंगरेज छींपा ने लोहारो रे, —
माली दरजी ने सुनारो ।
मद माट मोपा ने भरडा रे,
गरबा देवां रा गुरडा ॥

१८— पंडाल भंगी ने संगी रे
हुवो सुमति-संग कुसंगी ।
मीणा सूं ही मीची बावो रे,
सुपढां री अपरम बालो ॥

१९— सांसी कंजर सरगरा ने ढाढी रे,
इत्यादिक बाला काढी ।
जगतीरा मवी दीपक मान्या रे,
पव मीन बोलियो पान्या ॥

२०— ब्राह्मण क्षत्रिय ने वाणिया रे
एह वर्ण चारे ही माणवा ।
मीन व्यास पुरोहित हुवो रे,
जोशी विप्र बेस्यो जुवो ॥

२१— हुवो हाकिम ने हुलकारो रे, —
बले दफ्तर खान-खजानो ।
बले चाकरीया चमीनो रे
हलकारो दरोगो पीपो ॥

२२— कारकूट ने कोटवालो रे,
फोजदार ने देश-रुखालो ।
बगसी हुवो दीवाणो रे,
इम खान-सामा पिण जाणो ॥

२३— हुवो दोढीदार सिकदारो रे,
चाकर हमाल कहारो ।
महावत हुवो वले साणी रे,
चरवादार चोपदार जातां ए जाणी ॥

२४— कदे होय गयो राय हजूरी रे,
कबीटबियो करे मजूरी ।
उमराव हुवो सिरदारो रे,
खवास ने सेज-वरदारो ॥

२५— कब होय गयो मोटो ठाकर रे,
कब होय गयो गरीबो चाकर ।
नाजर खोजा ने खवासी रे,
राणी धाय बडायण दासी ॥

२६— नर खापा खोचा खरडा रे,
कर दड लगाया करड़ा ।
चोदरी कायथ पटवारी रे,
मापायत सादा चारी ॥

२७— छांडी राहगिरी घड़वाई रे,
शाह नगर-सेठ पदवी पाई ।
सायर कोटवाली लीधी रे,
हुवो प्यादो चाकरी कीधी ॥

२८— हुवो हुँडीवाल मुकारी रे,
जोखम लीवी करडी छाती ।
कदे माडी दुकाना कोठी रे,
हुवो पोटलियो लदे पोठी ॥

२९— कदे च्यारे किराणा भरिया रे,
एतो जहाज समुद्रे खडिया ।
हुवो बजाज सरापी रे,
घुर बोहरा पूजी आपी ॥

३८— कभी महाराजा की राणी रे,
कब ढोयो पर घर पाणी ।
कबहीक हुई सेठाणी रे,
कदि होय गई मेहतराणी ॥

३६— कदे लाखा हजारा नर जीमे रे,
जीभ करे चभोला घी में ।
कब हीक नहीं मिल्यो लुखो रे,
बले तुछ धान ते सूको ॥

४०— हुवो बाप निर्धन बेटो भारी रे,
इम पीढ्या दर पीढ्या विचारी ।
भारी गेहणा ने तुररा टाग्या रे,
कदे घर घर दाणा माग्या ॥

४१— कब हुई हजारा गाया रे,
कब छाछ ने पर घर जाया ।
जीव बहोतर कला भणायो रे,
कदे ठठो मींडो नहीं आयो ॥

४२— कदे रूप चद्रमा सो मूडो रे,
कदे दीठा ही लागे भूडो ।
कदे देव आनुपूर्वी आवे सामी रे,
कदे हुवो नरक रो कामी ॥

४३— जीव आधो हुवो कदे बोलो रे,
आंख में फूलो डबकडोलो ।
हुवो बांगो मुगो ने गूगो रे,
कदे डंबक डील हुरदगो ॥

४४— हुवो रोग पाम ने खसरो रे,
जीव दुख सह्यो परवश रो ।
कदे पेट आफरो बोजो रे॥
कपण वाय डील रे सोजो ॥

४५— कदे खाधा जटे नहीं आहारो रे,
हुवो फेरो वारवारो ।
अजीर्ण वाय ओकारी रे,
हुवो अरस ने नासूर भारी ॥

५४— जीव अडसठ तीरथ भेट्या रे,
पिण मन रा शल्य नहीं भेट्या ।
जो जीवदया नहीं पाली रे,
तो यूंही भम्यो चकवाली ॥

५५— ए शिव रा भेखज जाणो रे,
सुणजो जैन तणा प्रमाणो ।
श्रीपूज्य दिगम्बर पड्या रे,
ज्या के साथे रहे जल-जंड्या ॥

५६— करे उच्छाह पग-मडा रे,
चऊ सघ मिलत है तंडा ।
वधाईदार वधाई पावे रे,
हरसे करी पूज वधावे ॥

५७— नाम यति महातमा सामी रे,
घर रहित केई कामी ।
किण ही ओघो मुखपती झाली रे,
केई द्रव्य राखे केई खाली ॥

५८— ए द्रव्ये जैनधर्म पायो रे,
भाव विना सिद्ध न कायो ।
एतो भेख लेई ने पाले रे,
तिके जिन्न मारग उजवाले ॥

५९— केई कुल जैन रा तीरथ जाणी रे,
हिंसा करी धर्म मन आणी ।
आबू शत्रुञ्जय गिरनारो रे,
चोथो समेतशिखर विचारो ॥

६०— अष्टापद गिर ने भेट्यो रे,
अतर मिथ्यात न मेट्यो ।
मांहिलो नहीं जाण्यो ममो रे,
तिण ने असल न आयो धर्मो ॥

६१— फन्दे पायो सुर अवतारो रे,
जिहा नाटक ना धुकारो ।
मुख आगल ऊभी रहे देवी रे,
तत्ता थई थई नाटक करेवी ॥

६२— देव शय्या सिंहासन बायो रे,
बाये छगा दशोदिशा मास्यो ।
गम कोट मेरुसापत भंगवाई रे
पस्य सागर की थित पाई ॥

६३— पिच दुखो शाग न मायो रे,
तो सुर-भव थूंही गमायो ।
ज्योतिषी मे भवनपती रे
व्यंतर हुवो बार अनंती ॥

६४— व्यंतर भीचो पद पायो रे,
लागे जुगाया मे आयो ।
देवें मंत्र बे म्यारा रे,
गेलायाँ करे पचारा ॥

६५— पकड़ी बासडा मुख पासे रे,
पिशु देव को बोर न चाले ।
मठो देव हुवो बमधारी रे,
देसमी मनुष्यां हमारत पारी ॥

६६— कोई देव रतन ले आवे चोरी रे,
पड़े इन्द्र बज्र मारे बोरी ।
ते तो बुमाखो केरी दीधो रे
पाम्यो बार अनंती प बीयो ॥

६७— मनी तिर्यञ्च रे भव आयो रे,
ऊंच नीच जातों प पायो ।
ऊंच हाथी घोड़ों री जातो रे,
पया मेवा मसीना बाखो ॥

६८— मारे कौतक फोगो भागो रे
न्यारि पासे पया मर बागे ।
ज्यां के गाम हजारां रा पद्म रे
बारे पुरुष संप्या गहगहा ॥

६९— नीच में कूकर कागो रे,
खर मकसूत अभागो ।
एक तिरयंच की गति पामी रे,
रुलियो अनंती बार भव मामी ॥

७०— पछे नरक तणी गति लाधी रे
पापी जीव मारा बहु खाधी ।
साता माहे अधिकी अधिकी रे,
बहु मारा पडे विधि विधि की ॥

७१— तीना ताई परमाधामी रे,
च्यारा में आहमी साहमी ।
पडी पल्य सागर की मारो रे,
थोड़ी तोही दश हजारो ॥

७२— ए च्यारे ही गति भूरी रे,
सुख दुख पाम्या भरपूरी ।
पुन्य रा फल लागा मीठा रे,
पाप रा फल दुष्ट अनीठा ।

७३— पुढवी-पाणी, तेऊ वायो रे,
वनसपति जुदे दाणे आयो ।
एक एक काय रे मायो रे,
सर्गणी असख्याती जायो ॥

७४— वनसपती में काल अनतो रे,
आप भाख गया भगवतो ।
इम भमियो आदि अनादि रे,
नरभव जोगवाई लाधी ॥

७५— इम जाणी धरम आराधी रे
अनता शिव गति लाधी ।
गया जाय अनता जासी रे,
सासता शिव सुख पासी ॥

७६— कदाच शिवसुख में नहीं जावे रे,
तोही ससार रा सुख पावे ।
देवसू चवी अवतार लीधो रे,
जिणरे आगे सच्यो धन सीधो ॥

७७— महल भूहरा बाग बारी रे,
मिले पशु चाकर धन भारी ।
मित्री न्यातीला हितकारी रे,
ऊच गोत्र वर्णन भारी ॥

४— 'औद्देशिक' आदेय,
'मोल' रो लियो न लेय।
'नित्य-पिंड' जाणियो ए,
'साहमो' आणियो ए।

५— 'जीमे नहीं राते भात',
धोवे नहीं पग ने हाथ।
गध कसवोही सही ए,
फूल-माला पहिरे नहीं ए।

६— न लेवे वीजणे वाय,
स्निग्ध वासी न रखाय।
भाजन गृही थको ए,
जीम्या होवे व्रत-धको ए।

७— राज-पिंड शुक्रकार,
एहवे न लेवे आहार।
मर्दन नही करे ए,
दातण परिहरे ए।

८— गृही ने न पूछे साता सुख,
आरीसादिक में मुख।
साधु ने नहीं जोवणो ए,
सावधान होवणो ए।

९— न रमे पासा सार,
जूवे जीपण हार।
शिर छत्र नहीं धरे ए,
वैद्यक रो परिहरे ए।

१०— पावडी ने पेंजार,
पहिरे नहीं पगा मझार।
अग्नि आरंभ सहीए,
दीवो करे नहीं ए।

११— शय्यातर-पिंड न खाय,
मांचादिक नहीं बेसाय।
घर गृही तणे ए,
बैसे नहीं सुपने ए।

२०— ए सूत्र मे बावन बोल,
टाले साधु अमोल।
खप करे घणी ए,
पहुँचे शिवपुर भणी ए।

२१— ए बावन बोल प्रमाण,
निर्ग्रन्थ निश्चय जाण।
संयम में रक्त घणा ए,
हलवा उपगरण तणा ए।

२२— पंच आस्रव ने ढाक,
मन में नहीं राखे वाक।
छकाया रक्षा करे ए,
पंचेन्द्रिय संवरे ए।

२३— पंच समिति समेत,
पाले मुक्ति ने हेत।
तीने गुप्ति गोपवे ए,
पर ने नहीं कोपवे ए।

२४— टाले चार कषाय,
ममता मोह मिटाय।
उपसर्ग आन्या नहीं चलेए,
काम-राग नहीं कले ए।

२५— छेद भेद टोला माय,
पाड़े नहीं मुनिराय।
पक्षपात नहीं करे ए,
निंदा परिहरे ए।

२६— बडों रो विनय विवेक,
राखे नरमाई विशेप।
अहंकार तजे ए,
मृपा थकी सही लजे ए।

१२— पीठी न कराय अंग
गृही-अभ्यञ्जन-संग।
करे करावे नहीं ए
आत म अपावे सही ए।

१३— मिन पानी न नहाय
गृही के शरणे नहीं जाय।
रोग में पीड़ियो ए
परीषह सीड़ियो ए।

१४— मूल मालो सूरण-कंद
इक्षु — खंड प्रचंड।
अग्नुन मूला वली ए
फल बीज पुष्प-फली ए।

१५— सेंधव सैंधव जाण
भागर रो परमाण।
समुद्र-खार जाणियो ए
कालो लूण भाखियो ए।

१६ — गृह स्वयं सभी से जाव
अनेक जीव साक्षात।
धूप न लेवे सुखी ए
वमन न करे दुखी ए।

१७— गला इठका केरा
कदाचित् शुभ सवेरा।
ते संवारे नहीं ए
विरेचन लेवे नहीं ए।

१८— अंजन न आंखे आंज
मसी न लगावे दांत।
शुश्रूषा देह तणी ए
वरजी शासन के धणी ए।

१९— पहिरे नहीं हीर न चीर
शोभा न करे शरीर।
अठार मठारिया ए
श्री वीर जिन धारिया ए।

२०— ए सूत्र में बावन बोल,
टाले साधु अमोल।
खप करे घणी ए,
पहुँचे शिवपुर भणी ए।

२१— ए बावन बोल प्रमाण,
निर्ग्रन्थ निश्चय जाण।
संयम में रक्त घणा ए,
हलवा उपगरण तणा ए।

२२— पंच आस्रव ने ढाक,
मन में नहीं राखे वाक।
छकाया रक्षा करे ए,
पंचेन्द्रिय संवरे ए।

२३— पञ्च समिति समेत,
पाले मुक्ति ने हेत।
तीने गुप्ति गोपवे ए,
पर ने नहीं कोपवे ए।

२४— टाले चार कषाय,
ममता मोह मिटाय।
उपसर्ग आव्या नहीं चलेए,
काम-राग नहीं कले ए।

२५— छेद भेद टोला माय,
पाड़े नहीं मुनिराय।
पक्षपात नहीं करे ए,
निंदा परिहरे ए।

२६— बड़ाँ रो विनय विवेक,
राखे नरमाई विशेष।
अहंकार तजे ए,
मृषा थकी सही लजे ए।

३४— न करे गृही ना काम,
खुशामदी नहीं ताम।
आवो जावो न बोलवे ए,
पर गुण नहीं ओलवे ए।

३५— सरल सभाव विशाल,
आतापन ले कालो काल।
बरसाले आतम दमे ए,
परीषह सहू खमे ए।

३६— ब्रह्मचर्य पाले नव बार,
संयम सतरे प्रकार।
बारह भेदे तप करे ए,
भव भव पातिक झरे ए।

३७— पाले पंच आचार,
बरजे विकथा चार।
पर अवगुण नहीं गहे ए,
शुद्ध मारग वहे ए।
कर्म आठे दहे ए॥

३८— निर्मोही नीराग,
कनक कामिनी रो त्याग।
छोडी रिद्ध छती ए,
संवेगी शुद्ध यती ए।
पाप न लगावे रती ए॥

३९— नहीं देवे पर ने दुःख,
किण री न राखे रूख।
शत्रु ने मित्र सम गिणे ए,
देशना निरवद भणे ए।
षट जीवा ने नहीं हणे ए॥

४०— मोहनीय कर्म चंडाल,
सात दे तेहने टाल।
राग-द्वेष परिहरे ए,
सब दुख क्षय करे ए।
मुक्ति रमणी वरे ए॥

५— एक एक मानव एहवा जी, रोग सोग नहीं थाय ।
एकीकाँ का डील को जी, टसको कदे न जाय ॥रे प्रा० पा०॥

६— एकण एकण के धन मोकलो जी, कह्यो कठा लग जाय ।
एक एक निर्धन एहवा जी, उधारो ही न मिलाय ॥रे प्रा० पा०॥

७— एक एक बत्तीसे अग भण्या जी कहे ठामो जी ठाम ।
एकण के पूरा नहीं चढे जी, छकाया का नाम ॥रे प्रा० पा०॥

८— एकण रे बेटा घणा जी, घर अन को संकोच ।
एकण रे घर में घणी जी, तो एक बेटा कोई सोच ॥रे प्रा० पा०॥

६— एक नर ने नारी मिली जी, हसती बोले जी बेण ।
एकीका ने इसड़ी मिली जी, दाँठां वले ज नेण ॥रे प्रा० पा०॥

१०— एक घर घोडा - गज घणा जी, रथ पायक विस्तार ।
मोटा मन्दिर मालिया जी धन कण कचन सार ॥रे प्रा० पा०॥

११— बे बाधव साथे जण्या जी, फेर घणो तिण माय ।
एक पेट दुखे भरे जी, एक गिजदर शाह ॥रे प्रा० पा०॥

१२— एक नर ते घोडे चढ़े जी, एक नर पालो जी जाय ।
एक नर बैसे पालखी जी, एक चापे छे पाय ॥रे प्रा० पा०॥

१३— एक घर नार गुणवती जी, हसती बोले जी बोल ।
कलहगारी एकण घरेजी, चढियो रहे त्रिशूल ॥रे प्रा० पा०॥

१४— एक घर भोजन नवनवा जी, पूर्व पुण्य भरपूर ।
एक घर तुसका ढोकला जी, ते पिण न मिले पूर ॥रे प्रा० पा०॥

१५— राज ! न कीजे रूसणो जी, देब न दीजे रे गाल ।
जो कर बाह्या दोकडाजी, तो किम लूणे साल ॥ रे प्रा० पा० ॥

१६— पात्र कुपात्र आतरो जी, जुवो जुवो करो रे बिचार ।
शालभद्र सुख भोगवे जी, पात्र तणे अधिकार ॥रे प्रा० पा०॥

१७— आण न खडे जेह तणी जी, ढमके ढोले रे निसाण ।
खमा मुख सु ऊचरे जी, दान तणे परमाण ॥रे प्रा० पा०॥

१८— पाप करणी सु दुख पड़े जी, धरम करणी सु सुख ।
करे जिसा फल भोगवे जी, रहे न किण री रुख ॥रे प्रा० पा०॥

१९— इम संसार ने देखने जी, भलो करो सहु कोय ।
तिण सु सिख 'जयमलजी' कहे जी, लीजो पाप पुण्य फल जोय रे प्रा पा

(१८)

❀ श्री कृष्णजी नी ऋद्धि ❀

१— बाविसमा श्री नेम जिनेंद ए।
जोय लिया वे संसार मा फंद ए॥

२— तिणखिण काल समातणी बात ए।
सांभलो चेतियां पाप जब जात ए॥

३— द्वारिका नगरी तणो विस्तार ए।
कह्यो सूत्र कह्यो परंपरा धार ए॥

४— अड़तालीस कोस में लांबी ते जाण जो ए।
छत्तीस कोस में पहुली पिछाण जो ए॥

५— सोना री कोट ने रत्नां रा कांगरा ए।
हेठे तो चोड़ा पछि ऊपर सांकरा ए॥

६— सतरे गज ऊंचा बारे गज नीव में ए।
आठ गज चोड़ाई में बिचली सीव में ए॥

७— एक हाथ कांगरा लांबा ऊंचा मठा।
अर्द्ध हाथ चोड़ाई में सहु अथाग सांभलो॥

८— आठ गज खाई चोड़ी ने ऊंडी कही।
दुर्ग पिरथी बधी सोभती है सही॥

९— साठ तो कोड़ घर कोट मझार ए।
कोड़ बहोत्तर घर कोट रे बार ए॥

१०— बिरला हुए दिन तीन मझार ए।
सोनैया वर्षी ने भरिया भंडार ए॥

११— लोकां रा पुन्य तीस जणा पूर ए।
लावण मे अपाप मुके दीसे नूर ए॥

१२— वैश्रमण देवता एम रचना करी।
प्रत्यक्ष जाणिये देवतानी पुरी॥

१३— छिपु हजार आवास श्री कृष्ण मा ए।
इक्वीस भोमिया ऊंचा आवास मां ए॥

१४-- चौपन हजार आवास बलदेव रा ।
भोम अठारे ऊचा रह्या ऊपरा ॥

१५— बहोत्तर हजार आवास वसुदेव ना ।
दश भोमिया कह्या दसे दसारना ॥

१६— आठ भोमिया सहु राजा रा सोभता ए ।
महल सत भोमिया औरा रा ओपता ए ॥

१७— जाणी हसी मासु आवे एहवा ।
रूप रग कोरणी फावती जेहवा ॥

१८— वर्णन कहा लग कीजे घर तणा ।
देश परदेश ना देख रीजे घणा ॥

१९— पुण्यवत लोकना इसा आवास ए ।
सरल सन्तोष दातार गुण तासए ॥

२०— राज करे श्री कृष्ण मुरार ए ।
दुश्मन भोमिया गया सहु हार ए ।

२१— वरस चालीस मडलीक राजा रह्या ।
वरस चवदे फिरी देश ते साजिया ॥

२२— पुण्य प्रभाव ऋद्धि पामिया आध ए ।
त्यारा मूडा कने कुण कुण साध ए ॥

२३— 'समुद्र विजय' आदि दशे दसार ए ।
लोपे नहीं कोई किशन नी कार ए ॥

२४— बलदेव आददे पाच महावीर ए ।
भजनहार वणा तणि पीर ए ॥

२५— कुमर कह्या वलि साढे तीन कोड़ ए ।
'परजुन' कवर सगला माही जोर ए ॥

२६— सब प्रमुख दमला कह्या दोहिला ए ।
साठ हजार दुर्दन्त छै एतला ए ॥

२७— 'महासेन' आदि बलवन छै एतला ए ।
छप्पन हजार कह्या रिण पारका ए ॥

४२— द्वारामती तणो पूनम चंद ए।
धर्म दीपावतो नरा नो इंद ए॥

४३ — धरम दलाली करी घणा ने तारिया।
दीक्षा दिराय ने पार उतारिया॥

४४— हिंसा मे धर्म हिरदे नहीं आणता।
दया में धरम ते साचो कर जाणता॥

४५— समकित दृढ तीर्थङ्कर पद लही।
मोक्ष विराजसी सिद्ध होसी सही॥

४६— पिण उणवार मे नहीं कोई भोमियो।
इणा सू तेग वाधे जिको जनमियो॥

४७— गालिया मान वाका मर कर दिया।
पाय लगाय सेवग अपणा किया॥

४८— महाबलवत कालीनाग ने नाथियो।
कस ने मार जरासिन्ध पछाडियो॥

४९— एहवा सूर जगत अवदीत ए।
तीन सो साठ सग्राम किया जीत ए॥

५०— सोवनी नगरी सूत्रनी साख ए।
ते पण वल जल हूय गई राख ए॥

५१— किसनजी रो मन हुओ दिलगीर ए।
कोई दिसे नहीं भाजणहार पीड ए॥

५२— जोड जादवा तणी सोहती सूल ए।
देखता देखता हुय गई धूल ए॥

५३— गाढ ने जोम हुँ तो घट माय ए।
ऋद्धि थोड़ा में गई विललाय है॥

५४— एहवो जाणने चेते नहीं लिगार ए।
त्या नरा ने पडो तीन धिक्कार ए॥

५५— एहवो जाण धर्मपाल सुध गति गया।
त्या नरां ने धन धन जग में कह्या॥

३— 'स्वय प्रभु' चोथो जिनेश्वर जाणिये ए,
'पोटिल' तणो द्विज जीव वखाणिये ए।
'सर्वानुभूति' अभिराम ए,
होसी 'दृढायु' इसो कोई नाम ए ॥

४— 'कीर्ति' जीव नामे इम दाखियो ए,
छठो जिनेश्वर 'देवश्रुत' भाखियो ए ।
सातमो जीव 'शख' श्रावक तणो ए,
हुसीय जिन 'उदय' नामे जस अति घणो ए ॥

५— 'आणद' नामे कोई उत्तम प्राणियो ए,
'पेढाल' नाम जिन हुसी अष्टम वखाणियो ए।
हुसीय 'सुनन्द' कोई जीव चैडानन्द ए,
'पोटिल' नाम ए नवमो जिनद ए ॥

६— 'शत कीर्ति' नामा हुसी दशमो जिणू,
'शतक' जीव महादेव मोटो गिणू ।
इग्यारमो 'सुव्रत' जिन हुसी 'देवकी' तणो,
बारमो 'अमम' 'कृष्ण' जीव ए भणो ॥

७— 'निकषाय' तेरमो जीव 'बलदेव' ए,
हुसीय जिणन्द करसी सुर सेव ए ।
माय बलभद्रनी राणी ते 'रोहणी' ए,
चवदमो 'निष्पुलाक' जिन हुसी सोहणी ए ॥

८— 'निर्ममनाथ' जिनेश्वर पनरमो ए,
'सुलसानो' जीव हुसी जब शुभ नमो ए।
सोलमो 'चित्रगुप्त' जिन 'रेवती' हुसी,
सत्तरमो 'समाधि' 'मगल' जीव शुभमति ॥

९— अठारमो 'सवर' 'सयल' जीव जिन हुसी,
साँभलने भवजीव हुयजो खुशी ।
'दीपायन' जीव 'जशोधर' उगणीशमो,
'विजय' कोई जीव जिन हुसी वीसमो ॥

१०— इकवीसमो 'विजय' जिन जीव 'नारद' तणो,
वावीसमो 'देव' जिण 'अंबड़' नो गिणो ।

तेवीससो 'अमम' और 'अनन्तवीर्य' समा
स्वामी 'बुध' और दूजी 'भद्र' चोवीससा ॥

११— एह भावती चावीसी नाम ए
दाखिया भगवन्त आगम नाम ए ।
नाखिया कन्क असिद्ध करी अप्रसिद्ध कथा
उत्तम साधिय तहत्ति कर सरदया ॥

१२— तसी आणन्द दयाधर्म पालजो
शंका कंखा मे कुमित टालजो ।
सूत्र 'समवायंग' मांहि निर्णय
तिस अनुसारे रिख 'जयमलजी' कीनी जोड़ ए ॥

जय-वाणी

(३)

उपदेशी

(१)

❀ पंचम आरा ❀

१— पहिले पद अरिहन्त जाणी,
ज्यारो भजन करो भवियण प्राणी।
ज्यारा नाम थकी जय जय कारो
पूरो सुख नहीं पचमे आरो ॥

२— हिवडा तो जीव पचे रे घणो,
कोई पार नही रे दुख तणों।
तेरे तिण गाटी लागे लारो ॥ पूरो० ॥

३— नित उठ गावडा जावे,
वलि मस्तक भार उठाई लावे।
नीठ नींठ पेट भरे जीवा रो ॥ पूरो० ॥

४— देश विदेशा में नित्य भमे,
वलि आलस सेती दिन गमे।
वलि आभि ने सामी भपा मारो ॥ पूरो० ॥

५— किणहि कने विणज माही तोटो,
इम जाणी ने दु ख लागो मोटो।
बलि रात दिवस छल बल पाडो ॥ पूरो० ॥

६— किणहि कने विणज में नफो घणो,
पिण सोच लागो रे एक पूत तणो।
पुत्र होसी तो नाम रेसी लारो ॥ पूरो० ॥

७— पुत्र तणो तो सुख फलियो,
पिण पाडोसी खोटो मिलियो।
और लेणायत लागे लारो ॥ पूरो० ॥

८— माता तो पुत्र घणा जावे,
नारी आयां पीछे न्यारा हुय जावे।
एक एक रे नहीं सारो ॥ पूरो० ॥

९— पाडोसी री दिश नीकी,
पिण घर में नारी काली कीकी।
वा रात दिवस छाती बारो ॥ पूरो० ॥

७— दुखिया देखी वालहा, मिलिया बहुला रे लोग ।
देखता रा जीव उठ चले, नहीं कोई राखवा जोग ॥

८— वाहला विना एको घड़ी, सरतो नही रे लिगार ।
वरस बिचे केई वह गया, पाछा नहीं समाचार ॥

९— काची कायो रो किसो गारबो, जतन करता रे जाय ।
उणीहारो भूले गया, नहीं मिलिया रे आय ॥

१०— किम दुख पावे रे मानवी, सूतो मोहनी रे नींद ।
काल खडो थारे वारणे, जिम तोरण आयो वींद ॥

११— वडा वडेरा चल गया, तू भी चालण हार ।
क्यू बूडे रे बापड़ा, कर कर टेंगार ॥

१२— मात पिता घर हाटनो, ममता दुख दाय ।
मूरख माडे मोहनी, अन्ते छोड़ी ने जाय ॥

१३— खरची हुवे तो खाइये, नहीं तर मरिये भूख ।
जिन धर्म भोला बाहिरो, सहे भव भव में दूप ॥

१४— वट पाडा छे मोचना, पाखडी अनेक ।
ज्यारा डिगाया मत डिगो, धारो शुद्ध विवेक ॥

१५— कई हिंसा में धर्म कहे, कई कहे साधु नाहि ।
आपतो उलटे पथ पड्या, नाखे अवरा ने माहि ॥

१६— थिर सुख चाहो जो तुमें, सेवो साधु निर्ग्रन्थ ।
पाप अठारे परिहरो लीजो मुगत नो पथ ॥

१७— काचो सगपण कुटु ब नो, मिल मिल विखर जाय ।
साचो मेलो धर्म नो, अविचल मेलो थाय ॥

१८— मांस खाय मदिरा पिये, परनारी सग जाय ।
ते नर ढोला बाजता, पडे नरक रे मांय ॥

१९— माया सहू जग कारमी, साचो श्री जिनधर्म ।
रिख 'जयमलजी इम कहे, मेटो मिथ्यात भर्म ॥

———

७— रोटा भरिया खोडा भरिया
अन्न बहु भेलो कराणो रे ।
छिन में छोड़ गयो पर भव में
साथ न चलियो दाणो रे ॥ गज० ॥

८— रात दिवस तू धन ने काजे,
कर रयो चेजो ने ताणो रे ।
जाडा पाप करी ने प्राणी,
पेट भरी ने अण खाणो रे ॥ गज० ॥

९— एक दिवस तो आगे ने पाछे,
है सगला ने जाणो रे ।
न्यात जात सगला के विच में,
कालज लेसी ताणो रे ॥ गज० ॥

१०— ऐसो काल जोरावर जाणी,
मन में ममता आणो रे ।
ऐसी सीख दे ऋषि 'जयमलजी',
पायो नर भव टाणो रे ॥ गज० ॥

---

(४)

❀ मिनख-जमारो ❀

प्राणी कव ठाकुर फुरमायो रे ॥ ध्रुव० ॥

१— नरक निगोद में भमता रे प्राणी,
मानव नो भव पायो रे ।
निडर थई ने छकियो चाले,
फाटे रोटा रो धायो रे ॥ प्राणी० ॥

२— ऊंधो मुख दश मास गर्भ में,
लटक रह्यो जर मायो रे ।
अब तो बहु अछनाया माडी,
दोनों वखत में नहायो रे ॥ प्राणी० ॥

जाढ़ा पाप करने रे प्राणी,
उपजे छकाय मायो रे ॥ प्राणी० ॥

११— मरती वेला दही ने मिश्री,
घाले मूड़ा मायो रे ।
रिख 'जयमलजी' कहे सूंम करावे,
तो रोवे के सरमायो रे ॥ प्राणी० ॥

---

(५)

❀ शिक्षा पद ❀

दुनिया में बहुत दगाई रे ॥ ध्रुव० ॥

१— जेहना हुकम कथन नहीं लोपे,
जिणनोईज गायो गाई रे ।
जिण घर नो तू टुकडो खावे,
सो घर नाखे ढाई रे ॥ दुनि० ॥

२— थोड़े गुन्हे आपकी पगडी,
अपणे हाथ व्रगाई रे ।
पेलां ने धन पात्र देखी,
लांबा खड़ा लगाई रे ॥ दुनि० ॥

३— मुंडे तो बहु मीठा बोले,
मन राखे कपटाई रे ।
दाव पड्या तो घर पेलां नो,
नाखे झट झपटाई रे ॥ दुनि० ॥

४— अपणा लोभ लालच के ताई,
न गिणे सेण सगाई रे ।
बाप मुंडे तो भणे नाकारो,
बेटा पे लेहे मगाई रे ॥ दुनि० ॥

५— आरम पाप करण के ताई,
आखी रात जगाई रे ।
नाम भजन सामायिक वेला,
बेठो खाई बगाई रे ॥ दुनि० ॥

(७)

प्राणी !

प्राणी किम कर साहिब रीजे रे ॥ ध्रुव ॥

१— दया तणो मारग शुद्ध दाखे
तिण सू तू न पतीजे रे ।
असत भाषी ने हीण आचारी,
ते गुरु आया रींझे रे ॥प्राणी०॥

२— विकथा तने वल्लभ लागे,
धर्म कथा सुण खीजे रे ।
हिंसा कर कर हुवे तू राजी,
किसी सीख तोय दीजे रे ॥प्राणी०॥

३— [1]वासा माहे करवो पाणी,
ऊनो ऊनो कर पीजे रे ।
साधु देवे सखरी सिखामण,
तब तू तिण सू खीजे रे ॥प्राणी०॥

४— ससार ना कारा कजिया में,
त्या तू आ बोलीजे रे ।
सामायिक वखाण सुणवानो,
ए कोई काम न सीजे रे ॥प्राणी०॥

५— जब कोई दे आछी सिखामण,
तब तू तिण सू खीजे रे ।
पाप करी ने हुय रयो राजी,
तिण माहे तो रींझे रे ॥प्राणी०॥

६— रुधिर नो कोई खरड्यो कपड़ो,
रुधिर सू केम धोईजे रे ।
हिंसा कर हुवे जीव मेलो,
वले हिंसा धर्म करीजे रे ॥प्राणी०॥

७— परणी सू तो प्रीतज नाही,
पर रमणी सू रमीजे रे ।

---

१ उपवास

६— छत्तीसे तू राग में भीनो,
हाथे ताली ने नादो रे ।
अन्तर गरज सरे ना कांई,
ज्यों कण रहित तुस मादो रे ॥ प्राणी० ॥

७— कब हुवो तूं राक भिखारी,
कब हुवो राय - जादो रे ।
कबहु ते पालशाही पाई,
कब हुवो शाह-जादो रे ॥ प्राणी० ॥

८— कबहु तू मूला में उपनो,
कबहुक हूओ आदो रे ।
कबहिक कोल ऊदर हुवो,
तोड तोड मिनक्या खादो रे ॥ प्राणी० ॥

९— कबहु कठियारी रोगी,
तन में वह रहीं राधो रे ।
कबहु देदी में कीड़ा पड़िया,
प्राणी तू छै विपत रो दाधो रे ॥ प्राणी० ॥

१०— कब हुवो रंगो चगो,
पायो मीठो सादो रे ।
कब ही डील निरोगो पायो,
कब वालां तणी असमाधो रे ॥ प्राणी० ॥

११— वार वार सतगुरू समझावे,
ऊंचे दे दे सादो रे ।
रिख 'जयमलजी' कहे कपट ने छोडो,
ल्यो मुगत रमणी ने साधो रे ॥ प्राणी० ॥

—— ——

६— सजन कुटुम्ब ए स्वारथ का सगा ।
मरण विरिया रे तव रोवण लगा ।।

इहलोक कारण सगा सम्बन्धी
परभव की चिन्ता नहीं ।
मोह जाल में मरण पामे
थिर वासो केहने नहीं ।।

७— ना कुण लायो ना कुण ने दियो ।
मरण वेला रे मिलने लूटियो ।।

लूटियो मिलने मरण अवसर,
महाकर्म छै मोहणी ।
एह संसार नो फंद जाणी,
जैन धर्म कीजो तुम भणी ।।

८— मोक्ष तणा सुख पामे ते सही ।
देवलोक में सका मासो नहीं ।।

मोक्ष देव लोक में नहींज मासो सासो,
निश्चे ए फल लागसी ।
एह संसार में नर नारी,
धर्म ठिकाणे लागसी ।।

९— पाप देखने रे कोई भूलो मती ।
एकवीस सहस वर्ष लग रहसी जिन मती ।।

एकवीस सहस वर्ष लगे शासन,
वर्तसी श्री जिन तणो ।
साधु साधवी उपदेश देशी,
धर्म शीयल दया तणो ।।

१०— बोली महिमा रे जिनवर धर्म री ।
तो पिण पाखंड चालसी अति घणो ।।

घणो माने छै पाखंड मत,
मिथ्यात्वी केड़े पड्या ।
हिंसा माहे धर्म परूपे,
कुगुरा रे पाने पड्या ।।

३— प्रथम पोहर गिण घालियाजी,
धन हजारों ने लाख ।
इतरा में हस चलतो रह्योजी,
पोहरे चोजे हुई राख ॥

४— सूतो है घणो नचिन्तसूजी,
धन जोवन तणो गाढ ।
लेई ने चोर चलतो रह्योजी,
देवे देवालो काढ ॥

५— मात पिता सुत कामिनीजी,
हाट हवेली ने माल ।
सगलाई भिलता मेलने जी,
एकलो जासी तू चाल ॥

६— आण तो डूंगर सू घणीजी,
पगतल वही रह्यो फाल ।
भोग सजोग ससार ना जी,
जाणजो सर्व जजाल ॥

७— डाभ अणी जल जेहवो जी,
आगिया नो चमत्कार ।
तेहवो ग धन आउखोजी,
बीजली नो भबकार ॥

८— हाठ हवेली धन मेलवाजी,
घणा करे कजिया ने झोड ।
कर्म बाधे जीव एकलोजी,
धणी हुय जावे कोई ओर ॥

९— ए हिज जीव राजा हुवो जी,
ए हिज हुवो फकीर ।
कबहू चढ्यो हस्तिन पालखीजी,
कभी आण्यो मरतके नीर ॥

१०— कब हुवो रंक मजूरियो जी,
कबहू सहल करे बाग ।

कर्म धर्म सुख दुःख मी जी
धरर धाजी रही लाग ॥

११— कस्तु दातार सांचो तणो जी
कब काधो टुकड़ो मांग ।
समस्त भमत संसार में जी
कीधा सब सब मांग ॥

१२— सत पात रागाइसोजी
काची माटी तणो भांड ।
पहली देह मानव तणी जी
ते पिया आवणी पंड ॥

१३— मती विर्पससे देहडी जी
राचे जीव कारमी आस ।
जीव देव ढंडी भति बसी जी
अथिर मानव तणो वास ॥

१४— हरख भय रे परयिणीजी
छोड़ मायो तणो मोह ।
सूता है पति न पितड़ो जी
प्रात हुवे अकु भोर ॥

१५— बेटा बेटी रे पोतां बणीजी
करे है लाड़ मे कोड़ ।
काल मसेठियो आपने जी
—
जासी सब झूमा छोड़ ॥

१६— कारमी माया संसार में जी
कारमी जग तणी प्रीत ।
मूरने केड़ लागी करी जी
कांय तू होवे फजीत ॥

१७— गया जावे जासी सवाजी
मरक किसोर रे मात ।
ममता माया में पच रहाजी
राखे है सतगुरु मात ॥

१८— मोह नी जाल माहे पड्याजी,
सुख नहीं लवलेस ।
इम जाणी तुम प्राणियाजी,
राख दयाधर्म — रेस ॥

१९— 'सभूम' चक्रवर्त आठमोजी,
सात खड तणी चाय ।
उभा ही देव देखता रह्याजी,
डूब गयो जल माय ॥

२०— मोटकी ऋद्ध तणो धणीजी,
चक्री 'सनत – कुमार' ॥
तेहणी देह विणमी गई जी,
कर्म थी एहवी हार ॥

२१— चक्रवर्त 'ब्रह्मदत्त' बारमोजी
समजायो 'चित' आय ।
कोई बल्लभ लागो नहींजी,
सातमी नरक में जाय ॥

२२— दुष्ट 'रावण' हतो एहवो जी
बीस धनुप ऊंची देह ।
'राम' 'लक्ष्मण' दोनु आयनेजी,
मार मेली दियो खेह ॥

२३— पदवी है प्रति – वासुदेवनी जी,
जोरावर जरासंघ' ।
आण पनोति ढोली फिरीजी
कृष्ण काटि दियो कध ॥

२४— त्रिखण्ड नो स्वामी 'कृष्णजी' ए
मोटका जादवराय ।
पुण्य क्षय हुओ रह्या एकलाजी
कोशबी वन्न रे मांय ॥

२५— राजा सेनापति मन्त्रवीजी,
बहु लड्या दल मेल ।
काल जोरावर सर्वनाजी,
दिया मोरचा भेल ॥

(११)

❀ चेतन ! चेत ❀

चेतन चेतो रे मिनख जमारो पायो रे ॥ ध्रुव ॥

१— सूत्र सिद्धांतनी रहस्य सू रे,
ए तो सतगुरु दे उपदेशो रे।
सुध समकित आदरो रे थांरा,
कट जाय कर्म कलेसो रे ॥चेतन०॥

२— मोटी पदवी पाय ने,
परमाद में मत पडजो रे।
मिथ्या मत ने छोडने,
शुद्ध दयाधर्म आदरजो रे ॥चेतन०॥

३— देव गुरु ने धर्म री तुमे,
खरी आसता आणो रे।
उत्तम आरज क्षेत्र नी,
थाने नीठ मिलियो छै टाणो रे ॥चे०॥

४— इण जम्बुद्वीपना भरत में
कह्या देश बत्तीस हजारो रे।
आर्य साढा पच्चीस छै,
जठे जाणे धर्म सारो रे ॥चेतन०॥

५— जोग मिल्यो साधा तणो,
वले लह्यो नीरोगी डीलो रे।
तो किरिया करतूत नी,
भूल न करणी ढीलो रे ॥चेतन०॥

६— वचन जाणो वीतरागना,
शुद्ध हिया में न घाल्या रे।
मूल्या नरभव पाय ने,
ए तो ठालि होय कर चाल्या रे ॥चे०॥

(११)

❀ चेतन ! चेत ❀

चेतन चेतो रे मिनख जमारो पायो रे ॥ ध्रुव ॥

१— सूत्र सिद्धांतनी रहस्य सूं रे,
ए तो सतगुरु दे उपदेशो रे ।
सुध समकित आदरो रे थांरा,
कट जाय कर्म कलेसो रे ॥चेतन०॥

२— मोटी पदवी पाय ने,
परमाद में मत पड़जो रे ।
मिथ्या मत ने छोडने,
शुद्ध दयाधर्म आदरजो रे ॥चेतन०॥

३— देव गुरु ने धर्म री तुमे,
खरी आसता आणो रे ।
उत्तम आरज क्षेत्र नी,
याने नीठ मिलियो छै टाणो रे ॥चे०॥

४— इण जम्बुद्वीपना भरत में
कह्या देश बत्तीस हजारो रे ।
आर्य साढा पचवीस छै,
जठे जाणे धर्म सारो रे ॥चेतन०॥

५— जोग मिल्यो साधा तणो,
वले लह्यो नीरोगो डीलो रे ।
तो किरिया करतूत नी,
भूल न करणी ढीलो रे ॥चेतन०॥

६— वचन जाणो वीतरागना,
शुद्ध हिया में न घाल्या रे ।
भूल्या नरभव पाय ने,
ए तो ठालि होय कर चाल्या रे ॥चे०॥

नव घाटी में निकल्या,
तो गुरु पहिले मति हारो रे ॥चेतन०॥

१५— देव दानव ने गंधर्वा,
एतो चक्रवर्त वासुदेव बलिया रे।
थिर संसार में कोई ना रह्यो,
इण काल सकल ने गिटिया रे ॥चेतन०॥

१६— इण अथिर जीतव रे कारणे,
थे मति रो नींवज ऊडी रे।
ममता सू दुरगति गया,
थारे घणी वणेला भूंडी रे ॥चेतन०॥

१७— पहिले पोहर दीठा हुता,
दूजे पहर आलमालो रे ।
परभव नी खरची करो,
ऐ तो ले छे लपेटा कालो रे ॥चेतन०॥

१८— आज काल धर्म आदरा,
वले परंपरा इम जाणी रे ।
आयु घटती जाय छे,
जिम अंजली नो पाणी रे ॥चेतन॥०

१९— ठीकाणो नासण तणो,
थांने निद्रा नहिं छै जोगो रे।
तीन अणी लारे लागी थांने,
जरा मरण ने रोगो रे ॥चेतन०॥

२०— घणू भमाड़े जीव ने ए तो,
तीन से तेसठ मतो रे ।
एहनी संगति वर्जजो,
तुमे सेवो गुरु निर्ग्रंथो रे ॥चेतन०॥

२१— नव तत्व हिरदे धारजो
तुमे सीखो बोल ने चालो रे।
हीन दिल राखो मती,
समकित में [illegible]

७— ममता शंबर मा किवो
बिग मिनख जमारो पायो रे।
पेठ करतो सेठ जी लिके,
हाथ मसतो आयो रे ।।चेतन०।।

८— द्वेप भरे वर्मी वको
पाप करवा मे आगा रे ।
म्हाय मोय बंगा रहे ज्यां मे
परिग्रमी हि कहिजे नागा रे ।।चेतन०।।

९— ऊंचे कुल आय ऊपनारे,
पवो कुमा रहे वह मीचो रे।
माठा करतब सम्पटी कार्य कथा
ते तो करतब कहीजे मीचो रे ।।चेतन ।।

१०— मीच कुल माय ऊपना
पिय ज्ञान विवेक गुरु धारो रे।
तिका मीचा ही ऊंचा कह्या
गुरु समकित पामी सारो रे ।।चेतन ।।

११— ऊंचे कुल 'ब्रह्मदत्त' हुवो
नीचे कुल 'हरिकेसी' रे ।
ऊ, हुवो ऊ, तिर गयो
जोईजो करणी री रेमी रे ।।चेतन ।।

१२— अरक निगोदे में जीवड़ो प तो
वसियो आदि अनादि रे ।
तुमे मिनख जनम लेही चेतजो
म्यू बसि रहे वांरी वाधी रे ।।चेतन ।।

१३— बोर कुलां मांहि ऊपनो
ता न लाप मु डा भी धूकयो रे।
हीय मयोद राखे भली
तू आय हो अवर चुक्यो रे ।।चेतन ।।

१४— रतन चिंतामणि धर्म ही
वे पायो मनुष्य जमारो रे ।

जीवा चेतो रे, पर निंदा परनार,
तिण नेडा मति ढूकजो, जीवा चेतो रे॥

७— जीवा चेतो रे, पलटे सगा ने सेण,
पलटे धन राच्यो हाथरो, जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, बधव त्रिया ने पूत,
न पलटे धर्म जगनाथ रो, जीवा चेतो रे॥

८— जीवा चेतो रे, करजे तू करतूत,
मनुष्य तणो भव पाय ने, जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, मत दो नरक रा सूत,
पर नि चुगली खायने, जीवा चेतो रे॥

९— जीवा चेतो रे, आय न आवे साथ,
नारी सपदा गहरी, जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, सगली पाछे रहि जाय,
छाड़ जाणी निज देहरी, जीवा चेतो रे॥

१०— जीवा चेतो रे हाथी हिंडोला ने खाट,
इहां का इहा रहेसी सही-जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, पछे हूवेला उचाट,
कहेस्यो किण हि कह्यो नहीं जीवा चेतो रे॥

११— जीवा चेतो रे, जब लग स्वारथ होय,
तब लग मुख जी जी करे, जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, स्वारथ सरिया जोय
साम्हो दीठा लड पडे, जीवा चेतो रे॥

१२— जीवा चेतो रे, ए संसार स्वरूप,
देखी ने प्रती बुझज्यो- जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, काम, भोग, मोह, कूप,
तिण माहे मती मुरझज्यो, जीवा चेतो रे॥

१३— जीवा चेतो रे, साधु पणो लो सार,
काम, भोग, त्यागन करो, जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, श्रावग ना व्रत बार
सिव रमणी वेगी वरो, जीवा चेतो रे॥

२२— ममता भाव ने छोड़ दो—
तुमे माया ममता ने मार्यो रे।
ऋषि 'जयमलजी' इम कहे,
थारे ए जीवड़ां गा कार्यो रे ।।चेतन०।।

---

(१२)

❁ जीव-चेतावनी ❁

१— जीवा चेतो रे के मुनिवर उपदेश
राखो सरधा धरम री जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे परखो देव गुरू ने धर्म
मेल्हो माया भरम री जीवा चेतो रे।।

२— जीवा चेतो रे मनुष्य जमारो पाय
परमाद में पड़जो मती जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे जरा रोग के आय
सेंठा रहिजो शूरा सती जीवा चेतो रे।।

३— जीवा चेतो रे, पाछो पछितो आय
जीव कराड़ पापडोजी जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे पड़ रे जीव पड़ आप
साथ न हुवे केहलो जीवा चेतो रे।।

४— जीवा चेतो रे, काया री मुरछा मती आय
मल भर मइली चामड़ी जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, छोड़ जासी जिम नाग
दूरी करदे राग री जीवा चेतो रे।।

५— जीवा चेतो रे जब चेतन घट मांय
तब लग इन्द्रियां सावती जीवा चेतो रे।
जीवा चेतो रे, जीहां लग रोग न सोग
राखजो सरधा भावती जीवा चेतो रे।।

६— जीवा चेतो रे, सतगुरु की ए सीख
यो अवसर मति चूकजो जीवा चेतो रे।

जीवा चेतो रे, पर निंदा परनार,
तिण नेडा मति ढूकजो, जीवा चेतो रे ॥

७— जीवा चेतो रे, पलटे सगा ने सेण,
पलटे धन संच्यो हाथरो, जीवा चेतो रे ।
जीवा चेतो रे, बंधव त्रिया ने पूत,
न पलटे धर्म जगनाथ रो, जीवा चेतो रे ॥

८— जीवा चेतो रे, करजे तूं करतूत,
मनुष्य तणो भव पाय ने, जीवा चेतो रे ।
जीवा चेतो रे, मत दो नरक रा सूत,
पर नि चुगली खायने, जीवा चेतो रे ॥

९— जीवा चेतो रे, आय न आवे साथ,
नारी सपदा गहरी, जीवा चेतो रे ।
जीवा चेतो रे, सगली पाछे रहि जाय,
छाड जाणी निज देहरी, जीवा चेतो रे ॥

१०— जीवा चेतो रे हाथी हिंडोला ने खाट,
इहा का इहा रहेसी सही-जीवा चेतो रे ।
जीवा चेतो रे, पछे हूवेला उचाट,
कहेस्यो किण हि कह्यो नहीं जीवा चेतो रे ॥

११— जीवा चेतो रे, जब लग स्वारथ होय,
तब लग मुख जी जी करे, जीवा चेतो रे ।
जीवा चेतो रे, स्वारथ सरिया जोय
साम्हो दीठा लड पडे, जीवा चेतो रे ॥

१२— जीवा चेतो रे, ए संसार स्वरूप,
देखी ने अती बुझज्यो- जीवा चेतो रे ।
जीवा चेतो रे, काम, भोग, मोह, कूप,
तिण माहे मती मुरझज्यो, जीवा चेतो रे ॥

१३— जीवा चेतो रे, साधु पणो लो सार,
काम, भोग, त्यागन करो, जीवा चेतो रे ।
जीवा चेतो रे, श्रावग ना व्रत बार
सिव रमणी वेगी वरो, जीवा चेतो रे ॥

६— ऊभो रहने आप कराया, हाट हवेली ने ओरी रे।
जमी-कोट गड कोट कराया, गया पलक में छोडी रे ॥तोही०॥

७— हाथी भी मिल्या घोडा भी मिल्या, रथ पायक नी कोडी रे।
पिण परवश पडिया जोर न लागे, जिम रवी साप नी ठोडी रे ॥तोही०॥

८— रे जीव ते धन दोहगे पायो, माथे ढोय ढोय ओडी रे।
चोर राजा न्याती ले खासी, तब मन मे फरे मफोडी रे ॥तोही०॥

९— रे मानव इण धन रे कारण, पिंजरे चाढे न घोडी रे।
बाध ऊचो लटकावे जन, टागा होय जावे खोड़ी रे ॥तोही०॥

१०—दान भोग विन धनज राख्यो, रोती विणज में पाई रे।
अन्तकाल में कुटुम्ब कबीलो, लगा मगड ने जोई रे ॥तोही०॥

११—धन कारण खोडा में घाले, नाके चूपा तोडी रे।
बाधी ने ऊचो लटकावे, जब करे हेला ने शोरी रे ॥तोही०॥

१२—धन कारण लागे चोरटा, मेणा, मेतर ने थोरी रे।
देवे, जहर, धतूरो फासी नाखे माथो तोडी रे ॥तोही०॥

१३—जब थारी काल आन घाटी पकडी, आन पडी जब दोडी रे।
मन थारो गयो माया मे, गरज सरे नहीं थोडी रे ॥तोही०॥

१४—भेला मिली सजन ले चाल्या, सीडी माय जोडी रे।
विचलो वासो विचमें ले राख्यो, गावड हुवे छे दोरी रे ॥तोही०॥

१५—नानी जोय वाटकडी घाली, हाडी लीदी फोडी रे।
मु गो मु गो, खापण घाल्यो, फाड़े छेली कोडी रे ॥तोही०॥

१६—ले जाई लक्कड मे दीधो, हुवो घर रो धोरी रे।
घास फूस छाणा देई ने, फूक दियो जिम होली रे ॥तोही०॥

१७—लकडी तणा घोचा देईने, ए देही हूती गोरी रे।
बाला, सजन सगाते हूँता, जिण पहिली सीखा फोडी रे ॥तोही०॥

१८—मूरख नर तू माया राची, निश दिन दौडी दौडी रे।
तनिक कलक री चूका हूनी, सो काढ़ी दात मरोरी रे ॥तोही०॥

१९—शोक करी ने खूणें बेठी, मात त्रियादिक तोरी रे।
सच्यो धन जब बहुलो देखी, पछे दे पग छोडी रे ॥तोही०॥

६— पाचू प्रमादे प्राणिया,
निद्रा में हो हुय रया लाल के ।
रुल्या, रुले, रुलसी घणा,
इण पाड्या हो कुण कुण हवाल के ॥

७— 'श्री' राणी माता तणो 'पूस नद्री',
हो भगलो वड़ भीच के ।
'देवदत्ता' निद्रा वसे,
मासू ने हो मारी कुमीच के ॥

८— एतो राय 'उदाई' मोटको,
पोसो कीधो रे साधा रे पाय के ।
साधु रूप ठग आयने,
गला माहे तोती गयो वाय के ॥

९— खाय पीय सुई रहे, अन पाणी हो-
मन गम तो लाध के ।
उत्तराध्ययन में सत्तरमे, श्री जिनजी हो-
कह्यो पापी साध के ॥

१०— तज ससार ने नीकल्या,
आदरियो है जिण मारग जोग के ।
इण छिन निद्रा ने वसे,
सुपना में सेवे काम भोग के ॥

११— इण निद्रा ने वश प्राणियो,
हम जाणी ने बहुली छै रात के ।
एतलो जाण ने ढल गयो एतो,
घाले हो पडिक्कमणानी वात के ॥

१२— परदेशा जाय मानवी,
आवत जावत हो वहि रह्यो वाट के ।
इण छिन निद्रा ने वशे,
पासी-गरह्यो जावे गलो काट के ॥

१३— धन माल घर में हुतो,
राखतो हो बहू जोमने गाढ के ।
निद्रा ने वश चोर ले गया,
पछे दियो हो देवालो काढ के ॥

२२— पाचे निद्रा ने वसे ए तो,
उपजे हो भव भव माहे खोड़ के ।
ससार नो जो बध पड़े,
उतकृष्टो हो तो तेतीस कोडा कोड के ॥

२३— ए घणा निद्रालु जीवडा,
सुवरा ना हो वेढग के ।
के नर नारी कुशीलिया,
निद्रावश हो करे शीलनो भग के ॥

२४— निद्रावश सुण ना सके,
धर्म कथा हो चरचा नो ज्ञान के ।
इण पापण घेरया पछे,
नहीं चाले हो सज्झाय ने ध्यान के ॥

२५— इण निद्रा में अवगुण घणा,
ए तो पूरा हो कही सकिये केम के ।
इण छूटा शिव सुख हुवे,
ऋषि 'जयमलजी' कहे सिखावण एम के ॥

---

(१५)

❀ मूरख–पच्चीसी ❀

१— रतन चिंतामण नरभव पायने,
चित्त राखीजो रे ठाम ।
निद्रा विकथा रे आलस छोडने,
लो भगवत रो रे नाम ॥

२— मूर्ख जीवड़ा रे गाफल मत रहे,
मन में राख विचार ।
जप, तप, किरिया रे चोखी आदरो,
लाहोजी लीजो रे लार ॥

३— सगा सनेही बेटा पोतरा
काका बाप ने माय ।
बंधव त्रिया रे देखता थां
उण काल झपट ले जाय ॥

४— डाभ अणी जल बिन्दुआ
जेहवा सन्ध्या रो वान ।
अथिर ज आयो रे थांरो आउखो
जिम पाको पीपल पान ॥

५— परियाला री पर जिम बायरो
घड़ी तिम तिम घटत जाय ।
काल अचानकी रे तोने घेरसी
पर कोई धर्म उपाय ॥

६— सोवस बेला रे इम चिन्तव किया
सवारे उठसू रे मीत ।
राती सम रे हंस चालतो रह्यो
सूतां थकां रो रे जीव ॥

७— जोबन जावे रे घड़ो उतावलो
जिसो नदी रो वेग ।
अथिर जाणो रे आउखो
तिण में घणा रे रोग ॥

८— घणा मिल्या छ रे बेटा पोतरा
हाट हवेली ने गोख ।
मोती माणक धन पायो घणो
करणी बिन सहू फोक ॥

९— ए धन मारो रे हूं धन धणी
तू इसड़ी राखे रे आस ।
अंतकाल में रे थारो को नहीं
तू मत ले फाले में रे फास ॥

१०— धनमें धन मेलो किम्यो
मंझारे रह जाय ।
जिण करणी रे सद्गति संपजे,
तो ने इसड़ी खबर न काय ॥

११— माता पितादिक कुटुम्ब न कारण,
तू घणो केवले कूड ।
जब तक स्वार्थ तब लग ताहरा,
दुःख में जासी दूर ॥

१२— को नहीं ताहरो रे तूं नहीं केहनो,
किण सू मांडे रे नेह ।
अन्तकाल में रे को केहनो नहीं,
छोड जासी रे देह ॥

१३— व्रत न कीधो रे भोला आखडी,
चरतो जावे दिन रात ।
पाप उदे रे आया बेठा घसे,
माखी नी परे हाथ ॥

१४— ढील न कीजे रे भोला धर्मनी,
खरची लेनी रे लार ।
देही मांही थी वेगो काढले,
तप, जप, सजम, सार ॥

१५— देही हेली थारी जोजरी,
पाडु रहेला रे केश ।
जोवन चटका दिया जाय छै,
तू राख धर्मनी रेस ॥

१६— सडण, पड़ण विधसण देहणी,
तिणरी किसडी रे आस ।
खिण एक माही रे जासी विगडी,
जिम पाणी माहे पतास ॥

१७— आरभ सारंभ कजिया छोडने,
सारो जीवन रो रे काज ।
काल अनतरे मिलणो दोहिलो
अवसर लाधो रे आज ॥

१८— जिहा लग पाचू इन्द्रिय रे पर वड़ी,
जरा न व्यापी रे आय ।
देह माहे रे रोग न फेलियो,
तिहा लग धर्म सभाय ॥

१९— निंदा विकथा रे मत कर पारकी
आप सामो रे देख ।
जो तू परभव सों डरतो रहे
तो किसू मत कर द्वेष ॥

२०— देव गुरु धर्म ने परखने
समझ ले भी रे सार ।
मन वच हिरदे मांही रे धार ले
खेवो हुवे जिम पार ॥

२१— सुख व्रत कोई ना सके,
तो भी सरधा सेंठी राख ।
कृष्ण श्रेणिक भी परे,
कटसी कर्म विपाक ॥

२२— छे सक तो ले साधु पणो
नहिंतर श्रावक-व्रत धर्म ।
पाले मनुष्य जमारो जीवना
जिम रहेसी थारी रे शर्म ॥

२३— सावों जो कोई ना सके तो
गुणवन्त रा गुण गाय ।
कोइक रसायण इसड़ी मीलजे
तो दरिद्र दूर पलाय ॥

२४— जन्म मरण दुःख पाम्या गर्भ मां
नरक निगोद ना मांय ।
ए दुःख याद कर रे जीवड़ा
हव मत भिखारा रे माय ॥

२५— ममता छाड़ी रे समता आदरो
जो उतरवो चाहो रे पार ।
रिख 'जयमल' जी तिण कारण कहे
बरते जय जयकार ॥

— —

(१६)

❀ पर्यटन-सप्तविंशतिका ❀

१— कदे हुवो सिकन्दर सादो रे,
कदे हुओ पोटलियो वोहरो रे।
महिना रो रोजगार गह-घाटो रे,
कदे रह्यो रोम्या रे साटो रे॥

२— जामें गर्दन बांकी होवे रे,
कबु झुलक, झुलक मुख जोवे रे।
हुवो दलगीर कदे राजी रे,
ए संसारनी चेर बाजी रे॥

३— जीव आंधो हुवो कदे बोलो रे,
आय फूटो डबक-डोलो रे।
हुवो वागो मूगो ने गूगो रे,
डबक डील हुर - धगो रे॥

४— हुवो रोग पांव ने खुसरो रे,
जीव दुःख सह्यो परवश रो रे।
कदे भूपति हुवो भारी रे,
कदे बण मक राक भिखारी रे॥

५— कदे लाख हजार नर जीमे रे,
जीव करे चबोला घी में रे।
कबहु टुकड़ो न मिले लूखो रे,
वलि तू छते धान भूखो रे॥

६— हुवो बाप निर्धन बेटो भारी रे,
इम पीढ्यां दर पीढ्यां विचारी रे।
भारी गहणा ने तुरा टांग्या रे,
कदे घर घर दाणा मांग्या रे॥

७— कबहू दूजे हजारा गायां रे,
कदे छाछ ने पर घर जायो रे।
जीव बहोत्तर कला बनायो रे,
कदे ठठो सींडो नहिं आयो रे॥

१६— मीर अमीर पातसाही रे,
जीव वार अनन्ता पाई रे।
धर्म री सरधा प्रतीत न आई रे।
विण गरज सरी नहीं काई रे॥

१७— इम जाणी ने करणी करसी रे,
ते शिव रमणी ने वरसी रे।
कदाच जो मुगत न जासी रे,
तो संसार रा सुख पासी रे॥

१८— तिरिया तिरे बहु तिरसी रे,
केई भवसागर ही फिरसी रे।
शुद्ध सरधा वरतज धारो रे,
सदा वरते जयकारो रे॥

१९— कदे पाम्यो सुर अवतारो रे,
नाटिक रो धूकारो रे।
मुख आगे ऊभी रहे देवी रे,
करती नित्त थता थेई रे॥

२०— देव सेज्जा सिंहासण जाणो रे,
ज्योत ऊगा दह दिश भाणो रे।
गढ कोट महल अगणाई रे,
थिति पल सागर री पाई रे॥

२१— विण सूधो ज्ञान न पायो रे,
सुर नो भव यों ही गमायो रे।
जोतषी ने भवणपती रे,
व्यन्तर हुवो वार अनन्ती रे॥

२२— केई रतन देवतां रा चोरे रे,
पछे इन्द्र वज्र मारे जोरे रे।
ते तो छै महिना री करे रीवो रे।
पाम्यो वार अनन्ती जीवो रे॥

२३— भमतो तिर्यञ्च ने भव आयो रे,
ऊच नीच जात पायो रे।
ऊंची हाथी घोड़ा नी जातो रे,
घणा सेवा सतोड़ा खातो रे॥

२४— नीची में कुकड़ लागो रे
नर सरहसूरादि अभागा रे।
एह तिर्यंच नी गत पामी रे
रुलियो अनन्ती भव भरमी रे॥

२५— पछे नरक तणी गत पामी रे
पाम्या मार बहु स्वामी रे।
मातां में इधकी इधकी रे
बहु मार पड़े दिन दिन की रे॥

२६— तीन तांई परमाधामी रे
मार नरकां मार सामी सामी रे।
पड़े पल सागर री मारो रे
थोड़ी तो बरस दस हजारो रे॥

२७— ए चारू गत में भूरी रे
सुख दुख पाम्या पूरी रे।
पुन्य रा फल लागे मीठा रे
पाप रा फल दुख अनीठा रे॥

२८— इम भमियो काल अनादि रे
नरभव में जोगवाई लाधी रे।
इम सांभल धर्म अराधी रे
अनन्ताई शिव गत लाधी रे॥

२९— जिणां काम अनन्ता साधी रे
साश्वता शिव सुख पासी रे।
रिख 'जयमलजी' कहे सिसुखी थायी रे,
कहे चेलो उत्तम मायी रे॥

---

(१७)

❀ उपदेश-तीसी ❀

१— क्या नर पापी ले गयो रे, क्या धर्म गयो खोय ।
जगमा रही वासावली प्राणी, तू श्ररू वरू ले जोय ॥

२— ऊचा महल चुणाविया रे, कर कर लोका सूं होड ।
श्राउखो श्राण लपेटियो रे प्राणी, जाय पलक में छोड ॥

३— महल म्हारा हूं महल नो रे, इसडी हूँती श्रास ।
श्रा देही ने छोड चल्यो रे, दे डाकणी परास ॥

४— हाट हवेली मेलड़ा रे, कीना होडा होड ।
जमा पाप तूं राचने रे प्राणी, जाय पलक में छोड ॥

५— श्राण जिणरी वर्तती रे, हाथी चमता बार ।
पीछे पुन्य पूरा हुवा रे प्राणी, न मिले श्रन्न उधार ॥

६— हुँढिया ज्यां री हालती रे, रहता गहरा ठाठ ।
पाछला पुन्य पूरा हुवा रे प्राणी, जब कोड्या मागे हाट ॥

७— तायफा नचावता रे, करता हजारा रीभ ।
एक दिन इसडो श्रवियो रे प्राणी, करे रोट्या री श्राजीज ॥

८— भीणा कपडा पहिरती रे, गहणा भरती भार ।
पुण्य सचो पूरो हुवो रे प्राणी, तब घर घरनी पणिहार ॥

९— धन पात्र हुता घणा रे, करता मनरी लहेर ।
एक दिन इसड़ो श्रावियो रे, श्रदाता हुवो वेर ॥

१०—घणाज वेटा पोतरा रे, राजी हुता देख ।
श्रायुषो श्राण लपेटियो रे प्राणी, रह गयो एका एक ॥

११—न्याति गोति सज्जन थी रे, भरियो रहतो दुवार ।
इक दिन ऐसो श्रावियो रे प्राणी, सूना हो गया द्वार ॥

१२—हृष्ट पुष्ट देही हुती रे, छकता जोवन मांय ।
रोग श्राण लपेटियो रे प्राणी, सूता जंगल में जाय ॥

१३—चोका दे दे जीमता रे, पाणी सेती न्हाय ।
साकड़े श्राण लपेटियो रे प्राणी, जिम तिम लिया खाय ॥

२८—आडा पार किया घणा रे, परणी चांदणा खाय ।
मरके एकन्द्री ऊपज्यो रे, पगा तले चिग हुयो जाय ॥

२६—मु डा मांही ती थूकियो रे, पीस्यो घट्टी मांय ।
ऊखल माही मूसल थी कूटियो रे, नाख्यो घाइया में घाय ॥

३०—इण जग माहे मोटा मुनि वरू रे, साचा मिलिया सेण ।
भिन भिन कहने भाव सुणाविया रे, रिख 'जयमलजी' कहे एम ॥

---

(१८)

❀ उपदेश-बत्तीसी ❀

भवि जीवां करणी हो कीजो चित्त निर्मली ॥ ध्रुव ॥

१— आदि जिनेश्वर वीनवूं, गणधर लागू पाय ।
मन वच काया वस करो, छोडो चार कषाय ॥ भव० ॥

२— मनुष जनम अति दोहलो, सूत्तर सुणवो सार ।
सतगुरु सरधा दोहिली, उत्तम कुल अवतार ॥ भव० ॥

३— मोह मिथ्यातरी नींद में, सूतो हे काल अनाद ।
जनम मरण युग पूरियो, ज्ञान विना नहीं याद ॥ भव० ॥

४— सिकियो तू इण ससार में, ज्यू भड भू ज्यारी भाड ।
निर्गन्थ गुरु हेला देवे, अब तो आख उघाड़ ॥ भव० ॥

५— नरक तणा दु ख दोहिला, सुणतां मन कपाय ।
पाप कर्म इकठा किया, मार अनन्ती खाय ॥ भव० ॥

६— चद सूरज मुख दीसे नहीं, दीसे घोर अधार ।
नासत ने शरणो नहीं, ज्यां देखे जिहा मार ॥ भव० ॥

७— आंधो भोजन रात रो, करता ए शंके नाय ।
गोबर भिष्टा तेहने, चापे मु डा माय ॥ भव० ॥

८— परमाधामी देवता, ज्यारी पनरा जात ।
मारे देव इक जीव ने, करे अनन्ती घात ॥ भव० ॥

६— अर्थानर्थ धर्म कारणे, जल ढोल्या बिन ज्ञान ।
बाह्य शुचि बहुली करी, माय तो मेल अज्ञान ॥ भव० ॥

२४—कोई रु जीव जावे दिवलोक में, जिहा पिण सुख विलास ।
नाटक नाचे नव नवा, रतन जडित आवास ॥ भव० ॥

२५—सदा उद्योतज हुय रह्यो, वाजित्र ना झणकार ।
देवियां हाथ जोडी करी, वोले जय जय कार ॥ भव० ॥

२६—माथे मुकुट विराजतो, काने कुंडल हिये हार ।
गहना गांठा नित नवा, नव रग वस्तर सार ॥ भव० ॥

२७—सेंधी सगाई धर्मनी, हिलमिल वात करन्त ।
कैसी पुण्याई छै आपणी, मिलिया साध महन्त ॥ भव० ॥

२८—इम जाणि ने सेवो सतगुरू, पाखण्ड मत निवार ।
सुध समगत हियड़े धरो, जिम पामो भव पार ॥ भव० ॥

२९—जेता दुःख दीशे तिके, पाप तणे परमाण ।
जेता सुख दीसे तिके, धर्म तणा फल जाण ॥ भव० ॥

३०—पच महाव्रत साधुना, श्रावक ना व्रत वार ।
यह धर्म सेवो जिन कह्यो, जिम खुले सिद्ध गत वार ॥ भव० ॥

३१—राग द्वेष झट मूक दो, छोड़ो विषय कषाय ।
पाच इन्द्रिया वश करो, जिम मुगत विराजो जाय ॥ भव० ॥

३२—कूड कपट, द्वेष वर्ग ने, छोड़े चतुर सुजाण ।
रिख 'जयमलजी' इण पर ऊचरे, ज्यूं मिल जावे निरवाण ॥ भव० ॥

---

(१९)

❀ वैराग्य-बत्तीसी ❀

जीवडला दुलहो मानव भव काई रे तू हारे ॥ ध्रुव ॥

१— मनुष्य जनम दोहिलो लह्यो,
वलि लाधो आरज खेत रे ।
उत्तम कुल जनम लह्यो,
हिवे राख धर्म सुं हेत रे ॥ जीव० ॥

२४—कोई क जीव जावे दिवलोक में, जिहा पिण सुख विलास।
नाटक नाचे नव नवा, रतन जडित आवास ॥ भव० ॥

२५—सदा उद्योतज हुय रह्यो, वाजित्र ना झणकार।
देवियां हाथ जोडी करी, बोले जय जय कार ॥ भव० ॥

२६—माथे मुकुट विराजतो, काने कुंडल हिये हार।
गहना गांठा नित नवा, नव रग वस्तर सार ॥ भव० ॥

२७—सेंधी सगाई धर्मनी, हिलमिल वात करन्त।
कैसी पुण्याई छै आपणी, मिलिया साध महन्त ॥ भव० ॥

२८—इम जाणि ने सेवो सतगुरू, पाखण्ड मत निवार।
सुध समगत हियडे धरो, जिम पामो भव पार ॥ भव० ॥

२९—जेता दुःख दीशे तिके, पाप तणे परमाण।
जेता सुख दीसे तिके, धर्म तणा फल जाण ॥ भव० ॥

३०—पच महाव्रत साधुना, श्रावक ना व्रत बार।
यह धर्म सेवो जिन कह्यो, जिम खुले सिद्ध गत वार ॥ भव० ॥

३१—राग द्वेष झट मूक दो, छोडो विषय कषाय।
पाच इन्द्रिया वश करो, जिम मुगत विराजो जाय ॥ भव० ॥

३२—कूड़ कपट, द्वेष वर्ग ने, छोड़े चतुर सुजाण।
रिख 'जयमलजी' इण पर ऊचरे, ज्यूं मिल जावे निरवाण ॥ भव० ॥

---

(१९)

❀ वैराग्य-बत्तीसी ❀

जीवड़ला दुलहो मानव भव काई रे तू हारे ॥ ध्रुव ॥

१— मनुष्य जनम दोहिलो लह्यो,
चलि लाधो आरज खेत रे।
उत्तम कुल जनम लह्यो,
हिवे राख धर्म सुं हेत रे ॥ जीव० ॥

१०— मिनख जनम ही पायने,
आवखो ओछो थाय रे।
रोग मांदगी लागी रहे,
तव धरम कियो कांई जाय रे ॥ जीव० ॥

११— चतुराई हूनर करी,
जोड्या लाखा कोड़ रे।
पाप थारे फेड़े चल्या,
धन गयो सहु छोड़ रे ॥ जीव० ॥

१२— धन सु धींगाणा हुवे,
धन सु वधे सहु पाप रे।
आडो आवे अवर ने,
दुःख भुगते आपो आप रे ॥ जीव० ॥

१३— धन कारण बाधव बढे,
धन तोडावे नेह रे।
धन रोकावे रावले,
धन छिदावे देह रे ॥ जीव० ॥

१४— धन सु लागे चोरटा,
धन सु पडेज खार रे।
धन सेती अनरथ घणो,
धन पड़ावे वाट रे ॥ जीव० ॥

१५ — ओहीज धन मच्यो हुतो,
नारी केरे काज रे।
पुरुष अनेरा सु भोगवे,
पिण मन में न आणे लाज रे ॥ जीव० ॥

१६— वडा वड़ा जोगी जती,
पडिया इणरे पास रे।
'आचारग' सूत्र में कह्यो,
ए तो आपाणो ही जाय छे नास रे ॥ जीव० ॥

१७— इम जाणी ने उत्तम नरा,
ए धन नो एह बहु घाट रे।
इण सेती न्यारा रहे,
ते लेसी मुगत रमण नी थाट रे ॥ जीव० ॥

१८— एक एक इन्द्री कारणी
पन्च मुआ जिम जाण रे ।
इण फंद में फसिया रहे
ते मरने दुर्गति जाय रे ॥ जीव ॥

१९— परनारी ने परस्यो थका
क्या डाह्यो क्या भोलो रे ।
कवर फजेती तिण दिने
जब लागेली चौवट पोल रे ॥ जीव० ॥

२०— घर में खावी कमाई नहीं
तब परदेशां उठ जाय रे ।
ताणातणी लागी रहे,
नारि नेह लालचिये मांय रे ॥ जीव ॥

२१— धिक धिक विषय विकार ने
पडी नियर मांय रे ।
मनाय कुल नो शीलनो
पडे नीच तणे घर जाय रे ॥ जीव ॥

२२— घर नारी छूटे नहीं,
तो परनारी तो छोड रे ।
परनारी ना संग थी,
घणा दुखी थया मोड रे ॥ जीवा० ॥

२३— रावण 'रावण' मार गयो
सीता तणे काज रे ।
'द्रोपदी' कारण संग थी
पाडी पद्मोत्तर री लाज रे ॥ जीव ॥

२४— विषिया - रस चाखे बचे
परनारी सू जाय रे ।
एक एक मूरख पहला
ज्यां रे धरती न माये पाय रे ॥ जीव ॥

२५— एके मारे अमर ने
पाड़े घणा हराम रे ।

कुटुम्ब सगा मिलिया थकां,
रहे नीचो माथो घाल रे ॥ जीव० ॥

२६— 'मणिरथ' राय मोहि रह्यो,
'मयणरेहा' ने रूप रे ।
'जुगबाहु' ने मारियो,
जाय पड्यो अन्ध कूप रे ॥ जीव० ॥

२७— परनारी नी प्रीत सू,
पाणी उत्तर जाय रे ।
खिण एक सुख रे कारणे,
मार अनन्ती खाय रे ॥ जीव० ॥

२८— हाथ पग छेदन करे,
वलि छेदे नाक ने कान रे ।
आतो दीठी वानगी,
आगे खुले पापनी खान रे ॥ जीव० ॥

२९— कुलवन्ती जाय चली,
केई करे माठी चाह रे ।
बिगर मिल्या विन भोगव्या
मरीने दुर्गत जाय रे ॥ जीव० ॥

३०— काम आसी विष सारिखो,
काम विष सम जाण रे ।
विषय थकी विरक्त हुवे,
ते पहुँचे निर्वाण रे ॥ जीव० ॥

३१— इम जाणी उत्तम नरा,
छाडो एहनो सग रे ।
'सयभूरमण' समुद्र तिर्यो,
बाकी रह्यो छे गग रे ॥ जीव० ॥

३२— हेला दे दे जगाविया,
सतगुरु चोकीदार रे ।
जागतड़ा नर केई बूझिया,
गाफल हुआ खुवार रे ॥ जीव० ॥

६— जाणपणो नहीं किणी वात रो,
खाली मोह करे करामात रो ।
घर में बह रह्या चीखलखाल ॥ बूढा० ॥

७— पाछली रात रो वेगो जाग,
पाणी अगन रो दीसे अभाग ।
मुख सूं बोले आल पपाल ॥ बूढा० ॥

८— जे कोई देवे न्याय री सीख,
वलती देवे अपूठी भींख ।
मुख थी बोले माठी गाल ॥ बूढा० ॥

६— नहीं छोडे आपणी पारकी,
जाणे सून क्रिया नारकी ।
विषय निजर भर रह्योज भाल ॥ बूढा० ॥

१०— फल रह्यो छे घर रे काम,
नहीं ले कदे प्रभु रो नाम ।
मुख आव्या छे वखला वाल ॥ बूढा० ॥

११— लाबी माला झाली हाथ,
विच विच करे पराई वात ।
जाणे अरठ तणी घटमाल, ॥ बूढा० ॥

१२— नजर पड़े कोई धर्मी भेष,
तव मूरख ने जागे द्वेष ।
जाणे ऊठी अगन री झाल ॥ बूढा० ॥

१३— नहीं जाणे पेला री पीड,
उलटी करी पाप्या री भीड़ ।
धर्मी सेती बाधे चाल ॥ बूढा० ॥

१४— घर को कोई कह्यो नहीं करे,
पाछो देतां आघो पड़े ।
धस रह्यो छे माया जाल ॥ बूढा० ॥

१५— आठू प्रहर पाप में रहे,
कोई वात धर्म री कहे ।
तव तो देवे पड़ती राल ॥ बूढा० ॥

२६— सावज काम थकी नहीं डरे,
जरे चोरासी माहे फिरे ।
बांधे मूरख पाप री पाल ॥ बूढा० ॥

२७— थोड़ा दिन रो जीवणो जाण,
अब तो मन में शका आण ।
वय पाकी हिव पाप ने टाल ॥ बूढा० ॥

२८— मूरख मोय रह्यो अज्ञान,
यू हि कर रह्यो अभिमान ।
रात दिवस चिंतवे पड्यो जजाल ॥ बूढ़ा० ॥

२६— दिन दिन थारो आउखो जाय,
मूरख तो लालच लपटाय ।
अब तूं परभव सामी भाल ॥ बूढा० ॥

३०— क्रोध कषाय ने नहीं तजे,
लोका माहे निंदक बजे ।
वचन झूठ रा कहे ज्यू शाल ॥ बूढा० ॥

३१— बूढ़ो हुवो तोहि नायो ठाम,
क्यू कर सुधरसी थारो काम ।
तो ही देतो रह्यो नहीं, मुख थी गाल ॥ बूढ़ा० ॥

३२— पाप करण ने आगो धसे,
कजिया कारा करण ने फसे ।
तुरत लड़ण ने बाधे चाल ॥ बूढा० ॥

३३— हिंसा माहे प्ररूपे धर्म,
मूर्ख बाधे जाडा कर्म ।
मिथ्यात माहे वण रह्यो लाल ॥ बूढा० ॥

३४— ऋषि 'जयमलजी' भाषे एम,
दया धरम सू कर तू प्रेम ।
छोडो तुमे ससार जजाल ॥ बूढ़ा० ॥

१४— माणस मूके करी रे, पाम्या सुर भव सार ।
सुख सेजा अति दीपती रे, जांमें आप लियो अवतार रे ॥

१५— हाव भाव करती थकी रे, देव्यां आई हजूर ।
इण ठामे आया तुमें, स्यू किया पुन पूर रे ॥

१६— दखा भुखा किम सुखा रे, विसन न सेव्या सात ।
कहो करतूत किसी करी तुमे, थया हमारा नाथ रे ॥

१७— दान शियल तप भावना रे, आदरिया तंतसार ।
इण करणी इहां ऊपनो रे, पाम्यो हरष अपार रे ॥

१८— तरुण पणे विषया तज्या रे, तप कर कर्मनो अत रे ।
इन्द्र पणे आय ऊपना रे, अति दीपे जोत महत रे ॥

१९— देव कहे देविया प्रते रे, हूँ पाछो जाऊ एक वार ।
समचो देऊ ससारिया, तुम करजो जिन धर्म सार ॥

२०— देव्या आवण दे नहीं रे, राखे जो विलमाय ।
जोवो नाटक हम तणो रे, पछे जोश सू कहिजो जाय ॥

२१— दोय घडी नाटक करे रे, तिहा दोय सहस वर्ष जाय ।
अल्प आऊ ना मानवी रे, पीढिया बहुली थाय रे ॥

२२— सुधर्मा देवलोक में रे, विमाण बत्तीसे लाख ।
भोला कोई शका धरे रे, पिण सूत्र माही छे शाख रे ॥

२३— शीघ्र गति चाले देवता रे, लाख जोजन रे देह ।
एकीका विमाण नो रे, छ मासे नावे छेह ॥

२४— सर्व रतना में शोभता रे पाच सौ जोजन ऊचा मेल ।
सत्ताइस जोजन रो तलो रे, ए सुख नहीं छे सहेल रे ॥

२५— सुधर्म आदि देख ने रे, पाच अणुत्तर जोय ।
आयुस, धन सुख लीला रे, चढता चढता होय रे ॥

२६— गहणा गाठा नव नवा रे, नवला नित प्रति वेश ।
चद्र, सूरज, लेखे किसे रे जिहा रत्ना री अधिक प्रवेश ॥

२७— धर्म सनेही जे हुता रे, मित्र, बधव, परिवार ।
हर्ष धरे, मिलता थका रे, करता धर्म विचार रे ॥

२-- धर्म आराधन नहीं कियो,
मनुष्य जनम सार ।
नरभव पायो छे नीठ सू,
अहिले मत दीजो हार ॥कह०॥

३— पाछली रयण ज ऊठ ने,
न कियो जिनजी रो जाप।
काम माहे कलियो रह्यो,
बहुला गच्या रे पाप ॥कह०॥

४— कुगुरु, कुदेव, कुधर्मनी,
खोटी राखी रे पास ।
हिंसा धर्म प्ररूप ने,
राखी मुक्ति री आस ॥कह०॥

५-- [1]पाचू मेली रे मोकली,
[2]छहुँ री खबर न काय ।
[3]साता सेती रे लग रह्यो,
पड़ियो आठ मद माय ॥कह०॥

६— च्यारू जाडी रे चोकडी
तिणरी खबर न काय ।
भरमायो कुगुरा तणो,
तडफे मोह फन्द माय ॥कह०॥

७— पापा सू परिचय घणो,
[4]'हवो' रहे रे हजूर ।
[5]'ल'ले लिव लागी रही
[6]'द'दो दिल सू दूर ॥कह०॥

८— बाग बगीचा में जाय ने,
तोड्या फल फूल पान ।
अनन्त काय भक्षण किया,
अलगण नीर सिनान ॥कह०॥

---

१ पाच इन्द्रिय। २ षट्-काय। ३ सात व्यसन
४ हिंसा। ५ ललना। ६ दया।

१७— चाडी खाधी रे चौतेरे,
दुडाया वहु लोक ।
मन में जाणों हूँ मोटको,
पर घर घाल्या रे मोक ।।कह०।।

१८— राड निपूताविक एहवी,
दीधी दुरासी रे गाल ।
भूंडी गाल कुलच्छणी,
निस दिन करे रे लवाल ।।कह०।।

१९— सूस लेई ने रे भाजिया,
कर्या कूडा रे नेम ।
ढेठो मस्तज हुय रह्यो,
नहीं धर्म सू रे प्रेम ।।कह०।।

२०— साधु तणा व्रत ना लिया,
श्रावक ना व्रत नाय ।
लेई ने पाल्या नहीं,
चल्यो चौरासी माय ।।कह०।।

२१— सुध साधु ने साधवी,
पट् काया ना प्रतिपाल ।
ज्यारी निंदा करी घणी
पेट में माडी रे झाल ।।कह०।।

२२— पाप किया पेला तणा,
लिया आपमें घेर ।
धर्मी पुरुष ने देखने,
मुख नो दियो रग फेर ।।कह०।।

२३— पापी सेती रे प्रीतडी,
धर्मी सेती रे द्वेष ।
रात दिवस पचतो रहे,
दशा आई रे देख ।।कह०।।

२४— भेख लियो भगवन्त रो,
खाधा लोका रा माल ।
ज्ञान ध्यान दया बाहिरो,
कूदो त्रण रह्यो लाल ।।कह०।।

१७— चाडी खाधी रे चौंतेरे,
दडाया बहु लोक ।
मन में जाणें हूँ मोटको,
पर घर घाल्या रे सोक ॥कह०॥

१८— राड निपूतादिक एहवी,
दीधी दुरासी रे गाल ।
भूडी गाल कुलच्छणी,
निस दिन करे रे लवाल ॥कह०॥

१९— सूस लेई ने रे भाजिया,
कर्या कूडा रे नेम ।
ढेठो मस्तज हुय रह्यो,
नहीं धर्म सू रे प्रेम ॥कह०॥

२०— साधु तणा व्रत ना लिया,
श्रावक ना व्रत नाय ।
लेई ने पाल्या नहीं,
चल्यो चौरासी माय ॥कह०॥

२१— सुध साधु ने साधवी,
षट् काया ना प्रतिपाल ।
ज्यारी निंदा करी घणी
पेट में माडी रे झाल ॥कह०॥

२२— पाप किया पेला तणा,
लिया आपमे घेर ।
धर्मी पुरुप ने देखने,
मुख नो दियो रग फेर ॥कह०॥

२३— पापी सेती रे प्रीतडी,
धर्मी सेती रे द्वेष ।
रात दिवस पचतो रहे,
दशा आई रे देख ॥कह०॥

२४— भेख लियो भगवन्त रो,
खाधा लोका रा माल ।
ज्ञान ध्यान क्या बाहिरो,
कूदो वण रह्यो लाल ॥कह०॥

३३— देव गुरु धर्म री पारखा,
तू मूल न जाणे मूढ ।
नाम कर्म रे कारणे,
लाग रही कुल रूढ ॥कह०॥

३४— कुगुरु शंका रे घाल ने,
मारग पड्यो रे खोट ।
धर्म काज हिंसा करे,
ते बाधी पापनी पोट ॥कह॥०

३५— विनय मारग उत्थापियो,
थारो काई हुवेला रे घाट ।
माया वेग्ने रे आगणे,
बाया बेठे रे पाट ॥कह०॥

३६ — ज्ञानी पुरुषा रे इम कह्यो,
चवदे पूरब नो सार ।
सामायिक उत्थाप ने,
नहीं माने नवकार ॥कह०॥

३७— छह काया नी रक्षा करो,
जो चाहो सुख क्षेम ।
काज सरे इण जीवनो,
रिख 'जयमलजी' कहे एम ॥कह०॥

---

(२३)

❀ श्री शल्य-छत्तीसी ❀

१— अरिहन्त सिद्ध ने आयरिया,
उवज्झाय ने सगला साधो रे ।
पांचू ने प्रणमी करी,
समकित खरो आराधो रे ॥

२— 'शल्य' कोई मत राखजो,
शल्य राख्यां दुख थायो रे ।

१०— पारस नाथजी री साधवी,
'[1]शेय से पट्' जाणी रे ।
शल्य सहित मरने हुई,
इन्द्र तणी इन्द्राणी रे ॥

११— श्रावक श्री वर्धमान रो,
जो वो 'नदणमणियारो' रे ।
शल्य सहित हुवो डेडको,
आपणी वावी मभारो रे ॥

१२— 'जमाली' भगवन्त रो,
शिष्य हुवो अंतेवासी रे ।
वचन उथापी शल्य राखियो,
हुवो किलमेषी दुःख पासी रे ॥

१३— राय 'उदाई' रो डीकरो,
हुतो 'अभीच' कुमारो रे ।
सिद्ध उदाई नो शल्य रह्यो,
मर गयो असुर मभारो रे ॥

१४— नव निहाणा चालिया,
दशाश्रुतस्कन्ध मायो रे ।
आलोया विन गहना,
फल रूडा नवि थायो रे ॥

१५— 'सोमल' कष्ट घणो कीयो,
वमियो समकित सारो रे ।
आलोया विन ते मूवो,
सो हुवो 'शुक्र' नो तारो रे ॥

१६— हुई 'सुभद्रा' साधवी,
बाल सुरछा सेवी रे ।
गुरणी वचन नहिं मानियो,
हुई 'बहुपुत्तिया' देवी रे ॥

१७— 'अंग' 'सुपुष्ट' गाथापती,
जिन धर्म पायो रूडो रे ।

---

१ ज्ञाता धर्म कथा सूत्र के द्वितीय श्रुत-स्कंध में संकलित ।

२५— 'मेघ मुनि दुख पावियो,
वीर मिल्या गुरु भारी रे।
धीरज देई स्थिर थापियो,
हूवो एक अवतारी रे॥

२६— 'गौतम' स्वामी ज्ञानी वडा,
वचन माहिं खलाया रे।
'आनद' ने खमाविया,
प्रायश्चित्त ले शुद्ध थाया रे॥

२७— 'महाशतक' निज नार ने,
क्रोध करी बोल्यो कूकी रे।
प्रायश्चित्त दे प्रभु सुध कियो,
'गौतम' ने घर मूकी रे॥

२८— दशा माहिला श्रावक भणी,
देव आय दुख दीधा रे।
केइयक कष्ट में चल गया,
मात त्रिया सुध कीधा रे॥

२९— 'शख' पोमो कियो कोल देई,
'पोखली' प्रमुख दुख पाया रे।
वीर फल कह्या क्रोध ना,
'शखजी' ने महूये खमाया रे॥

३०— कह्यो न मान्यो 'चित्त' तणो,
'समूत' निहाणो कीधो रे।
शल्य सहित 'ब्रह्मदत्त' हुवो,
नरक तणो दुख लीधो रे॥

३१— 'वर्णनाग' नतुवो हुवो,
चढ़ियो रण सग्रामो रे।
शल्य काढी ने सीधो हुवो,
सार्या आतम कामो रे॥

३२— चारण श्रमण जाय परबते,
बीच में करि जाय काल रे।
विराधक विन आलोइया,
चतुर लेजो संभाल रे॥

३— पृथ्वी पाणी अगनी में जीवा,
चौथी वायु — काय ।
एकीकी तो काय में जीवा,
काल असख्यातो जाय ॥जीवा०॥

४ — पचमी काय वनस्पती जीवा,
साधारण प्रत्येक ।
साधारण में तू वस्यो जीवा,
ते विवरो तू देख ॥जीवा०॥

५— सुई अग्र निगोद में जीवा,
श्रेणी असख्याती जाण ।
असख्याता प्रतर कह्या जीवा,
गोला असख्य प्रमाण ॥जीवा०॥

६— एकीका गोला मध्ये जीवा,
शरीर असख्या ठाण ।
एकीका शरीर में जीवा,
जीव अनन्त पिछाण ॥जीवा०॥

७— ते माही थी जीवडा जीवा,
मोक्ष जावे [1]दग चाल ।
पिण एक शरीर खाली नहीं जीवा,
नहीं हुवे अनन्ते काल ॥जीवा०॥

८— एक एक अभवी सगे जीवा,
भवी अनन्ता होय ।
वलि विशेपे तेहना जीवा,
जन्म मरण तू जोय ॥जीवा०॥

९— मोटा पाप करी तिहा जीवा,
उपनो नरक मझार ।
छेदन भेदन वेदना जीवा,
ते सही निराधार ॥जीवा०॥

---

१ दग-पाणी

१०— मूल सुधा शील तापनी जीवा
रोग शोक मय वास।
दुःख मोगव से मारको जीवा
कर्म तणा अधिकाय ॥जीवा ॥

११— नरक बची निगोद मे जीवा
अनन्त दुःखों विस्तार।
अनेक पुद्गल पूरिया जीवा
इम भमियो संसार ॥जीवा ॥

१२ — पैंसठ हजार ने पांच सो जीवा
छत्तीस ऊपर धार।
जन्म मरण इक मुहूर्त में जीवा
कर आयो बहु बार ॥जीवा ॥

१३— एकेन्द्रिय सू नीकल्या जीवा
इन्द्रिय पाइ दोय।
पुण्याई अलप्ती बची जीवा
बाल शिक्षा स्यावे जाय ॥जीवा ॥

१४— इम तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय जीवा
दोय काल जाण।
दुःख दीठा संसार में जीवा
सुणजो उचरज बात ॥जीवा ॥

१५— डीम वेइन्द्रिय में बची जीवा
नाक तेइन्द्रिय जाय।
आंख चौरिन्द्रिय में बची जीवा
कान पंचेन्द्रिय प्रमाण ॥जीवा ॥

१६— जलचर थलचर, खेचर जीवा
उरपर भुजपर देख।
मयण निर्बल ने मने जीवा
वैर मांहो मांही देख ॥जीवा ॥

१७— भव भव भटकता नीठ म जीवा
पाइ मानवी देह।

गर्भावासे दुःख सह्या जीवा,
काई सुनावू तेह ॥जीवा०॥

१८— माता रुधिर पिता वीर्य नो जीवा,
लीनो प्रथम तूं आहार।
भूल गयो जनम्या पछे जीवा,
सेखी करे अपार ॥जीवा०॥

१९— अहुट्ठ कोड सुई लाल करी जीवा,
चापे रू रू माय।
आठ गुणी हुवे वेदना जीवा,
गर्भावास रे मांय ॥ जीवा० ॥

२०— जनमता कोड गुणी जीवा,
मरता कोडा - कोड।
जन्म मरण नी जगत में जीवा,
जाणो मोटी खोड ॥जीवा०॥

२१— पग ऊचा माथो तले जीवा,
आखा ऊपर हाथ।
जाल जजाल विष्टा मध्ये जीवा
तू वसियो कही जगनाथ ॥जीवा०॥

२२— गर्भ माही ए दुःख सह्या जीवा,
छोड़ रही वर्ष बार।
जिण थानक मर ऊपनो जीवा,
बारे वर्ष वलि धार ॥जीवा०॥

२३— देश अनार्य में ऊपनो जीवा,
इन्द्रिय हीनी थाय।
आउखो ओछो थयो जीवा
धर्म कियो किम जाय ॥जीवा०॥

२४— कदाच नर भव पामियो जीवा,
उत्तम कुल अवतार।
देह निरोगी पाय ने जीवा,
जाय जमारो हार ॥जीवा०॥

३३— ओघा ने वलि मुखपति जीवा,
मेरू जितरा लीध।
किरिया समकित बाहिरी जीवा,
एको काज न सीध ॥जीवा०॥

३४— चार ज्ञान गमाय ने जीवा,
नरक सातमी जाय।
चवदे पूर्व भणी करी जीवा,
पडिया दुर्गति माय ॥जीवा०॥

३५— भगवत रो धर्म पाया पछे जीवा,
यूं ही न जावे फोक।
कदाच जो जाता रुले जीवा,
तो 'अर्ध पुद्गल' में मोक्ष ॥जीवा०॥

३६— सूक्ष्म ने बादर पणे जीवा,
मेली 'वर्गणा' सात।
एक 'पुद्गलपरावर्त्त' नी जीवा,
झीणी घणी छै बात ॥जीवा०॥

३७— अनन्ता जीव मुक्ति गया जीवा,
टाली आतम दोष।
न गया न जावसी जीवा,
एक मूला रा मोक्ष ॥जीवा०

३८— एहवा भाव सुनी करी जीवा,
श्रद्धा आई नाय।
ज्यू आयो त्यू हिज गयो जीवा,
लख चौरासी माय ॥जीवा०॥

३९— तप जप संजम पाल ने जीवा,
टाली आतम दोष।
जाय 'अर्ध पुद्गल' मध्ये जीवा,
अनन्त चौईसी मोक्ष ॥जीवा०॥

४०— कबहिक तो नरक गया जीवा,
कबहिक हुवो देव।
पाप पुण्य फल भोगवी जीवा,
न मिटी मिथ्यात्व नी टेव ॥जीवा०॥

ओसर-मोसर ढोल बजाय दे रे,
चतुर सुधारे सगला कांज रे ॥नाकी०॥

६— 'दशार्णभद्र' नाकी राखवा रे,
लीधो वीर पे संजम भार रे।
इंद्र कने कराई वंदना रे,
सफल कियो अवतार रे ॥नाकी०॥

७— राम लच्छन नाकी राखवा रे,
थेट लंका गया चलाय रे।
'सीता' आणी रावण मारने रे,
उठे रह्या तो नाकी जाय रे ॥नाकी०॥

८— 'पुंडरीक' नृप नाकी राखवा रे,
चारित्र लीधो आप रे,
'कुंडरीक' नाकी गमाय दी रे,
जिणरे पोते बहुला पाप रे ॥नाकी०॥

९— नाकी राखण रे कारणे रे,
'माधव' धातकी खंड में जाय रे।
'पद्मोत्तर' री इज्जत पाड़ने रे,
सूंपी 'द्रौपदी' लाय रे ॥नाकी०॥

१०— गहणा भारी पेर्यां हुवे रे,
नहीं होवे मुख पर नाक रे।
वस्त्र पेर्यां सोभे नहीं रे,
माहे पड गई मोटी चाख रे ॥नाकी०॥

११— साध पणो ले नाकी राखवा रे,
बले संथारो करे चौविहार रे।
श्रावक रा व्रत राखे खरा रे,
लज्जा करी नर-नार रे ॥नाकी०॥

१२— नाकी राखण ने आलोयणा करे रे,
पायछित लेवे गुरु - पास रे।
कदा इण लोक सूं डरता गोपवे रे,
तो नहीं सद्गति री आस रे ॥नाकी०॥

१३— कोइ नाक बिना माहरू मिल रे
तो माठा शकुन थाय रे।
गाँव सिमाडर चाल नहीं रे
सन्ट दीठां पाछा वल जाय रे ।।नाकी०।।

१४— नाके सामे तिलक सुहामणो रे
नथणी मोती चूनी भीकार रे।
नाक बिना गहणा सोभे नहीं रे
सगलो दीस वृथा सिणगार रे ।।नाकी०।।

१५— वंदना अरिहंत सिद्ध साधां भणी रे
पहलो नाक करे नमस्कार रे।
संसार मांहि राखी हुवे रे
नाक नमन क्रिया बारंबार रे ।।नाकी ।।

१६— इत्यादिक गुण नाक ना रे,
कह्या थोड़ा में विस्तार रे।
रिख 'जयमलजी' इम कहे रे
गुणवंत लीजो मन धार रे ।।नाकी ।।

जय–वाणी

(४)

चरित

चर्चा

दोहावली

(१)

❀ भृगु पुरोहित ❀

दोहे—

१— श्रमण कीधा साधरो, मिटे अग्यान अधार ।
ज्ञान जोति प्रकटे भली, पामे भवजल पार ॥

२— दरसण साधू रो कियाँ, उधर्या दोनु कुमार ।
उत्तराध्ययन सूतर विषे, चवदमे अध्ययन अधिकार ॥

ढाल १ ली

(राग—तिण अवसर मुनिय)

१— मुनिवर मोटा अणगार,
करता उग्र विहार ।
सुणो ऋषभजी,
साधु मारग भूलने ए,
पडिया उजाड में ए ॥

२— पड रही तावड़े री भोट,
तिरसा सू सूखा होट ।
सुणो ऋषभजी,
कठिन परिसो साधनो ए ॥

३— तालवे कोइ नहीं थूक,
जीभ गई ज्यारी सूख ।
सुणो ऋषभजी,
होठा रे आई खरपटी ए ॥

४— तिरसा तो लागी आय,
जाणे जीव निकलियो जाय ।
सुणो ऋषभजी,
कठण मारग साध नो ए ॥

५— रोही तो डडाकार,
घणी झगी ने झार ।

सुणो ऋषभजी
चिन्ता री मुझ सीम नहीं ए।

३— साधु ही मुनिराज
बैठा तरुवर छाय।
सुणो ऋषभजी
चिन्ता कर रह्या साधुजी ए॥

दोहे—

१— इतरे आया ग्वालिया मुनिवर बैठा देख।
आई मन में करुणा रह्या पूछ बात विशेष॥
२— कहता मुनिवर इम कहे काचो म लेवो नीर।
बिन बताई आपकी मोटा साहस धीर॥

ढाल २ की

(राग—साध सदा रमता)

१— कहता बात ग्वालिया
सामी सुणो अरदास हो।
मुनिवर,
म्हारो पाणी म्हारे गांवड़े।
नांय मेली आस हो
वन बसती मुनिराज री॥

२— मुनिवर मांड्यो पारणो
पाणी ले पीवा तिण वार हो।
मुनिवर
साधुजी साता पामिया
तिरसा टाली निवार हो॥ वन॥

३— ऋषभजी दीवी धर्म देशना
भिन्न भिन्न बहु विस्तार हो।
मुनिवर
सुणने बहु ग्वालिया
लीधो संयम भार हो॥ वन॥

४— चोखो चारित्र पालने,
पहुता देव विमाण हो।
मुनिवर,
तिहा सू चवने ऊपजे,
ज्यारो सुणो वखाण हो ॥ धन० ॥

दोहे—

१— 'इपुकार' नगर ने विषे, 'इपुकार' हुवो राय ।
दूजी देवी कमलावती, चालि सुतर के माय ॥
२— 'भृगु' पुरोहित तेहने, 'जसा' पुरोहितानी जाण ।
च्यार जीव तो ए थया, शेष रह्या देव विमाण ॥
३— अवधिज्ञान प्रयू जियो, देख मृगतरा सूत ।
आपे चव किहा ऊपजा, थामा 'भृगु' रा पूत ॥
४— शेय देवता देवलोक में, जाण्यो चवण विचार ।
पहिलाँ आया प्रतिबोधवा 'भृगु' पुरोहित परिवार ॥

ढाल ३ जी

(राग – नारी नो नेह निवारजो)

१— ए तो साधू नो रूप बणावियो,
दोनू देवता तिण वार रे लाला ।
भृगु रे घरे आविया,
करवा शुद्ध करार रे लाला ॥
धन करणी मुनिराज री ॥

२— मुखडे विराजे मुखपति,
मुनिवर बाले वेसरे लाला ।
ओघो विराजे काख में,
माथे लोच्या केस रे लाला ॥

३— झोली पातरा हाथ में,
चाले इर्या मार्ग सोध रे लाला ।
अमा पिया पट् कायना,
घणा जीवां ने प्रतिबोध रे लाला ॥

४— सुमर्षता रासु जणा
भृगु आपणा मीठ रे लाला ॥
उठी न बांपा ईस्ती
तन मन में लागा मीठ रे लाला ॥

५— धर्मी समाधि वांणी बागरि
गुरु दिया उपदेश रे लाला ।
ए संसार असार छै
राखो दयाधम रेस रे लाला ॥

६— आसी सुण मुनिराज री
भृगु आदरिया व्रत बार रे लाला ।
पुत्र नहीं तृष्णा घणी
पूछे दंपति तिण वार रे लाला ॥

७— ऋषिजी कहे पुत्र दो ए हुसी
लिया वे मानो एक बात रे लाला ।
व्रत लेसी बाला पण
थो मति करो अन्तराय रे लाला ॥

८— आदरसी ता आदरे,
लिया कोई म करमि अन्तराय रे लाला ।
काम सरयो दुख वीसरे
दे सुपनो विरतंत रे लाला ॥

दोहे—

१— सुरलोक थी चव करि, 'जसा' नगर लियो अवतार ।
सवा नव मास पूरा हुआ जनम्या भृगु कुमार ॥

२— पुण्यवन्त पूरा जग में मंगल गीत गाय ।
भृगु मन में चिन्ता थई पाली पेसी पाय ॥

३— बालक घर मांहे लिख्यो भृगु आवे फेर ।
नगरी में महिमा घणी साधां री पग फेर ॥

४— साधां री संगत हुआं पछे कारि न लाग काय ।
दीक्षा थी डरतो थको भृगु करे उपाय ॥

ढाल ४ थी

(राग—मारू राग)

१— परिहर्यो नगर वीहतेरे,
वाम कियो कुल गाम।
सुणजो बेटा आपणो रे,
कुलवट राखण नाम—के,
जाया राग म जायज्यो रे॥

२— आदू वेर छै ब्राह्मण व्रतिया रे,
मूस मजारी जेम।
वले सगपण साकडो रे,
दूध रुद्र मेल तेम—के ॥जाया०॥

३— ओलखजो तमे आवता रे,
सीख सुणो हम पाम।
वेगा घर आवजो दोडने रे,
रखे करी, वेसास—के ॥जाया०॥

४— उत्तम छै ओ प्राणियो रे,
घणा जिवारो सेण।
मोह रो घाल्यो भृगु कहे रे,
वोले खोटा वण—के ॥जाया०॥

५— रग रगीला पातरा रे,
हाथ में चितरग लोट।
मूडे राखे मुहपती रे,
मन में घणी छै खोट—के ॥जाया०॥

६— उतावला चाले नहीं रे,
हवले मेले पाय।
जतन करे पटकाय ना रे,
दया घणी दिल मांय—के ॥जाया०॥

७— धरती सामो जोयने रे,
चाले चित लगाय।
ओघो राखे खाख में रे,
जिण तिण सू लजाय के ॥जाया०॥

८— मैला पहरे कापड़ा रे,
रेवे घर घर बाट।
जो देखो थे आवता रे
तो छोड़ दीजो छ्मा बाट के ॥आया०॥

९— दीसता दीसे पड़कारे,
मुनिवर करे वेस।
बालक पराया मोलवी रे
ले जावे परदेश के ॥आया॥

१०— धर्म कथा पुन सू कहे रे
विध सू करे बनाय।
चतुर तणा मन मोहसे रे,
बांधे अमल पाखाल के ॥ आया ॥

११— मीत लगावे पड़ती रे
गोहवा कड़ जाय।
म करे सू गयो वर्का रे,
मोह रेखवा जाय के ॥ आया ॥

१२— राखे छुरी ने पासण्या रे
पातरां केरे मांय।
माता बालक मोलवी रे
कालजो काढी ने खाय के ॥ आया ॥

१३— विहार करता आविया रे,
मातू तिस हिम गाम।
भूला चूका पुन जोग सू रे
जोग मिलियो छ लाग के ॥ आया ॥

१४— एक समय रमता थका रे,
बारे चाल्या बाल।
मुनिवर देख्या आवता रे
च्छ्या सुरत संभाल क ॥ आया ॥

१५— दूर थकी मुनिवर देखने रे
दर्या थागू बाल।

तात कह्या जिके आविया रे,
अब नेडो आयो छे काल के,
वधविया ए कुण आया रे।

१६— दोड चढ्या तरू ऊपरे रे,
हिवडे न मावे सास।
केड़े आपा के आविया रे,
हमे किसी जीवण की आस के ॥वधविया०॥

१७— धड धड़ लागा धूजवा रे,
कपण लागी देह।
साकडे आपे आविया रे,
किणविध जासा गेह के ॥वधविया०॥

१८— वृक्ष तले मुनिवर आविया रे,
जीवा रा जतन करन।
दयावत दीसे खरा रे,
मन में एम धरत के ॥वधविया०॥

१६— कीडी ने दूहवे नहीं रे,
बालक मारे केम।
मुनिवर देखी मोहिया रे,
लागो धर्म सू प्रेम के ॥वधविया०॥

२०— जाति-समरण पामिया रे,
बोले भाई दोनु वान।
उतरता इम चितवे रे,
रखे पड़ नीलो पान के ॥वधविया०॥

२१— बधव ए भल आविया रे,
सरिया वाछित काम।
जाति-समरण ज्ञान थी रे,
आयो वेराग बेऊ ताम के ॥बधविया०॥

२२— हलवे हलवे ऊतर्या रे,
वाद्या मुनि ना पाय।
मात पिता ने पूछने रे,
में लेमा संजम सुखदाय के ॥वधविया०॥

जे जाणे मरसू नहीं जी,
ते बाधे आगली पाल ॥ जाया० ॥

७— पुरोहित प्रतिबोध पामियो रे,
दीक्षा आईजी दाय।
विघ्न करे ते ब्राह्मणी रे,
ते सुणज्यो चित्त लाय ॥ जाया० ॥

८— बालक ए व्रत आदरे रे,
आपे रे वा किस आस।
उत्तम चारित्र आदराजी,
करा मुगत मे वास ॥
गोरीजी में लेस्या सजम भार ॥

९— बेटा जावे तो जाण दो जी,
आपा भोगवा लिछमी भडार।
जने हम जिम दोहिलो जी,
तिरणो भव जल पार ॥पतिजी मत०॥

१०— धोरी जिम धर्म धुरधराजी,
जु तिया आगेवाण ।
ज्यारे केडे जावसा जी,
मत करो खेंचाताण ॥ गोरी० ॥

११— प्रीतम पुत्र तिन रिध तजी जी,
मुझने किसो घरवास।
दीक्षा ले व्रत आदरु जी,
हूँ जासू साधविया के पास ॥
पतिजी भल ल्यो सजम भार ॥

दोहा —

१— ज्यारे सजम आदर्यो, भृगु पुरोहित जसा नार।
भृगु पुत्र भद्र महाभद्र, ए करसी खेवो पार ॥
२— ऊभा घर तज नीसर्या, ज्यारे चतुर सुजाण।
सांभल नृप हुकम दियो, धन लावो सहु ताण ॥
३— पेला दान दियो सहु हाथ सू, वलि देखो धनसूं हेज।
ताकीदी सू मगावियो, नहि करि काई जेज ॥

२१— जिम सुख हुवे तिम करो रे
  जिण जिण कीजे काज।
थोड़ा में लखो घणो रे
  तमे उत्तम देखो साज के ।।संयतिया।।

ढाल ५ वी

(राग—वीरविमंद सयोसर्या ए)

१— आप कहे सात बात न रे,
  मैं दीठो अथिर संसार।
बीहता जनम मरण सू रे,
  मैं लेसां संजम भार।।
    पिताजी अनुमति दीजै आज।।

२— धन बिना अन्ने घणी रे,
  जिया आजीवी आज।
सबल पड़े छ आंतरो र
  वे अनुमत दो हित काज।।पिताजी ।।

३— पुरोहित बेटा ने इम कहे रे
  वेद में इसा रे विचार।
पुत्र बिना गति नहीं हुवे रे,
  तमे सुख विलसो संसार।।
    जाया सुख बिन घणी रे छ मास।।

४— मंदबुरी मदगति कहे रे
  करणी निरफल न थाय।
'एकमेव अमुख सिव हुवा रे,
  वेद ई करता जाय रे।। जाया ।।

५— जाया ! विलसी—सुख भोगवो रे,
  पूरण पुरुष पसाय।
यावन वय पाली पछा रे,
  थे उत्तम चारित्रिया जाय रे।। जाया ।।

६— मगन हुवे महासय तसी रे
  जेहने मित्र हुवे काम।

६— साभल महाराजा ब्राह्मण छाडी हो,
रिध मती आदरो।
राजा का मोटा भाग,
वमिया आहार की हो,
वाछा कुण करे।
करे छे,
कूतरो ने काग ॥ सा० ॥

७— काग ने कुत्ता सरीखा,
किम हुवो,
नहीं प्रसासवा जोग।
भृगु पुरोहित ऋध तज नीसर्यो,
ये जाणो आसी म्हारे भोग ॥ सां० ॥

८— सकल्प कियो पाछो किम लीजिये,
साभलजो महाराज ।
दान दियो थे पेला हाथ सू,
पाछो लेता नहीं आवे लाज ॥ सा० ॥

९— जग सगला रो हो धन भेलो करी,
घाले थारा राज रे माय।
तो पण तृष्णा हो राजाजी पापणी,
कदे तृप्ति नहीं थाय ॥ सा० ॥

१०— एक दिन मरणो हो राजाजी यदा तदा,
छोडो नी काम विशेष।
बीजो तो तारण जग में को नहीं,
तारे जिणजी रो धर्म एक ॥ सा० ॥

११— इम साभलने हो इखुकार बोलियो,
तू भाखे नी वचन संभाल।
के तो राणी हे तो ने झोलो वाजियो
के थे कीधी मतवाल ॥ सा० ॥

१२— साभल ! हे राणी राजा ने करडा न बोलिये,
निसङ्क हुई जै नाय।

४— खबर हुई राणी सुणी करे किवो मन क्रूर ।
मूरख ने हूं पासस् चढ़ियो पोरस सूर ॥

ढाल ६ ठी

(राग—रंग महल में हो चापड़ खेले)

१— मेहलां में बेठी हो राणी कमलावती
झीरखी तो ऊभे मारग जोह ।
चो व तमासा हो इसुकार नगर नो
कोतुक उपनो मनमें एह ।
सांभल हे दासी आज नगर में
हलचल किम मची ? ॥

२— के तो परधान हे दासी दंड लीयो
के राजाजी लूट्यो गाम ।
के किणी रो हू गाल्यो धन लीयर्यो
गाडां रि हेकल ठामो ठाम ॥ सां ॥

३— नहीं तो परधान हो राणीजी दंड लीयो
न कांई राजाजी लूट्या गाम ।
भृगु पुरोहित रिध तज नीसर्यो
मूरख र धन लावणा रो काम ॥ सां ॥

४— सांभल हो राणी हुकम करो तो
गाडा कांई फेरने ।
इहां तो कुमी नहीं काय
इणरी सांभल ने हो राणी
मायो धूणीयो ।
राजा ने मन री लागी फाय ॥ सां ॥

५— सांभल ए दासी राजा ने
मनरी बातां जुगती नहीं ।
मेहलां सूं उतरी हो
राणी कमलावती ॥
आई छै ठेठ हजूर
वचन कहे छे हो राजाजी आकरा ।
जाग पोरस चढ़ियो सूर ॥ सां ॥

२०— मेहल पिलगादिक अथिर छे,
मो तो आया आपणे हाथ।
आपे भोग माहे राची रह्या,
आप समझो पृथ्वीनाथ ॥ मां० ॥

२१— मास री बोटी हो पखीया नी परे,
मोह वस पाली पड़े आय।
ज्यू आपे कामभोग छोड ने,
चारित्र लेमा चित लाय ॥ मा० ॥

२२— गृद्ध पंखी जिम इण जीव ने,
काम वधारे ममार।
सांप जिम मोर थकी डरतो रहे,
जिम पाप सू सको इणवार ॥ मा० ॥

२३— हस्ती जिम वधन तोडने,
आपणे वन में सुखे जाय।
ज्यूं कर्म बंधन तोड़ी सजम ग्रहा,
होस्या ज्यूं सुखी मुगत माय ॥ मां० ॥

२४— इम साभल ने इखुकार राजा चेतियो,
छोड्यो छे मोटो राज।
कायर ने ए रिध तजणी दोहिली,
विषय छाडी मारू निज काज ॥मा०॥

२५— सनेह सहित परिग्रहो छोडने,
साचो एक धर्मज जाण।
तपस्या मोटी सगला आदरी,
घोरी जिम पराक्रम आण ॥ मा० ॥

२६— छअही अनुक्रमे प्रतिबोधिया,
साचा धर्म में तप जप तंत।
जनम-मरण रा भय थकी डरपिया,
दु खारो कियो छे अत ॥ मा० ॥

२७— मोह निवार्यो जिन शासन मवे,
पूरव सुभ कर्म भाय।
छउ ही जणा थोडा काल में,

इसी वैरागमय भजे तू दीसे नहीं
तू बैठी छे राज के मांय ॥ सां ॥

१३— मा तो महाराजा म्होंको वाजियो
ना कोई कीती सतवास।
भृगु पुरोहित बाप तज नीसर्यो
हूं बरजण आई भूपाल ॥ सां ॥

१४— म्हारने वाली तो दीसे नहीं
इसही म्हारा छे मतवाल।
हूं पथ पर छोडी ने नीसरू
उमे चेलो छे भूपाल ॥ सां ॥

१५— रतन जड़ित छो राजाजी पिंजरे
सुणो तो वाखे छे कीर।
इसही पथ हूं थांरा राज में
रति न पाऊं म्हारीर ॥ सां० ॥

१६— स्नेह रूपिया तांतां तोड़ने
ओर बंधन सू रहसू दूर।
विरक्त बहेने संयम में म्हूं
वे भी पथ होय आभो सूर ॥ सां० ॥

१७— दव तो लागो छे राजाजी वन मधे
हिरणा सतारिक बले मांय।
म्हा माका ये छे पंखी देखने
मन मांहि हर्षित थाय ॥ सां ॥

१८— इण उद्यान्त पे मूरख थका
मुरख रहा मांग मम्मार।
पहिला दुःख देखे पर चेते नहीं
राज त्यागी तो संयम मार ॥ सां ॥

१९— भागव्या काम भाग छोड़ने
वेहुं भव इसका थाय।
चर्ड मरीवा पंखीवा भी परे
विचरसां इच्छा आपणी राय ॥ सां ॥

२०— मेहल पिलगादिक अथिर छे,
मो तो आया आपणे हाथ।
आपे भोग माहे राची रह्या,
आप समझो पृथ्वीनाथ ॥ सां० ॥

२१— मास री बोटी हो पखीया नी परे,
मोह वस पखी पडे आय।
ज्यू आपे कामभोग छोड ने,
चारित्र लेसा चित लाय ॥ सा० ॥

२२— गृद्ध पखी जिम इण जीव ने,
काम वधारे ससार।
साप जिम मोर थकी डरतो रहे,
जिम पाप सू सको इणवार ॥ सा० ॥

२३— हस्ती जिम वधन तोडने,
आपणे वन में सुखे जाय।
ज्यू कर्म वधन तोड़ी सजम ग्रहा,
होस्या ज्यू सुखी मुगत माय ॥ सा० ॥

२४— इम साभल ने इखुकार राजा चेतियो,
छोड्यो छे मोटो राज।
कायर ने ए रिध तजणी दोहिली,
विषय छाडी सारू निज काज ॥सां०॥

२५— सनेह सहित परिग्रहो छोडने,
साचो एक धर्मज जाण।
तपस्या मोटी सगला आदरी,
घोरी जिम पराक्रम आण ॥ सा० ॥

२६— छउंही अनुक्रमे प्रतिबोधिया,
साचा धर्म में तप जप तंत।
जनम-मरण रा भय थकी डरपिया,
दु खारो कियो छे अत ॥ सां० ॥

२७— मोह निवार्यो जिन शासन मधे,
पूरव सुभ कर्म भाय।
छउ ही जणा थोड़ा काल में,
मुगत गया दु ख मुकाय ॥ सां० ॥

८— सांमल ने प्राणी संजम लियो
सुख सेती सासता सार।
राजा सहित राणी कमलावती
भृगु पुरोहित ब सार ।। सां ।।

९— मागम रा हेतु ही मालका
समता पाम्या भव जल पार।
धन धन प्राणी इसी रिष जिनराज ने
शिवपुर का सुख लिया सार ।। सां ।।

१० — संक्षेप माफक आप प कथा
सुन अनुसारे होय।
अधिको ओछो रिष उपमायी कहे,
मिच्छामि दुक्कड़ मोय ।। सां ।।

११— इस आयी में ही उत्तम मानवी
कोडो काम ने भोग।
जप तप किया निर्मल आदरो
ज्यूं मिटे भव भव रोग ।। सां• ।।
धन धन प्राणी जो गुरु सेवा करे ।।

(२)

❀ सुबाहु कुमार ❀

दोहे--

१— नमू वीर शासन धणी, सर्व-हित-वधक साम ।
मुक्ति नगर ना दायका, मगलीक तसु नाम ॥

२— कुवर 'सुबाहु' नो चरित, बोल्यो-सुख बिपाक ।
सुधर्म जबू ने कह्यो, अंग इग्यारमानी साख ॥

३— किण कुल ने किण नगरी ए, हुवो सुबाहु कुमार ।
श्री जिणद गौतम भणी, माड कह्यो विस्तार ॥

ढाल १

[राग—चौपाई]

१— विनय करी 'सुधर्म' ने वाय ,
'जबू' पूछे सीस नमाय ॥
'सुख विपाक' ना अध्ययन केता ,
'सुधर्म' कहे जम्बू ! सुण जेता ॥

२— दश अध्ययन कह्या तिण माहे ,
जुदा जुदा नाम दिया जताए ।
'सुबाहु' 'भद्रनन्दी' कुमार ,
'सुजात' 'सुवास' 'जिणदास 'विचार ॥

३— 'धनपति' 'महब्बल' 'भद्र नन्दी' ताम ,
'महचद' 'वरदत्त' ए दश नाम ।
दशे ही माही पहला ना भाव ,
जबू पूछे भर कर चाव ॥

४— बलता कहे सुधर्म स्वाम ,
सांभल जबू चरित्र अभिराम ।
तिण अवसर नगर सोहतो ,
'हत्थीसीस' इसो नामे हुतो ॥

५— ऋद्धि भवन धन धाने पूर
वैरी पर दल मन पड़े दूर।
ईशान कूणे 'पुष्प-करंड' बगाय
षट् ऋतु ना फल फूल बणाय ॥

६— 'कयवणमालप्रिय' हुँतो जख
देव के साचो के प्रसन्न।
'हस्तीसीस' नगर नो राय
हुँतो 'अदीनशत्रु' कहवाय ॥

७— राय तणो वर्णन चालिसा
'धारिणी' आदि सहस राणियां।
धारिणी राणी तिण प्रस्ताव
पुन्यवंत पोग रस्या शुभ भाव ॥

८— सूती सुपनो लख्यो 'सिंह' तणो
मेघ कुंवर-माता जिम भण्यो।
जन्म वर्णन 'मेघ' नी परे
माता मांहि सीख इम करे ॥

९— बाल पणो अति क्रम्यो सही
जोबन भोग समर्थाई थई।
जाणता मात पिता इम ज्यार
पांच सौ कन्या मासार ॥

१०— दिये कुंवर नो ई आवास
ऊंचा आप लगे आकाश।
वर्णन चाल्या 'महाबल' जेम
भगवती में भाख्यो तेम ॥

११— 'पुष्पचूला' प्रमुख सम पंच
राजवर कन्या मोटी संच।
एकज दिन पाणी-ग्रहण करी
मन रो राम हे सकल वरी ॥

१२— पांच पांच सौ दीना दास
सोनो रूपो प्रमुख पंपाल।
पाछ पीढ़ बकारय गाय
विस्तार सूत्र 'भगवती' मांय ॥

१३— एक सो ऊपर बाणू बोल,
एक एक राणी ने दास नी टोल।
भोगवे सुख कुंवर इण परे,
बत्तीस विध ना नाटक अणुसरे॥

१४— विचरे छे ऊपर प्रासाद,
छऊ ऋतु ना सुख बहु जात।
आषाढ श्रावण 'पावस' ऋत, [ऋतु]
तिण रा सुख भोगवे नित नित॥

१५— 'वर्षा ऋतु' भाद्वो आसोज,
कर्तिक मिगसर 'सरदी' नो चोज।
ऋतु 'हेमत' पोष ने माह,
फागुण चैत 'वसत' आराह॥

१६— 'ग्रीष्म' ऋतु वैशाख अने जेठ,
ए छउ ऋतु सुख न सके मेट।
इण पर रहे सुबाहु कुमार,
हिवे किम पावे जिन धर्म सार॥

दोहे—

१— तिण अवसर शासन धणी, समोसर्या महावीर।
साधु संघाते परवर्या, वागे साहस धीर॥
२— वादण आवी परिषदा, वले 'अदीनशत्रु' राय।
आयो 'कौणिक' नी परे, भेटे वीर ना पाय॥
३— कुंवर 'सुबाहु' पिण गयो वाद्या जेम 'जमाल'।
रथ बेठी ए पिण गयो भेट्या महागवाल॥
४— जिणवर दीधी देशना, मोटी परिषदा माहि।
सांभल सहु हर्षित थया, परिषदा राय वलि जाहि॥

ढाल २

[राग—चितोडी रा राजा रे]

१— हिवे सुबाहु कुमारो रे, सुणियो जिन धर्म सारो रे।
प्रभुजी ने पायो रे, घणो हुवो हुल्लासो रे॥
परम वैराग हिया में ऊपनो रे॥

१२—प्रभुजी सुबाहु कुमारो रे, जोत कत उदारो रे।
इसडी रिध पाईजी, उदय इण री आई जी॥
सुकृत कमाई पूरबे किम करी जी॥

१३—दिच्चा-किं-भुच्चा जी किं जिच्चा जी।
पूर्वे कुण हुँतोजी, कुण ग्राम संजुत्तो जी॥
जाव नाम गोत इण री कुण हुँतो जी॥

दोहे—

१— वीर जीणंद इम उपदिसे, सुण गोयम मुझ वाय।
पूरब भव करतूत ना निश्चय दूं रे जताय॥

२— ज्ञानी विन कुण उपदिसे, आगम एहवी भाख।
एक मना थई साभलो, चित्त ठिकाने राख॥

ढाल ३

[राग—वीर सुणो मोरी वीनती]

१— तिण काले ने तिण समे, जबू द्वीपे हो भरत क्षेत्र मांय।
'हथिणाउर' नगर हुंतो, धन धाने हो समृद्ध कहाय॥

२— वीर कहे सुण गोयमा! भय नहीं हो पर चक्र नो कोय।
तिहा 'सुमुख' गाथापति, ए हुँतो रिद्धिवतो सोय॥ वीर०॥

३— इण अवसर तिण नगरी ए, पधार्या हो थिवर 'धर्मघोष'।
पांच सो साधां परवर्या, विचरता हो तप कर देह सोस॥ वीर०॥

४— जात पखे करी ऊजला, जाव करता हो अप्रतिवध विहार।
'हथिनापुरे' 'सहसाब' वन मझे, उतर्या हो ज्ञानी वुध सार॥ वीर०॥

५— निर्दोष थानक पाटला, जाची ने हो विचरे तिण ठाय।
सतरे भेदे सजमे करी, मोटा तपसी हो अप्पाण भाय॥ वीर०॥

६— तिण अवसर धम्मघोस मुनी—अतेवासी हो 'सुदत्त' अणगार।
घोर तपसी अति आकरो, तेजो—लेश्या हो उपनी विस्तार॥ वीर०॥

७— मास मास नो पारणो करतो, विचरे हो तपसी काकडा भूत।
विनय आचारे ऊजला, तिण दीधा हो शिवपुर ना सूत॥ वीर०॥

८— तिण अवसर 'सुदत्त' मुनि
मास खमण ने हो आयो पारणो आय।
पहिले पोर सज्झाय करी
तिम दूजे हो ध्यायो छे ध्यान ॥ वीर० ॥

९— आय गौतम परे गुरु कन्हे
आय पूछे हो विनय करी आम।
आज्ञा हुवे तो जाउं गोचरी
गुरु कहे हो नहीं ढील नो काम ॥ वीर ॥

१०— ऊंच नीच मज्झम कुले
इरजा सोधो हो गुरु आज्ञा आय।
'सुमुख' नाम गाथापति
मुनि पैठा हो तिण रा घर मांय ॥ वीर० ॥

११— 'सुमुख' नाम गाथापति
दिठ 'सुदत्त' हो आवंतो देख।
हिवड़े हरसज ऊपनो
ऊठ्यो आसण थी हो विनय करि विशेष ॥ वीर ॥

१२— मोची पगरी पगरखी
एक पटो हो 'उत्तरासण' कीध।
सात आठ पग साहमा जई
'सुदत्त' ने हो माथे वंदणा कीध ॥ वीर ॥

१३— वंदणा करी तिक्खुत्तो भणी
मात पाणी हो रसोड़े आय।
प्रतिलाभ्यो असणादिक,
तन हरषे हो मन्ना हर्षित थाय ॥ वीर० ॥

१४— मुनिवर प्रतिलाभ्यां थकां
मनो आयो हो मन में संतोष।
वित्त चित्त पात्र तिहुं मिल्या
तिण मांहि हो नहीं छे दोष ॥ वीर ॥

१५— त्रि-करण भाव प्रतिलाभ्यां थकां
पुण्य संच्या हो देवा सीकार।
तिण थी एम सानिध करी
सुमुख कीधो हो परित संसार ॥ वीर० ॥

१६— मनुष्य नो बाध्यो आऊखो,
पाच द्रव्य हो वृढा घर माय ।
तिण ना नाम किसा किसा,
सोनैया नी हो बहु वृष्टि थाय ॥ वीर० ॥

१७— फूल तो पाच प्रकार ना,
वली हुई हो कपडा नी वृष्टि ।
वाजी आकाशे दु दुभी,
दान घोपणा सुरे करी अभिष्ट ॥ वीर० ॥

१८— हथिणाउर त्रिकादिके,
वहुजन हो माहो माहे कहे एम ।
धन धन ते 'सुमुख' गाथापति,
प्रतिलाभ्यो हो मुनि ने धरी प्रेम ॥ वीर० ॥

दोहे—

१— ते 'सुमुख' गाथापति, आऊ घणा वरस पाल ।
काल करि तिण अवसरे, एहज नगर विशाल ॥

२— 'अदीनशत्रु' राजा घरा 'धारणी' देवी जाण ।
तेहनी कूखे ऊपनो, एहवो पुत्र प्रधान ॥

३ — तिण अवसर ते 'धारिणी,' सुपने 'सिंह' ज देख ।
सुपन पाठक ने जन्म ना, वीर कह्या रे विशेष ॥

४— जाव जोवन पाम्यां थका, परणी पाच सौ नार ।
घणो आयो दत्त दायजो, ते सुणजो विस्तार ॥

ढाल ४

[राग—श्री नवकार जपो मन रगे]

१— पाचसे तो कोड़ रुपैया,
पाचसे सौवन नी कोड़ हो गोयम ।
पाच सौ तो थाल सोना ना,
पांच सौ रूपा ना जोड हो गौयम ॥

२— पुण्य तणा फल मीठा जाणो,

पुण्य तणा फल भोगवतां मीठा
पाछे पुण्य पुण्य पेम हो गौ ॥ पुण्य ॥

३— आठ हार हारां मांहि प्रधान
आठ एकावली खास हो गौ ।
एकावली में आठ प्रधान
एम मुक्तावली बताय हो गौ ॥ पुण्य० ॥

४— एम कनकावली रत्नावली
जोड़ां कड़ा नी आठ हो गौ ।
आठे कौंदण में प्रधान
एम तोड़ला आठ हो गौ० ॥ पुण्य० ॥

५ आठ खोम हीरावल वस्त्र
आठ पट्ट वस्त्र एम हो गौ ।
आठ पट्ट हीरां नी साड़ी
आठ दुकूल जुग खेम हो गौ ॥ पुण्य ॥

६— श्री ह्री धृति ने कीर्ति
बुद्धि लक्ष्मी चन्द्र लेख हो गौ० ।
आठ आठ एम रत्न दीवा
इम नंदा भद्रासण जोड़ दी गौ ॥पुण्य०॥

७— इम ही आठ ताड़ वृक्षासन
ताड़ वृक्ष में प्रधान हो गौ ।
आठे दीवी सहस्र नी धजा
रत्न धजा वर जाण हो गौ ॥पुण्य ॥

८— आठ दीधा गायां ना गोकुल
नाटक विध बत्तीस हो गौ ।
आठ घोड़ा इम ही प्रधान
आभरण रत्न जगीस हो गौ ॥पुण्य०॥

९— आठ हाथी हाथ्यां में प्रधान
आभरण रत्नां भांत हो गौ ।
सीकर केरी औपमा दीधी
दीठां ही सुखसाय हो गौ ॥पुण्य ॥

१०— आठ गाडा गाडा मे प्रवर,
इम आठे घुड वेल हो गौ० ।
इम आठ जाण पालखी डोली,
सुख मिलिया पुण्य पेल हो गौ० ॥पुण्य०॥

११— इम पिलाण, हाथी अवाडी,
इम मेजवाला रथ हो गौ० ।
आठ रथ क्रीडा यात्रा ने,
इम सग्रामिक सत्थ हो गौ० ॥पुण्य०॥

१२— इम कोतल हाथी ने घोडा,
पालखिया प्रधान हो गौ० ।
दश हजार घरा नी वस्ती,
इमा दिया आठ गाम हो गौ० ॥पुण्य०॥

१३— आठ दास दासा मे प्रवर,
इम किंकर कचुक होय हो गौ० ।
आठे जाण वासधर खोजा,
इम ही पोलिया सोय हो गौ० ॥पुण्य०॥

१४— आठ दीधा साकली बध दीवा,
इम सोवन रूप त्रण बोल हो गौ० ।
इम तीनेई पजर दीवा,
सोवन थाल नी टोल हो गौ० ॥पुण्य०॥

१५— इण रीते आठ थाल रूपा रा,
इम तीन चाटका जात हो गौ० ।
तिण रीते आरणी आठे,
तासक थासक जात हो गौ० ॥पुण्य०॥

१६— इम ही तीने लघु रकेबी,
इम कुडछी चमचा आठ हो गौ० ।
चरू देगचा इण ही रीते,
इम कढाई घाट हो गौ० ॥पुण्य०॥

१७— आठ वकड़िया इम त्रण भेदे,
बाजोट ने पाय-पीठ हो गौ० ।
तीनू बोल सोवन रूपा में,
इम पीठी त्रण मीठ हो गौ० ॥पुण्य०॥

२६— कुल जात भाषा प्रवीणी,
आठ रसोईदार हो गौ० ।
इम वस्तु ने सग्रहण – हारी,
बालक नी आठ धार हो गौ० ॥पुण्य०॥

२७— आठ महिला कारज कारी,
आठ ही बार ले काम हो गौ० ।
इम ही बागारोपण मालण,
आठ परूसण ठाम हो गौ० ॥पुण्य०॥

२८— इत्यादिक दात ए गिणती,
एक सौ ने बाणु बोल हो गौ० ।
अनेरो ई वले सौनो रूपो,
गहणो धन नी टोल हो गौ० ॥पुण्य०॥

२९— कासी थिरमा माणक मोती,
हीरा पन्ना लाल हो गौ० ।
सात पीढ्या लग खाता खरच्या,
तोही नीठे नहीं माल हो गौ० ॥पुण्य०॥

३०— इण अवसर ते 'महाबल' कुवर,
इतरी दात जगीस हो गौ० ।
ते सगली राण्यां ने बगसी,
तिम ही 'सुबाहु' जाणीस हो गौ० ॥पुण्य०॥

३१— इम विचरे कुवर सुबाहु,
पाच सौ महल इण बार हो गौ० ।
सुख भोगवे राण्या सघाते,
मादल ना धुकार हो गौ० ॥पुण्य०॥

दोहे—

१— इम निश्चय गौतम सुणो, वीर जिणद कहे वाय ।
सुबाहु ने इसी रिद्धि, उदय हुई छे आय ॥
२— वली गोतम पुच्छा करे, एह सुबाहु कुमार ।
घर छोडी ने थायसी, आप कने अणगार ॥

३— एह अर्थ समर्थ छ प्रभ भाख्यो 'महावीर ।
इम गौतम वन्दना करे, विचरे साहस धीर ॥
४— तिण अवसर महावीर जिन 'हत्थिसीस' नगर ।
बाग थकी नीकल करे बाह्य - देश विहार ॥

ढाल ५

[राग—श्री गौतम स्वाम समो सर्योए]

१— एतो कुंवर सुबाहु तिण समे
श्रावक हुवो छे भायो रे ।
भेद जीव अजीव ना ओलख्या
आतमा भलो गुण ने पायो रे ॥ एतो ॥
२— एतो सुत सार सूत सेवतां
सूत्र ना अर्थ छे मीठा रे ।
कुंवर सुबाहु आगमना
निर्णय ना निर्णरे दीठा रे ॥ एतो ॥
३— आस्रव संवर ने निर्जरा
आतमा ने बंध ने मोक्षो रे ।
धर्म रे चवदे प्रकार नो
शुभ भावना भावी निरदोषो रे ॥ एतो ॥
४— कुंवर सुबाहु तिण अवसरे
पौषधशाला में आयो रे ।
'अट्ठम भक्त' चउविह आहार तजी,
एतो तीन पोषध तिहां ठायो रे ॥ एतो ॥
५— एतो कुंवर भवी भाती रात रा
जागतां एहवा अध्यवसायो रे ।
जिहां गाम नगरादिक धन धने
जठे विचरे छे जिनरायो रे ॥ एतो ॥
६— धनी धन राईसर मांडव
ग्राम कौटुम्बी सत्यवादी रे ।
जे धीर चले पर छोड़ के
साधु हाथ से छे साधे रे ॥ एतो ॥

७— वले तीजो मनकारे दियो,
राय ईसर ने पाणा लावे रे।
वीर जिणन्द पे जायने,
ले श्रावक ना व्रत चावे रे॥ एतो०॥

८— एतो चौथे मन मन हे जिके,
राजा ईसरादिक जाणो रे।
श्री वीर समीपे जाय ने,
नित नित का सरे धखाणो रे॥ एतो०॥

९— जो वीर जिणन्द विहार करि,
इण नगर ना बाग मे आवे रे।
तो घर छोडी अणगार हूँ थऊ,
पाँची भावना भावे रे॥ एतो०॥

१०— तब भगवत-देवे जाणियो,
'सुबाहु' भावना भाई रे।
जब हस्तिसीस ना बाग मा,
जिण लियो उतारो आई रे॥ एतो०॥

११— जब परीषदा वादण नीकली,
सुण आयो 'सुबाहु' कुमारो रे।
वांदे बैठो छे मुख आगले,
वीर वाणी कही विस्तारो रे॥ एतो०॥

१२— तो आगार ने अणगार ना,
कह्या धर्म तणा दोय भेदो रे।
जाणी ने निरमल पाल जो,
तुम्हें राखजो मुक्त उमेदो रे॥ एतो०॥

१३— संसार ना सुख असासता,
एक सासता सुख निरवाणो रे।
जो डर राखो पर भव तणो,
नव तत्व हिरदे आणो रे॥ एतो०॥

१४— इत्यादिक वाणी सुणी,
राय परिषदा राजी थावे रे।
श्री वीर जिनद ने वाद ने,
एतो आया जिण दिस जावे रे॥ एतो०॥

१५— इम कुमर सुबाहु सांभली
वीर जिणंद नी वाणी रे ।
एकण्यो वे कर जोड़ ने
मन में संवेग आणी रे ॥ धन्नो ॥

१६— सद्दहूं सरधा परतीत थी रुचनी
सुण रुचिया प्रवचन सारो रे ।
मात पिता ने पूछ ने हूं तो
लेसूं संजम - भारो रे ॥ धन्नो ॥

१७— श्री वीर कहे ढील मत करो
संजम ले तू वहलो वेगो रे ।
वंदणा करी ने कुंवर गयो
माय सु पहुतर जिम मेलो रे ॥ धन्नो ॥

दोहा—

१— आय माता ने इम कहे, मैं सुण्या वीर ना वाण ।
धन कृतार्थ तुम पुत्र ! इम बोली छे माय ॥
२— वले कुंवर इसड़ी कहे सरधा मुझ परतीत ।
तो अनुमत लेसूं दीक्षा आई अमारे चीत ॥
३— वचन अनिष्ट अकतायवो सांभले सागे माय ।
थई अचेतन तिण समे पड़ी भूमिगत काय ॥
४— दासी आवे वायरे जल ना छांटा दीन ।
सावधान हुई जवे ऊठाय बैठी कीन ॥
५— कुमरने सामी जोवती रोती बोले एम ॥
तू इष्ट कंत माहरे अम्हने इम बोले छे प्रेम ॥

ढाल ६ ठी

[राग—वीर जिणंद समो सर्याए]

१— जागे वयों तू सुखतमथो रे रतन करंड समान
संवर फूल तणी परे रे, दुर्लभ देखवो वास रे ।
आपा बोली बाल विचार ॥

२— थारो वच्छ ! वाछु नहीं रे, खिण मात्र नो विजोग।
तिण कारण माहरा डीकरा रे, विलस काम ने भोग रे ॥जाया०॥

३— रहे तूं, म्हा जीवा जिते रे, कर जावा जब काल।
बेटा पोता वधार ने रे, दीक्षा लीजे सुविशाल रे॥
जाया तो विण घडी रे छमास॥

४— वीर कने व्रत आदरे रे, इम कयो बाप माय।
कुवर सर्व आदे करी रे, पाछो दे ते जताय॥
हे मायड़ी राजम सुख अपार॥

५— अध्रुव अनित्य अशास्वता रे, उपद्रव लगा है अनेक।
बीजल झबका नी परे रे, जल-परपोटो लेख ॥ हे मायडी० ॥

६— डाभ-अणी-जल-बिंदवो ए, जैसो सभा नो राग।
सुपन दर्शन नी ओपमा ए, सडन पड़न ए लाग॥ हे मायड़ी० ॥

७— पेली पछे देह छोडनी ए, कुण जाणे मा पाल।
मा बेटा खबरा नहीं ए, कुण कर जाये काल॥ हे मायडी० ॥

८— तिण थी हिव आज्ञा हुवे ए, वीर कनें लू दीख।
वलती माता इम कहे रे, साभल माहरी सीख ॥रे जा० बो०॥

९— ए थारो शरीर छे रे, वजण लखण उदार।
रोग रहित दोष को नहीं रे, जोवन कला अपार ॥रे जा० बो०॥

१०— इण वय में सुख भोगवी रे वधारी पोता नों पूत।
म्हारे काल कियां पछे रे, राजम ले अद्भूत रे ॥रे जा० बो० ॥

११— कुवर कहे सुण मातजी ओ, खरी कही ए वाय।
तिण देही असार छे ए, विघन अजाण्यो थाय रे॥ मा० सं० ॥

१२— किरम भिस्टा नी कोथली रे, मास नसा नो जाल।
हाड चाम बींट्यो रहे रे, ए विणस जाये ततकाल ॥हे मा० रा०॥

१३— अवस देही ए छाडणी ए, तिण में फेर न फार।
काचा माटी ना भड ज्यू ए, विनसत केती वार ॥हे मा० स०॥

१४— सड़न पड़न विध्वसणीए, जतन करतां जाय।
कुण जाणे पेहली पछे ए, दो अनुमत सुख दाय ॥हे मा० स०॥

२६— दर पीढया लग जाये चल्यो रे, खरचे नेव दुखाय।
न्यात जात में वाटता रे, तोही छेहरो न थाय॥ रे जा० वो०॥

३०— तिण कारण धन भोगवी रे विषय पाछी पड़ जाय।
वीर कने ले दीक्षा रे, ए लोभ देखाड्यो माय॥ रे जा० वो०॥

३१— कुवर कहे सुण मात जी हे, धन मे घणा रो सीर।
अगन चोर जल राय नो हे, न्यात मृतक पड्या भीर॥ रे० मा०॥

३२— जाव रीत कही पाछ ली जी, थाक गया वाप ने माय।
वचन कहे लागे नहीं रे, तव दीक्षा भय दिखाय॥ रे जा० वो०॥

दोहा —

१— संजम भय दिखालवा, माता बोली एम।
निग्रन्थ प्रवचन सार छे, सत्य अणुत्तर क्षेम॥
२— केवल प्रति पूरण अन्छे, न्याय शुद्ध सकलाप।
सिद्ध मुक्त मारग खरो, कह्यो जिणेसर आप॥
३— निजाण निवाण मारग सही, सब दुख कापण हार।
इण मारग रया थका जाये मुक्ति मझार॥

ढाल ७ वीं

[राग — भूलो मन भवरा कई भम्यो]

१— सर्पनी परे एके दिसे, चालवो रे पूत।
पाछणा - धार परे दोहली करतूत॥

२— दिक्षा छे पुत्र दोहिली, तो ने कहु छु जताय।
मेण-दात लोहना चणा, कुण सकेला चाय॥ दीक्षा०॥

३— वेलू रेत ना कवल ज्यू, संजम है निस्वाद।
गगा नी धार सामो चालवो, मारग एह अगाध॥ दीक्षा०॥

४— महासमुद्र तिरवो भुजा, दोहिलो तू जाण।
तीक्षा भाला ऊपर चालवो, सुलभ नहीं रे सयाण॥ दीक्षा०॥

५ — लांबी शिला अतिक्रमवो, चलवो खडग तिख धार।
[सं]जम दोहिलो करवी करम सू राढ़॥ दीक्षा०॥

६— कल्पे नहीं निर्ग्रन्थने आधाकरमी आहार।
औद्देशिक लेणो नहीं क्रीत-कृत पिण धार ॥ धीया० ॥

७— थाप्यो आहार लेणो नहीं रचना किये दोष।
दुकाल-भत्त पुनर वरजणो बादल-भत्त प्रसिद्ध ॥ धीया ॥

८— अटवी-भत्त पिण वरजणो रोगिया ने काज।
ए मुनि आहार ने भोगवे हणे संजम काज ॥ धीया ॥

९— कंद मूल फल बीज नो भोजन हरिकाय।
साधु ने भोगवणो नहीं पाप होयला थाय ॥ धीया ॥

१०— तू बेटा सुखी छे थयो नहीं छे दुख भोग।
न खमे पुत्र भी तावड़ो भूख त्रिसा नो सोग ॥ धीया० ॥

११— परीषहा बावीस छे, उदय हुवे सब आय।
समता भावमे ही वेदिया पुत्र सहणा रे थाय ॥ धीया ॥

१२— तिण कारण सुत समझले विलसो काम ने भोग।
विचार पछे भी धीर ते पुत्र लेणो जोग ॥ धीया० ॥

दोहे—

१— मात पिता कहतां थकां, बोल्यो एम कुमार।
ये साधपणो दुष्कर कह्यो तिण में फेर न फार ॥

२— साधपणो तिण ने दुष्कर मारग प्रवचन सार।
जिणरा कायर पुरुष ने दुख सुख वंछण हार ॥

३— अपरामो परलोक सूं इ लोक सुख नी चाह।
धर्मी पापी मनुष्यमे दुष्कर है यह भाव ! ॥

४— सूर वीर ने धीर नर सतवादी सतधार।
पराक्रमवंता मानवी दुष्कर नहीं लिगार ॥

५— तिण कारण दो आगन्या वीर कने हूं दीख।
इम सांभल माता पिता आज्ञा न माने सीख ॥

६— संयम लेवे चाव नहीं कही विगता भाव।
इण अवसर माता पिता राज को लोभ दिखाय ॥

७— एक दिवस भी राज श्री बेठा देखा पूत।
सांभल कंवर चुपको रमो ज्यो मेघ जिम मूत ॥

ढाल ८ वीं

[राग—इम धन्नो धण ने पर चावे]

१— मेघ कुवर जिम महिमा कीधी, ज्ञाता में प्रसिद्धी जी ।
माता पिता ए आज्ञा दीधी, महोत्छव कियो अति रिद्धी जी ॥

२— दान तणी ए महिमा जाणो, तिण थी सूत्र लिखाणो जी ।
उत्तम मन में हुलमज आणो, शका मूल न जाणो जी ॥दा०॥

३— श्री वीरजी दीधो सजम – भारो,
जनम हुवो अणगारो जी ।
पाले आठ प्रवचन सारो,
गुप्त ब्रह्मचर्य–धारो जी ॥ दा० ॥

४— वीर समीपे मुनि मन रगो,
भण्या इग्यारे अगो जी ।
छठादिक तप करि अभगो,
तजी न्यातिला नो सगो जी ॥ दा० ॥

५— आतम भाव दूपण सहु टाली,
जिन मारग उजवाली जी ।
घणा वरस लग चारित्तर पाली,
मास सथारो शुभ शाली जी ॥ दा० ॥

६— साठ-भक्त अणसण सिरे चाढी,
आलोयने सल काढी जी ।
काल करी सरधा मन गाढी,
प्रथम देवलोक गति लाधी जी ॥दा०॥

७— सुधर्म देवलोक पणे सुख पासी,
जिहां थित पूरी थासी जी ।
चवने मानव गति आसी,
केवल धर्म ने पासी जी ॥ दा० ॥

८— थिवर समीपे साधु थासी,
आराधी रे विसेसा जी ।
काल करी तीजे सुर रे थासी,
चव मानव भव पासी जी ॥ दा० ॥

९— चारित्र लेई पाचमे देवलोको,
वले मानव भव चोखो जी ।

सातम सुर पद भवे नर-लोका (लौकव),
भवमें जासी सुरलोका जी ॥ दा ॥

१०— पद मानव होसी सुख खासो
इग्यारमें सुर थारासो जी।
भवे एक मनुष्य बमारो खासो
चारित पाल' भगासो जी ॥ दा ॥

११— जासी सव्वारथ सिद्ध विमाणा
चवि महाविदेह बखाणो जी।
मनुष्य हुसी बहु चतुर सुजाणो
पढमवस्था मो परिमाणो जी ॥ दा ॥

१२— चारित्र ना टालिस सर्व दोषो
तप करि कर्मा न सोसो जी।
सीमक बूझने जासी मोक्षो
सुखिया ही हुवे संतोषो जी ॥ दा ॥

१३— इण रीत भवे भाचारी
पांच पांच से नारी जी।
त्यागी दीक्षा संयम धारी
सभी जासो सुगति मझारी जी ॥ दा० ॥

१४— सुरा सुरा नाम नगरम मासमा
सूत्र विपाके भाख्या जी।
ऋषि 'जयमलजी' जोड़ कर भाख्या
सौभम चित में राख्या जी ॥ दा० ॥

१५— अधिको आछो विपरीत होई
त मिच्छामि दुक्कड़ मोइ जी।
गुण कणो जिनमत इम जोई,
सौभम आ भद्र भाइ जी ॥ दा ॥

१६— अठारे स बीकाचार बामी
कार्तिक पूरणमासी जी।
नगर 'मिलारा' एम विमासी
ए चरित्र कयो रे हुलासी जी ॥ दा ॥

———

(३)

❀ भगवान् नेमिनाथ ❀

ढाल—१

(*राग—करो दान शील ने तप*)

१— 'शख' राजा ने 'यशोमती' रानी ,
जिण साधा ने वैरायो दाखा रो पानी ।
हुवा नेम कवर राजुल नारो ,
सुध – दान थकी खेवो पारो ॥

२— 'अपराजित' थी चव आया,
ज्यारी दिप दिप दीप रही काया ।
जस फेल्यो सहू ससारो ,
सुध दान थकी खेवो पारो ॥

ढाल—२

(*राग—चद्रायण*)

१— नगर 'शोरीपुर' राजियो रे, 'समुद्र विजय' राय धीरो ।
तस नदन श्री 'नेमजी' रे, सावल वरण शरीरो ॥
सांवल वर्ण शरीर विराजे,
एक सहस्र आठ लक्षण छाजे ।
दिन दिन अधिकी ज्योत विराजे,
दर्शन दीठा दारिद्र्य भाजे ।
श्री नेमीश्वरजी हो ॥

२ – एक दिवस श्री नेमजी रे, आया आयुध शालो ।
पचायन शख पूरियो रे, चाढयो धनुष करालो ॥
चाढ्यो धनुष कियो टकारो,
शब्द सुण्यो श्री 'कृष्ण' मुरारो ।
ए नर कठ्यो कोई अवतारो,
आय ने जोवे तो नेम कुमारो ॥ जी० ॥

———

२— कान बजावे वासुरी, गोपी नाचे ताली छद के ।
पाए नेवर रुण झणे, हस हस रामत रमे आणद के ॥
हूँ बलिहारी नेम की ॥

३— विच मेलिया 'नेम' ने, दोली फिर रही सगली नार के ।
नदन वन में आणद सूं, कोयल रा तिहां हुवे टहुकार के ॥
हूँ बलिहारी नेम की ॥

४— हाव भाव गोप्या करे, वलि वलि इधको नेम ने देख के ।
जादव-मन भींजे नहीं, शील सबल तणो विशेष के ॥ हू० ॥

ढाल—६

[राग—होली—]

१— देवर ने 'रूकमण' हसे, 'हरि' निभावे अनेको रे ।
भाई तू निभावी न सके, तिण सू डरता न परणे एको रे ॥
भाई व्याव मनावे 'नेम' को ॥

२— वलती दूसरी इम कहे, इण रा मन में धाको रे ।
तोरण आयां करे आरती, टीको काढने सासू खाचे नाको रे॥
बाई इम डरतो परणे नहीं ॥

३— वली तीसरी इम कहे, तोने बात कहू विचारो रे ।
बाई चित करने चवरी चढ़े, तीने फेरा लेणा पड़े लारो रे ॥
बाई सावलियो इम परणे नहीं ॥

४— वलती चोथी इम कहे, सांभल एक विचारो हे बाई ।
जुवाजुई रमता थकां रखे बनड़ो जावे हारो हे बाई ॥इम०॥

५— वलती पाचमी इम कहे, साभल मोरी वातो हे बाई ।
दोरो है काकण दोरड़ो, खोलणो पड़े एकण हाथो हे बाई ॥इम॥

६— 'गौरी' 'रूखमण' ने कहे, म्हारा सरिया वछित काजो हे बाई ।
तीन सो वरसा रा नेमजी कवारा फिरता आवे लाजो ए बाई ॥इम॥

७— अवर तो बात किलोल री, साचो एह उपायो हे बाई ।
आण आण नितरी कहे, ओ दुख सह्योह न जायो हे बाई ॥इम॥

ढाल—७

(राग—हूँ बलिहारी यादवां)

१— नारी घर रो सेहरो नारी सूं बाजे घर बार के ।
बिना घर में नारी नहीं रे घर गिणती में गिणो नहीं संसार के ॥
थे क्यूं परणो नी देवर नेमजी ॥

२— हिवड़ां तो समझ न का पड़ै
सुहावो लागे घेरबी थाम के ।
कृष्ण करसी थारी चाकरी
आशा नी देवर हिरदा मांय के ॥थे ॥

३— पुत्र बिना सवारी नहीं
कृष्ण राखेला थांरो कुल व्यवहार के ।
पुत्र बिना प्रभुता किसी
पुत्र बिना नहीं बधे परिवार के ॥थे ॥

४— एक नारी रो कांई रावणो
नारी हावे घर को सिणगार के ।
नारी बिना मंदिर किसो
कृष्णजी परण्या बत्तीस हजार के ॥थे ॥

५— राणी मिल सब इम कहे
एक नर्ज विनति भरतार के ।
इसका कठोरता कांई हुवा
थोड़ो तो हिरदा में विचार के ॥ थे ॥

ढाल—८

(राग चंद्रावल)

१— कृष्ण-गोप्यां मिल नेम ने रे, फाग रमण ले जावो ।
जल सूं भरी बावड़ी रे, पैठ पाणी रे मांयो ॥
पैठ किंहि पावड़ी पाणी
नेमजी मांहि न्हाव्यो पाणी ।
नाख्यो नाख्यो पाणी जाणी
ब्याव मनाय लियो मावांजी री ।नेमीश्वरजी॥

२— उग्रसेण-राय-कन्यका रे, राजमती बहु रूपो।
शील गुणे करी सोभती रे, चतुराई बहु चूपो॥
चतुराई बहु चूप सिखाणी,
घणी विचक्षण मधुरी वाणी।
चौषठ कला में शील-समाणी,
बीजली केरी ओपमा आणी ॥जी०॥

३— नेम भणी परणायवा रे, मागे कृष्ण नरेसो।
'उग्रसेण' राय इम कहे रे, एक सुणो हमारी रेसो॥
एक सुणो थे रहस हमारी,
विध सू जान करो तुमें भारी।
आवो म्हारा घर मझारी,
तो परणाऊ राजकुमारी ॥जी०॥

४— मानी बात श्री कृष्णजी रे, थाप्यो व्याव मडाणो।
ब्राह्मण लगन लियां थकां रे, हरख्या राणी राणो॥
हरख्या राणी राणज कोई,
नेमजी आगल पीठी ठोई।
माहे घाली घणी कसबोई,
न्हाय धोय कल्पवृक्ष ज्यू होई ॥जी०॥

ढाल–६

१— महाराज चढे गज रथ तुरिया
हय गय रथ पायक–
सुख – दायक।
नयन–कमल हरसत ठरिया ॥ महा० ॥

२— खूब वरात बनी–
छ्यावन की।
घोर घटा उमटी झरिया ॥ महा० ॥

३— लाल गुलाल, अबीर अवारचो।
चऊ दिस नाच रही परिया ॥ महा० ॥

ढाल-११

(*राग—चन्द्रायण—*)

१— इण विध जान जलूस सु' रे, मन में अधिक जगीसो ।
आगे आय ऊभा रह्या रे शक्रेन्द्र ने ईशो ॥
शक्रेन्द्र ने ईशज दोई,
ऊभा जान रह्या छे जोई ।
नेम कवर परणे नहीं कोई,
तिणसू मोने अचिरज होई ॥ जी० ॥

२— कृष्ण कहे इन्द्रा भणी रे, थे रहिजो अबोला सीधा ।
विगर बुलाया आविया रे, थाने किण पीला चावल दीधा ॥
किण दीधा थाने पीला चावल,
जान बणी छे रग वेलावल ।
म्हारे काम पड्यो छे मावल,
रखे बजावो दिखणी बावल ॥ जी० ॥

ढाल-१२

(*राग—चलत*)

१— मैं नीठ नीठ ब्याव मनायो रे,
थे विगर बुलाया क्यू आया ।
थे रहजो अबोला सीधा रे,
पिण पीला चावल किण दीधा ॥

२— एतो इन्द्र बोले विसेखा रे,
कान्हा ! मैं पिण मेलो देखा ।
थे जान जोरावर खाटी रे,
किम उतरे नेम पीली पाटी ॥

ढाल-१३

(*राग—चंद्रायण*)

१— इन्द्र बोल्या बेऊ कृष्ण ने हो, लाया थे जान विसेखो ।
नेम कवर परणे जिको हो, मैं पिण लेसा लेखो ॥

मैं पिया ओढी स्याम री साडी
किम पहरे नेम पीली पाटी।
बाबा बाव राजा गढ़पाटी
पिउ किम बिन उतरेला पीली पानी झाटी॥

ढाल-१४

१— राजुल-सखी आई मिल सगली निरखण नेम कुमार।
बड़ी बरात यादवन की निरखी हुवो हरख अपार॥
देखो सहियाँ बनड़ो है नेम कुमार॥

२— साँवल सूरत मोहिनी मूरत यादव-कुल-सिणगार।
तीन भवन में नहीं कोई उपमा रूप सके अणुहार॥देखो॥

३— धन माता जिण उदर धरियो धन जिण कुल अवतार।
निरखत नेणा चैन अति उपजत मोद रहा मलार॥देखो॥

४— कानां-कुण्डल बादल छवि कंठ अमोलक हार।
मुकुट किरण कांपे शिर ऊपरे बरसे अमृत धार॥देखो॥

५— सर्व सखी रही देख अचंभे, फिर आई तिण वार।
राजमती पासे इम भाखे नेम मणो अधिकार॥देखो॥५॥

ढाल-१५

(*राग—सोरठी*)

१— सहियाँ राजुल ने कहे
थारो मोटा भागो ए,
भव्यागो ए।
नेम सरीखो वर मिलियो सहियो ए॥

२— बलती राजुल इम कहे,
म्हारे जीमणो फरूके गातो ए।
करु-बातो ए—
मिलसी के मिलसी नहीं-सहियाँ ए॥

३— बलती सहियाँ इम कहे
बाई! बोलतां मती चूको ए।
परो थूको ए,
तोरण ऊपर आविया सहियाँ ए॥

४— सांवरिया री सूरत मूरत-
मोमे रंगी चंगी ए ।
पचरंगी ए,
मुकुट विराजे नेमने क-सहिया ए ॥

५— नेम कुंवर तोरण चल्या,
पशुवा करी पुकारो ए ।
हाहाकारो ए—
फुस्यो सगली जानमे क-सहिया ए ॥

ढाल-१६

[राग—फाग]

१— सांचाणा सारस घणा, जीव तणी घणी जात ।
जादव राय ! रोकी ने राख्या पींजरे, दुख करे दिन रात ॥
जादव राय ! तुम विन करुणा कुण करे ॥

२— हरिण सूसा ने बाकरा, सूर सावर ने मोर ।
दयाल राय ! केई वाडे केई पिंजरे, दुखिया कर रया शोर ॥
दयाल राय ! तुम विन करुणा कुण करे ॥

३— हिरण्यो हिरणी ने कहे, बाहिर गया बाल ।
दयाल राय ! चूगो पाणी लेवा भणी, कुण करसी साल सभाल ॥द०॥

४— पूरे मासे पारेवडी इम करे अरदास ।
जादव राय ! बंधन पडया पग माहरे, ढीला करे कोई पास ॥जा०॥

५— तीतर कहे तीतर भणी,
गर्भ छे उदर साय ।
जादव राय ! संकट पामू अति घणू
कोइक करुणा करि दे छोडाय ॥जा०॥

६— अशरण थका केई पखिया,
बिल बिल करे निरधार ।
दयाल राय ! छोडावण वालो कोई नहीं,
छोडावे तो नेम कुमार ॥ दयाल० ॥

जादव ! हिवे चिरजीव जो
बलिहारी तुम बाप ने माय के,
पुत्र रतन जिन जनमियो ।
स्वामी ! थे सारिया, अम्ह तणा काज के,
तीन भवन रो पाम जो राज के—
शील अखंडित पालजो ॥

ढाल—१६

[*राग—चद्रायण*]

१— वैरागे मन वाल ने रे, तोरण सू फिर जायो ।
इण अवसर श्री कृष्णजी रे, आडा फिरिया आयो ॥
कृष्ण फिर्या छे आडा आई,
हिवडे धीरज रख चतुराई ।
तेल छढी ने किम छिटकाई,
जादव केरी जान लजाई ॥जी०॥

२— नेम कहे सुण बधवा रे, ए ससार असारो ।
कुटुम्ब कबीलो छोडने रे, हू लेसू सजम-भारो ॥
हूँ लेसू सजम - भारो,
कामभोग जाण्या खारो ।
ए नारी न लगाऊ लारो,
मुक्ति-रमणी सू छे मन म्हारो ॥जी०॥

३— जो थारे मन में आ हुँती रे, हू नहीं परणू नारो ।
तो इसडी जान जुलूस सू रे, मोने नहीं लावणा था लारो ॥
मोने नहीं लावणा था लारो,
जो मन वर्त्यो हो इम थारो ।
हू तो लेसू सजम - भारो,
तो इतरो काई कियो विस्तारो ॥जी०॥

४— मन माडाणी मनावियो रे कान्हा ! थेहिज म्हारो व्यावो ।
म्हारे तो पेला हुँतो रे, सजम ऊपरे चावो ॥
चारित्र ऊपर चाव हमारो,
वचन न लोप्यो एकज थारो ।

ढाल-२१

१— सखी-मुख साभल्यो राजुल बाल,
नेम गया रथ पाछो वाल के।
धरणी ढली ने लहीं मूरछा-
चदन लागे छे जेम अंगार के॥
सखी मोने पवन म लावजो,
हिरदा में वसे नेम कुवार के-
राजमती इम विल विले॥

ढाल-२२

(राग—काईक ल्योजी ल्योजी)

१— आठ भवा री नेहज हुतो, नवमें दी छिटकाई।
तुमसा पूत पनोता होय ने, जादव-जान लजाई॥
ऊभा रोजी, थे रोजी रोजी रोजी, ऊभा रोजी॥

२— सांवलिया - साहिब ऊभा रोजी
थे छो म्हांरा ठाकुर ऊभा रोजी
म्हें छां थारा चाकर ऊभा रोजी॥

३— हरि हलधर सा जानी वणिया, तुम रे कुमिय न काई।
विन परमारथ छोड चल्या, सीख कहा सू पाई॥ऊभा०॥

४— जो कोई खून हुवे मुज अन्दर, तो दू साख-भराई।
पिण कहो जुग में न्याय करे कुण, जो हुवे राय अन्याई॥ऊभा०॥

ढाल-२३

१— तरसत अखिया, हुई द्रुम-पखिया।
जाय मिलो पिव सूं सखिया॥
यादुनाथजी रे हाथ री ल्यावे कोई पतियां
नेमनाथजी-दीनानाथजी॥

२— जिण कू-ओलभो एलो जाय कहणो,
थे तज राजुल किम भये जतिया॥नेमनाथजी०॥

३— जाकू दूगी जरावरो गजरो,
कानन कू चूनी मोतिया॥नेमनाथजी०॥

ढाल-२६

(राग हंस गया बटाऊ)

१— किन के सरणे जाऊ, नेम विना किन के शरणे जाऊ।
इण जग माय नहीं कोई मेरो, ताकी मैंज कहाऊ ॥नेम०॥

२— मात पिता सुण सखी सहेल्यां, लिख कर दूत पठाऊ।
किण गुन्हें मोय तजी पियाजी, मैं भी सदेसो पाऊ ॥नेम०॥

३— म्हें तो पल एक सग न छोड़ू, छोड कहो किहां जाऊ।
अब टुक धीरप रथ-हाथो, चालो मैं भी थारे लार आऊ ॥नेम०॥

ढाल-२७

१— अरि मेरा दुख मत कर जननी !
म्हें जाऊगी गिरनार।
दीक्षा लेऊगी भव-तरणी ॥

२— अरि मात पिता सुण सखी सहेली,
करो क्षमास जननी।
अब रहणे की नांय भई,
मैं करू श्याम-मिलणी ॥ अरि० ॥

३— छपन कोड जादव मिल आये,
खूब बरात बनी।
बिन परण्या मुझ नाथ फिरे,
सो कीधी बात घनी ॥ अरि० ॥

४— छिन में काया माया पलटे,
ज्यू जल डाभ-अणी।
कुञ्जर-कान, पान पीपल को,
ऐसी आय बनी ॥ अरि० ॥

५— मोसूं रे मोह तज्यो मुज प्रीतम,
करी निर्मल करणी।
पशुवन के शिर दोष दिया,
प्रभु मुगत-वधू परणी ॥ अरि० ॥

इहा तो नर दीसे छे कोई।
सती तिहा हे कपे होई।
राखे शील भागेला मोई,
हेठी बेठी अग गुपोई ॥जी०॥

३— डरती देख सती भणी रे, इम बोल्यो रहनेमो।
हू समुद्रविजयजी रो डीकरो रे, तू सोच करे छे केमो॥
तू सोच करे छे केमो,
हे सुन्दर! घर मोसू पेमो,
दुर्लभ मिनख जनम एमो,
आदरसा वले सजम-नेमो ॥जी०॥

ढाल-३१

१— चित चलियो मुनिवर नो देखी, राजमती कहे एम।
काम फेल करणी इण काया, मोने साचे मन नेम॥

२— मुनिवर दूर खराडो रे, लोगो भर्म धरेगा।
नारी-सग किया थी रे, पापे पिंड भरेगा ॥मुनि०॥

३— जुवती रच्यो इण मडल जग में मोटो जाल।
कामी-मिरग मारण के ताई मूढ मरे दे फाल ॥मुनि०॥

४— नाक-रींट देखी माखी, चित में चिंते गट के।
पिण पग पाख लपट जद जावे, मरे शीस पटके ॥मुनि०॥

५— केसर वरणी कोमल काया, मूढ करे मन हूँस।
ए पिण जहर हलाहल जाणो, जैसो थली रो तूस ॥मुनि०॥

६— देखी नेण काजल रा भरिया, जाणे दल उत्पल का।
कामी देव मारण के ताई, काम देव रा भलका ॥मुनि०॥

७— ऊजल कुल ने कलक लगावे, नाखे दुर्गति ऊडी।
खोवे लाज जनम री खाटी, पर नारी नरक री कूडी ॥मुनि०॥

८— राजा जाणे तो घर लूटे, खर चाढे शिर मूडी।
जग सगलो जाणे भूडो, ए करणी सहू भूडी ॥मुनि०॥

९— फिरता गिरता राज दुवारे, सचरता पर गलिया।
हस हाथ दे बजावे ताली, देखाडे आगुलिया ॥मुनि०॥

१०—दुर्गंध ज्यूं क्यूं पिवे सांभल बात तू मोरी।
लाज गमावी करसी हासी जासी लाज वाबियी ॥मुनि॥

११—थांरा जोत जागे तुम कुल मे स्यूं जग बेसी सींचो।
तुम पर वार करसी पाणी जावत जोसी मीचो ॥मुनि॥

१२—महासती तू पद मकारज त्याम ने नहीं जावे।
जो मति मीठे तो पिय मुनिवर! जनम कहो किम जावे ॥मुनि

१३—जातिवंत कुलवंत कहीजे वमिया तू नहीं रींमे।
जिम दुख कारण बहु दुख पामो एहवो काम न कीजे ॥मुनि॥

ढाल—३२

(राग—सुरता परम हदे भयौ)

१— गज असवारी छोडने हो—मुनिवर!
खर ऊपर नहीं बेस।
देव लोग रा सुख देखने हो—मुनिवर!
पाताले नहीं पेस॥
सुगणा साधुजी हो मुनि! थांरा मन म पाछो फेर॥

२— अमृत भोजन छोडने हो—मुनिवर!
दुखिया को कुण जाप।
देव लोक रा सुख देखने हो मुनिवर!
नरक न जावे दाय ॥सुगणा॥

३— खीर खांड भोजन करी हो—मुनिवर!
वमियो कर्दम-कीच।
वमिया री वांछा करे हो—मुनिवर!
काग कुत्ता के नीच ॥सुगणा॥

४— इण परिणामे जाइये हो—मुनिवर!
संयम थिर नहीं होय।
गंधण कुल रा सर्प ज्यूं हो—मुनिवर!
वमिया न मत जोय ॥सुगणा॥

५— वचन सुणी राजुल तणा हो—मुनिवर!
चित्त न आवता ठाम।

धन धन राजुल तू सही हे-राजुल !
धन थारो परिणाम ॥ सुगणा० ॥

६— नरक पड़ता राखियो हे राजुल !
इम बोल्यो रहनेम ।
मुजने थिरता कर दियो-हे राजुल !
वचन-अकुश गज जेम ॥ सुगणा० ॥

७— नेम समीपे जायने हो-मुनिवर !
शुद्ध थया अणगार ।
निर्मल संजम पालने हो-मुनिवर
पहुँता मुगत मझार ॥ सुगणा० ॥

८— शिव सुख राजमती लही हो-मुनिवर !
पामी परमानन्द ।
चौपन दिन छद्मस्थ रह्या हो मुनिवर !
धन धन नेम—जिणद ॥ सुगणा० ॥

ढाल—२२

(*राग—चंद्रायण*)

१— तीन से बरस घर में रह्या हो, रख्या रूड़ा भावो ।
संजम पाल्यो सात से हो, सहस्र वरस नी आवो ॥
सहस्र वरस नी आवज पूरी ,
जिनवर करणी कीधी रूड़ी ।
कर्म किया सगला चक चूरी ,
पांचसे छत्तीस सूं शिव पूरी ॥जी०॥

२— समत अठारे चोड़ोतरे रे, भाद्रवा मास मझारो ।
शुद्ध पाचम सनीसरे रे, कीधो चरित्र उदारो ॥
कीधो चरित्र उदार आणदा ,
इम जाणी छोडे घर फंदा ।
धन धन समुद्रा विजयजी रा नन्दा ,
रिख 'जयमलजी' कहे नेम जिणंदा॥जी०॥

———

(४)

❀ राजा-प्रदेशी ❀

दोहे—

१— 'रायपसर्णी' सूत्र में राय प्रदेशी का भाव ।
'सूर्याभ देव मरने हुवो धर्म तणे परभाव ॥

२— 'आमलकप्पा नगरिये, समवसर्या महावीर ।
'सूर्याभ देव तिहां आवियो नाटक करवा तीर ॥

३— डाबी जिमणी भुजा थकी काढ्या एक सौ आठ ।
कुंवर कुंवरियां जुजुवा नाटक करण ने बाट ॥

४— वीर चरित्र सुर मांहि ने भावयो नाटक मांय ।
गौतमादिक न दखाड़ ने सुर आयो तिहां जाय ॥

५— देव तणी रिध देख ने पूछे गौतम स्वाम ।
एतली रिध इण काय मे पाछी कुण्य से ठाम ॥

६— बीस नर नारी थया मुनि गुणा ने बार ।
बादल आंबि मेह देख मे मांहि बसे तिण बार ॥

७— जिम बजाज काड़े कापड़ो बांधि मांहि दे मेल ।
तिम इण देव शरीर में दीवी थापि मेल ॥

गौतम—८— परमव सामी ! ए कुण हुतो बसतो कुण्य से गाम ।
करणी इण कैसी करी कृपा करि कहो स्वाम ! ॥

भगवान्—९— पाछले भव किया करि मोटी कई बहुमान ।
गौतम प्रमुख आगले ते सुणवो धरि ध्यान ॥

ढाल–१

(राग—कपूर हुवे अति ऊजलो रे)

१— तिण काले ने तिण समयी
'जम्बू' द्वीप मझार ।
'भरत क्षेत्र 'श्वेताम्बिका' थी
नगरी होती विस्तार हो ॥

गौतम ! सुण पूरब भव एह
अते क्षमा अधिकी करीजी, निज राणी दीधो छेह ।।हो०।।

२— 'पएसी' राजा हुँतो रे,
अधरमी अविनीत ।
पाप तणी आजीविका रे,
दुष्ट ने खोटी नीत ।।हो गौतम०।।

३— अकरा दड लेतो घणा रे,
करतो जीवा की घात ।
पर-सुखिये दुखियो हुँतो रे,
रुद्रे खरडिया हात ।।हो गौतम०।।

४— पाप करि धन भेलो करे रे,
रीझे माठे काम ।
कुव्यसन ने सेवतो रे,
अपछदो अभिराम ।।हो गौतम०।।

५— हणे छेदे भेदे कूडो बदे रे,
थोड़े गुन्हें घणी मार ।
काण न राखे केहनी रे,
रुद्र क्षुद्र भयकार ।।हो गौतम०।।

६— हाथ ने पग छेदन करे रे,
कान, आख, जीभ, नाक ।
मारे दुख दे बहुविधे रे,
पड़े परदेशा में धाक ।।हो गौतम०।।

७— थर हर कपे नेडा थका रे,
अलगा पावे चैन ।
ओरा री कुणसी चले रे,
न माने माइता रा वैन ।।हो गौतम०।।

८— राय तणे राणी हुती रे,
'सूरिकता' नाम ।
प्रीतम सू अति रागिणी रे,
रूपवत अभिराम ।।हो गौतम०।।

९— शरीर-बदन मृगलोचना रे,
हरितकी सुविशाल ।
राजा माने अति घणी रे
जीव सू अधिक रसाल ॥हो गौतम ॥

१०— हूँ तो राय ने जीवड़ो रे
'सुरिकंत कुमार ।
पदवी थी युवराज नी र
कलकला गुण सार ॥हो गौतम ॥

११— मार्दे मित्र सखाइयो रे,
हूं तो 'चित्त प्रधान ।
मार सूंप्यो छे घर तणो रे,
राय बधार्यो मान ॥हो गौतम ॥

१२— काम चलावे राज नो रे,
बधारे बुद्धि-निधान ।
ईड सेवे चित्त संतोष ने रे
रेत-रखा पर मान ॥हो गौतम ॥

१३— राजा दीधी आगन्या रे,
पुर अंतेउर माँय ।
अप्रतीत नहीं उपजे रे,
मन मानि तिहाँ जाय ॥हो गौतम ॥

१४— राज्य तणो धुरंधरो रे
मोटो मेढ़ी – मूल ।
राजा ने आंखना की परे रे
दीधो राज नो सूल ॥हो गौतम॥

१५— छानी प्रगट बात ने रे
हूँतो पूछवा जोग ।
बार बार वले पूछवा रे,
कहिवा सुणिवा जोग ॥हो गौतम ॥

१६— तिण काले ने तिण समे रे
देश कुणाल के माँय ।
'सावत्थी नगरी रूबड़ी रे
ऋद्धि वृद्धि करि सुखदाय॥हो गौतम ॥

१७— ईशान कूण मांहे हुंतो रे,
'कोष्टक' नामे बाग ।
पान फले करि सोभतो रे,
दीठां उपजे राग ।।हो गौतम०।।

१८— सावत्थी नगरी में बसे रे,
'जितशत्रु' नामे राय ।
'पएसी' राजा तणो रे,
हुतो मित्र सखाय ।।हो गौतम०।।

दोहा—

१— राय 'पएसी' मूकियो, 'चित्त' 'सावत्थी' माय ।
धर्म पामे किण विधे, ते सुण जो चित्त लाय ।।

ढाल–२

(राग—कर्म थी न छूटे हो कोई विन भोगव्यां रे)

१— तिण काले ने तिण समे रे,
पार्श्व संतानिया साध ।
'केशी कुमार' श्रमण गुण सोभता रे,
संयम तप समाध ।।

२— भलाई पधार्या हो केशी स्वामजी रे,
भव जीवा के भाग ।
मार्ग दिखावे हो मुनिवर मोखनो रे,
उपजावे वैराग ।।भ०।।

३— आय ने उतर्या कोष्टक बाग में रे,
निरवद जायगा जोय ।
ते ऋषि ने पत्त करी निर्मला रे,
बलवंत रूपवंत होय ।।भ०।।

४— गुणवंत रा विनयवंत छे रे,
ज्ञान - दर्शन - चारित्रवंत ।
लाज लाघव ओयसी तेयसी रे,
जसवंत वचन — महंत ।।भ०।।

उपदेश - १३— लोकालोक नव तत्व ना रे,
भाख्या भिन्न भिन्न भेद ।
ए सुख जाणो सगला कारिमा रे,
राखो मुगति-उमेद ॥ भ० ॥

१४— खानो भोग कर्म छे रोग ना रे,
विलसतां विगडत ।
सुख थोडो ने दुख घणो अछे रे,
रींझे कुण मतिवत ॥ भ० ॥

१५— दोय विधि धर्म देखाडियो रे,
आगार ने अणगार ।
मोक्ष ना सुख कह्या सासता रे,
और अथिर ससार ॥ भ० ॥

दोहे—

चित्त — १— साभल चित हरख्यो घणो, सरध्या तुमरा वेण ।
भवि जीवां नां तारका, थे साचा मिलिया सेण ॥
२— सेठ सेनापति मत्रवी, धन्य ते तजे घर बार ।
ऐसी पहुँच म्हारी नहीं, थो श्रावक ना व्रत बार ॥

ढाल—२

(राग—इण जुग माहे रे कोई किण रो नहीं)

१— चित्त उजवाली रे आपणी आतमा,
लिया श्रावक ना व्रत बोरो जी ।
नव तत्व भेद रे जाण्या रूडी परे,
कियो निज आतम विस्तारो जी ॥चि०॥

२— जीव न मारे रे जाण ने चालतो,
वले भूठ ने कियो आगो जी ।
पांच चोरी का रे त्याग ज आदर्या,
वले पर नारी नो त्यागो जी ॥चि०॥

३— परिग्रह राख्यो रे मन में तेवड्यो,
दिशी नी करी मरजादो जी ।

प्रेम पिलारे रे व्रत बहि सात में,
हांल्या अनथ दंड प्रमादो जी ।।चि०।।

४— सामायिक पडिक्कमणो नित करे
देशावकाशिक सु प्रेमो जी ।
पौषध करे इक इक मास में
शुद्ध पाळे लिया नेमो जी ।।चि०।।

५— बारमां व्रत में दान देव भणो
सार्यां न मिरदीमो जी ।
चवदे प्रकारे हर्ष भणो करी
राखो सुपातर ने पोसो जी ।।चि०।।

६— गुरु देवां की रे भावे भावना
देवे हर्ष सु दानो जी ।
साधू ने कल्पती वस्तु राखे घणी
दान देव न करे मानो जी ।।चि०।।

७— नियम चवदे रे नित्य चितारवे
पर उपगारी मिरदोंवो जी ।
भावना भावे रे चारित्र लेवा तणी
मिश्रर लागी एक मोक्षो जी ।।चि०।।

८— वीतराग ना रे वचन सु चित तणी
भींजी मेरी सात धातो जी ।
रंग लो लागो रे चोळ मजीठ ज्यू
पडिक्कमणो दिन रातो जी चि०।।

९— केशी श्रमण मिलियां चित तणा
बढिया पातिक जाळो जी ।
मिथ्या मत अंधारो मेट ने
कियो समकित पर उजाळो जी ।।चि०।।

दोहे—

१— श्रावक ना व्रत आदर्यां नव तत्व को हुवो जाण ।
डिगायो डिगे नहीं जो देव चलावे धाण ।।
२— पौषध पडिक्कमणा करे, देवे सुपातर दान ।
'स्वेताम्बिका' री बीनती करे चित प्रधान ।।

ढाल—४

(राग—रसीआ रा गीत)

१— चित्त इम लेई राजा जी रो भेटणो,
आयो गुरा के पास हो महामुनि ।
'श्वेताम्बिका' नगरी हो जाता भाव सू,
वदणा करे उल्लास हो महामुनि ॥

२— पूज्यजी पधारो हो नगरी इम तणी,
होसी घणो उपगार हो महामुनि ।
घणा जीवा ने हो मारग आणसो,
थे देस्यो पार उतार हो म० मु० ॥पूज्य०॥

३— 'श्वेताम्बिका' नगरी हो स्वामीजी दीपती,
छे वा देखवा जोग हो म० मु० ।
तिण में आया हो नफो बहु नीपजे,
सुखिया वसे बहु लोग हो म० मु० ॥पूज्य०॥

४— 'पएसी' राजा ने मेल्यो भेटणो,
लेई चालू स्वाम हो म० मु० ।
दोय वार तीन वार कीधी वीनती,
गुरु नहीं बोल्या ताम हो म० मु० ॥पूज्य०॥

५— बार बार करी इम वीनती,
तरे दे दृष्टान्त मुनिराय हो म० मु० ।
फलियो फूलियो कोई बाग हुवे,
सू पंखी जाय के न जाय हो चतुर नर !
उत्तर द्योनि हो चित्त इण वात को ।

६— हां, सामी ! जावे हो चित्त इम कहे,
वले बोल्या मुनिराय हो च० न० ।
तिण बाग में हो कोई पारधी वसे,
तो जाय के नहीं जाय हो च० न० ॥उत्त०॥

७— नहीं जावे छे पखी, चित्त इम कहे,
भय उपजे तिण ठाय हो म० मु० ।
इण दृष्टान्ते हो श्वेताम्बिका नगरिये,
वसे पएसी राय हो च० न० ॥उत्त०॥

८— सामी ! सू प्रयोजन थां रे राज सू
  बचन कहे चित्त एम हो मभु ।
लोक बसे बहु सेठ सेनापति
  करसी स्वामीजी की सेव हो मभु ॥पूज्य ॥

९— मास महिने तुमने वहरावसी
  असनादिक चार आहार हो म मु० ।
वस्त्र पात्र वंदना भाव सू
  करसी पूजा सत्कार हो म मु ॥पूज्य ॥

१०— भांत भांत कर कीधी वीनती
  चित्त साहो सुविनीत हो म मु ।
वलता गुरु बोल्या वाणीजसी
  पवित्र साधां की रीत हो मभु ॥पूज्य०॥

११— सांभल वाणी हो चित्त हर्षित हुवो
  रामांचित थई देह हो मभु ।
समझ्यो जाणे हो रिख 'अवसरज्ञ' कहे
  धर्म स्नेही सू नेह हो म मु ॥पूज्य ॥

दोहे—

१— वंदना कीधी भाव सू गुरु ऊपर बहु राग ।
मेटयो हो न भावियो सेवविया रे भाग ॥
२— वन-पालक ने इम कहे जो आवे केशीकुमार ।
दीजे जालक री आगन्या पाठ पाटला पंधार ॥
३— विचरत केशी गुरु पांगुरे खबर दीजो मोय ।
आया छवी थकावणी आसा पूरसू तोय ॥
४— इण विध करने अतापरी चित्त आयो निज ठाम ।
पांच सय मुनि सु परवर्या आया केशी साम ॥
५— नाम गोत पूछी करी जालक आज्ञा दीध ।
आवी ने चित्त ने कह्यो आया थयुन पीध ॥
६ – सुख मे बैठो छतरी करी वन्दना संपूत ।
रथ बेसी अन्दन गयो देवक मुक्ति रा सूत ॥

७— वन्दना कर बैठो तिहा, गुरु दीधो उपदेश ।
बीजी परसदा बहु सुणे, दयाधर्म की रेस ॥

८— साभल सहु हर्षित थया, प्रणमें गुरु ना पाय ।
धर्म दलाली चित्त करे, ते सुणजो चित्त लाय ॥

ढाल—५

(राग—रुकमण तू तो सेणी श्राविका)

१— हाथ जोडी वन्दना करे,
साभल जो मुनिराय हो ।
स्वामी राय प्रदेशी पापियो,
आप आणो मारग ठाय हो ॥स्वा०॥

२— माहरा राजा ने धरम सुणावजो,
होसी घणो उपगार हो स्वा० ।
दुपद चौपद पखिया,
साता बरते अपार हो ॥स्वा० मा०॥

३— दड कर थोडा लिये,
जीवा की जयणा थाय हो स्वा० ।
पशु मृग उदर नोलिया,
दया ऊपजे दिल माय हो ॥स्वा०मा०॥

४— रैयत भणी साता हुवे,
देश विदेशे सुख हो स्वा० ।
जीव घणा आणन्द पासी,
टलसी घणा रा दुख हो ॥स्वा० मा०॥

५— बार बार कीधी वीनती,
उपगारी होवे नर्म हो स्वा०
गुरु कहे चार बोले करी,
न लहे केवली परूप्यो धर्म हो चिता ।

६— हू धर्म सुणावु किण विधे,
किम आणू मारग ठाम हो चिता ।
चार बोल किसा किसा किसा,
तेहना बताओ नाम हो ॥स्वा० मा०॥

७— वंदना भाव करे नहीं
 भरथा नहीं चित लाय हो ॥चित्ता ॥
माम मगर आयां साथ के,
 काम नहीं सामा चलाय हो चित्ता ॥धुं ॥

८— मार्ग पिया मिलियां साध सूं
 आवे मूंढा डाल हो चित्ता ।
ऊंचो हाथ करे नहीं
 मुख थे मस्तो हाल हो चित्ता ॥धुं ॥

९— के किणसूं वातां करे,
 के किण मैं स्ये वेड हो चित्ता ।
के आंख्या दोनूं ढांक दे,
 के गरदन देव फेर हो चित्ता ॥धुं०॥

१०— घरे आयां पिया साधु ने
 न दे असणादिक आहार हो चित्ता ।
सबे आंग पिया तहने
 नहीं दान तणो व्यवहार हो चित्ता ॥धुं॥

११— ए चारे संबला किया
 पामे धम विरोध हो चित्ता ।
म्हारा राजा ने म्हारां मोहिलो
 वाल न पावे एक हो चित्ता ॥धुं ॥

१२— चित्त कहे इरा संजोग मा
 थोड़ा राख्या चराय हो स्वा ।
मैं फिक ही कावे राय ने
 पहिली दियो बताय हो ॥स्व मा०॥

१३— तिण मिस कर ने तुम कने
 आयांसूं हूं राय हो स्वा ।
उपदेश देवो निश्शंक थी
 जिम समकित थिर थाय हो ॥स्वा० मा ॥

१४— आप पुरुष हो मोटका
 गुण रत्नां री पेढ हो स्वा ।
राय प्रदेशी ने आप के
 देसूं आखा भेल हो ॥स्वा मा ॥

१५— कहिज्यो धर्म नि.शक पणे,
जिम छे थांरो तान हो स्वा० ।
नहीं आवे ऊनो बायरो,
मुझ सरीखा प्रधान हो ॥स्वा० मा०॥

दोहे—

१— गुरु बोल्या जाणीजस्ये, कहिसा अवसर देख ।
साभल ने चित सारथी, हर्षित हुवो विशेष ॥
२— उठी ने वदना करी, पाछो आयो गेह ।
किण विध लावे राय ने, साभल जो धरि नेह ॥
३— आय राजा ने इम कहे, साभल जो महाराय ।
घोडा मैं देश कबोज ना, ताजा कीधा चराय ॥

ढाल—६

(राग—शील कहे जग हू वडो)

१— मुझ ने आप सूप्या हुता, सो देखिल्यो चौडे रे ।
अवसर आज तणो भलो, घोडा किसडाक दोडे रे ॥
२— धर्म दलाली चित्त करे, साभल जो नर-नारी रे ।
'चित्त' सरीखा उपगारिया, बिरला इण ससारी रे ॥धर्म ॥
३— राय पएसी चित्त तणो, मान्यो वचन अनूपो रे ।
राजा के बहुली हुवे, घोडा देखण री चूपो रे ॥धर्म०॥
४— चित्त चारे बुद्धि नो जाण छे अकल उपाई एती रे ।
कोई बीजो नर बेसाणसू, तो गुरु सू पड़सी छेती रे ॥धर्म०॥
५— रथ ने घोड़ा जोतर्या, चढियो पएसी रायो रे ।
चित्त बैठो खड़वा भणी, अनेक योजन ले जायो रे ॥धर्म०॥
६— आहमा साहमा दोड़ाविया, छाया जाण उमेदो रे ।
राय पएसी इम कहे, चित्त हुँ पाम्यो खेदो रे ॥धर्म०॥
७— राय 'पएसी' इम कह्यो, चित्त अवसर को जाणो रे ।
गहरी छाया बाग की, रथ ऊभो राख्यो आणो रे ॥धर्म०॥
८— धर्म-कथा केशी कहे, मोटे मोटे सादो रे ।
राय पएसी देख ने, मन पाम्यो विखवादो रे ॥धर्म०॥

२३—बेसण नाहि बुलावणो, नहीं वचन रो साजो रे ।
माहरी आयां की राखी नहीं, हूं दीन दुखी को राजो रे ॥धर्म०॥

२४—राय 'पएसी' चिंतवे, हूँ आई ने पिछताणो रे ।
काइक परसन पूछणो, सहजे आण भराणो रे ॥धर्म०॥

२५—जीव काया जुदा कहो, मुनि भणि कहे रायो रे ।
तब बलता मुनिवर कहे दाण रो चोज लगायो रे ॥धर्म०॥

२६—भारी वस्तु मुलाय ने, भर्यो नवी है दाणो रे ।
तेह पुरुष खड़े कठी – उजड़ खड़े सुजाणो रे ॥धर्म०॥

२७—इण दृष्टांते राजवी, भाख्यो हमारो दाणो रे ।
ऊंचो ही हाथ कियो नहीं, तू तच्चो ऊभो आणो रे ॥धर्म०॥

२८—म्हाने बाग में देखने, थारे मन में इसडी आई रे ।
कुण बैठा जड़ मूढ़ ए, जाव चित्त ने सर्व सुणाई रे ॥धर्म०॥

२६—तुमने चित चरची करी, चलाय ने इहा आया रे ।
आव पधारो मैं ना कह्यो, तरां मन माहे पिछताया रे ॥धर्म०॥

३०—एह अर्थ समर्थ छे हता स्वामी साचो रे ।
दोनू ही हाथ जोड़ी लिया, एह मार्ग नहीं काचो रे ॥धर्म०॥

३१—केशी भणी भू-धव कहे, तुमे कहो तो बेसू रे ।
गुरू कहे जायगा ताहरी, हूँ बेसण रो किम कहे सू रे ॥धर्म०॥

३२—जद नरपति मन जाणी, आछी सतो की बाणो रे ।
एहिज पुरुष म्हाने तारसी, ज्यांके नहीं खुसामदी काणो रे॥धर्म०॥

दोहे—

१— राय 'पएसी' गुरु प्रते, पूछे धर कर चाव ।
किण प्रयोगे जाणिया, म्हारा मन रा भाव ॥

२— च्यार ज्ञान मोपे अछे सुण पएसी राव ।
केवल ज्ञान मोपे नहीं, इम जाण्या मनरा भाव ॥

३— नंदी सूत्र में कह्या, न्यारा न्यारा अर्थ लगाय ।
गुरू कहे राजा सरदले, जुदा जीव ने काय ॥

४— बलतो राजा इम कहे, जीव काया छे एक ।
सरधा मारी छे खरी, मैं धारी घणे विवेक ॥

मर्यादा लोपतो ए,
अधरम में ओपतो ए ॥

८— तुम-कथने मुनिराय !
गयो हुसी नरक रे माय ।
हेत दादा तणो ए,
म्हासू हुतो घणो ए ॥

९— आय दादो कहे आप,
पोता ! मत करजे पाप ।
हूँ नरके पड़ियो ए,
पाप बहुलो कर्यो ए ॥

१०— इम दादो कहे आय,
तो मानू मुनिराय !
नहीं तर माहरो ए,
मत झाल्यो खरो ए ॥

(३०) ११—केशी—गुरु कहे हेतु लगाय,
सुण पएसी राय !
राणी ताहरी ए,
सूरिकंता खरी ए ॥

१२— पहिर ओढ जल-न्हाय,
सहु शृङ्गार कराय ।
शोभा गहणा तणी ए,
करी अधिकी घणी ए ॥

१३— कोई पुरुष अनेरो आय,
काम भोग विलमाय ।
निजर ताहरी पड़े ए,
दड कुण सो करे ए ॥

१४-राजा - मारू कूटू स्वाम !
पाडू उणरी मांम ।
शिला ऊपर धरू ए,
पुरजा पुरजा करू ए ॥

२२— करे परमाधामी घात,
ज्याकी पनरे जात।
मार घणी पड़े ए,
ढीलो नहीं करे ए॥
(किम कर नीसरे ए)

२३— जाणे सीख देऊ जाय,
पिण दाणो न सके आय।
रखवाला घणा ए,
दुख नरका तणा ए॥
(कष्ट में नहीं मणा ए)

२४— इण दृष्टान्ते राय!
सरध जुदा जीव काय।
फेर जाणे मती ए,
मैं भूठ न बोला जती ए॥
(शंका नहीं रती ए)

२५—राजा—थे कहो चोज लगाय,
पिण म्हारे न आवे दाय।
ज्ञान बुद्धि तुम तणी ए,
जुगती मेलो घणी ए॥
(पिण दिल नहीं बेसे मो भणी ए)

(प्र० २) २६— स्वामी! रही पाप्या की बात,
धरमी की साक्षात।
प्रश्न दूजो भणे ए,
केशी गुरु सुणे ए,

२७— मोहरी दादी स्वाम!
करती धरम रो काम।
तप क्रिया घणी ए,
नव तत्व विधि भणी ए॥
(दान देती घणी ए-सेवा करे गुरु तणी ए)

२८— करती सूस पचखाण,
सुणती घणा वखाण।

किम जाय अशुचि भणी ए ,
अकवाई घणी ए ॥

३६— गुरु कहे साभल एम ,
थारी नाकी आवे केम ।
दुर्गंध इण तणी ए ,
ऊची जावे घणी ए ॥

३७— पांच सौ जोजन लगी जाय ,
देव न सके आय ।
नेह लागा नवा ए ,
सुख में मगन हुवा ए ॥
(देव्या सु पासे रवा ए)

३८— एक मुहूर्त नाटक सार ,
वर्ष जाय गेय हजार ।
केहवे किम भणी ए ,
पीछ्या खपे घणी ए ॥
(इहां मनुष्या तणी ए)

३६— पल्य सागर की थित ,
मोहिले देव्या चित्त ।
मोही रह्या सही ए ,
आय सके नहीं ए ॥

४०— इम जाणी राजान !
जीव काया जुदा मान ।
राजा —राय कहे वली ए ,
वुद्धि थांरी निरमली ए ॥
(जुगती मेलो भली ए)

४१— ज्ञानी पुरुष छो आप ,
ज्ञान तणे परताप ।
हेतु मेलो सही ए ,
पिण मो दिल बैसे नहीं ए ॥
(इम जाणों सही ए)

२— भेरी शब्द माहे रही,
उने शब्द बजावे रे।
ते शब्द बाहिर नहीं,
ताहरे काना मे आवे रे ॥सुण०॥

राजा—३— चलतो नरवई इम कहे,
हता स्वामी ! आवे रे ।

केशी— इण दृष्टाते राजवी !
जीव निकलतो न लखावे रे ॥सुण०॥

दोहा—

(प्र० ४) १—राजा—चलतो राजा इम कहे, सुण हो केशी स्वाम !
नगर-गुत्तिये चोर ने, आणी सूप्यो ताम ॥

ढाल—१०

(*राग—कुंजारा गीत*)

१— चोथो प्रश्न रसाल रे,
सुण केशी स्वामी ! भरी परिषदा विचाल रे।
चोर मारी ने माहे घालियो रे,
कोठी म,
कोठी मे छिद्र राख्यो नहीं रे ॥को०॥

२— दिन केताइक राख रे,
सु० के० लोक सहु नी साख रे।
कुंभी मांहि थी काढियो रे
जाय जोऊ-
जाय जोऊ कृमि कुल किलबले रे ॥को०॥

३— जीव होवे जो न्यार रे,
सु० के० तो कोठी में होवे तार रे।
नहींतर सरधा माहरी रे,
जीव काया
जीव काया नहीं न्यारी खरी रे ॥जी०॥

केशी—४— उत्तर दे मुनिराय रे,
सुण पएसी ! लोह रो भार धमाय रे।

अग्नि करि व्याप्त थयो रे,
किम पेठी
किम पेठी-अग्नि ज लोह में रे ॥किम ॥

४— छिद्र कियो नहीं काय रे,
सु प रूपी अग्नि प्रसार रे ।
जीव अरूपी छिद्र किम करे रे,
समझोनी-
समझोनी जीव काया जुदा रे ॥सम०॥

ढाल-११

[पावस मन पीया चाली]

(प्र ५) १—राजा— हूं पांचमो परश्न पूछू
हूं बात यथार्थ कहूं छू
इण रो उत्तर द्यू छे हो
श्री मुनिवरजी ।

२— कोई तरुण पुरुष बलवंतो
यो काम करे मतवंतो ॥
ते बालक किम न करंतो हो ॥श्री मुनि ॥

३— ते इणकाम आधार ।
यो माने बात विचार
तो जावे पेलै पार हो ॥श्री मुनि ॥

४— ते बालक बाण चलाय
तो मानू मुनिराय !
तुमे कहो ते न्याय हो ॥श्री मुनि ॥

५— तब मुनि उत्तर भाखे
केशी— हूं कहूं छू आगम साखे ।
सदा उपयोगे राखे हो ॥श्री मुनि ॥

६— यो विज्ञानवंत सुजाण
पण अनुपम बाण ।
नांखे न परमाण हो ।
श्री मुनिवरजी ।

७— ओ ही पुरुष बलवान,
ते अधूरा तीर कबाण।
ते नांखी न सके बाण हो ॥श्री नर०॥

राजा —८— केशी प्रत्ये कहे राम,
ते नांखी न मके न्याय।
ते समर्थ नहीं थाय हो ॥श्री मुनि०॥

केशी – ६— तूं जीव काया जुदा मान,
तुमें समझो क्यूं न राजान।
मति करो खेंचातान हो श्री नरवरजी।

दोहा—

राजा – १—वलतो राजा इम कहे, सुणो पूज्य भगवान।
यथा दृष्टान्ते हूँ कहूँ, सुणजो म्हारो ज्ञान॥

ढाल–१२

(राग—मोरा प्रीतम ते किम कायर होय)

(प्र० ६) १— छठो परसन पूछस्यू जी,
पूरा उपगरण धार।
कोई बुद्धिवत कला-निर्मलोजी,
पराक्रमवत अपार॥
मुनीसर। प्रश्न पूछु जी एह॥

२— लोह भार तरुवा तणोजी,
सीसो ने वली खार।
ते उपाड़ी ने वहेजी,
लेवे जितरो भार॥मुनीसर॥

३— तेह पुरुष जर्जर हुवोजी,
शिथिल पडी छेजी काय।
लीलरी पड़े शरीरमें जी
चामड़ी हाड विटाय॥मुनीसर०॥

४— हाथे डाडो झालियोजी,

तणियां छींको बोदो थयो रे लाल,
डाडो सुलियो जाय सुवि० ॥केशी०॥

५— तिण कारण समरथ नहीं रे लाल
बहवा कावडी भार सुवि० ।
जुदा जीव काया सरध ले रे लाल ।
शका मकर लिगार सुवि० ॥केशी०॥

राजा— ६— राय कहे ज्ञान बुध करी रे लाल,
थे हेत मेलो छो आय सुवि० ।
पिण जीव काया जुदा जुदा रे लाल,
दिल न बैसे साम सुवि० ॥केशी०॥

दोहा—

कवि— १— प्रश्न पूछे सातमो, गुरू प्रति राजान ।
गुरु पाछो किण विध कहे, ते सुणजो धर ध्यान ॥

ढाल—१४

[राग—भूलो मन भवरा कॉई भमे]

(प्र० ७) १— एक दिवस पूरी परिषदा, बैठो सभा माय ।
नगर-गुत्तिये चोरटो, सूप्यो मोने आय ॥

२— सुण केशी ! राजा कहे, ज्ञान प्रापत काज ।
सत गुरु मोटा भेटिया, तारण तिरण जहाज ॥सुण०॥

३— मैं चोर जीवतो तोलियो, पछे करि उपाय ।
मसोसी ने मारियो, नहीं शस्त्र लगाय ॥सुण०॥

४— पछे मारी ने तोलियो घट्यो बध्यो न लिगार ।
तिण कारण मैं जाणियो जीव काया नहीं न्यार ॥सुण०॥

५— चोर मुवा ने जीवता, फेर पडतो स्वाम !
तो हूँ न्यारा सरधतो, आप कहो छो आम ॥सुण०॥

६— नहीं तर मत म्हारो खरो, जीव काया छे एक ।
प्रति उत्तर मुनिवर कहे, युक्ति मेले विशेष ॥सुण०॥

कठियारा अटवी-वाट ने ए ,
भेला मिल चाल्या काठ ने ए ॥

३— आगा अटवी में जाय ए ,
मिसलत कीधी माहोमाय ए ।
कठियारा एकण भणी ए ,
दीधी भोलावण भोजन तणीए ॥

४— अमे भारी लेई आवा तरे ए ,
तू जीमण त्यारी करे जितरे ए ।
लकडी थोड़ी थोड़ी आपसा ए ,
तोही थारी भारी करी थापसा ए ॥

५— तू रहेलो प्रमाद में लाग ए ,
कदाच बुझ जावे आग ए ।
तो लीजो काष्ट अरणी काढ ए ,
तू दीजे काम सिरे चाढ़ ए ॥

६— इम सीखामण दीधी घणी ए ,
आगा चाल्या लकड्या भणी ए ।
लारे नींद तणे वश थाय ए ,
जितरे गई आग बुझाय ए ॥

७— इतरे जागी ने पेखियो ए ,
अग्नि-खीरो बुझियो देखियो ए ।
जाण्यो किम निपजाऊ आहार ए ,
तो काढू लकड़ो फाड़ ए ॥

८— बाध कमर फरसी झाल ए ,
काष्ट पे आयो चाल ए ।
घणो जोमायतो होय ए ,
काष्ट ना खंड कीधा दोय ए ॥

९— च्यार आठ कीधा भाग ए ,
पिण नजर पड़ी नहीं आग ए ॥
सोले बत्तीस चोसठ किया ए ,
इण नान्हा नान्हा छेदिया ए ॥

इतरा में निपुण थो एक ए,
चतुराईवत विवेक ए ॥

१८— कला जाणे छे ते छती ए,
तिण काष्ठ माहे अरणी मथी ए।
अग्नि हुई तैयार ए,
निपजायो च्यारे आहार ए ॥

१९— सपाडा किया बहु ए,
करि पूजा ने सज हुआ सहु ए।
कयबलिकम्मा देव ए,
उठि पूज्या घर ना देव ए ॥

२०— मेला होय भोजन करी ए,
सहू चलू करि मूछण मुख धरी ए।
सहू जीमी ने ताजा होय ए,
तिण मूरख ने कहे जोय ए ॥

२१— तें क्रोध कियो इण ठाय ए,
पिण अकल नहीं तो मांय ए।
इम पाड़ीजे आग ए,
ए ससार चतुरनो माग ए ॥

२२— कठियारो मूरख अजाण ए,
लकड़ी सू माड़ी ताण ए।
अग्नि पाडण नहीं पारिखो ए,
तिण राजा तू कठियारा सारिखो ए ॥

राजा - २३—राय कहे मुनिवर भणी ए,
ए परिषदा आय मिली घणी ए।
थे चतुर अवसर का जाण ए,
मोने बोल्या करड़ी बाण ए ॥

२४— ए देखे परिषदा रा लोग ए,
थांने मूरख कहणो जोग ए।

केशी — गुरु कहे तू जाणे एतली ए,
तो चाली परिषदा केतली ए ॥

म्हासू चर्चा कीधी घणी ए,
मैं जड मूरख कह्यो तो भणी ए ॥

राजा – ।३३– तब बलतो कहे राय ए,
सुणजो स्वामी ! म्हारी वाय ए।
हूँ पहिले परसने चुभियो ए,
जब म्हारो कर्त्तव्य थांने सूझियो ए ॥

३४– म्हारी कही मनोगत बात ए,
तदि समझ्यो स्वामी नाथ ए।
ए आडा टेडा आणते ए,
मैं परसन पूछ्या जाणते ए ॥

३५– ज्ञान तणी प्रापत भणी ए,
मैं वाकी चर्चा कीधी घणी ए।
ज्यू ज्यू पूछू वाकी तरे ए,
मोंने जिनधर्म की खबरा पड़े ए ॥

३६– हू जाणू जीव अजीव ए,
सम्यक्त्व चारित्रनी नीव ए।
मैं मन बिचार इसडो कियो ए,
जाणी ने बाको वरतियो ए ॥

३७– जाणपणा सु सुधरे काज ए,
इतरे बोल्या मुनिराज ए।

केशी –
जाणे तू राजा जेतला ए,
व्योपारी चाल्या केतला ए ॥

राजा – ३८– हां स्वामी ! जबाब तयार ए,
व्योपारी चाल्या च्यार ए।
मैं राख्या छे दिल मांहे धार ए,
ज्यां को जुदो जुदो विचार ए ॥

३९– एक बोले करड़ा बोल ए,
खेद उपजाय सटके दे खोल ए।
मागे दूजा कने जाय ए,
तरे गिदरो देवे दिखाय ए ॥

राजा — राय कहे व्योपारी तीन ए,
स्वामी चोथो नहीं प्रवीण ए ॥

केशी - ४८— बलता गुरू बोलिया तरे ए,
तू पहला व्योपारी की परे ए।
तें बाका प्रश्न बाता कही ए,
पिण जाणू छू व्रत लेसी सही ए ॥

४९— अदर भक्ति, मो मन परिखो ए,
तू तो पहला व्योपारी सारिखो ए।

कवि — जद कह्या राजा खेदे भर्यो ए,
पिण इतरी कह्या ठाडो पड्यो ए ॥

५०— कोई खुशामदी नहीं काण ए,
ए समजावण रा डाण ए।
उपगारी करे उपगार ए,
समझावे बार - बार ए ॥

५१— ऐसी कही हेतु जुगत ए,
तिण सु वेगी मिले मुगत ए।
रिख जयमलजी कहे इम भाख ए,
सूत्र रायपसेणी री साख ए ॥

दोहे—

राजा - १—गुरा अते राजा कहे, थे अवसर का जाण।
सद उपदेश भलो कह्यो, निपुण गुणा की खान ॥

(प्र० ६) २— शरीर माथी काढ ने, थे समरथ छो अतीव।
आवला जेम दिखायदो, जुदो हाथ में जीव ॥

ढाल-१६

(राग जगत गुरु त्रिशला नंदन वीर)

१— तिण काले ने तिण समेजी,
राय पएसी ने पास।
वृक्ष तणा पानडीजी,
कुण हलावे तास ॥

राजा — तब बलतो राजा कहे मीठी वाणी हो ।।मुनिंद०।।

३— हाथी अधिको खावे बोझ उठावे हो—मोटा०
कुन्थुवा सु कार्य तिण जितरो नहीं थावे हो ।।मुनिंद०।।

४— जीव सरीखो तो कार्य अतर किम छे हो—मोटा०
इण रो उत्तर पाछो भाखो जिम छे हो ।।मुनिंद०।।

केशी — ५— तब मुनिवर दीपक दृष्टान्त भासे हो समझो०
उडी शाल बिशाल में जोति प्रकासे हो ।।नरिंद०।।

६— ने आडो जडिया बाहिर जोत न आवे हो सम०
तिम हिज डालो पालो ने ढकणी समावे हो ।।नरिंद०।।

७— भाजन जितरी जोत प्रमाणो हो समझो०
हाथी कुथुवा के जीव में फेर म जाणो हो ।।नरिंद०।।

८— काया अन्तर कार्य फेर कहाणो हो समझो०
जीव असख्य प्रदेशी पिछाणो हो ।।नरिन्द०।।

दोहे—

(प्र० ११) कवि —१— परसन इग्यार में पूछियो, मुनिवर दियो जवाब ।
लोह वाणियो छेहडे कह्यो, तब आई धर्म री आव ।।

राजा — २— राय पएसी गुरु प्रति बोले जोडी हाथ ।
हूँ पहले परसने बूझियो, थे कही मनोगत बात ।।

३— हू जाणीने पूछिया, आडा तेढा वेण ।
ज्ञान तणी प्रापत हुई, थे साचा लागो सेण ।।

४— दादा परदादा तणो, रह पीढ्या रो राह ।
बडा बडेरा रो संचियो, किम छूटे सामिनाह ! ।।

५— खरो करि म्हे जाणियो, थारो धर्म ए सार ।
पिण मो सेति छूटे नहीं म्हारा बूढ़ा बडेरा रो भार ।।

६— मन घणा दिन झालियो, छोडत आवे लाज ।
जिम छे तिमहि रहण दो, गई करो मुनिराज ।।

कवि — ७— वचन सुणी राज तणा, गुरु बोल्या छे एम ।
केशी — राजिन्द ! तु पिछतावसी, लोह-वाणिया जेम ।।

७— खप कीधी माहरी यूं ही जाय,
तिण कारण छोडूं नहीं भाय।
जिका थी चाल आगे राह गया,
तब ते खान रूपा नी लह्या ॥

८— तरूवो नाख रूपो लियो घाल,
पिण उण मूरख रे वाहीज वात।
आगे आई सोना री खान,
इमहिज हीरा रतन वखान ॥

९— माणक मोती वज्र आविया,
ते सगला के मन भाविया।
नाखी दीधो पाछलो भार,
वज्र हीरा बाध लिया सार ॥

१०— ऊभो देखे लोह—वाणियो,
लोह भार नो मोह आणियो।
सगला कहे छोड दे लोह,
लोह थकी उतार तू मोह ॥

११— वज्र हीरा नो लोह आवे बहू,
हमें ही होसा सरिखा सहू।
लोह-वाणियो बोल्यो वाय,
रे! छोडा-मेला करे बलाय ॥

१२— मैं तो भार लियो सो लियो,
थे छोडा मेला स्यांनि कियो।
जब साथ्या सगला जाणियो,
ए मूरख छे लोह-वाणियो ॥

१३— साथ्या सीख दीधी छे घणी,
पिण मत नहीं ऊपनी मूरख भणी।
सगला पाछा आया तेह,
पोहता छे सहू आपणे गेह ॥

१४— भरी माल लाया ते घरे,
एक हीरा नो विक्रय करे।

दोहे--

राजा- १— लोह-वाणियो जिम कियो, तिम हूँ न करूं स्वाम ।
थां सरिखा गुरु भेटिया सही सुधरसी काम ॥

कवि - २— पएसी प्रतिबोधियो, साभल एह दृष्टान्त ।
हेतु युगत करि तारियो, मिलिया केशी सत ॥

राजा - ३— स्वामी थे मोटा पुरुष, मोटी मन की देण ।
कृपा करि सुणायदो, केवली हदा वेण ॥

कवि - ४— मुनिवर दीधी देशना, मोटी परिषदा माय ।
मोटे मडाणे करी, सुणे पएसी राय ॥

ढाल-१६

(*राग—विणजारा की*)

१— चेतन ! चेतो रे-मुनिवर दे उपदेश,
राखो सरधा धर्म की चे० चे०
चेतन चेतो रे-परखो देव गुरु धर्म,
मेटो माया भर्म की ॥
चेतन चेतो रे ॥

२— चेतन चेतो रे-मनुष्य जमारो पाय,
परमाद में पडजो मती चेतन चेतो रे ।
चेतन चेतो रे-जरा रोग लगे आय,
सेंठा रहिजो सूरा सती चेतन चेतो रे ॥

३— चेतन चेतो रे-वासो वसियो आय,
जीव वटाऊ पांवणो चेतन चेतो रे ।
चेतन चेतो रे-चट दे जीव चलाय,
साथे न हुवे केहनो जावणो चेतन चेतो रे ॥

४— चेतन चेतो रे-देह की मुर्छा मति आण,
पोख मति करी चाकरी चेतन चेतो रे ।
चेतन चेतो रे-छांड जाय ए प्राण,
ढेरी करदे राख री चेतन चेतो रे ॥

राजा — कला शिल्प धर्म आयरिया ए,
तीनों रा नाम मैं धारिया ए॥

केशी — ३— गुरु कहे राय जाणे इसी ए,
यारी सेवा भक्ति करवी किसी ए।

राजा — जाणू स्वामी! धुर बेहु तणी ए,
कला शिल्प आयरिया भणी ए॥

४— अशनादिक बहु आहार ए,
जीमावे पूजा सत्कार ए।

जल न्हावण मंजण करी ए,
पुष्पादिक माला उर धरी ए॥

५— धन देवो वस्त्र पहिराय ए,
जिको दर पीढ्या लग खाय ए।

खाता खूटे नाय ए,
त्याने इतरो धन दिराय ए॥

६— हिवे धर्म आयरिया तणी ए,
स्वामी! विनय भक्ति करवी घणी ए।

वन्दना सत्कार सन्मान ए,
देणो चवदे प्रकार नो दान ए॥

७— असाण ने वले पाण ए,
वले मेवा लूणादिक जाण ए।

वस्त्र पात्र ने कावली ए,
पाय-पूछणो पीढ फलग वली ए॥

८— सेज्या ने सथार ए,
वले औषध भेषज सार ए।

विचरे इण परी आपता ए,
चवदा री करता जापता ए॥

९— ज्या ने वचन विनय सू भासणो ए,
ज्या रो कुरब घणोहिज राखणो ए।

मारग आणे मूल ए,
स्वामी! कुण छे गुरु से तूल ए॥

नगर न्यात में मो तणो ए,
स्वामी कुजस फैल्यो अति घणो ए ॥

१८— म्हारी होती खोटी नीत ए,
म्हारी घणां जणां ने अप्रीत ए।
हूँ रह्यो थो मिथ्यात में राच ए,
कुण माने पापी री साच ए ॥

१९— हूँ बाको जड हुतो घणो ए,
नहीं आवे भरोसो मो तणो ए।
हू करतो ऊधी बात ए,
रहता लोही खरड्या हाथ ए ॥

२०— हू पर-सुखिये रहतो दुखी ए,
स्वामी! पर-दुखिये हुँ तो सुखी ए।
हूँ नगरी माहे जाय ए,
म्हारो कुटुम्ब कबीलो लाय ए ॥

२१— म्हांने देखे सहू कोय ए,
खमाऊ नीचो होय ए।
वले देखे सहू परिवार ए,
हूँ वादु बारबार ए ॥

२२— नगरी जाणे जेहवो ए,
स्वामी! अनड नमायो एहवो ए।
ऐसी मैं दिल में धरी ए,
मैं जाण करने वदना ना करी ए ॥

केशी – २३— गुरु बोल्या इम वाय ए,
राजा! जिम तो ने सुख थाय ए।
कवि- इसडो निश्चय धारियो ए,
राजा उठी ने 'श्वेताम्बिका' चालियो ए ॥

२४ — नगरी माहे जाय ए,
कुटुम्ब भेलो कियो राय ए।
व्याही न्यातीला लोक ए,
ज्या का मिलिया घणा थोक ए ॥

श्रावक रो लियो धर्म ए,
मिटायो मिथ्या भर्म ए ॥

३३— हुवो घणो उपगार ए,
राजा कीनो परिस मझार ए।
परिषदा बैठी आय ए,
धर्मदेशना दीधी सुणाय ए ॥

३४— चले सुणे बहु नरनार ए,
मुनि धर्म कहे हितकार ए।
सुण सुण उत्तम जीव ए,
देवे समकित चारित्र नीव ए ॥

३५— साभल वाणी महत ए,
जिण मे तीन लोक रो तत ए।
परिषदा सुण हर्षित थाय ए,
मुखियो परमी राय ए ॥

३६— ऐसी वणाई जुगती ए,
जिणसू वेगी मिले मुगती ए।
धर्म आयो घणो न्याय ए,
भेट्या गुरा रा पाय ए ॥

दोहा—

१— सत गुरु की वाणी सुणी, घणू ज हर्ष्यो राय।
राजा - हाथ जोडी ने इम कहे, सरध्या तुमारा वाय ॥
२— श्रावक ना व्रत आदर्या, हुवो नव तत्व रो जाण।
डिगायो डिगू नहीं, जो देव चलावे आण ॥
केशी - ३— ऊठण लागो निण समे, गुरु कहे रहिज्यो ठीक।
पहिली होय रमणीक ने, पछे मती होय अरमणीक ॥
राजा - ४— रमणीक स्वामी किम हुवे, अरमणीक होवे केम ?
केशी - बलता गुरु इमड़ी कहे, साभल राय ! धरि प्रेम ॥
५— इक्षु-खेत, ने अन्न-खला, बाग नटवा-शाल।
पहिला तो रमणीक हुवे, पछे अरमणीक भूपाल ! ॥

निकल गया डाला रे,
नहीं फल रसाला रे ॥
अति काला भकाला हो, बाग असोभतो रे ॥

७— जब नटवा की शाला रे,
गावे गीत रसाला रे।
बाजा बजावे रे,
देखण बहु आवे रे ॥
नटशाला सुहावे हो,राजिंद ! अति घणी रे ॥

८— हल ताल लगावे रे,
जल सु मुख न्हावे रे।
नवा नवा साग आणे रे,
नाचे रूप रसाणे रे ॥
जब जायने देखे तो, शाला सुहावणी रे ॥

९— नाटक गयो पूगी रे,
दिहाडो जाय ऊगी रे।
लोग लागे ठिकाणे रे,
नट लागा काम खाणे रे ॥
जब दीसे हो राजिंद ! शाला असोभती रे ॥

१०— लाटा धान गाहीजे रे,
खाईजे ने दीजे रे।
ऊफणे धान मादो रे,
ढिग किया अगाधो रे ॥
जब जादा रे लाटा में चेल लागी रहे रे ॥

११— धुर तो जावे श्रोहरा रे,
मिलिया ठोडा ठोडा रे।
हाकम लटारा रे,
विणजारा सोदारा रे ॥
पटवारी कुतारा सैणा भोमिया रे ॥

१२— चोधरी चोकडाती रे,
तुलावट खाती रे।

ज्या की सगति मेटी रे ।
राखो गुरु आसता सैंठी रे ॥
किरमची रग ज्यू रहिजो गुरु भक्ति में रे ॥

१६— होवे सुविनीत सेणा रे,
धारे गुरु वेणा रे ।
जैसी ढलती छाया रे,
राखे प्रीत सवाया रे ॥
कदे कार न लोपजो, गुरु वचना तणी रे ॥

२०— इम जाणी उत्तम प्राणी रे,
सांची माने गुरु-वाणी रे ।
गुरु - आज्ञा शुद्ध पाले रे,
कुगुरु कुमति कुसग टाले रे ॥
तो स्वर्ग मुक्ति ना सुख वेगा लहे रे ॥

२१— केशी रिषि बोले वायो रे,
सुण पएसी रायो रे ।
मिथ्यात मिटायो रे,
समकित धर्म पायो रे ॥
लारे गुरुदेवां री आसता मती मूकजो रे ॥

२२— रहिजो राय ! ठीको रे,
दीधी तो ने सीखो रे ।
न्यारे ज्यू रमणीको रे,
धर्म पालजो नीको रे ॥
ज्यू टीको तोने आवे शिव रमणी तणो रे ॥

दोहे—

राजा - १— अरमणीक होसू नहीं म्हारे धर्म सू राग ।
सात सहस्र ग्राम खालसे, करि देसू च्यार विभाग ॥

२— एक भाग राण्या भणी, एक भाग खजान ।
एक भाग अश्व हाथियां, एक भाग देऊ दान ॥

३— माहण श्रमण शाक्यादिके, माडी मोटी शाल ।
अशनादिक निजराय ने, दान देऊ दग - चाल ॥

४— पाप कर्म सब आदर्या, चीता पालीस स्वाम ।
सामायिक पासा करी मारीस आतम-काम ॥

५— इत्यादिक बहि बहि कहि भटे गुरु ना पाव ।
भाव सहित वंदन करी आया निज थिति ठाव ॥

कवि- ६— केशी सरिखा गुरु मिल्या चित्त सरिखा प्रधान !
इमड़ा अनड़ राजा भयो आदर्यो धर्म न ध्यान ॥

ढाल—२२

(राग—वेग पधारो रे महिल थी)

१— पएसी राजा हिव
मार्गी श्रावक कहाय ।
असनादिक निरवाय ने
दुर्बल दान दिराय ॥

२— वैरागे मन वासियो
सुख सामी री वाय ।
दयाधर्म दिल में रम्यो
मन में वैराग भाव ॥वैरागे॥

३— पएसी धर्म में दृढ़ बन्यो
नव तत्व का जुड़ो जाय ।
डिगायो डिगे नहीं
जो देव चलावे आय ॥वैरागे ॥

४— पौषध पडिकमणो करे
शील व्रत नियम नेम ।
चोखी पाले सु सभावड़ी
देव गुरु धर्म सु प्रेम ॥वैरागे ॥

५— दान दे चवदे प्रकार को
साधां ने निरदोष ।
दाव मीठा धर्म में रंगी
ह्यै पात्र ने पोष ॥वैरागे ॥

६— देव गुरु धर्म नी भावना
बैठे समकित धार ।

शंका कंखा ना करे,
रुचिया प्रवचन सार ॥वैरागे०॥

७— जिण दिन सू व्रत आदर्यो
राज्य देश भंडार ।
बल वाहन राख्या भणी,
न करे सार संभाल ॥वैरागे०॥

८— चाकर नकर परिवार सु,
उतर गयो मन राग ।
पर-भव की खरची भणी,
रात दिवस रह्यो लाग ॥वैरागे०॥

९— बेले बेले पारणो,
तपस्या करे अभंग ।
सूर वीर धर्म-दृढ थयो,
करिवा कर्मा सु जंग ॥वैरागे०॥

१०— करडो हुतो राजवी,
पायो जिनवर धरम ।
लागी रसायण धर्म की,
नरम हो गयो परम ॥वैरागे०॥

दोहा—

१— जिहा लगि धर्म पायो नहीं, करतो जाडा पाप ।
संसार्यां ने सुहावतो, पड़ती जेहनी छाप ॥
२— 'सूरिकता' राणी हुती, घणो राजा नो प्यार ।
राणी नामे पुत्र नो दियो 'सूरिकंत' कुमार ॥
३— स्वारथ नी सगाइया, जोइजो इण संसार ।
किण विधि विरचे कंत सू, 'सूरिकता' नार ॥
४— कुण बेटा कुण मायडी कुण नारी प्रिय भाय ।
स्वारथ का सब ही सगा, परमारथ मुनिराय ॥

सूर्यकान्त -८— एतो कुमर सुणी ने चिंतवे
आ दुष्टण दीसे मात रे लाला ।
तात म्हारो धर्मी अछे,
किम मारू मुझ हाथ रे ? लाला ॥तुमें०॥

६— एतो ना, कह्या मात छे बुरी,
हा कह्या म्हारो बाप रे लाला ।
कवि - कुंवर अवसर नो जाण थो,
ओ तो होय गयो चुप चाप रे लाला ॥तुमें०॥

१०— एतो अण बोल्यो उठी गयो,
राणी ने नहीं दीधो जबाब रे लाला ।
तब राणी मन चिंतवे,
हा हा गई म्हारी आब रे लाला ॥तुमें०॥

११— कुंवर रखे कहेला राय ने,
म्हारी रहस्य छानी बात रे लाला ।
हूँ तो पहिला अवसर देख ने,
वेगी करसू राजा री घात रे लाला ॥तुमें०॥

दोहा—

१— इम मन माहि विचार कर, कदि राजा एकलो होय ।
छल बल निसदिन ताकती, आई इक दिन अवसर जोय ॥

ढाल—२४

(*राग—नव रसा की*)

१— हाथ जोड़ी ने विनती करती
वयण विनय सू भाखे रे ।
म्हारे ऊपर किरपा कीजे,
हु कहु छु सहू नी साखे रे ॥
,राणी एक धुतारी रे ।
बोले मीठा बोल करसो खवारी रे ॥

२— लुल लुल ने आ लटका करती,
मो पर किरपा करो महाराज रे ।

४— श्रावक ना व्रत लीधा पछे,
तप तेरे बेला कीध रे।
एकण कम चालीस दिने,
राय जग माहे जस लीध रे ॥जोयजो०॥

दोहे—

१— राय पएसी जाणियो, राणी तणो जे कूर।
अशनादिक में घालियो, सगले जहर रो पूर॥
२— विधि सु करी विछावणा, बिच में मेल्यो थाल।
भोजन की बेला हुई, आय बैठो भूपाल॥
३— विविध प्रकारे भोजन हुता, जीमता आई लहर।
राय पएसी जाणियो इण राणी दीधो जहर॥
४— जहर उतारण री विधी, जाणे छे भूपाल।
पिण ध्रग पड्यो संसार ने, जीवणो कितोइक काल॥
५— मोहरा-वाली मुद्रिका, खोल पिया दुख जाय।
ते पिण राजा पास थी, मूल न कीधो उपाय॥

ढाल—२६

[राग—वे वे तो मुनिवर वहिरण पांगुर्या रे]

१— राजा तो उठ्यो, वेग सतावसू रे,
राणी ऊपर न कर्यो द्वेष रे।
ऊजल करकस वेदन ऊपनी रे,
राख्यो इण समता भाव विशेष रे॥
२— जाइजो रे समकित नो परगम्यो रे,
जिन मारग ने चाढी सोभ रे।
इसड़ी समता केई विरला करे रे,
जीत्या छे मोह तृष्णा ने लोभ रे ॥जोइजो०॥
३— आगे विचाले पिण वेराग नो रे,
आयो छे मन में अधिको जोस रे।
वेदनी कर्म संच्या छे माहरा रे,
नहीं छे इण राणी तणो दोष रे ॥जोइजो०॥

ढाल-२७

[राग—आपे काल लपेटा लेतो रे]

१— राणी माड्या ढपला ने सोगो रे,
माहरे व्हाला को पड़े वियोगो।
हा हा करू हिवे कासू रे,
माहरो हिवडो फटे मा मू॥

२— थे वेगा वैद्य बुलावो रे,
माहरा साहिबा की पीडा मिटावो।
माहरे पापा को छेह न पारो रे,
या विना घोर अधारो॥

३— धूतारी चरित्र बणावे रे,
आ फिर फिर झोला खावे।
थोड़ा-सा अलगा होइजो रे,
मोने दर्शन करवा दीजो॥

४— इसडी प्रतीत उपजावे रे,
आ नेडी नेडी आवे।
राणी इसडो अकाज कीधो रे,
गले जाय ने टूपो दीधो॥

५— हा हा पापण मा हत्यारी रे,
नहीं आणी दया लिगारी।
देखो राणी री कमाई रे,
जोयजो स्वारथ नी सगाई॥

ढाल-२८

[राग—आदेसरजी को नदन नीको]

१— 'पएसी' राजा मन चिंते,
देख राणी रा कामजी।
अहो कर्म-गति कोई न जाणे,
राखू दृढ परिणामजी॥

२— धन्य धन्य श्रावक पयसी
　　　　जिण कीधी क्षमा भरपूरजी।
थारे वेसा न तरमो तेलो
　　　　करम किया चकचूर जी ॥धन्य०॥

३— मन वचन काया त्रिहुं करीने
　　　　ध्यायो निर्मल ध्यानजी।
इसी समता जो मुनिवर राखे
　　　　तो पामे केवल ज्ञानजी ॥धन्य०॥

४— राखी सम्तर द्वेष न आणयो
　　　　जाण्यो देवे धर्म को मान जी।
समता हर्ष हिये में व्याप्यो
　　　　रांक लहे जिम राज जी ॥धन्य०॥

५— म्हूं कोई परदेश सिधावे
　　　　जरणी पास न होय जी ॥धन्य०॥
जरणी मिलियां राजी हावे
　　　　इण दृष्टान्ते जोय जी ॥धन्य ॥

ढाल–२६

(*राग—चालो जिनवा जिहां*)

१— राणी का चरित्र देख ने,
　　　　पयसी राजान।
मन संवेगज आण ने
　　　　ध्यावे निर्मल ध्यान॥

२— धन्य धन्य कर्म करे जिके,
　　　　बहती वेसा के मांय।
आतम शुध गमाल मे
　　　　शुभी भावना माय ॥धन्य ॥

३— थारे वेसा ने कालो तेरमो
　　　　कीधो काज समार।
आलोई पडिक्कम ने
　　　　ठाय दियो संथार ॥धन्य ॥

४— संथारो कँर भावसू,
काले मासे करी काल।
प्रथम स्वर्ग में ऊपनो,
पाम्यो भोग रसाल ॥धन्य०॥

५ — 'सूर्याभ' नामे विमान में,
देव रूप अभिराम।
पाच पर्याप्ति करि दीपतो,
सार्या आतम – काम ॥धन्य०॥

६— तीन जात नी परिषदा,
देख्या नाटक तान ।
महल विमान ने रिद्धि ना,
भाव कह्या वर्द्धमान ॥धन्य०॥

७— तेहने नामे विमान छे
सगलो श्रो अधिकार ।
'राय-पसेणी' देख लो,
शका न करो लिगार ॥धन्य०॥

गौतम - ८— अले गौतम पूछा करे,
विनयवत धरि हेत ।
सूर्याभ' थित पूरी करी,
चवने जासी केत ? ॥धन्य०॥

दोहा—

भगवान्-१— च्यार पल्य नो आउखो, भोगवी सुख श्रीकार ।
गौतम ने प्रभुजी कहे, ते सुणजो विस्तार ॥

ढाल–३०

(राग—वीर सुणो मोरी वीनती)

१— वीर कहे सुण गोयमा,
ए चवसी हो सूर्याभज देव ।
महाविदेह क्षेत्र ने विसे,
जन्म लेमी हो जिहा सुख नित्यमेव ॥वीर०॥

१०— भोग-संयोग समरथ होसी,
अवीहतो हो फिरसी काल अकाल।
मात पिता बहु धालसी,
अन्न पाणी हो सयणासण ने माल ॥वीर०॥

११— पिण कुमर ते नहीं राचसी,
सुख माहे हो गृद्धि नहि थाय।
जिम कमल पाणी मे नीपजे,
नहीं लीपे हो ऊर्चो रहिवाय ॥वीर०॥

१२— साधा समीपे बूझसी,
घर छोडी हो होसी अणगार।
पच समिति तीन गुप्ति सू,
घोर तपसी हो होसी पारपार ॥वीर०॥

१३— निर्दोषण अन्न भोगवी,
जीतसी हो मोह माया ने मान।
उत्कृष्टी करणी करी,
उपजसी हो अंते केवल-ज्ञान ॥वीर०॥

दोहा –

१— हिवे 'दृढपइन्नो' केवली, जाणसी सर्व उपाव।
दर्शन करी ने देखसी, तीन लोक ना भाव ॥

ढाल–३१

(राग—वैरागी थयो)

१— केवल-ज्ञान पाम्या पछी रे,
विचरसी केतला काल।
आतम-ज्ञान प्रगट करी रे,
केवल पर्याय पालो रे ॥
धन्य जिनधर्म ने ॥

२— शेष आउखो जोयने रे,
अणसण करसी सार ।

क्यारे ही आहार पचक्खने रे
पया मत्र विलारो रे ॥धन्य॥

३— यति मुक्ति मिमावमी रे
'रायपसणी' मझार ।
सांमल ने हिरदे धरे रे
त्यां को लेखो पाटो रे ॥धन्य ॥

४— सूत्र विरुद्ध ज भाखियो रे
अधिको ओछो रे कोय ।
तिण रिण अपमसखी कहे रे
'मिच्छामि दुक्कडं' मोवो रे ॥धन्य ॥

५ – संवत अठारे मताहरे रे
वदि तेरस आषाढ़ ।
सिंघ 'पपाली' राम मी रे
कीधी सूत्र थी काढी रे ॥
धन्य जिनधर्म मे ॥

(५)

❀ स्कंदक ऋषि ❀

दोहे—

१— मोह-तणे वश मानवी, हासो कितोल कराय ।
कर्म कठण बाधे जीवडो, तीनू वय रे मांय ॥
२— वैर पुराणो नहि हुवे, जोवो हिये विचार ।
कायर ने 'खदक' तणो, भविक सुणो विस्तार ॥
३— क्षमा किया सुख ऊपजे, क्रोध किया दुख होय ।
क्षमा करी खदक ऋषि, मुगति गयो शुद्ध होय ॥

ढाल-१

(राग—मुनीसर जै जै गुण भडार)

१— नमू वीर शासन धणीजी, गणधर गौतम साम ।
कथा अनुसारे गावसू जी, 'खदक' ना गुण-ग्राम ॥

२— क्षमावत जोय भगवत नो जी ज्ञान ।
अत क्षमा अधिकी कही जी, रह्या धर्म ने ध्यान ॥क्षमा०॥

३— त्वचा उतारी देहनी जी, राख्या समताजी भाव ।
जिन-धर्म कीधो दीपतो जी, मोटा अटलक राव ॥क्षमा०॥

४— 'सावत्थी' नगरी शोभती जी, 'कनक-केतु' जिहा भूप ।
राणी 'मलया' सुन्दरी जी, 'खदक' कुंवर अनूप ॥क्षमा०॥

५— सगला अगज सु दरू जी, इन्द्रिय नहीं कोई हीण ।
प्रथम वय चढती कला जी, चतुर घणा प्रवीण ॥क्षमा०॥

६— 'विजयसेन' गुरु पागुर्या जी, साधां रे परिवार ।
ज्ञान गुणे कर आगला जी, तपसी पार न पार ॥क्षमा०॥

७— नर नारी ने हुवो घणो जी, साध-वांदण रो जी कोड ।
कोई पाला केई पालखी जी, चाल्या होडाहोड ॥क्षमा०॥

८— खदक कुवर पिण आवियो जी, बैठो परिषदा मांय ।
मुनिवर दीधी देशना जी, सगला ने चित्त लाय ॥क्षमा०॥

९— आगार ने अणगारनो जी धर्म तणा दोय भेद।
समकित सहित व्रत आदरो जी टालो दुगति-उमेद ॥क्षमा॥

१०— डाभ-अणी-जल-बिन्दवा जी पाके पीपल-पान।
अथिर तन धन आउखो जी तजो कपट ने मान ॥क्षमा०॥

११— पोषे सुत ने बंधवा जी पोषे स्वजन परिवार।
धन में कुटुम्ब पेखे सहू जी न पेखे धर्म सार ॥क्षमा०॥

१२— आयो छे जीव एकलो जी जासी एकाकी एक।
मोहे को मती मूरखो जी कुटुम्ब कबीलो देख ॥क्षमा॥

१३— पुन जोगे नर-भव लह्यो जी सतगुरु नो संजोग।
पाप किये टालो सही जी तजो जहर विष भोग ॥क्षमा॥

१४— थोड़ा जीवित कारणे जी सहू रो ढंकी के रंग।
मत मत मति काढिया जी नरके-जावा संग ॥क्षमा॥

१५— अपार गति संसार मां जी जग रही जीवा री लाय।
अथिर वस्तु सारखी कही जी मिथ्यात्व के निर्णय ॥क्षमा॥

१६— अथिर सुख संसार ना जी जाण अवसरो जी आल।
वचन सुणो सत गुरु तणा जी जेतो सुरती संभाल ॥क्षमा॥

दोहे—

१— मुनिवर परिषद आगले दाखे धर्म सुभाय।
राजा कुंवरजी आद दे सुणियो सत्गुरु-वाय ॥

२— आदि अनादि जीवड़ो भमियो चऊ गति मांय।
धर्म बिना ए जीव की गरज सरी नहीं कांय ॥

३— धर्म कह्यो मति-भाखिया दे सतगुरु उपदेश।
साधु-श्रावक-व्रत आदरो टालो जमा की रेस ॥

ढाल—२

(*तर्ज—धी हो मिथिला पुरी नो राजियो*)

१— जीवड़े काया माया कारमी
जीवड़ो जैसो सुपनो रेस।
जीवड़े-विणसंता देर लागे नहीं
जीवड़े मानो सतगुरु-वेण ॥

२— चतुर नर चेतो,
अवसर एह।
जीहो दान शील तप भावना,
जीहो राचो रूडे नेह ॥चतुर०॥

३— जीहो धन धान घर हाटनी,
जीहो मकरो ममता कोय।
जीहो काचा सुख रे कारणे,
जीहो हीरा-जनम मति खोय ॥चतुर०॥

४— जीहो पाच महाव्रत आदरो,
जीहो श्रावक ना व्रत बार।
जीहो कष्ट पड्या रोंठा रहो,
जीहो ज्यूं हुवे खेवो पार ॥चतुर०॥

५— जीहो सगपण सहू ससार ना,
जीहो स्वारथ ना छे एह।
जीहो जो स्वारथ पूगे नहीं,
जीहो तडके तोडे नेह ॥चतुर०॥

६— जीहो सगपण इण ससार ना,
जीहो थया अनती बार।
जीहो मिल मिल ने वले वीछड़े,
जीहो कर्म लगावे लार ॥चतुर०॥

७— जीहो नरक निगोद मा उपनो,
जीहो छेदन भेदन मार।
जीहो तो पिण धेठा जीव ने,
जीहो नहीं आवे लाज लिगार॥चतुर०॥

८— जीहो वेदना नरक में सासती,
जीहो जरा तापसी खेद।
जीहो वेदना दश प्रकार नी,
जीहो जिणरा न्यारा न्यारा भेद ॥चतुर०॥

९— जीहो मारां पल सागर तणी
जीहो सुणता थरहरे काय।
जीहो तो पिण धेठा जीव ने,
जीहो धर्म न आवे दाय ॥चतुर०॥

२— अनुमति दीजे मोरी मावजी ए ससार असार।
जनम मरण दुख मेटवा, चारित्र लेऊ इण वार ॥अनु०॥

३— वचन सुनी सुल ना इसा, धरणी ढली छे माय।
सावचेत थई इम कहे, एसी मती काढो वाय ॥अनु०॥

४— झुलक झुलक माता रोवती, कुवर सामो रही जोय।
ए सुरती जाया! ताहरी, कुवर फूल ज्यू होय ॥अनु०॥

५— सजम छे वछ! दोहिलो, जैसी खाडा नी धार।
पाय उलहाणो चालणो, लेवो शुद्धज आहार ॥अनु०॥
वछ! दुकर व्रत पालना।

६— हिंसा न करणी जीवरी, तजवो मृषा-वाद।
अणदीधी वस्तु लेवी नहीं, तजणा सरस सवाद ॥वछ०॥

७— घोर ब्रह्मचर्य पालवों, तजवो नारी नो सग।
मन वचन काया करी, व्रत पालणा इक रग ॥वछ०॥

८— परिग्रहो नहीं राखवो, त्रि-विधे त्रि-करण त्याग।
रयणी-भोजन परिहरे, ते साचो वैराग ॥वछ०॥

९— मेला लूगड़ा राखवा, करवी नहीं सिनान।
बावीस परीसा जीतणा, रहणो रूडे ध्यान ॥वछ०॥

१०— सुवेण कुवेण लोक ना, खमणा परीसा-भार।
राज कुवर सुकमाल छे, करवी न देह री सार ॥वछ०॥

११— केई कहे पूज पधारिया, देवे आदर मान।
केई कहे मोडा! क्यू आवियो, बोले कडवी वाण ॥वछ०॥

१२— ए परीसा सहणा दोहिला, कहू छू वारवार।
सुख भोगव ससार ना, पछे लीजो सजम-भार ॥वछ०॥

दोहे—

१— कुवर कहे माता सुणो, तुम्हे कह्यो ते सत्त।
सुख चाहे इह लोग ना, तेह ने दोरो चरित्त॥

२— अथिर ससार नी साहिवी, जाता न लागे बार।

दोहा—

१— इम सिखावण देई करी आया जिण दिश जाय ।
कुवर खदक दीक्षा ग्रही, मन मा हर्षित थाय ।।

ढाल—५

(राग—मुनीसर जै जै गुण भडार)

१— खदक सयम आदर्यो जी, छोडी ऋध परिवार ।
निज आतम ने तारवा जी, पाले निरतिचार ।।

२— मुनीसर धन धन तुम अणगार ।
नाम लिया पातिक टले जी, सफल हुवे अवतार ।।मुनी०।।

३— पाचे इन्द्रिय वश करी जी, टाले च्यार कषाय ।
पाच समिति तीन गुप्तिने जी, राखे रूडी ऋषि-राय ।।मुनी०।।

४— सयम पाले निरमलो जी, सूत्र अर्थ लीधा धार ।
जिन-कल्पी पणो आदर्यो जी, एकल-मल अणगार ।।मुनी०।।

५— मलिया-सुदरी कहे रायने जी, ए नानडियो जी बाल ।
सिंहादिक नो भय करी जी, राखो तुमे रखवाल ।।मुनी०।।

६— पाच से जोध बुलायने जी, दिया कुवर ने जी लार ।
साधु ने खबर कांई नहीं जी, साथे बहे सिरदार ।।मुनी०।।

७— सावत्थी नगरी सू चालिया जी, कुती नगरी जी जाय ।
नगरी बहनोई तणी जी शक न राखी काय ।।मुनी०।।

८— पाचमी ढाल मा एतलो जी, ऋषि 'जयमलजी' कहे एम ।
आगे निरणो साभलो जी, सहे परीसो केम ।।मुनी०।।

दोहे—

१— पांचसे ही इण अवसरे, लाग्या खावा पीवा काज ।
वलो वलि चलता रह्या, एकला रह्या ऋषि-राज ।।

२— हिवे किम ऊठे गोचरी, उपसर्ग उपजे केम ।
एक-मना थई सांभलो, अडिग रह्या ऋषि जेम ।।

१०— साधु ने जाता देख,
राजा ने जाग्यो धेख, सुकोमल साध ।
एह कर्म मोडे किया ए ॥

११— राणी हुँती सुख माय,
रोवाणी इण आय, सुकोमल साध ।
खबर हमें मोडा तणी ए ॥

१२— राजा नफर बुलाय,
जावो ये बेगा धाय, सुकोमल साध ।
इण मोडाने पकड़ो जायने ए ॥

१३— राजा विचारी गेर,
जाग्यो पूर्वलो वैर, सुकोमल साध ।
पाछलो भव काचर तणो ए ॥

१४— माठी विचारी मन माय,
इण ने मसाण भोम ले जाय, सुकोमल साध ।
त्वचा उतारो देहनी ए ॥

१५— मति करजो काई काण,
इण ने ले जावो मसाण, सुकोमल साध ।
सगली खाल उतारजो ए ॥

१६— नफर सुणी इम वाण,
कर लीधी प्रमाण, सुकोमल साध ।
अजाण थका जायने ए ॥

१७— पकड्या मुनि ना हाथ,
थाने मसाण भोम ले जात, सुकोमल साध ।
नफर कहे कर जोडने ए ॥

१८— कहे मोने तो खबर न काय,
फुरमायो महाराय, सुकोमल साध ।
खाल उतारो देहनी ए ॥

१९— तिणसू माहरो नहीं दोष,
मुनि ! मति करजो रोष, सुकोमल साध ।
डरप्या, रखे बाल भस्मी करे ए ॥

दोहे—

१— कुंती नगरी ने विसे, हुवो हाहाकार ।
देखो राय मराविया, बिना गुने अणगार ॥

२— लोग हुवा बहु आकुला, पिण जोर न चाले कोय ।
मुनि ने मुगति सिधावणो, वैर पुराणो न होय ॥

३— किम बूझे पाच से सुभट, वले राणी ने राय ।
वैराग पामे किण विधे, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल—७

(राग - पुण्य सदा फले)

१— अजेय साध आयो नहीं रे,
जोवे पाच से वाट ।
ओलावण दीधी रायजी रे,
खिण खिण करे उचाटो रे ॥

२— वन मोटा मुनिराय,
नित कीजे गुण ग्रामो रे ।
मन वंछित फले,
सीझे सगला कामो रे ॥धन०॥

३— नगर गली फिर फिर जोवियो रे,
कठेई न दीठो रे साध ।
सुण्यो साध मार्यो गयो रे,
तब परमारथ लाधो रे ॥धन०॥

४— राजा पूछे कुण तमे रे,
तब वलि ते कहे योध ।
'कनक-केतू' रा रजपूत छा रे,
तमे कीधी बात अलोपो रे ॥धन०॥

५— कुंवर खदक दीक्षा ग्रही रे,
म्हें रखवाल रे ल्हार ।
सो मुनिवर थे मारियो रे,
मांसू न मरी गरज निगारो रे ॥धन०॥

६— वचन सुणी जोधां तणा रे,
राम हुवो गमगीर ।
हा हा पाप म्हारा किया रे
मैं मार्यो राणी रो वीरो रे ॥धन०॥

७— राणी बात सुणी तिसे रे,
लागो मर्म – प्रहार ।
मूर्छित थई धरणी ढली रे
छूटी आंसुवां री धारो रे ॥धन०॥

८— हा हा हूं अभागिणी रे
केने रोऊं हूं माय ! ।
मोटो रिख मार्यो गयो रे
म्हारो बालपण आप। मायो रे ॥धन०॥

९— बंधव मन सपनो कियो रे,
तोड्या मोह ना फंद ।
हूं पापण किम कहूं रे,
इम बैठी करे आक्रंदो रे ॥धन०॥

१०— जोडी करी सुगणनि रे,
सांभली सीधी रे बात ।
वचन 'सुनंदा' देखने रे
उठी मोहनी महाली रे ॥धन ॥

११— जिम जिम आई सांभरे रे,
आवे राम पर वेव ।
वीरा वेगा ! आवजे रे
हूं तेडूं मिलवा देवो रे ॥धन०॥

१२— कुण वीरो कुण बहनड़ी रे,
जोयजो मोहरी बात ।
इम मन सुगति सिधावसी रे,
इम करे विलापालो रे ॥धन०॥

१३— इम बाधी ने मानवी रे,
मोह म करजो कोय ।
मोह थकी दुख ऊपजे रे
कर्म बंधे इम होयो रे ॥धन ॥

१४— सालो सगो नहीं जाणियो रे,
तपसी मोटो जी साध ।
'पुरुष-सिंह' राजा झुरे रे,
बहुत लागो अपराधो रे ॥धन०॥

१५— पाच सो जोध इम चिंतवे रे,
मार्यो गयो मुनिराय ।
'कनककेतु' राजा कने रे,
कासु कहिसा जायो रे ॥धन०॥

१६— चारित्र लेसू चूपसू रे,
किसो श्वास-विश्वास ।
काल किताइक जीवणो रे,
राखां सुगति नी आसो रे ॥धन०॥

१७— मतो करी सयम लियो रे,
पाच से सिरदार ।
चोखो पाली सुरगति लही रे,
करसी खेवो पारो रे ॥धन०॥

दोहे—

१— राजा मन में चिंतवे, एहवो खून न कोय ।
साध-मरण मन ऊपनो, ए सासो छे मोय ॥
२— एम विचारी वादण गयो, साध भणी कहे एम ।
विना गुने मोटो मुनि, म्हें मार्यो कहो केम ॥

ढाल-८

[राग – वीर सुणो मोरी वींनती]

१— साध कहे राय साभलो,
तू तो हुँतो रे काचर तणो जीव ।
ए खदक हुतो मानवी
चतुराई रे हुती अतीव ॥
२— कर्म न छोडे केह ने,
विण सुगत्यां रे छूटको नहीं होय ।

(६)

❀ महारानी देवकी ❀

दोहे—

१— 'भद्दलपुर' पधारिया, बावीसमा जिनराय ।
भव-जीवाने तारता, मेले मुगत रे माय ॥

२— 'वसुदेवजी' रा डीकरा, 'देवकी' रा अंग-जात ।
सुलसा रे घरे वध्या, ते सुणजो साक्षात ॥

३— छऊं वय में सारिखा, सारिखे, उणियार ।
वैराग पाम्या किण विधे, ते सुणजो विस्तार ॥

ढाल-१

(राग—अलबेल्या)

१— नेम जिणंद समोसर्या रे लाल,
भद्दलपुर के बाग हो, भविक जन ।
सुणने लोग राजी हुवा रे लाल,
भवि जीवा रे भाग हो, भविक जन ॥नेम०॥

२— सहस अठारे साधुजी रे लाल,
अज्जा चालिस हजार, भविक जन ।
तिण ने आण मनावता रे लाल,
शासन रा सिरदार हो, भविक जन ॥नेम०॥

३— नर नारी ने हुवो घणो रे लाल,
नेम वादण रो कोड हो, भविक जन ।
कोई पाला ने पालखी रे लाल,
चाल्या होडा-होड हो, भविक जन ॥नेम०॥

४— केई कहे दरसण देखस्या रे लाल,
केई कहे सुणस्या वाण हो, भविक जन ।
केई कहे परसन पूछस्या रे लाल,
केई कुतुहल जाण हो, भविक जन ॥नेम०॥

५— राजा प्रमुख आविया रे लाल,
लारे नर नार्यां ना थाट हो, भविक जन ।

१३— संयम लीधो वैराग सू रे लाल,
घणो लाड ने कोड हो, भविक जन।
मुगती महल रे कारणे रे लाल,
ऊभा घर दिया छोड हो, भविक जन ॥नेम०॥

१४— नेमजी साथे छऊ जणा रे लाल,
करता उग्र विहार हो, भविक जन।
वैराग रस माहे झूलता रे लाल,
संयम तपस्या धार हो, भविक जन ॥नेम०॥

दोहा—

१— वैरागे मन वाल ने, दे तपस्या री नींव।
बेले बेले पारणो, प्रभु! करादो जाव जीव॥
२— नेम जिणंद समोसर्या द्वारिका नगरी मझार।
समोसरण देवा रच्यो देशना दे हितकार॥

ढाल—२

(*राग—विनो करीजे बाई वि०*)

१— पहली पोरसी सूत्र चितारे,
बीजी पोरसी अर्थ वीचारे।
जाणे तीजी पोरसी लागी,
वेदन रे वस खुध्या जागी॥

२— मुनिवर मिलि जिणंद पे आया,
हाथ जोड़ी ने बोले वाया।
प्रभु! तमारी आज्ञा थाय,
तो म्हां द्वारिका में गोचरी जाय॥

३— भगवंत बोल्या इसड़ी वाय,
देवाणुपिया! जिम सुख थाय।
रखे घड़ी री ढील न ल्यावो,
आहार पाणी ने वेगा जावो॥

१०—मुनिवर वेहर पाछा वल्या जी,
लागी छे थोड़ी सी वार।
बीजो सिंघाडो इहा आवियोजी,
देवकी – घर – बार ॥ साधुजी० ॥

दोहे—

१— उठी ने साम्ही गई, जोडी दोनू हाथ।
विनय सहित वदना करी, मन में थई रलियात ॥

ढाल—४

(राग—हमीरिया के गीत की)

१— देवकी हरखी अति घणी,
भले पधारिया रिषिराय, मुनीसर।
पेहला सिंघाड़ा तणी परे,
भाव सहित बहराय, मुनीसर ॥

२— धन धन राणी देवकी,
प्रतिलाभ्या अणगार मुनी०।
चित्त वित्त पात्र तीने भला,
राणी सफल कियो अवतार ॥मुनी० धन०॥

३— जाता ने पोहचाय ने,
पाछी आई तिण ठाई मुनीसर ॥
तीजो सिंघाडो आवियो,
चिंतवे राणी चित्त माय ॥मुनी० धन०॥

४— पहिला याने जो पूछ सू,
तो नहीं लेसी मुनि आहार मुनी०।
वेहर्या पछे ऊभा नहीं रहे,
इम मन में करे विचार ॥मुनी० धन०॥

५— जहाज आई इम बारणे,
सहज पुण्य प्रमाण, मुनीसर।
मोदक पहला बहराय ने
हूँ पूछसू जोडी पाण ॥मुनी० धन०॥

६— लाखा कोड़ा रा धणी वसे जी,
नगरी में बहु लोग ।
खाणे पीणे खरचणे जी,
पुन्य सू मिलियो जोग ॥मुनी०॥

७— घणी पुन्याई बाई ताहरीजी,
इम बोल्या मुनिराय ।
देवकी मन में जाणियो जी,
या ने तो खबर न काय ॥मुनि०॥

८— बात छे अचिरज सारिखी जी
माहरे हिये न समाय ।
कह्या में नफो नहीं नीपजेजी,
बिन कह्या रह्यो न जाय ॥मुनी०॥

६— मैं आगे इम सांभल्यो जी,
नहीं बार - बार ।
यो मोने अचिरज थयो जी,
पुच्छा करू निरधार ॥मुनी०॥

१०— हू पूछू इण कारणे जी,
मुनि ने न लाभे आहार ।
म्हारा पुण्य तणे उदेजी,
आप आया तीजी बार ॥मुनी०॥

११— वलि ते मुनिवर इम कहे जी,
बाई शका मूल म आण ।
थारे घर बहरी गया जी,
ते मुनिवर दूजा जाण ॥
देवकी लोभ नहीं छे कोय ॥

१२— हाथ जोड़ी कहे देवकी जी,
साभल जो ऋषि-राय ।
मैं स्व-हाथा सु बहरावियो जी,
सो सू इम किम नटियो जाय ॥मुनी॥

१३— वलि ते मुनिवर इम कहे जी,
बाई ! नगरी में बहु दातार ।

तीन संघाड़े आविया जी
　　　　म्हे छाँ छव अणगार ॥
　　　　देवकी सोम मही छे कोम ॥

१४— सारखी रूप संपदा जी
　　　　बाई ! सारिखो अणुहार ।
साथे संजम आदर्यो जी
　　　　बाई ! सारिखो तप भार ॥देवकी ॥

१५— हाथ जोड़ी ने कहे देवकी जी
　　　　सांभलो मुनि-नाथ !
उतपत थांरी किहाँ थकी जी
　　　　हूँ सुणस्यूँ चित लाय ॥मुनि ॥

१६— किसा नगर रा नीकल्या जी
　　　　स्वामी ! बसता कुण से गाम ।
किण रा थे दीकरा जी
　　　　पिता रो कहो नाम ॥मुनीसर ॥

१७— 'भद्दलपुर रा वासिया जी
　　　　बाई ! 'सुलसा म्हांरी माय ।
नाग सेठ रा दीकरा जी
　　　　घर छोड़्या छह भाय ॥देवकी ॥

१८— बत्तीसे रंभा तजी जी
　　　　बत्तीस बत्तीसे दात ।
कुटुम्ब मेल्हा मूँ रोवतो जी
　　　　बाई बिलख-बिलख करती मात ॥देवकी ॥

दोहा—

१— हाथ जोड़ी कह देवकी सांभलजो रिख-राय ।
　　वैराग पाम्या किण विध दीजो म्हाने बताय ॥
२— साध वचन इमड़ा कह सांभल मोरी बाय ।
　　म्हारी रिध थारी किसी न सुणजो चित लाय ॥

ढाल—६

(राग—राजगृही नगरीश्र)

१— बत्तीस कोड सोनैया,
बत्तीस रूपा री कोड री माई ।
बत्तीसे बाजुबध दीधा,
बत्तीस काकण री जोड री माई ॥
पुण्य तणा फल मीठा जाणो ॥

२— बत्तीस तो हार एकावली,
बत्तीस अद्धसरा जाण री माई ।
बत्तीसे नवसरा दीधा,
बत्तीस मुकुट प्रमाण री माई ॥पुण्य०॥

३— त्रण सरिया वले हार बत्तीसे,
बत्तीस कनकावली हार री माई ।
हार मुक्तावली ऊजल सोहे,
बत्तीस रत्नावली सार री माई ॥पुण्य०॥

४— हीर चीर वले रत्ना जडिया,
पट कुल रा बहु बृन्द री माई ।
भीणा सूत रा वस्तर दीधा,
पहियाँ अति सोहदरी माई ॥पुण्य०॥

५— बत्तीसे तो पिलग सोना रा,
बत्तीस रूपा रा जाण री माई ।
बत्तीसे सोना रूपा रा भेला,
पागा रतना में वखाण री माई ॥पुण्य०॥

६— बत्तीसे तो थाल सोना रा,
बत्तीस रूपा रा जाण री माई ।
बत्तीसे तो प्याला दीधा,
दूध पीवण ने वखाण री माई ॥पुण्य०॥

७— बत्तीसे बाजोट सोना रा,
बत्तीस रूपा रा जाण री माई ।
बत्तीसे बोतवा सोना रा,
बत्तीस रूपा रा प्रमाण री माई ॥पुण्य०॥

८— बत्तीस तो गोकुल गायां रा
दूध पीवण ने दीध री माई।
बारमो बछारण खोला दीधा
बत्तीस वंरया-दीवण दीध री माई ।।पुण्य ।।

९— इण रीत बहु कुमारां ने
सरीखी दातां री घोल री माई।
पगे लागतां सासूजी दीधा
एक सौ न नाखू बोल री माई ।।पुण्य ।।

दोहा—

१— किसरो काल संसार में भोगविया सुख सार ।
एक दोगुन्दक मी परे बहुलो छे विस्तार ।।

ढाल–७

(*राग—करेलणा पहरे रे*)

१— आगो काल न जाणता जी मैं रहता महलां मझार ।
नारां रा परिवार सूं जी बत्तीसे बत्तीसे नार ।।
देवकी रे लोभ नहीं माहरे कोय ।।

२— चन्द्र-वदन मृग-लोचणी जी चम्पक-कोमली बाल।
हरीलंकी मृदु-भाषिणी जी इन्द्राणी सी रूप रसाल ।।देव ।।

३— मीठावली मुख भाखणे जी मुलकंती मोहन-बाल ।
चतुरां ना मन मोहती जी हंस-गमणी सूं करता बहु केल ।।देव ।।

४ नित नवी चीजां लावती जी चित चित सतवा बेरा ।
सुन्दर सूं मीना रहे जी सुपना में नहीं कलेश ।।देव०।।

५— राग छत्तीसे खेलती जी मानस ना भोंकार ।
नाटक विध बत्तीसना जी रंग विनोद अपार ।।देव ।।

६— भगवंत नेम पधारिया जी माता रे परिवार ।
मैं भगवंत ने वांदिया जी मनड़ा किनो अणगार ।।देव०।।

७— नेम नमी वाणी सुणी जी मीठी दूधाधार ।
प्रतिबोध्या छहूं भाया जी जाण्या असिर संसार ।।देव ।।

८— कुटुम्ब कबीलो छोडियो जी, सुंदर बत्तीसे नार ।
धन कचन रिध छोडने जी, लीधो सयम-भार ।।देव०।।

९— बेले बेले पारणो जी, जाव-जीव मन धार ।
मुक्ति भणी मैं उठिया जी, लेवा छा सुध आहार ।।देव०।।

१०—दोय दोय मुनिवर जुवा जुवा जी, आया नगर मझार ।
तीन सिंघाडे उठिया जी, द्वारिका नगर मझार ।।देव०।।

११—तिण साधा रा वचनमें जी, शका मूल म आण ।
ताहरे घर बेहरी गया जी, ते मुनिवर दूजा जाण ।।देव०।।

दोहे—

१— तिण कारण मोदक तणो लालच नहीं मोय ।
घर री रिध एहवी तजी, मुगती साहमो जोय ।।
२— इतरो सुण शका पडी, देवकी करे विचार ।
मोने खबर न का पडी, देखू थारो अणुहार ।।

ढाल—८

(राग—कर्म परीक्षा करण कु०)

१— नेण निहाले हो राणी देवकी रे
मुनिवर साम्हो न्हाल ।
जोति काति थारी दीपती रे,
मुनिवर रूप रसाल ।।नेण०।।

२— जिण घर थी ए छऊ नीकल्या रे,
किस्यू रह्यु छे लार ।
छऊ सहोदर दीसे सारिखा रे,
नल-कूबर उणिहार ।।नेण०।।

३— छपन कोड जादवा री साहिबी रे,
हरिवश-कुल-सिणगार ।
दीठा म्हारा सगला राज में रे,
नहीं कोई थारे उणिहार ।।नेण०।।

४— इण उणिहारे म्हारे राज में रे,
अवर दीसे न कोय ।

ढाल—६

[राग—रे जीव विषय न राचिए]

१— भरत खेतर में सामठा, किण मा बेटा जाया रे ।
तीन भघाडे आविया, में हाथा सू वेहराया रे ॥
करे विमामण देवकी ॥

२— मो आगे कह्यो हुँतो, अयवते ऋषि-रायो रे ।
तेतो बात मिलती नहीं, स्यू रिख वाणी मृपा थायो रे॥करे०॥

३— श्राज्ञा देता मात नी, जीभ वुही छे केमो रे ।
एहवा बेटा वाहिरी, किन काढेला केमो रे ॥करे०॥

४— सूरत दीसे सोहती, घणोइज ज्यारो हेनो रे ।
जिण घर सू ए नीकल्या, लारे रह्यो छे केतो रे ॥करे०॥

दोहे—

१— एहवा पुत्र जनम्या विना, किम थावे आणन्द ।
हाथ काकण सी आरसी, इहा छे नेम जिणन्द ॥

२— इसडी मन में ऊपनी, वादू भगवत-पाय ।
भाव-सहित वदन करू, तन मन चित लगाय ॥

३— शका छेऊ अणगार नी, मुझ मन उपनी सोय ।
नेम जिणन्द ने पूछ ने, सासो भाजु मोय ॥

४— इम चित माही विचार ने, सज सोले सिणगार ।
जिण वादण जावा भली, करे सजाई त्यार ॥

ढाल—१०

[राग—वींछिया का गीत]

१— चाकर पुरुष बुलायने,
देवकी बोले इम वाया रे लाला ।
खिम्पामेव भो देवाणुप्पिया ।
तू रथ वेगो जोताय रे ॥
श्री नेम वादण ने जावस्या ॥

वो छू तो कोइक म्हारो काम छू रे
ए मोन घणेरा होय ।नेम ॥

५— म्हे तो समरथ को दीसे नहीं रे
म्हारो हियडो उलसत जेम ।
आगे मुनिवर म्हानें सुहावणा रे,
इम किम जाग्यो प्रेम ।नेम ॥

६— मानव रो मार्ग इसरे रे,
होवे जो धर्म – सनेह ।
जो किम पर कर कोई ना पड़े रे,
इम किम जाण्यो म्हारो नेह ।नेम०॥

७— वासु महाराणा राणी देवकी रे
लागी थोड़ी सी वार ।
मुनिवर म्हारी में पाछा नीसर्या रे,
क्षमा न रहे अणगार ।नेम०॥

८— सूरत थारी प्यारी लागे घणी रे
प्यारो कठा लग थाय ।
आवे मनि देखवो हूं कर रे
इम म्हारो मोहन थाय ।नेम ॥

९— मोहनी कर्म मोटो है घणो रे,
दोरो जीत्यो जाय ।
जीत कोई मद सूरमो रे,
मन में धीरज थाय ।नेम ॥

दोहे—

१— देवकी देख चकित थई रिषा सुमति रा सूल ।
करवी म्हारी दीपती मुनिवर काल्का–मूल ॥
२— सारिखी जोडनी चामडी सारिखे मनुहार ।
करव सारिखो देखवे यौवन रूप उदार ॥
३— इम चितवतां देवके जन्तो मन संदेह ।
कृष्ण माता पुत्र जनमिया भरत क्षेत्र में यह ॥
४— बालपणे माहरो हूंतो अवधि अणगार ।
आठ जणसी है देवकी जिसा नहीं थया भरत मझार ॥

ढाल-६

[राग—रे जीव विषय न राचिए]

१— भरत खेतर में मामठा, किण मा बेटा जाया रे ।
तीन सघाडे आविया, मैं हाथा सू वेहराया रे ॥
करे त्रिमामण देवकी ॥

२— मो आगे कयो हुँतो, अयवंत ऋषि-रायो रे ।
तेतो बात मिलती नहीं, स्यू रिख वाणी मृषा थायो रे॥करे०॥

३— आज्ञा देता मात नी, जीभ वुही छे केमो रे ।
एहवा बेटा वाहिर्रा, दिन काढेला केमो रे ॥करे०॥

४— सूरत दीसे मोहती घणोडज ज्यारो हेतो रे ।
जिण घर सू ए नीकल्या, लारे रह्यो छे केतो रे ॥करे०॥

दोहे—

१— एहवा पुत्र जनम्या विना, किम थावे आणद ।
हाथ काकण सी आरसी, इहा छे नेम जिणद ॥

२— इसडी मन में ऊपनी, वादू भगवत-पाय ।
भाव-सहित वदन करू, तन मन चित लगाय ॥

३— शका छेऊ अणगार नी, मुझ मन उपनी मोय ।
नेम जिणद ने पूछ ने, सामो भाजु मोय ॥

४— इम चित माही विचार ने, सज मोले सिणगार ।
जिण वादण जावा भणी, करे सजाई त्यार ॥

ढाल-१०

[राग—वींछिया का गीत]

१— चाकर पुरुष बुलायनें,
देवकी बोले इम वाया रे लाला ।
खिम्पामेव भो देवाणुप्पिया !
तू रथ वेगो जोताय रे ॥
श्री नेम वादण ने जावस्या ॥

१०— सोना री गले में सांकली,
रूपा रो टोकरियो जाण रे लाला।
सोना री खोली सींग में,
क्षेम इसड़ा बलदज आण रे ॥श्री०॥

११— कमल रो सोहे सेहरो,
लटके सींगा रे मांय रे लाला।
नाथ सोने रेशम री मली,
तिणसूं नाक दोरो नहीं थाय रे ॥श्री०॥

१२— इण रीते सेवग सुणी,
रथ जोतर कियो तयार रे लाला।
देखत लागे सुहावणो,
रथ चढण रो करे विचार रे ॥श्री०॥

१३— न्हाई ने मजन करी,
पहिर्या नव-नवा वेश रे लाला।
माणक मोती माला मूंदड़ी,
गहणा हार विशेष रे ॥श्री०॥

१४— हाथों में कांकण सोभता,
कंठे नवसर हार रे लाला।
पगे नेवर दीपता,
जाणे देवांगना उणिहार रे ॥श्री०॥

१५— अलंकार एहवा सजी,
आई उवट्ठाण-साला मांय रे लाला।
रथ सजियो कसियो थको,
कल्प-वृक्ष समो ते थाय रे ॥श्री०॥

१६— करी सजाई एहवी,
चढ बैठी रथ रे मांय रे लाला।
बारलां ने दीसे नहीं,
मांहे देखती जाय रे ॥श्री०॥

१७— लीधी साथे सहेलियां,
राणी चाली मज्झ बाजार रे लाला।
चतुर बेसाण्यो सागड़ी,
ए गृहस्थ नो आचार रे ॥श्री०॥

८— मुवा बालक सुलमा जणे जी, ते मेले तुम पास ।
ताहरा मेले जीवता जी, सुलसा री पूरे आस ॥देव०॥

६— ते भणी पुत्र छे ताहरा जी, सुलसा रा नहीं एह ।
मुनि-भाषित मृषा नहीं जी न टले कर्म नी रेह ॥
देवकी ! कर्म न छोडे कोय ॥

१०—पाछले भव ते देवकी जी, दीधी छाती में दाह ।
सात रतन ते शोक ना जी, चोर्या नाणी त्राह ॥देव०॥

११—तिण ने रोती देखने जी, तें मनमें करुणा आण ।
एक रतन पाछो दियो जी, सोले घड़ी थी जाण ॥देव०॥

१२—तिण कर्मे चोर्या गया जी, ए थारा छऊ पूत ।
सोले वर्ष थी कृष्णजी ए, आय राख्यो घर-सूत ॥देव०॥

१३—सुख दुख सच्या आपणा ए, जिके उदे हुवे आय ।
समो विचार्यां सुख हुवे ए, चिंता म करो काय ॥देव०॥

१४—कर्म सबल ससार में ए विन भुगत्या न टलत ।
देव दाणव नर राजवी ए, एकण पथे वहत ॥देव०॥

दोहे--

१— नेम जिणेसर वाद ने, आई साधा रे पास ।
निरखे वादे हेत सू, हिवड़े हरस उलास ॥
२— मोक्ष तणी किरिया करे, ज्यारो घणोहीज वान ।
सहस्र अठारे साध में, कठे ही न रहे छान ॥

ढाल-१२

(राग—वे वे तो मुनिवर वहरण०)

१— देवकी तो आई नदन वादवा रे,
ऊभी रही मुनिवर पास रे ।
नेणें साधा ने राणी देखने रे,
करवा तो लागी इम अरदास रे ॥देवकी०॥
२— हाथ जोड़ी ने राणी वदना करे रे,
विनय सू पाचे अग नमाय रे ।

प्रथम प्रदक्षिणा दीधी हाथ सु रे
लटका करे शुभ सुलतीजी चाल रे ।।देवकी०।।

३— भाव सुलाय माता मुझ फली रे,
रोम रोम में प्रगट्यो आनन्द रे ।
म्हारी कूख में पहला ऊपना रे,
मन मन चरण-कुसम – चंद रे ।।देवकी०।।

४— तड़क स तूटी कस कंचू तणी रे
चल रे तो छूटी दूधाधार रे ।
हियड़ा माहि हर्ष माने नहीं रे
माय के मिलियो सुख करतार रे ।।देवकी ।।

५— रोम रोम विकस्या तन मन उलस्या रे,
नयणां तो छूटी आंसु–धार रे ।
विक्रिया तो बाहों माहि मावे नहीं रे –
आयो तूट्यो मोत्यां रो हार रे ।।देवकी०।।

६— देवकी आंख्यां ने चख ल्यावती रे
निरखना बटा ने कयी वार रे ।
चलि जीदी म चाह मिल करे रे
हिये उपजे करुण विचार रे ।।देवकी ।।

दोहा—

१— देवकी मन माहि चिंतवे देखो कर्म–संयोग ।
मैं जनम्या छ बालुड़ा पाल्या किय ही लोग ।।
— इम चिंतव प्रभु चरण ने आई आपण गेह ।
दुख मन माहि ऊपनो कह्यो न जावे छेह ।।
३— चिंता सागर झूलती पड़ी धरती पर राज ।
सुख विलसे जाव नहीं किम ही सू नहि माज ।।
४— इण अवसर श्री कृष्णजी, मा ने वंदन काज ।
आवे प्रणमी चरण युगल बैठा श्री महाराज ।।
५— देवकी तो बोली नहीं पुत्र नमी तिण वार ।
तब कृष्णजी मन चिंतवे मा ! तोने चिंता अपार ।।

६— माहरा महू इण राज में, थे ही जो दुखिया होय ।
तो कहो इण ससार में सुखियो न दीसे कोय ।
७— वहुवां थारे हुकम में, लुल लुल लागे पाय ।
सगली पगे लगावता पिंड्या को शल जाय ॥

ढाल-१३

(राग—चद्रायण)

१— माताजी ! किण कारणे हो, वदन तमारो श्राजो ।
चिंतातुर दीसे घणो हो, इण वाते श्रावे लाजो ॥
इण बाते मोने लाज कहावे,
पुत्र थका मा दुखणी थावे ।
हूँ समभूं थारे समभावे ,
बात कहो वेला घनी थावे ॥
जी मातजी हो ॥

२— थाने चिंता रो कुण हेत, कहो तुमे हम भणीजी ।
हूँ करसू हो चिंता दूर के, जामण ! तुम तणी जी ॥
३— बोले माता देवकी हो, मुझ नदन थया सातो ।
लाल्या पाल्या में नही हो, ए मुझ दुख री बातो ॥
ए दुख मुजने दिन दिन शाले ,
साजन सो, जो ए दुख पाले ।
एसो भाग्य लिखो मुज माले ।
जो श्रावे हिव वात विचाले ॥
जी कान्हजी श्रो ॥

दोहा —

१— वले माता इम कहे, साभल तू श्रग-जास ।
दुख मुझ ने शाले घणो, ते सुण दुख री बात ॥

ढाल-१४

(राग—वालेसर मुझ वीनति)

१— हूँ तुज श्रागल सी कहूं कन्हैया !
वीतक दुख री बात रे, गिरधारी लाल ।

९— रोवतो मैं राख्यो नहीं, कन्हैया !
पालणिये पौढाय रे, गिर० ।
हालरियो देवा तणी, कन्हैया,
म्हारे हूँस रही मन माय रे, गिर० ॥हूँ०॥

१०— आंगणिये न करावी थिरी, कन्हैया !
आगुलिया विलगाय रे, गिर० ।
हाऊ बेठो छे तिहा, कन्हैया,
अलगो तू मति जाय रे, गिर० ॥हूँ०॥

११— ओडणियो पहराव्यो नहीं, कन्हैया,
टोपी न दीधी माथ रे, गिर० ।
काजल पिण सार्यो नहीं, कन्हैया,
फदिया न दीधा हाथ रे, गिर० ॥हूं०॥

१२— रोवाण्यो नहीं हासी मिसे, कन्हैया-
म्हें आंख तोषण काज रे, गिर० ।
न कर्यो एह नो सामरो, कन्हैया !
करिस्या तेवड आज रे, गिर० ॥हूँ०॥

१३— न कह्यो केहने कीकलो, कन्हैया,
ए माहरे मन चाय रे, गिर० ।
इतरा बोला मायलो, कन्हैया !
एक न पाम्यो थारी माय रे, गिर० ॥हूँ०॥

१४— पुत्र तणी आरती घणी कन्हैया !
हर्ष नहीं मुज तन्न रे, गिर० ।
गोद खिलावे पुत्र ने, कन्हैया !
ते माता छे धन्न रे, गिर० ॥हूँ०॥

१५— मोटी जग मांहे मोहणी, कन्हैया !
उदे थई मुज आज रे, गिर० ।
बीजो कोई जाणे नहीं, कन्हैया !
जाणे श्री जिनराय रे, गिर० ॥हू०॥

———

दोहे—

१— एह वचन सुण मात ना कृष्ण करे अरदास ।
सोच कोई राखो मती पूरस्यूं थांरी आस ॥
२— जिम तुम मंगल थास्ये, करस्यूं तेह उपाय ।
मीठा मधुरा वचन सूं संतोषी निज माय ॥
३— माता सुण पर सांभली हिवड़े हर्ष अपार ।
सत्पुरुष वचन चले नहीं जो होवे काल मझार ॥

ढाल—१५

[राग—चंद्रकला]

१— कृष्ण कहे माताजी ! सांभलो हो चिंता म करो लिगारो ।
जिम तुम वांछित थासी हो तिम हूं करस्यूं विचारो ॥
तिम हूं करस्यूं विचारो र माई !
म करो मन में चिंता काई ॥
दीजो म्हाने मती बधाई
अब होवे नान्हो भाई ॥
श्री माताजी हो ॥
२— माता रे पगे लागने हो आया पौषध-शाले ।
हरिणगमेषी देवता हो मन चिंतव तत्काले ॥
मन चिंतव तत्काल मुरारी
अठ्ठम तप मन मांही धारी ।
आवी देव कहे तिण वारी
काम कहो मुझ ने सुविचारी ॥
श्री कान्हजी हो ॥
३— देवकी रे पुत्र आठमा हो
जिम होवे करो तेम्हो ।
इण कारण मैं सिमर्यो हो
बीजो नहीं कोई मेमो ॥
बीजो नहीं कोई प्रेम हमारे
पुत्र बिना मां दुख विसारे ।
बालक नी लीला चित धारे
स्त्री ने पहिल सुख संसारे ॥
श्री देवकी हो ॥

४— देव कहे पुत्र थायस्ये हो, पिण होस्ये जब मोटो ।
चारित्र लेस्ये ए भलो हो, वचन हमारो न हो खोटो ॥
वचन हमारो खोटो न थावे,
इम कही सुर निज ठामे जावे ।
कृष्ण हिवे सुर ना गुण गावे ।
माताजी ने हर्ष मनावे ॥
जी मातजी हो ॥

दोहे—

१— कोइक सुर ते चव करी, गर्भ लियो अवतार ।
रग विनोद वधावणा, हरख्यो सहु परिवार ॥

२— भविक जीव प्रतिबोधता, जिनवर करे विहार ।
पाप तिमिर निर्घोटवा, महस्र - किरण दिन-कार ॥

३— गर्भ दिवस पूरा करी, जायो सुन्दर नन्द ।
घर घर रग वधावणा, घर घर मांहि आणद ॥

ढाल-१६

(राग—जीहो मिथिला नगरी रो राजियो)

१— जीहो शुभ वेला शुभ मुहूर्त लाला,
राणी जनम्यो बाल ।
जीहो कोमल गज तालुओ लाला,
देव कुवर सुकुमाल ॥
राणीजी कुमर जायो जी ॥

२— जीहो हरख्यो श्री हरि राजवी लाला,
हरख्या दशो ही दशार ।
जीहो हरसी माता देवकी, लाला,
हरख्यो सहू परिवार ॥राणीजी०॥

३— जीहो बदीखाना मोकल्या-लाला,
कीधा बहु मडाण ।
जीहो नगरी नी शोभा करी लाला,
बाजे विविध निशाण ॥राणी जी०॥

४— जीहो-तोरण आया पधारिया लाला
दश दिन महोत्सव थाय ।
जीहो- बांध्या तोरण बारि सीरखी लाला
चंदन केसर हाथां दिराय ॥राणी जी ॥

५— जीहो-नारद नारी सांवटी लाला
आवे गावे गीत ।
जीहो-चोक पुराय मांडला लाला
मानविने शुभ रीत ॥राणीजी ॥

—— ——

दोहे—

१— बाजा बाजे अति भला बरस्या मंगल-माल ।
संतोषे याचक सुदाम्यो हर्ष्यां बाल गोपाल ॥

२— मरता जीव छोडाविया लाला नगर मझार ।
मुह मांग्या दीधे धणा मणि माणक भंडार ॥

(ढाल–चाली)

६— जीहो-दीधा मंगल मोतीका लाला
दीधा हमवर हार ।
जीहो-दीधा सोनो साबडू लाला
दीधा भर्या भंडार ॥राणीजी ॥

७— जीहो बारसमी दिन आवियो लाला
नाम दिया अभिराम ।
जीहो चंद्रकला जिम वधतो लाला ।
रूप-कला-गुण-धाम ॥राणीजी ॥

दोहा—

१— हाथी नो जिम तालवा देही तिम सुकुमाल ।
बालक हूवो तेहने नामे गज – सुकुमाल ॥

२— बालक पांच धाय करी वाधे आनंद-कंद ।
एक घडी दूजी घडे दिन दिन अधिक आनंद ॥

(ढाल-वही)

८— जीहो खेलावण-हुलरावणे, लाला
चुगावण ने पाय।
जीहो न्हवरावण पेहरावणे, लाला,
अगो अग लगाय ॥राणीजी ॥

९— जीहो आखडली अजावणी, लाला,
भाल करावण चद।
जीहो गाला टीकी सावली, लाला
आलिगन आनद ॥राणीजी०॥

१०— जीहो पग-मांडण ग्रही अगुली, लाला,
ठुमक ठुमक री चाल।
जीहो बोलण भाषा तोतली, लाला,
रिझावण अति ख्याल ॥राणीजी०॥

११— जीहो दही रोटी जिमावणे, लाला,
अरू चबावण तबोल।
जीहो मुख सू मुख में दिरीजता, लाला,
लीला अधर अमोल ॥राणीजी०॥

१२— जीहो बतलावण ने चालवे लाला,
हीरावण मुख, गाल।
जीहो आलकरावण आकरी लाला,
सीखावण सुर-ताल ॥राणीजी०॥

१३ — जीहो बरस सरस आठा लगे लाला,
लीला बाल, विनोद।
जीहो सब ही पर मा देवकी, लाला,
पावे अधिक प्रमोद ॥राणीजी०॥

१४— जीहो पढियो गुणियो मति आगलो, लाला,
माधव जीवन जोय।
जीहो सहू ने प्यारो प्राण थी लाला,
माताजी ने सोय ॥राणीजी०॥

४— मजन-घर में हो कृष्ण न्हावण करी,
सर्व पहेर्या सिणगार।
चदन-लेप हो शरीर लगाविया,
जाणे इन्द्र - अवतार ॥यादव०॥

५— एक सौ आठ हो हाथी सिणगारिया,
चरच्या तेल सिंदूर।
दीसत दीसे हो पर्वत-ट्रंक ज्यू,
चाले आगे हजूर ॥यादव०॥

६— एक सौ आठ कोतल हय सिणगारिया,
सुन्दर सोवन-जड़ित पिलाण।
एक सौ ने आठ रथ सिणगारिया,
चाले असवारी आगीवाण ॥यादव०॥

७— लाख वैयालिस हाथी सिणगारिया,
वले लाख वैयालिस घोड।
लाख वैयालिस रथ सिणगारिया,
पायदल अड़तालिस कोड़ ॥यादव०॥

८— हरि ने हलधर दोनू गज चढ्या,
साथे लियो गजकुमार।
छत्र ने, चामर दोनू विंजे रह्या,
बाजे बाजा रा झणकार ॥यादव०॥

९— देवकी माता आदे राणिया,
साथे सहू परिवार।
बोले विरुदावलियां, चारण सुजन सब,
जय जय शब्द अपार ॥यादव०॥

दोहे—

१— अतिशय देखी ने उतर्या, वांद्या दीन दयाल।
पाच अभिगम साचवी, पाप कियो पेमाल ॥
२— भगवत दीधी देशना, भवि जीवा हितकार।
आगार ने अणगार नो, धर्म करो सुखकार ॥
३— परिषदा सुण पाछी गई, वलिया कृष्ण नरेश।
गज - सुकुमार वैरागियो, लागी धर्म री रेश ॥

३— छतिया मेरे लाल, आगज उठी।
तनु जाले रे लाल, न समजे झूठी रे ॥प्यारे०॥

४— छतियां मेरे लाल! दुःख न ममावे।
दाडिम ज्यूं रे लाल, फाटी आवे रे ॥प्यारे॥

५— बेटा की रे लाल! आशा एती।
कहीं नहीं जावे लाल! अबर जेती रे ॥प्यारे०॥

६— ऊंची लेई लाल आभ अडाई।
नीची कियां लाल, जात बडाई रे ॥प्यारे०॥

७— रोवत अत ही लाल देवकी राणी।
भर भर आवे लाल, नयणा में पाणी रे ॥प्यारे०॥

८— कुंवर कहे रे लाल, माय न रोजे।
मरणो आवे लाल, किम सुख सोजे रे ॥प्यारे०॥
प्यारी हमारी अमां अनुमति दीजे॥

९— जनम जरा रे लाल पूठ लागी।
किम छूटीजे लाल, तेहथी भागी रे ॥प्यारी०॥

१०— उत्कृष्टी रे लाल, कीजे करणी।
तो रे मिटे लाल, यम की डरणी रे ॥प्यारी०॥

११— अजर अमर लाल, हूं अब होस्यूं।
शुद्ध होई लाल! त्रिभुवन जोस्यूं ॥प्यारी०॥

दोहे—

१— मात कहे सुत सामलो, संयम दुक्कर अपार।
तूं लीला रो लाडलो, सुख विलसो संसार॥

ढाल—२०

(*राग—जोधाणे जसराज*)

१— साधपणो नहीं सहेल, जाया जामण कहे—रे जाया।
तूं न्हानड़ियो बाल, परीसा किम सहे॥

२— त्रिविधे त्रिविधे च्यार, महाव्रत पालवा—रे जाया।
नान्हा मोटा दोष, अहोनिश टालवा॥

३— दोष बेंतालीस टाल करती वहरण गोचरी–रे जाया ।
समभी ममता तज मिटा मोने सोच री ॥

४— कनक कचोला छांड, लेवी वहरण काचली–रे जाया ।
काच कीच सम जाण, नहीं जोवणी पाछली ॥

५— रहणो गुरां रे पास विनय सू भाषणो–रे जाया ।
राती पहर्या एक शीत बासी नहीं राखणो ॥

६— सरस नीरस आहार करणो बल पातरे रे जाया ।
ए सुख सेज्या छोड सूवणो साथरे ॥

७— नहीं करणी सिनान, मुखे बंधे मुहपती रे जाया ।
मेला पेहरे वस्त्र लिखे जैन रा यती ॥

८— करणो उग्र विहार सेहणा सी तावड़ो–रे जाया ।
करणो हमारो मान पुत्र तू बावरो ॥

९— ए कायर ने दुर्लभ माताजी थे कह्यो–री माई—
सूरा ने है सेहज कुमर उत्तर दियो ॥

१०— जनम मरण रा दुख माता जिनवर कह्या–री माई ।
वसियो गर्भावास जामण में दुख सह्या ॥

११— नहीं पलक री आस आयु काल बीतियो–री माई ।
यो जग मरणो देख माताजी चीतियो ॥

दोहे—

१— बहुली माता इम कहे सांभल तू सुजाण ।
परिवार थाहरे है घणो म करो दीक्षा री वात ॥

ढाल वही

१२— सहस बहोत्तर मात तात वसुदेव है–रे जाया ।
जीवन-प्राण आधार केशव बलदेव है ॥

१३— सोलाणी सहस बत्तीस ब्याहो परणेबो–रे जाया ।
तुम ने अनुमति देवा कुण होसी आगे ॥

१४— सहस बहोत्तर परिवार माताजी थांरो मिले–री माई ।
पर भव जाता साथ कोई ना चले ॥

१५— पलटे रंग पतंग, तिको जिण री जिमा-री माई।
तिण ऊपर विश्वास, जामण करणो किसो ॥

१६— शूर वीर वाचीम, दगीसा धारमी-री माई।
जाणो शिवपुर वास, तिके नर पावसी ॥

१७— सुन्दर वाला तोय, परणीजो पद्मणी-रे जाया।
सुख-लीनी जोवन-वेश, रूप चतुराई घणी ॥

१८— मृग-नयणी, शशि-वन्न इन्द्राणी-सम अछे-रे जाया।
विलसी सुख समार, लीजो चारित्र पछे ॥

१९— लिया घणा ने घेर, विषय महापापणी-री माई।
जग माहे सहू नार, माता कर थापणी ॥

२०— स्वार्थ नी सगी नार, माता जिनवर कही-री माई।
अशुच दुर्गंध अपार, माता परणू नहीं ॥

२१— वाल्यो मन वैराग विषय रस परिहरी माई।
मल मूत्र नो भंडार, माता नारी खरी ॥

२२— किंपाक फल समान, विषय जिनवर कह्या-री माई।
दीजे अनुमति आज, कीजे मो पर मया ॥

२३— नेम जिणेसर पास, महाव्रत आदरी-री माई।
जाव जीव लगे वात, न करू प्रमाद री ॥

२४— जाव जीव जप तप, करस्यू खप आकरी-री माई।
मूल थकी जड काटस्यू, कर्म-विपाक री ॥

२५— म्हारे क्षमा गढ-माय, फोजा रहसी चढी-री माई।
बारे भेदे तप तणी, चोकी खडी ॥

२६— बारे भावना नाल, चढाऊ कांगरे-री माई।
तोड़ू आठे कर्म, सकल कार्य सरे ॥

२७— हाथ जोडी ने अर्ज, कुंवर माय सू करे-री माई।
द्यो अनुमति आदेश, मनोरथ मुझ फले ॥

दोहा—

१— मोह तणी माता कहे सांभल म्हारी बात ।
दुर्लभ संवर फूल ज्यूं तुझ दर्शन साक्षात ॥

२— पान फूल सू जीव तू कोमल केलि समान ।
सबको अति लाडलो बालक लीला मान ॥

ढाल–२१

(तर्ज—रामसिया रे राज सिधारो)

१— देवकी बोले सांभल बेटा
सिखड्यो म्हारी साखी ।
जो माता करि जाणो मौने
तो मत कर खांचा-ताणी ॥

२— रे जाया चारित्र दोहिलो
जोगा छिने विमासी ।
मेरु-कंचन तोलना जैसा
मय-शक्ति न बतासी ॥रे ॥

३— द्वारिका नगरी रो राज ले तू
मस्तक छत्र धराय ।
सफल मनोरथ करि माता रो
हाथी घोड़ा अधिपति थाय ॥रे ॥

४— कृष्ण नरेसर भाखे ऐसे
निसुणो वचन सुखदाई ।
पगे कभी न चाखी सुणावे
ज्यूं दुष्कर संयम भाई ॥रे ॥

५— बालक बाल्य में लेवी दोरी
चालणा खांडा की धार ।
सागर तरवो भुज बल करी ने
ज्यूं दुष्कर संयम – भार ॥रे०॥

६— करणा करे लघु भाई ने
जो तू छोड़े संसार को काम ।
तिण द्वारिका नगरी मा
राज मोले ज्यूं पूरो माता री काम ॥रे ॥

७— रह्यो अबोलो वचन सुणी ने,
तब दीधो माधव राज।
छत्र ने चामर दोनू बीजे,
कीना राज ना साज ॥रे०॥

८— गज-सुकुमार कहे केहनो सारो,
अब वरते आण हमारी।
तो हुकुम माहरो मत उथपो,
थे करो दीक्षा री त्यारी ॥रे०॥

६— श्री भडार माहे सू काढो,
तीन लाख सोनैया लीध।
बे लाख ना ओघा पातरा,
एक लाख नाई ने दीध ॥रे०॥

दोहा—

१— दीक्षा महोच्छव कृष्णजी, कीधो हर्ष अपार।
मझ बाजारे चालिया, आया जिहा करतार ॥

ढाल—२२

(राग—गवरादे बाई आज वसो०)

१— कुवर कहे कर जोड ने,
साभलो कृपानाथो रे।
एतो जनम मरण सू डरपियो,
छोडसू सगली आथो रे ॥
माहरो कुवर वैरागी सयम आदरे ॥

२— इण गहणा तनसू उतारिया,
माता खोला मांहे लीधा रे।
जिम सरप बिछु ने अलगा करे,
तिम कुमर परा नाखी दीधा रे ॥माहरो०॥

३— माता देखी कुमर भणी,
जाग्यो मोह अपारो रे।
इण रे ठलक ठलक आसू पड़े,
जाणे तूट्यो मोत्यां रो हारो रे ॥माहरो०॥

४— मेहला में कुवर दीसे नहीं जी, साले आई-ठाण।
झुरे माता देवकी जी, प्रेम बडो वधाण ॥सोभागी०॥

५— तिणहीज दिन जिनवर भणी जी पूछे ते मुनिराय।
प्रतिमाए जाई रहू जी, जो तुम आज्ञा थाय ॥सोभागी०॥

६— जिम सुख होवे तिम करो जी म करो बहु प्रतिबध।
चाल्यो मुनिवर जिन नमी जी, मेटण भव नो द्वन्द ॥सोभागी०॥

७— गजसुकुमार मसाणमें जी प्रतिमा रह्यो रे सधीर।
मेरु तणी परे नवी डिगे जी, वड-क्षत्री वड-वीर ॥सोभागी०॥

८— आतम ध्यान विचारतो जी, मूकी ममता देह।
जड चेतन भिन्न भिन्न करे जी, लागो शिव सू नेह ॥सोभागी०॥

९— आपण ने भजे आप सू जी, पुद्गल रुचि ने निवार।
आतम-राम रमावतो जी, निज-स्वभाव विचार ॥सोभागी०॥

१०—क्षपक श्रेणि मुनि चढ्यो जी करण अपूरब माय।
ध्यान शुक्ल मुनि ध्यावता जी, परीषह उपजे आय ॥सोभागी०॥

११—सोमल ब्राह्मण आवियोजी, दीठो मुनिवर तेह।
मन में बहु दुख ऊपनोजी, चिंते दुष्टी जेह ॥सोभागी०॥

१२—अति नान्ही मुज बालिकाजी, रूपे देव-कुमार।
पापी इण परणी नहीं जी, मूकी ते निरधार ॥सोभागी०॥

१३—पाखड 'दर्शन 'आदर्योजी, पर दुख जाणे नाय।
हिवे दुख दू इण ने खरोजी, जिम जाणे मन माय ॥सोभागी०॥

१४—चित माहि इम चिंतवेजी, निर्दय विप्र चडाल।
करे परीसो साधनेजी दे मुख सू घणी गाल ॥सोभागी०॥

१५—बलता अंगारा ग्रहीजी, घड़ी माहे ते घाल।
पापी माथे मेलियाजी, पहिला बाधी पाल ॥सोभागी०॥

१६—आप कमाया पापियेजी, तू भोगव फल आज।
मुज पुत्री दुखणी करीजी, तुजने नावी लाज ॥सोभागी०॥

दोहा—

१— दुसह परीषह मुनि सहे, मन में नाणे रीस।
धर्म के बल ध्याने चढे, मुनि ध्यावे जगदीश ॥

दोहे—

१— मात तात वांदण भणी, आवे कृष्ण नरेश ।
दीठो ब्राह्मण डोकरो, सहतो बहु कलेस ॥

२— इट वहे देवल भणी, कद होस्ये पूरी एह ।
दया आणी मन तेहनी, एक उपाडी तेह ॥

३— एक एक ते सहू ग्रही, कृष्ण तणे परिवार ।
मन में ते हर्षित कहे, कृष्ण कियो उपगार ॥

४— करि उपगार शुभ भावसू, चित में धरि आणद ।
वादण आव्या कृष्णजी, जिहां श्री नेम जिणद ॥

ढाल—२५

(राग—पंथीडा तू कंई भूलो रे)

१— त्रण प्रदक्षिणा दे करीजी, वाद्या दीन-दयाल ।
साध सकल वांदियाजी, नहीं दीसे गज-सुकुमाल ॥

२— जगत गुरु ! किहा गयो-गज-सुकुमाल ?
हू प्रणमू जई तेहनेजी, त्रि-करण-शुद्ध त्रि-काल ॥जगत०॥

३— पूछे कृष्ण नरेसरूजी, छाड्यो जिण ससार ।
रमणीय सुहावणो हो, रूप मदन अवतार ॥जगत०॥

४— नेम कहे उत्तर इसोजी, पोहतो ते निर्वाण ।
सबल सखाई तसु मिल्योजी, काम थयो सिध जाण ॥जगत०॥

५— अचेतन थई देवकीजी, कुरडे सा असराल ।
हीन दीन विल विल करेजी, दोहली पेट री झाल ॥जगत०॥

६— मूरछागति धरणी पडयोजी, चेतन पामी जाम ।
बोले कृष्ण दयामणोजी, नेम भणी सिर नाम ॥जगत०॥

७— किण उपसर्ग कियो इसोजी, मुजने कहो जिनराय !
आपू सीख जाई करीजी, जिम मुज रीस बुझाय ॥जगत०॥

८— अमने वादण आवताजी, ब्राह्मण ने जिम आज ।
ते उपगार कियो भलोजी, तेहनो सार्यो काज ॥जगत०॥

४— कराई उदघोषणा ए,
सारे शहर मझार ।
साध ने दुख दियां तणा ए,
ए फल ताजा मार ॥नरेसर०॥

५— फल दीठो ऋषि-घातनो ए,
इम नहीं करे चढाल ।
ते इण कियो पापिये ए,
खिण खिण होय उदाल ॥नरेसर०॥

६— बात सुणी मुनि तणी ए,
बहु यादव - परिवार ।
लेवे सयम भलो ए,
जाणी अथिर ससार ॥नरेसर०॥

७— जे चारित्र लेवा मते ए,
ते लेज्यो इण वार ।
माधव कहे मुख सू इसो ए,
म करो ढील लिगार ॥नरेसर०॥

८— पाछल सहू परिवार नी ए,
हू करिसु संभाल ।
दुखिया रा दुख मेटसू ए,
सुणजो बाल गोपाल ॥नरेसर०॥

९— वचन सुणी श्री कृष्ण नो ए,
हुवा साध अनेक ।
महा महोच्छव हरि करे ए,
आणी हृदय विवेक ॥नरेसर०॥

१०— केई तो श्रावक हुवा ए,
केई समकित - धार ।
नेम जिणेसर तिहां थकी ए,
जनपद कियो विहार ॥नरेसर०॥

११— साता दीजो साधां भणी ए,
तन मन चित्त उल्लास ।

माया मती लपटाओ ए,
ज्यूं पामो सासतो वास ॥नरेसर०॥

१२— सतगुरु संगति पायने ए,
भव कीजो परमाण ।
पर निन्दा ईर्षा तजो ए,
कीजो धर्म – आस्वाद ॥नरेसर०॥

१३— इम थारे परम पावन ए,
कीजो भला जतन ।
बोधा में मन्दे मतो ए
राखीजो समता मन ॥नरेसर०॥

१४— इण अवसर में चेतजो ए,
जन्म सफल कीजो सार ।
गुरु-सेवा कीजो हरख सूं ए,
जिम होसी निस्तार ॥नरेसर०॥

१५— एसा पुरुषां सांभी ओलखने ए,
राखीजो धर्म सूं प्रेम ।
ज्यूं शिव-रमणी वेगी वरे ए,
रिख 'जयमलजी' कहे एम ॥नरेसर०॥

(७)

❀ उदाई राजा ❀

दोहे--

१— चंपा नगर पधारिया, भगवन्त श्री महावीर ।
मोटा जिन-शासन-धणी, शूर वीर ने धीर ॥
२— उदाई राजा भणी, किण विध दीधी दीख ।
एक मना थई साभलो, चित राखी ने ठीक ॥
३ — 'वीत-भय' पाटण नो धणी, 'सिन्धु सोवीर' ज देश ।
आदि देई सोले नृपति, बरते नृप-आदेश ॥
४— तीन से तेसठ नगर नो, धणी उदाई राय ।
महासेण प्रमुख दशे, चामर छत्र धराय ॥

ढाल–१

(*राग—जतनी ए*)

१— जिण रे 'पद्मावती' राणी,
दूजी 'प्रभावती' जाणी ।
'प्रभावती' रो अंग जात,
नाम 'अभीचकुमार' कहात ॥

२— कुंवर रूपवंत सुकुमाल,
शिव भद्र नो वरण संभाल ।
राज चिंता काम काज,
जिण ने पदवी दी युवराज ॥

३— जिण कुंवर सू राजा रे हेज,
वले 'केशी' नाम भाणेज ।
जिण रो पिण रूप वखाण्यो,
ज्ञानी पिण सूत्र में आण्यो ॥

४— उदाई आडम्बर साज,
करे सोले देश नो राज ।
साधा रो सेवक जिन-मत,
जिणे जाण्या छे नव-तत्त (तत्व) ॥

दोहे—

१— 'वीत-भय' पाटण समोसरे, भगवत श्री महावीर ।
भाव सहित सेवा करू, रहूँ जिणा रे तीर ॥

२— चपा नगरी प्रभु हुता, जाण्या उदाई रा भाव ।
सूपी स्थानक पाटला, विहार कियो धर चाव ॥

३— पर उगगारी एहवा, नदी नाला जल कीच ।
'चपा' ने 'वीत-भय' नगर, सातसे कोस नो बीच ॥

४— इम विहार करतां थकां, आया 'मृग-वन' बाग ।
साध सगाते परवर्या, भव जीवा रे भाग ॥

५— आग्या माग ने ऊतर्या, थानक पाटला लीध ।
राजा लोगज साभल्यो, जाणे अमृत पीध ॥

ढाल—३

[राग—अलवेल्या०]

१— त्रिक चउक्कादिक विस्तरी रे लाल,
वीर आया नी वाय रे-भविक जन ।
सहु कोई तत्पथ गया रे लाल,
हिवड़े हरप न माय रे-भविक जन ॥
वीर जिणद समोसर्या रे लाल ॥

२— राय उदाई हाथी चढ्यो रे, लाल,
शोभा करे धर प्रेम रे-भविक जन ।
गहणा भूपण पहरने रे लाल,
चाल्यो कोणिक जेम रे-भविक जन ॥वीर०॥

३— इम लीला करतो थको रे लाल,
आयो 'मृग वन' माय रे-भविक जन ।
जबर अतिशय देखने रे लाल,
गज सू उतर्यो राय रे-भविक जन ॥वीर०॥

४— पच अभिगम साचवी रे,
वांद्या वीर रा पाय रे-भविक जन ।
वाणी सुण धर्म साभली रे,
उठ्यो उगई राय रे-भविक जन ॥वीर०॥

दोहा—

१— कर जोड़ी ने इम कहे मरण्या सुमत्ता वेय।
निर्मल वचन सोने इसा सुखिया अंतर नेय॥
२— राज पुत्र ने बार ने लेसू संयम-भार।
चलता वीर इसड़ी कहे म करो ढील लिगार॥
३— वीर वीर गयवर चढ्यो पाछो नगर में आय।
एकाकी ए पुत्र छे इम चिंते मन मांय॥

ढाल—४

(राग—सामी म्हारा राजा रा गीत)

१— अभीच कुंवर म्हारे ए
इष्ट कंत सु म्हाको विशेष हो।
भविपण भाव सुणो-
कुंवर लागे छ प्यारो
कंवर फूल ज्यू कुसम हमारो हो ॥भविजण॥
२— जो इण ने राज देसू
वीर संगे संयम लेसू हो भविजण।
ओ कम आसी राज रे मांय
देश मुलक में गृधित थाय हो ॥भविजण॥
३— रखे म्हाको दुरगति जाय
इम चिंते उदाई राय हो भविजण।
सिरे नहीं मुझ राज देणो
वीर संगे चारित्र लेणो हो ॥भविजण॥
४— सो निज म्हारो 'कसी' भाणज
राज देणो म करणी जेज हो भविजण।
इम चिंत सभा में आय
कसी ने लियो बुलाय हो ॥भविजण॥
५— तिण सु घर कर हेत
राज थाप्यो म करि जेज हो भविजण।

प्रगट कहूँ नहीं छानो,
म्हारी परे इण ने मानो, हो ॥भवियण०॥

६— बलतो बोले 'केशी' राय,
मामाजी थारे स्यूं चाय, हो भवियण० ।
म्हारो वचन करो परमाणो,
तीन लाख सोनैया आणो, हो ॥भवियण०॥

७— कु-तिया-वण ने दोय लाख नाणो,
दे ओघा पातरा आणो हो भवियण ।
नाई ने नाणो एक लाख,
केश उतारो आगुल चार राख, हो ॥भवियण०॥

दोहे—

१— इम साभल हर्षित हुवो, 'केशी' नामे राय ।
सिंहासण बेसाय ने, सोवन कलश ढलाय ॥

२— इत्यादिक जलूस कर, कडा मोती ने हार ।
गहणा विध विध भात रा, कल्पवृक्ष-दीदार ॥

३— हजार पुरुष सु ऊपड़े, शिविका बैठा आय ।
दीक्षा रो महोच्छव घणो, 'जमाली' जिम थाय ॥

ढाल—५

[राग—गवरॉदे बाई आज वसोनी मारे०]

१— नवर राणी पद्मावती,
लीधा मस्तक-केशो रे ।
पिवरे विजोगे आंसू भरे,
राणी कीधो दुख विशेषो रे ॥

२— राजा सोले देसा रो माहिवो,
हिवे बिछड़ता नी वेला रे ।
एतो बेठो शीविका उपरे,
सहू कुटुम्ब न्याती भेला रे ॥राजा०॥

३— लेई ओघा ने पातरा,
बैठी डावे कानी धाय माता रे ।

दोहे—

१— जनम हुवो अणगार नो, भणिया अंग इग्यार।
आज्ञा ले श्री वीर नी, एकला कियो विहार॥
२— अरस विरस खाता थका, डील में उपनो रोग।
'वीत-भय' पाटण आवियो, जाण्यो राजा लोग॥
३— 'केशी' राजा चिंतवे, भलो न आयो एह।
उमराव सहू मिल जावसी, तो मुझ ने देशी छेह॥
४— हेलो पडायो शहर में, सुण जो सगला लोय।
उदाई ने रैण ने थानक म दीजो कोय॥

ढाल—६

[राग— केल करावे हाथ]

१— राजा ढढोरो फेरियो,
प्रगट नाम म्हारो लीजो रे।
साध उदाई आयो शहर में,
थानक कोई म दीजो रे॥
जोइजो रे स्वारथ ना सगा।
२— जो इण ने थानक दियो,
तो घर लेसू लूटो रे।
कुरब कायदो न गिणू
दुष्ट राजा इसो झूठो रे॥जोइजो०॥
३— एह हेलो लोक सांभली,
थानक न दीधो कोई रे।
इतरा में एक नगर में,
कुंभार तत्पर होई रे॥जोइजो०॥
४— सोले देशा री साहिबो,
मैं खाधो लूण ने पाणी रे।
थानक री दी आगन्या,
मन में करुणा आणी रे॥जोइजो०॥
५— राजा बात ज सांभली,
ओ रह्यो इहा नहीं रूडो रे।
जहरादिक ना जोग सू,
पाडू एहने पूरो रे॥जोइजो०॥

८— प्रभावती मर हुई देवता,
नगर ने आपदा दीधी रे धिग० ।
कुंभकार घर वरज ने
पट्टण दट्टण कीधी रे ॥धिग०॥

९— पापी एक लार यूं,
घणा ज मार्या जोयो रे धिग० ।
सामुदानिक कर्म जिम बांधिया
जिसा उदय हुवे आयो रे ॥धिग०॥

दोहे—

१— कुंवर 'अभीच' तिण अवसरे, आधी रात रे मांय ।
अध्यवसाय उपना इसा, हूं उदाई रो पुत्र थाय ॥
२— एकाकी हुँ हीज हुतो, प्रभावती-अंग जात ।
खोड़ नहीं काई अंग में, पिण नहीं मान्यो तात ॥
३— मोने परोहिज मूक ने दियो भाणेज ने राज ।
वीर समीपे संयम लियो, भलो न कीधी काज ॥
४— मानसिक दुख वेदतो, 'केशी' हुवो ज राय ।
आण दाण इणरी फिरे, मो सूं सुणी न जाय ॥
५— अंतेउर परिवार ले भंडोपकरण सभाय ।
'वीतभय' सेती निकली, 'चंपा' नगरी जाय ॥
६— 'श्रेणिक' राय नो दीकरो हुँतो मास्याई भाय ।
'कोणिक' चम्पा नो धणी, रह्यो समीपे जाय ॥

ढाल-८

(राग—दलाली चित्त करो)

१— कुंवर महलां सूं उतर्यो,
विलसे संसार ना भोगो रे ।
पुण्य जोग आवी मिल्यो,
साध तणो संजोगो रे ।
धन धन वीर जिणंदजी ॥

४— 'रतन-प्रभा' रे पाखती रे,
भवन-पत्यों रा भवण कहाय रे।
एक पल्य ने आउखे ऊपनो रे,
असुर-कुमारा मा जाय रे ॥जीव०॥

५— नर पुन्यवत हुसी धर्म पायने रे,
लेसी सजम -भार रे।
केवल - ज्ञान उपायने रे,
जासी मुगत मझार रे ॥जीव०॥

६— सूत्र 'भगवती' थी कह्यो रे,
किंक परपरा जोय रे।
अधिका ओछा नो मिच्छामि दुक्कड रे,
रिख 'जयमलजी' कहे मोय रे ॥

———

(८)

❀ मेघ-कुमार ❀

दोहे--

१— गौतम गणधर गुणनिलो, लब्धि तणो भडार ।
चवदे सो बावन सहू, नमता जय जय कार ॥
२— सूत्र ज्ञाता में चालिया, 'मेघ' ऋषि ना भाव ।
सक्षेपे करी हू कहूँ, साभल जो धरि चाव ॥

ढाल—१

१— राजगृही नगरी अति सुन्दर,
माथा रा तिलक समान री माई ।
एक कोड़ ने छासठ लाख,
गाव तणो अनुमान री माई ॥
पुण्य तणा फल मीठा जाणो ॥

२— राज करे तिहां 'श्रेणिक' राजा
मंत्री 'अभय' कुमार री माई।
महाराजा रे 'धारिणी' राणी
सार्या ने हितकार री माई ।।पुण्य०।।

३— धारणी-श्रेणिक रो अंग-जात
नामे मेघ-कुमार री माई।
पुलिन्दीत बहोत्तर कला सिखियो
वाणी अमृत सार री माई ।।पुण्य ।।

४— तिण नगरी में आवियो पहलो
तिण री इसो अनुमान री माई।
चवदे तो चौमासा किया
भगवंत श्री वर्द्धमान री माई ।।पुण्य ।।

५— पूरब भव गजराज करो
दान दियो तिण वीर री माई।
विपुल पुण्याई इसड़ी बांधी
पायी 'गोभद्र' सेठ घर सीर री माई ।।पुण्य ।।

६— 'जंबू' जैसा इम पाड़ा में हुआ
बड़े कोड़ी-धज घर बास री माई।
सहस पैंसठ में बाजा इग्यारे
पचास छत्तीस घर इण मांय री माई ।।पुण्य ।।

७— मंदिर मालिया जाली झरोखा
सोहे पांच प्रकार री माई।
चौरासी बड़े चोहट्टा सोहे,
परतक देवलोक सार री माई ।।पुण्य ।।

दोहे—

१— 'मेघ' कुंवर जोबन आया परणी आठे नार।
महल मांहे सुख भोगवे मानव मांहे कोंकार ।।
२— गाम नगरपुर विहरता भगवन्त श्री महावीर।
हारग्यो आय हे प्राणिया पावे भव जल तीर ।।

ढाल-२

(राग—रसिया के गीत की)

१— वीर पधार्या हो मगध सुदेश में,
करता धर्म उद्योत-जिणेसर।
मेला जीव थया है मिथ्यात में,
ज्या री उतारता छोत-जिणेसर ॥वीर०॥

२— चोतीस अतिशय हो करने दीता,
वाणी रा गुण पेंतीस-जिणेसर।
एक सहस्र ने आठ लक्षण-धणी,
जीत्या राग ने रीस-जिणेसर ॥वीर०॥

३— 'राजगृही' नगरी हो अति रलियामणी,
'गुणशिल' नामे बाग-जिणेसर।
विचरता वीर जिणन्द समोसर्या,
भव जीवा रे भाग-जिणेसर ॥वीर०॥

४— 'श्रेणिक' सुणियो हो वीर पधारिया,
हिवड़े हर्षित थाय-जिणेसर।
करी सजाई ने नृप वान्दण चाल्यो,
सेवा करे चित लाय-जिणेसर ॥वीर०॥

५— नर-नारी ने हो हरस हुवो घणो,
वीर वांदण रो कोड़-जिणेसर।
नगर विचाले हो होयने नीकल्या,
चाल्या होडा - होड-जिणेसर ॥वीर०॥

६— च्यारे जातरा देवी ने देवता,
वले नर-नारी साथ-जिणेसर।
लुल लुल ने हो प्रभु ने लटका करे,
जोड़े दोनू हाथ-जिणेसर ॥वीर०॥

दोहा—

१— षड ऋतु ना सुख भोगवे, मेहला में मेघ कुमार।
कामण सू लीनो रहे, आगे सुणो अधिकार ॥

८— दरसण दीठो श्री वीर नो,
पुण्यवत हर्षित थाय रे।
त्रण प्रदक्षिणा देई करी,
सनमुख बैठो छे आय रे ॥कुंवर०॥

६— भगवत देवे हो देशना,
ते सुणजो धरि प्रेम रे।
ए जीव लोह जिम जाणई,
पिण किण विध होवे छे हेम रे ॥कुंवर०॥

दोहा—

१— आगार ने अणगार नो, धर्म ना दोय प्रकार।
चउ-विध धर्म आराधता, चउ-गति पामे पार ॥

ढाल-४

(राग—नवकार मत्र नो ध्यान धरो)

१— जीवड़ला री आद नहीं काई,
पुन रे जोग नर-भव पाई।
भमियो जीव आठ करम बाधो,
इम जाणी दया धरम आराधो ॥

२— पाम्यो जीव आरज खेतो,
उत्तम घर जनम लह्यो हेतो।
तोही सेवे पाच परमादो ॥इम०॥

३— आऊखा नो सुणियो मानो,
जिम पाको पीपल-पानो।
पडता वार नहीं जादो ॥इम०॥

४— इसड़ो छे ओछो आयू,
ज्यू ओस खिरे वागे वायू।
तिण में रोग सोग बहु असमाधो ॥इम०॥

५— पाच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय गयो,
सख्यात असख्यात काल रयो।
हिवे निगोद रो सुणो सवादो ॥इम०॥

दोहे—

१— वाणी सुण ने परिषग, आई जिण दिश जाय ।
'श्रेणिक' नामे नरपति, वादी वीर ना पाय ॥

२— 'मेघ' कुमर तिण अवसरे, जोड़ी दोनू हाथ ।
सर्ध्या रूच्या प्रतीतिया, दीक्षा लेसू जग-नाथ ॥

३— वलता वीर इसी कहे, सुणजो 'मेघ' कुमार ।
जो थारो मन वैराग सू, तो म करो जेज लिगार ॥

४— प्रभु प्रणमी घर आयने, वदे मात ना पाय ।
हाथ जोड़ ने इम कहे, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल—५

(राग—सोजत रो सिरदार दामां रो लोभी)

१— वाणी श्री जिनराज तणी, काने पड़ी रे माई ।
आज अदर री आख जामण ! म्हारी ऊघड़ी ॥

२— वलती बोले माय, हूं वारी जाऊ तुम तणी ।
रे जाया ! सुणी जिणद नी वाण, पुन्याई थारी घणी ॥

३— पुत्र कहे माय ! वाण, साची मैं सरदही, री माई ।
लागी मीठी जेम, दूध शाकर सही ॥

४— दीजे अनुमत मोय, दीक्षा लेसू सही री माई ।
हिवे आज्ञा री जेज, करवी जुगती नहीं ॥

५— वचन अपूरब एह, पुत्र ना साभली—री माई ।
मूर्छागत झट थाय, माता धरणी ढली ॥

६— मोह तणे वश आज, सूरती चलती रही रे जाया ।
शीतल पवन घाल माता बैठी थई ॥

७— पुत्र ने सामी माय, रही छे जोवती, रे जाया !
मोहतणे वश वेण बोले माता रोवती ॥

८— साधपणो नहीं सहल, जाया ! जामण कहे । रे जाया !
तू नानड़ियो वाल परीषह किम सहे ॥

९— त्रिविधे त्रिविधे करी पंच महाव्रत पालना रे जाया।
नान्हा मोटा दोष अहोनिश टालना ॥

१०— दोष बेयालिस टाल करणी रे जाया! गोचरी रे।
समजो मंदरा जम जिता मोने लोच री ॥

११— कनक कचोला छांड लेणी रे काष्ठ पातरी रे जाया!
आय जीव अग बाट नहीं आवणी पाछली ॥

१२— न्हावे धोवे नांहि, मुले रागे मुखमणि रे जाया!
मेला पेहरे वेश निज जैन रा साधी ॥

१३— ए अवसर मे हुलस, माताजी थे कयो, गी माई।
सूरा ने छे सहल कुंवर उत्तर दियो ॥

१४— जनम मरण री बात सहू विलखण करी री माई।
सो अनुभव आयेरा, दीसा सबू सही ॥

१५— पलटे रंग पतंग जामण! जाणो इसो री माइ।
तिण ऊपर विश्वास जामण! करणो किसो ॥

दोहे—

१— माता सुण सू इम कहे बाल सुर्यो मुख पूत।
कोइ कहे परतावियो धर्म मांझे घर-सूत ॥

२— एमसरपी सामा जोइने ए माता ना वेण।
मोह राग जाळे कवा झुरे भर भर नेण ॥

३— मन मोहन रीसया छळो जाहो जीव पाइ।
दिन माता पड़िया पछे कीजो मन-विलेह ॥

४— वचन सुणी माता तणा बोले मेघ-कुमार।
थिर सुख संसार ना विलसंता नहीं वार ॥

ढाल–६

(राग—धन धन सती चंदनबाला)

१— कहे माता थे कहे एमो
मोने धर्म तणो लागे प्रेमो।
अब तो ढेल नहीं कीजे
मोने आज आज्ञा जल्दी दीजे ॥

२— संयम दुख रो स्यूं कहेणो,
छेदन भेदन घेदन सहेणो।
नरक तिर्यञ्च दुख सह्या खीजे ।।मोने०।।

३— हूँ तो जामण मरण थकी डरियो,
वीर वचन छे रस थी भरियो।
तन धन जोवन आऊ छीजे ।।मोने०।।

४— संसार ना सुख सहू काचा,
इण लोक-अर्थी जाणे साचा।
भोग विषय में रह्या कलीजे ।।मोने०।।

५— मैं तो जाणी ए काची माया,
विललावे जिम बादल छाया।
ऐसी जाणी कहो कुण रीझे ।।मोने०।।

६— सरव संजोग मिलियो आई,
स्वारथ नी जाणो सगाई।
इसो जाणी ने संजम लीजे ।।मोने०।।

७— बार बार कहूं हे जननी!
अनुमत री ढील नहीं करणी।
जिम पेट में पड़ियां पतीजे ।।मोने०।।

दोहे—

१— वचन सुणी सुत ना इसा, बोले माणी एम।
मोह छकी माता कहे, ते सुणजो धरि प्रेम।।
२— मरतां ने, जाता थका, राखी न सके कोय।
पिण जो भापण काढियो, तो मन हीमो होय।।

ढाल—७

[राग—पिताजी बोलो नी एकण बार]

१— धीरज जीव धरे नहींजी,
उलट्यो विरह अथाह।
छाती लागी फाटवाजी,
नयणे नीर प्रवाह—रे जाया।
तो विन घडी रे छ मास।।

१०— वच्छ ! तू भोजन ने समे रे,
हिवड़े वेमे सी आय।
जो माता करि लेखवो रे,
तो तूं छोडि म जाय ॥रे जा० तो०॥

११— शाल तणी पर शालस्ये रे,
ए मुज आही-ठाण।
प्राण हुस्ये हिवे पाहुणाजी,
भावे जाण म जाण ॥रे जा० तो०॥

१२— संयम छे वच्छ ! दोहिलो रे,
जैसी खांडा नी रे धार।
पाय उबराणे चालनो रे,
लेवो शुद्ध आहार ॥रे जा० तो०॥

१३— सुवचन कुवचन लोक ना रे
खमणा पड़सी रे कुमार !।
तू राजकुवर सुकुमार छे रे,
देह री न करणी सार ॥रे जा० तो०॥

१४— उत्तर परोत्तर किया घणा रे,
बाप बेटा ने माय।
सूत्र में विस्तार छे रे,
लीजो चतुर लगाय ॥रे जा० तो०॥

१५— हितसू दीधी आगन्याजी,
मात-पिता चित लाय।
राण्या बोले किण विधेजी,
ते सुणजो चित लाय ॥रे जा० तो०॥

दोहे—

१— सासूजी थाका सही, हिव आंगण नी बार।
हाथ जोड़ राण्यां सहू, बोले वचन विचार ॥

२— कहिवो उवरस्ये जिकु, जाणा छा निरधार।
पिण इण अवसर नारी ने, कहिवा नो व्यवहार ॥

ढाल—८

[1] [राग—रामेसर रामरा हो चोलोनी]

१— सुंदर आठे सुकमली कर्मी महलां रे मांय ।
इम उच्चारे आकर्या मिरगो म्हवडा माइ ॥ २
रहो रहो बालहा विलखो क्यूं इम बार ॥

२— सुखा तो सगला थया मुख बोलो मीठा बोल ।
कांई ठेलो पगसूं परी बाप कहो मन खोल ॥रहो ॥

३— सुंदर मंदिर मालियां सुकमली मेह-विलुस । २
पूरे हाथे पूजियो परमेश्वर सत - शुद्ध ॥रहो ॥

४— मागोत्तर सुख कारणे छती रिध छोडो आवास ।
हाथ छोडी कुण करे पेट माहिली आस ॥रहो ॥

५— कमलकी-परिमल पास मे मोगी भ्रमर माह[1] ।
सुख विलसो मोसु वालहा[1] छोडे योवन-माह ॥रहो ॥

६— कुंवर कहे श्री वीर की मैं वाणी सुणी कान ।
तन मन चंचल आपणो जैसो पीपल-पान ॥
रहो रहो कामणी म्हने करणो संयम-भार ॥

७— अल्प सुख संसार मा दुःख घणो काम-भोग ।
कडवा फल किंपाक सा बहुली रोग ने सोग ॥रहो ॥

८— पोखे मंस स्वारथ लगे, रुधिर अबला मो रंग ।
अपार दिहाडा चढ़त है, मंस कसूमा मो रंग ॥रहो०॥

दोहा—

१— ए सुण वाणी कामणी जेस्यां संयम भार ।
वचन सुणी प्रीतम तणा पड़े बोले आठे नार ॥

ढाल—९

[राग—म्हाने प्रवल मृग चंदनी रे]

१— सुंदर आठे बीनवे रे
कांइ अवगुण म्हो में दीठ रे ।
कही ने दरसावो कंथा ! मा मही रे
बोलो वाणी मीठ रे ॥

२— कामण कत ने वीनवे रे,
साभलो नणदी रा वीर रे।
पलक घडी देखा नही रे,
तो व्यापे बहुली पीड रे ॥कामण०॥

३— ए मदिर मालिया रे
ए सुकमाली सेज रे।
कु कुम वरणी मो सुंदरी रे,
मति मूको अबलासू हेज रे ॥कामण०॥

४— कह्यो कदे न थारो लोपियो रे,
जोड खडी रहती हाथ रे।
था करडी नजर कदे न जोवता रे,
इसड़ी कदे न काढ़ी बात रे ॥कामण०॥

५— थे तो दीक्षा ना वाल्हा उठिया रे,
छोडी म्हासू प्यार रे।
प्राण-वल्लभ ! प्रीतम ! तो विना रे,
मो अबला ने कोण आधार रे॥कामण०॥

६— जो हेज थारो, मो सू घणो रे,
आंसू नाखो केम रे।
थेई दीक्षा जो आदरो रे,
तो जाणू साचो थारो प्रेम रे ॥कामण०॥

७— ए वचन सुण बोली नहीं रे,
तब जाण्यो मेघ कुमार रे।
आप स्वारथ री कामणी रे,
विण स्वारथ कुण होवे लार रे ॥कामण०॥

दोहे—

१— कुंवर कहे सुन्दर सुणो, अमे लेवां छां दीख।
पाछे रूडा चालिजो, एह हमारी सीख॥
२— सासुजी रा हुकम में, रहिजो कुल-आचार।
पीहर सासरे तुम सही, लीजो शोभा सार॥
३— दीक्षा महोच्छव हर्ष सू, करे श्रेणिक महाराय।
आठ राण्या रो लाडलो, धन धन मेघ-कुमार॥

७— बाई कोई परणी जावे सासरे रे,
मभनो गावे ससार नो माग रे।
ज्यू काचे हिये रा मानव झूरे घणा रे,
नहीं धर्म उपर तेहनो राग रे ॥जो०॥

८— एक एक बोले इण परे रे,
धन धन इण कु वर तणो अवतार रे।
मूकी इण काया माया कारमी रे,
आप तिरमी ने ओरां ने तार रे ॥जो०॥

९— इण राणी इद्राणी सम छोड दी रे
वले भाई सजन मायने बाप रे।
नरक दुखां सूं इण बीहते रे,
जिम काचली छोडे सांप रे ॥जो०॥

१०— कोइक भुरखी नाखी इम कहे रे,
बोले ज्यू मनरी आवे दाय रे।
ज्ञानी तो जाणे गेला सारखा रे,
ए खूत माखी ज्यू खेल मायरे ॥जो०॥

११— चारण भाट बोले विरुदावली रे,
जय जय बोले शब्द कर घोष रे।
कर्म आठे ही वेरी जीतने रे,
वेगी थे लीजो अविचल मोख रे ॥जो०॥

दोहे—

१— नगर वीच ही नीकल्या, गया वीर जिणद रे पास ।
वदणा करी कर जोड़ ने, कहे तारो भवजल त्रास ॥
२— मू डे सोली चढ़ रही, जाणे बरत्या मगल-माल ।
गहणा उतारे डील थी, हुवो वैराग में लाल ॥

ढाल-११

(राग—सहेल्यां ए आवो मोरियो)

१— कु वरजी गहणा उतारिया,
माता खोला माहे लीधा रे।

दोहा—

१— धारिणी घर में आय ने, झुरे आठे ही नार ।
मेहला में कुवर दीसे नहीं, रोवे वारवार ॥

ढाल-१२

(राग—संयम थी सुख)

१— मेघ-कुवर सयम लियो, छोड्यो माया जाल-मुनीसर ।
साधा री रीत हुती जिका, साचवे कालो-काल-मुनीसर ॥
जोयजो गति कर्मा तणी ॥

२— सथारो कियो सांकरो, 'मेघ' रिखि तिणवार-मुनीसर ।
साध घणा प्रभुजी खने, तिण सू आयो छेहलो संथार ॥मु०जो०॥

३— विनय मार्ग जिनधर्म छे, राव रक रो कारण नहीं कोई-मुनी० ।
आपसूं पहलां नीकल्या, ते मुनिवर वडा होई ॥मुनी०-जो० ॥

४— वैरागे राज छोड ने, हुवो नव-दीक्षित अणगार-मुनीसर ।
उण दिनरो यो नीकल्यो, तिण सू चित्त चले संयम वार ॥मु०जो०॥

दोहा—

१— सिख हुवो श्री वीर नो, आणी वैराग भाव ।
कर्मां रे वश साधुजी, हमे करे पिछताव ॥

ढाल-१३

(राग—मान न कीजे रे मानवी)

१— कोई परठन जावेजी मातरो,
रात तणे समय मायजी ।
किण री ठोकर लागवे,
कोई ऊपर पड़ी जायजी ॥
मेघ रिखी मन चिंतवे ॥

२— कोई लेवा जावेजी वाचणी,
पग तले आगुली आयजी ।
पगनी रज पड साथ रे,
अरति आई मन मायजी ॥मेघ०॥

ढाल-१४

(राग—काँची कलियाँ)

१— कोई चांपे साथरो रे हा, कोई संघटे अणगार ।
मेघ मुनीमरू ॥
कोइक छाटे रेणुका रे हा, चिंतवे मेघ कुमार मेघ० ॥

२— कोइक ढाले मातरो रे हा, कोइक अग ठपग मेघ० ।
खेद पामे तिण अवसरे हा, चारित्र सू मन भग मेघ० ॥

३— राज ने रिध रमणी तजी रे हा, स्वरूप वहुला दाम मेघ० ।
परवश पड़ियो आयने रे हा, किम सुधरसी काम मेघ० ॥

४— कुटुम्ब न्यातिला माहरा रे हां, धरता मोसूं प्रीत मेघ० ।
खमा खमा करता सदा रे हा, ते पाछे रही रीत मेघ० ॥

५— किहा प्रमदानी प्रीतड़ी रे हां, किहा साधु नी रीत मेघ० ।
किहां मदिर ने मालिया रे हा किहा सुन्दर ना गीत मेघ० ॥

६— किहा फूल किहां कांकरा रे हां किहां चदन किहा लोच मेघ० ।
पूरव भोग सभार तो रे हा, मेघ करे मन सोच मेघ० ॥

७— मेघ मुनि कोपे चढ्योरे हा, चिंतवे मन में एम मेघ० ।
लट पट करी दीक्षा दीवी रे हां, अबे करे छे केम मेघ० ॥

८— परीसा नीतारे घणा रे हा, आग्या कायर भाव मेघ० ।
जोग भागो सयम थकी रे हा, सीदावे मन मांय मेघ० ॥

९— अजे काई बिगड्यो नहीं रे हा, पहली रात विचार मेघ० ।
मन मान्यो करू माहरो रे हा, एतो छे व्यवहार मेघ० ॥

१०—मैं काई न लीधो वीर नों रे हा मैं नवि खाधो आहार मेघ० ।
झोली पातरा सूंपने रे हा, जास्यू राज मझार मेघ० ॥

दोहे—

१— चारित्र थी चित्त चल गयो, मन में थयो सताप ।
घरे जावण रो मन हुवो, इसो उगटियो पाप ॥

२— चदन अगर ने गधवती, लेप लगाऊ अंग ।
क्रीडा करू ससार में, नाटक नव नव रग ॥

३— लोक व्यवहार राखण भणी, वीर समीपे जाय ।
पूछण री विरिया हुई, तरे लाज आई मन माय ॥

ढाल–१५

(राग—कोयल पर्वत धूंधलो रे)

१— प्रभात थये ऊगमते रे

मेघ आयो वीर जिणेसर रे पास हो-मुनीसर।

पडि-कमणो विध सहित कियो रे,

मन कयो थिर ध्यान हो-मुनीसर।

वीर जिणंद बुलाविया रे-मेघ।

२— श्रेणिक नो तू दीकरो रे,

मेघ! धारिणी माता नाम हो-मुनीसर।

संयम थी मन डगमग्यो रे,

मेघ! थारे जास्यूं घरे निज गांव हो मुनी॰ ॥वीर॰॥

३— संयम-सुखां सूं बीहनो रे

मेघ! ते आदरी कायर-भाव हो-मुनीसर।

मन में चिंताओ अति करी रे,

मेघ! ते जाणा नहीं तिण रो साव हो-मुनी ॥वीर॰॥

४— छोडी थे माया ममता कारमी रे,

मेघ! बडो पोतो सती महान हो-मुनीसर।

भी तो दुःख तू सयूं गयो रे मेघ!

पूरव भव संभाल हो-मुनीसर। ॥वीर॥

५— तिहां थी मरने उपनो रे मेघ!

श्रेणिक - घर अवतार हो-मुनीसर!

पहिले भव हाथी हुतो रे मेघ!

हथणियां रो भरतार हो-मुनीसर ॥वीर॥

६— नरक तिर्यंच में तू भम्या रे मेघ!

सह्या दुःख अघोर हो-मुनीसर।

ममता आगत अपनो रे मेघ!

बाकी न रही कोई ठौर हो-मुनीसर ॥वीर॰॥

७— भव भमंतां समता वरी रे मेघ!

आयो घर अवतार हो-मुनीसर।

नर-भव चिंतामणि सारिखा रे मेघ!

मती जनम यदि हार हो-मुनीसर ॥वीर॥

८— एतो दुख जाणो मती रे मेघ !
रहे तूं मन सूं सधीर हो—मुनीसर ।
ससार समुद्र तीरे पामियो रे मेघ !
जेज म करि बैठो तीर हो—मुनीसर ॥वीर०॥

६— [सातमो सुख चक्रवर्ती तणो रे मेघ !
आठमो देव-विमाण हो—मुनीसर ।
नवमो सुख साधां तणा रे मेघ !
दशमो सुख निर्वाण हो—मुनीसर] ॥वीर०॥

१०— पूर्व भव दुख साभल्यो रे मेघ !
हाथी रो भव जाण हो—मुनीसर ।
पूरव-भव सभारतो रे मेघ !
उपनों जाति-स्मरण ज्ञान हो मुनी० ॥वीर०॥

११— याद आयो भव पाछलो रे मेघ !
चमक्यो चित्त मझार हो—मुनीसर ।
जनम मरण सू थर हर्यो रे मेघ !
पाछो हुवो सुरति सभार हो—मुनीसर ॥वीर०॥

दोहे—

१— भागो थो पिण बावड्यो, वीर लियो समझाय ।
ज्यू खुरड़ री खाधी बाजरी, मेह हुवां धूंठो बधाय ॥

२— पाके खेत रा मानवी, करे घणा जतन ।
ज्यू 'मेघ' मुनि सयम तणा, करे कोड जतन ॥

३— सयम अमोलक ते कह्यो, भांजे भव भव रा दुःख ।
शिव-रमणी वेगी वरे, जावे सगला दुख ॥

४— कारमा खेत ससार ना, किण विध जावे भूक ।
मेह तणी कसर रहे, तो ऊभा जावे सूक ॥

५— पड़तो थो जिम टापरो, दीधी थूणी लगाय ।
तिम 'मेघ' सयम थी डिग्यो, पिण वीर दिधो सहाय ॥

८— जठे धरम ज्ञानी रो पासी,
वठे आठे ही करम खपासी।
जठे केवल ज्ञान उपासी,
एतो मुगति नगर में जासी॥

६— जनम मरण रो करसी अंत,
लेसी सासता सुख अनन्त।
सूत्र ज्ञाता तणे अनुसार,
रिख 'जयमलजी' कह्यो विस्तार॥

---

(६)

❀ कार्तिक सेठ ❀

दोहे--

१— अरिहंत सिध साधु सरब, ए पाचू पद नवकार।
इणांनि जेहने आसता, ज्यां रो खेवो पार॥
२— प्रथम देवलोक ने विषे, शक्र इन्द्र नो भाव।
किण कारण करि ऊपनो, ते सुणजो धरि चाव॥
३— इणहिज जंबूद्वीप में, भरत क्षेत्र मांय।
'हथणापुर' नामे नगर, 'कार्तिक' सेठ कहाय॥
४— विभो जेहने अति घणो, धन धीणा ना थाट।
करे व्यापार गुमासता, एक हजार ने आठ॥

ढाल-१

(राग—नींदड ली नी)

१— 'मुनि-सुव्रत' प्रभु पधारिया,
साधा रे परिवारोजी।
'हथणापुर' ना बाग में,
आय उतरिया सुखकारोजी॥

१०— इच्छा-परिमाण व्रत पाचमो,
परिग्रहो इम जाणोजी ।
छट्ठो दिस तणो कियो,
जाव बारह व्रत प्रमाणोजी ॥जग०॥

११—आनंद नी परे जाण जो,
व्रता एहीज रीतोजी ।
दृढ-धर्मी श्रावक हुवो,
एक मुगत जावण सू प्रीतोजी ॥जग०॥

दोहे—

१— जीव अजीव पुन्य पाप ही, आस्रव सवर धार ।
निरजरा बंध मोक्ष रो, जाण पणो छे सार ॥

२— नव तत्व जाणे निर्मला, बीजाई बोल ने चाल ।
डिगायो रे डिगे नहीं, हुवो समकित में लाल ॥

ढाल—२

(राग—अलबेल्या नी देशी)

१— आज पछे नहिं वांदिवा रे लाल,
जिनधर्म के बार-सुविचारी रे ।
तीन से तेपठ पाखंडिया रे लाल,
नहीं करू पूजा सत्कार सुवीचारी रे ॥

२— कार्तिक नो समकित भलो रे लाल,
समकित सू सुधरे काज-सुवि० ।
वैमानिक सुर पद लहे रे लाल,
पामे शिवपुर राज सुविचारी रे ॥का०॥

३— अन्य तीर्थी ना देवता रे लाल,
ब्रह्मा विष्णु महेश-सुविचारी रे ।
ते वांदू पूजू नहीं रे लाल,
जाण मुगति नी रेस सुविचारी रे ॥का०॥

४— अरिहंत ना साधु हुता रे लाल,
मिल्या निन्हव में जाय-सुविचारी रे ।

तेहने विष वांदू नहीं रे लाल
विष ही ने हिव जाय सुविचारी रे ॥का०॥

५— पडिमा वहराई नहीं रे लाल
एक वार वांदु वार सुविचारी रे।
नहीं वहराई माहरा हाथ सू रे लाल
असणादिक आहार सुविचारी रे ॥का ॥

६— घर महि बेठो जितरे रे लाल
सु झंझ लो आगार सुविचारी रे।
राजा को हुकम करे रे लाल
गण समुदाये कह्यो सार सुविचारी रे ॥का०॥

७— अथवा देव पीतर कहे रे लाल
कोइ बलवंत आय सुविचारी रे।
कोई गुरु-जन मीटको रे लाल
भागा भखे कोई भाव सुविचारी रे ॥का ॥

८— अथवा मह बंध करे रे लाल
ऊपर पड़ जाय काल सुविचारी रे।
तो देवा मांने मांपको र लाल
अटवी मांही रसाल सुविचारी रे ॥का ॥

९— मोक्ष मारग नी सरा करे रे लाल
चाहे सूत्र सुगंध सुविचारी रे।
ते कल्पे मुझ वांदवा रे लाल
सुसाधु निर्ग्रन्थ सुविचारी रे ॥का०॥

१०— वर्षा ने वहराबू म्हारा हाथ सू रे लाल
असणादिक आहार सुविचारी रे।
वस्त्र पात्र कांबली रे लाल
औषध भेषज सार सुविचारी रे ॥का ॥

११— मरजादा वांदीस बोल नी रे लाल
पमरे कर्मादान सुविचारी रे।
अनरथ-दंड निवारियो रे लाल
पोसा पडिक्कमणा बहुमान सुवि ॥का०॥

दोहा—

१— गैरिक परिव्राजक तिहा, आयो 'हथिणापुर' मांय ।
तपस्या कष्ट घणो करे, नर-नारी बहु जाय ॥

२— नगर लोग राजी घणा, तापस कष्टज देख ।
बीजा नर-नारी जिके, करेज भक्ति विशेष ॥

३— तापस ने वादे घणा, लुलि लुलि लागे पाय ।
अवर लोग बहुला गया, पिण कार्तिक सेठ न जाय ॥

४— नामी जादा थो नगर में, तापस पाम्यो धेख ।
मोने वन्दन ना करे, सो फल लेसी देख ॥

ढाल—२

(राग—पुण्य सदा फले)

१— तापस मच्छर बहु कियो रे,
राजा नमे जो मोय ।
सेठ मुजने नहि नम्यो रे,
इचरज मोटो होय रे ॥

२— धन जिनधर्म ने,
धर्म थी सुध होवे काज रे ।
सुख साता हुवे,
पर-भवे अविचल राज रे ॥ध०॥

३— निहुत जिमावे बहु जणा रे,
करे वीनती सराय ।
राजा री भगत ज देखने रे,
तापस बोल्यो वाय रे ॥धन०॥

४— सेठ जिमावे मो भणी,
तो हूं जीमसू हे राय ॥
राजाजी बुलाय ने,
कहे भगत करो जिमाय रे ॥धन०॥

५— कार्तिक सेठ मन मांहे चिंतवे रे,
राजा वचन कहे एम ।

१३—कठिन परीषह सेठ सह्यो,
जाणे अजयणा थाय।
रखे थाल हेठो पड़े रे,
तो नाना जीव मार्या जाय रे ॥धन०॥

१४— तपसी मन हर्षित हुवो रे
बलता मोर ज देख।
अब नाक थारो किहां रह्यो,
ऐसो द्वेष सेख रे ॥धन०॥

१५— सेठ कहे तापसा रे,
कर्म न छोड़े कोय।
भले भलो ने बुरे बुरो रे,
बान्ध्या उदय आय होय रे ॥धन०॥

१६— हलवे हलवे जीमतां रे,
मोरां ऊपर चेंटोजी थाल।
पोली ज्यू उतरी चामड़ी रे,
एह बात सुणी भूपाल रे ॥धन०॥

१७— तापस मानता घट गई रे,
मिटियो आदर मान।
सेठ भणी उपसर्ग कियो रे,
ज्यू हार्यो जीतो चोर रे ॥धन०॥

दोहे—

१— कार्तिक सेठ धर्म-दृढ घणो, समकित सरधा धार।
श्रावक-प्रतिमा पाचमी, हुही छे सो बार॥
२— मन वैराग तब ऊपनो, जाण्यो अथिर ससार।
वाणोतर सु चर्चा करे, लेणो सजम-भार॥
३— सेठ कहे सजम ग्रहू, हिवे थे करसो केम।
बलता वाणोतर कहे, वेरागे धर प्रेम॥

ढाल—४

(राग—हाथ जोड़ी ने वीनवे)

१— बलता वाणोतर कहे,
थे लेसो सजम-भार हो-साहिब।

९— बत्तीस लाख विमान नो,
देव हुवो सरदार हो-भवियण।
सोले सहस्र आत्म-रखो,
सात अनीका सार हो-भवियण ॥भव०॥

१०— साते अनीका रा अधिपती,
अग्र महीपी आठ हो-भवियण।
वैक्रिय रूप इन्द्र करे,
बत्तीस विध नाटक थाट हो-भवि०॥भव०॥

११— ए सरिखी करणी करी
त्रायस्त्रिंशक तेतीस हो-भवियण।
पुरोहित थानक इन्द्र ने,
उपना जिम ईश हो-भवियण ॥भव०॥

१२— चौरासी सहस्र देवता,
चोकी च्यारू दीस हो-भवियण।
रुखवाला एह पाखती,
त्रण लाख सहस्र छत्तीस-हो भवि०॥भव०॥

१३— परिपदा तीन कोट पाखती,
बाहिरली मझ माय हो-भवियण।
इन्द्र नी सेवा करे,
पूरब पुण्य-पसाय हो-भवियण ॥भव०॥

१४— ऊचा जोजन पाच से,
महल झरोखा सोभाय हो-भवियण।
जोत्या जोर विराजती,
जोता त्रपत न थाय हो-भवियण ॥भव०॥

१५— कोट ऊचो जोजन तीन से,
सो जोजन ऊचो मूल हो-भवियण।
पचास योजन चोड़ो बीच में,
पचवीस ऊपर अतूल हो-भवियण ॥भव०॥

१६— बाग बण्या चिहुँ पागती,
मेहला पगत ठाय हो-भवियण।
सुधर्मा सभा वडी,
दीठां आवे दाय हो-भवियण ॥भव०॥

थारा कर्म आया हिवे आडा रे,
इतरा चरित काहे करे पाडा ॥

४— बलती खीर जीमी मोरां भारी रे,
हिवे आपा तणी असवारी।
उही राजा नो पख सारो रे,
पिण कर्म न छोडे थारी लारो रे॥

५— ऐरावत जाणी साची वातो रे,
मैं कर्म किया साक्षातो।
सिलाम कीधी सूंड पसारो रे,
मोने अंकुश थी मती मारो रे॥

६— माहरा शिर में मति दो ठाकर रे,
तुमें ठाकुर ने हूँ चाकर।
छोरू हुवे केई खोटा रे,
पिण मावित सदा होवे मोटा रे॥

७— जद बोल ऊपर में आएयो रे,
हिवे थारो पराक्रम जाण्यो।
मोने मीठा वचन थे भाखो रे।
कृपा दया भाव दिल राखो रे॥

८— म्हारो कष्ट न खाली मूहो रे,
तिण सू थारो वाहण हुवो।
थोड़े आऊखे बांधे पालो रे,
जिको वाहण असख्या कालो रे॥

९— च्यार पल्य प्रमाणो रे,
ऐरावत आउखो जाणो।
इण इसकी नरमाई कीधी रे,
इन्द्र जब दिलासा दीधी॥

१०— हूं जतन करीसुं थारो रे,
तू ऐरावत अवतारो।
जब माहरी होसी असवारी रे,
तब तू लार नो लारी॥

(१०)

❀ सती-द्रौपदी ❀

दोहा—

१— शील बडो वरता मध्ये, मन्त्रों में नवकार ।
दानां माहि बडो अभय, करदे खेवो पार ॥

२— ज्ञानां में केवल बडो ऋषिया में गौतम नेम ।
सतियां मांहि शिरोमणि, जोवो पांचाली जेम ॥

३— पर-वश पड़िया द्रौपदी, 'पद्मोत्तर' के पास ।
शील साबतो राखियो, सफल फलित सुआश ॥

४— भरत क्षेत्र माहे भलो, 'कपिल पुर' नगर रसाल ।
राज करे रलियामणो, 'द्रुपद' नाम भूपाल ॥

५— राजा राणी रग मू भोगवे लील विलास ।
चूलनी-उदरे ऊपनी, देवी गरभावास ॥

६— नव मास पूरो थया, जनमी पुत्री जाम ।
हरष विनोद वधावणा, कीधा महोच्छव ताम ॥

७— द्रुपद-सुता तिण द्रौपदी, नाम दियो अभिराम ।
पांच धायां पालीजती, बुद्धि भली गुण-धाम ॥

ढाल–१

[राग—विंझियानी]

१— कुंवरी रूप मांहे रलियामणी,
मुख बोले अमृत-वाण रे लाला ।
मीठी शाकर कंदसी,
बले भासे हित मित जाण रे लाला ।
नयण सलूणी रे कन्यका ॥

२— अधर शशी सम सोभतो,
पुनि पूरण भरियो भाल रे लाला ।
नयन-कमल जिम विकसता,
मेहू बाह कमल नी नाल रे लाला ॥नय०॥

३— नासिका दीपे शिखा समी
नकवेसर लटके नाक रे लाला ।
दंत जिसा दाड़िम कुली
मृग-नयनी सूरत पाक रे लाला ।।नयन ।।

४— द्रुपद राजा नी दीकरी
चूलनी री अंग-जात रे लाला ।
द्रौपदी नामे कन्यका
रूप जस्यो विख्यात रे लाला ।।नयन ।।

ढाल—२

(राग—नित वन्दूं साधुजी ने वंदना)

१— चूलनी रानी तिण अवसरे
कुंवरी ने सिणगारी ए ।
रतन - जड़ित री मूंदड़ी
पहन्या सोभे अति भारी ए ।।
सुणजो थे चरित्र सुहामणो ।।

२— इक दिन माता केहने
साथे दीनी मावड़ी ए ।
खोला दासी सु परवरी
पिता रे मुजरे मेली ए ।।सुणजो ।।

३— पिता देखी इम चिंतवे
किण राजा ने परणाऊं ए ।
पड़े तो इण रे भाग रो
जिणरे मूंडे के थाह ए ।।सुणजो ।।

४— परण्यां पूठे पुत्री सखी
आवे मन अपसोसा ए ।
कदाच कोई दुःख हुवे
तो देव बावलिया ने दोसे ए ।।सुणजो ।।

५— स्वयंवर-मंडप मंडाय ने
जिणरी देवाडूं भरतारो ए ।
मूंडो भलो निज भाग रो
दोष नहीं पड़े म्हारे ए ।।सुणजो ।।

दोहे—

१— इम चिंतव राजा तिहां, स्वयवरा-मडप मडाय ।
मेली दूत जुदा जुदा, राजिंद भणी तेडाय ॥

२— देश देश रा राजवी, करता झाक – जमाल ।
वाची कागद ऊठिया, जान सजी तत्काल ॥

३— मेली आडम्बर घणा, आणी अधिकी चूप ।
आय बैठा तिण मडपे, बडा बडेरा भूप ॥

४— कृष्ण प्रमुख सहु राजवी, बैठा सिंहासन पाट ।
वर-माल देखण भणी, मिल्या नर-नारी ना थाट ॥

५— रथ बेठी ने सचरी, हुवो खाड़ेती भ्रात ।
भाटण देवे विरुदावली, आरीसो लेई हाथ ॥

६— आवि स्वयवर मडपे, प्रथम कृष्ण नर-नाथ ।
दूहा बोले भाटणी, सुणो सहू को साथ ॥

ढाल—३

[राग - चढो चढो लाडा वारम]

भाटण- १ — द्वारामति नो साहिबो-कृष्ण नरेसर तेज सवायो,
वर परणो बाई ! ओ रायजादो ।
छिनू हजार गोर्या रो लाडो,
सांवल वरण गुणा रो गाडो ॥वर०॥

२ — ज्या सू तीन खड माहे नहीं आडो,
वर परणो केसरियो लाडो ॥वर०॥
चप-कली अधिको थारो रूप,
भमर भलो बाई सोभे भूप ॥वर०॥

द्रौपदी- ३— इण दुल्हा में तो दूषण गेर,
चपा ने भमरे तो आदू वेर ॥नहीं परणू ओ०॥
ओ दाय बैठो नहीं भूपाल,
भाटण तू अब आगी चाल ॥
नहीं परणू ओ राय-जादो ॥

घालणी हुवे तो घाल वरमाल,
ज्यू सगला रो मिटे जंजाल ॥वर०॥

१२— पांडव पाचे हथिणापुर-मोती,
कंचन जिम जिगमिग ज्योती ॥वर०॥

द्रौपदी- कहे द्रौपदी बाई, ए दाय आया,
पांचा ने देख ठरी म्हारी काया ॥वर०॥

दोहे—

१— पाडव पांचज देखिया, विकसत थयाज नेन ।
कहो छिपायो किम छिपे, अतर-गत रो हेत ॥

२— रथ सू हेठी उतरी, मूल न करि कांई खच ।
वर-माला घाली कहे मैं वरिया ए वर पच ॥

३— देव निहाणा विधी कही, साभल मानी सांच ।
कृष्णादिक सगला कहे, वर्या भला वर पांच ॥

४— द्रुपद राजा आडबरे, कन्या ने दी परणाय ।
दत्त दायजो ले करी, आया हथिणापुर माय ॥

५— गजपुर-पति गरजे महा, पाडु प्रबल प्रताप ।
आज्ञा ईश्वरता पणे, पाले पृथ्वी आप ॥

६— तिण अवसर पांडु नृपत, अतेवर परिवार ।
बैठा पाचू ई दीकरा, कुती नामे नार ॥

७— सुखे समाधे विचरता, बैठा सिंहासण ठाय ।
इतरा में इचरज थयो, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल-४

१— कच्छुल नारद तिण अवसरे,
हुँतो दरसण रो भद्रीक रे ।
अवसरे देख विनय करे,
अतर दुष्ट नहीं, चित ठीक ॥
नारद चरितालियो चरित लगावे रे ॥

२— माथे मुगट जटा तणो,
हाथे कमडल रुद्राक्ष नी माल रे ।

१०— नमन करि कर जोड ने,
देई प्रदक्षिणा तीन रे।
बेसण आसण मूक ने,
होय रह्या छे लहलीन ॥नारद०॥

११— धरती रे पाणी छांट ने,
तिण ऊपर डाभ विछाय रे।
कुशल क्षेम पूछी करी,
सुखे बैठो छे तिण ठाय ॥नारद०॥

१२— द्रौपदी मन माहे चिंतवे,
ए तो भखड़ो मूढ अजाण रे।
गया आगमिया काल रा,
इण रे नहीं व्रत पचखाण ॥नारद०॥

१३— तिण कारण द्रौपदी ऊठी नहीं,
आदर दियो न कियो विशेष रे।
द्रौपदी री अविनय देख ने,
नारद ने जाग्यो द्वेष ॥नारद०॥

१४— सासू ने सुसरा ऊठिया,
पाडव ऊठ्या साक्षात रे।
द्रौपदी ऊठी नहीं,
जोइजो इण लुगाई री बात ॥नारद०॥

१५— ए तो राज माहे मुरझी घणी,
मद – छकी वहे नार रे।
मोने गिणती में राखे नहीं,
इण रे माथे पांच भरतार ॥नारद०॥

१६— मो आया ऊभी ना हुई,
मोने नहीं कीधो सलाम रे।
हिवे वेला वितोऊ इण नार ने,
तो नारद म्हारो नाम ॥नारद०॥

२— थे गामा नगरा फिरो घणा,
जावो राज-धानी रे मांय रे।
म्हारे सरीखी राणिया,
कठे दीठी हुवे तो बताय ॥नारद०॥

दोहा—

१— सामल नारद मुलकियो, राजा पूछे हसिया केम ।
तूं गहिलो नारद कहे, सुण दृष्टान्त कहूँ जेम ॥

(ढाल-वही)

३— नारद इसड़ी सांभली,
तब बोले मुख सूं एम रे।
मैं तोने जाणियो,
कूवा रो मिंडक जेम ॥नारद०॥

४— एक समुद्र रो डेडको,
आयो कुवा रा डेडका पास रे।
जब कुवा रो मिंडक इम कहे,
भैया किहा तुमारो वास ॥नारद०॥

५— कूवा रा डेडका-ने इम कहे,
समुद्र माहे म्हारो वास रे।
कहे समुद्र मोटो केहवो,
मोने कहि देखालो जास ॥नारद०॥

६— तब दरियाव-दुर्दुर कहे,
म्हारो समुद्र मोटो अपार रे।
तब कूवा रे मींडके,
पाय लीक काटी तिण वार ॥नारद०॥

७— तब कूवा रो मिंडक कहे,
म्हारो कूवो मोटो साचात रे।
कूवा थी समुद्र मोटो नहीं,
थारी झूठी सगली बात ॥नारद०॥

२— कहे देव किण कारणे, माने समरियो राय ।
नृप कहे हथणापुर थकी, सूंपो द्रौपदी लाय ॥

ढाल—वही

७— हूई हुवे होस्ये नहीं रे लाल,
वात नहीं अजोग-सुण० ।
पांच पाडव नी द्रौपदी रे लाल,
नहीं आवे थारे भोग-सुण० ॥नारद०॥

८— राजा हठ मूके नहीं रे लाल,
तब देव हथणापुर जाय-सुण० ।
युधिष्ठिर वारे हुती रे लाल,
लीधी द्रौपदी उठाय-सुण० ॥नारद०॥

दोहा—

१— द्रौपदी ने मेली बाग में, देव आयो नृप ने पास ।
अब हूं आंबू नहीं, जो भूखां मरे छमास ॥

ढाल—८

[*राग—कोयलो पर्वत घूंधलो*]

१— झबके से जागी द्रौपदी रे लाल,
नहीं म्हारे प्रीतम पास रे-पथीड़ा ।
बाग वाड़ी नहीं माहरी रे लाल
नहीं म्हारो महल आवास रे पथीडा ।
करे विमासण द्रौपदी रे लाल ॥

२— किहां मुज पीहर सासरो रे लाल,
किहां मुज भरतार रे-पथीड़ा ।
फद माहे आंण हू पड़ी रे लाल,
ए सू कियो किरतार रे-पथीड़ा ॥करे०॥

३— के कोई मोने लायो देवता रे लाल,
जक्ष राक्षस थाय रे-पंथीड़ा ।
के कोई विद्याधर अपहरी रे लाल,
तिण री खबर ना कायरे-पंथीड़ा ॥करे०॥

ढाल-१०

[राग—धमाल]

१— तब चलती कहे द्रौपदी, हो,
साभल एक विचार।
कृष्ण ने पाडव माहरी हो,
सही करसी हो वे बार।
सतवती अवसर देखियो हो ॥

२— राजा ने कहे द्रौपदी हो,
म्हारो वचन मति ठेल।
तुम्हारी अतेउरी हो,
तिण जायगा दे तू मोने मेल ॥सतवती०॥

३— छ मास पछे मो भणी हो,
जो कृष्ण न करे बार।
कोई खबर न लेवे माहरी हो,
तो हू बैठी छू तुमारे सार ॥सतवती०॥

४— द्रौपदी रो मन राखवा हो,
वचन न सक्यो ठेल।
राग थकी लेई करी हो,
दीधी कुमारी कन्या में मेल ॥सतवती०॥

५— ज्या लग कत मिले नहीं हो,
रहणो धर्म में लाल।
माड्यो बेले बेले पारणो हो,
लूखो अन्न पाणी माहे घाल ॥सतवती०॥

६— इम आयबिल करती थकी हो,
विचरत आतम माय।
तपस्या मन साचवे हो,
सफल दिहाडा इम जाय ॥सतवती०॥

दोहा—

१— युधिष्ठिर तब जागियो, द्रौपदी न देखे पास।
वठी ने जोई घणी, अणलाध्या थया उदास ॥

२— द्रौपदी किहां पामी नहीं　पांडव थया उदास ।
एक नारी राखी न सक्या　कर हाथ लोकां हास ॥
३— पांडु राजा पे आय ने　बोले इसड़ी वाण ।
द्रौपदी ने कोई ले गयो　तस्मी खबर न काय ॥
४— अनुचर तेड़ी भूप कहे　जावो हस्तिनापुर मांय ।
त्रिक-चत्वरादिक मारगे　करो उद्घोषणा जाय ॥
५— देव दानव किन्नर अपछरी　द्रौपदी ल्यावे मार ।
खबर देवे कोई आपने　तो नृप देवे धन सार ॥
६— पांडु कह्यो तिम तिम कियो　साथ आया नृप पास ।
द्रौपदी किहा पाई नहीं　नृपत हुवो उदास ॥
७— काल अगार में बितली　आवयो राखो राण ।
एक वार रही नहीं　लोक हास पर हाण ॥
८— कुंती राणी ने तेड़ ने　पांडु नृप कहे एम ।
जाय द्वारिका कृष्ण ने　बात कहो हुई जेम ॥

ढाल-११

(*राग—चंद्रायण*)

१— हाथी रे होदे चढ़ी हो　कुंती राणी लिया नारो ।
चतुरंगणी सज्या सझी हो　हय गय रथ परिवारो ॥
हय गय रथ परिवार सजाई
अनुक्रमें द्वारामती आई ।
भूवाजी री गई बधाई
कृष्ण सुणी ने हर्षित थाई ॥
जी भूवाजी आी हो ॥

दोहा—

१— वचन सुणी सवग सखो　माधव हर्षित थाय ।
साम्हा जावे भूवा तणे, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल-१२

(*राग—परिमद्दा रहवे ए*)

१— शोभा विविध प्रकार सू ए,
बांधी नगरी ने मांह ।

जय जय शब्द बहु ऊचरे ए,
वाजा बजत उच्छाह ॥
भूवाजी भला आविया ए ॥

२— साम्हां भूवाजी रे चालिया ए,
हय गय रथ पायक सार ।
बेठ बड़े गजराजजी ए,
साथे सकल परिवार ॥भूवाजी०॥

३— दान देवे याचका भणी ए,
हरि जी हरप आवत ।
दरसण देख्यो दूर थी ए,
भूपत सुख पावत ॥भूवाजी०॥

४— हाथी सू हेठे उतरी ए,
प्रणम्या भूवा ना पाव ।
भगत करी भल भाव सू ए,
चित नो चोखो चाव ॥भूवाजी०॥

५— जनम कृतार्थ माहरो ए,
आज थयो उल्लास ।
दरसन दीठो भूवाजी तणो ए,
सफल फली मुज आस ॥भूवाजी०॥

६— कठ लगायो प्रेम सूं ए,
आणी अधिक जगीस ।
फूली अग मावे नहीं ए,
तब भूवाजी दी आशीस ॥भूवाजी०॥

७— चिर-जीवे चिर नदजे ए,
चिर लगे पालजे राज ।
निज परिवार ने रेत का ए,
पूरजे वाछित काज ॥भूवाजी०॥

८— भूवा भतीज सूं एकठा ए,
बैठा गजराज तिवार ।
नगरी मांहे पधारिया ए,
घर घर मगलाचार ॥भूवाजी०॥

४— वचन सुणी भूवा तणा हो, कृष्णजी बोल्या वायो ।
जिहा गई तिहा लावसूं हो, चिंता मत करो कायो ॥
चिंता भूवा मत करो काई,
स्वर्ग मृत्यु पाताल में जाई ।
जो किण रा घर मांहे थाई,
आणी हाथो हाथ दू पकडाई ॥जी०॥

दोहे—

१— बहु सत्कार सन्मान दे, दीवी भूवा ने सीख ।
आई तिहा पाछी गई, कृष्ण करे हिवे ठीक ॥
२— कृष्ण कराई उद्घोषणा, तीन खड रे मांय ।
कठे न पाई द्रौपदी, कृष्ण चिंतातुर थाय ॥
३— इतरे नारद आवियो, पूछे कृष्ण मुरार ।
गाव नगर फिरो घणा, कठे दीठी द्रौपदी नार ॥

ढाल—१४

(राग—चंद्रायण)

१— तडक भड़क नारद कहे हो, म्हांरी जाणे बलाय ।
मैं लुगायां ने स्यू करां हो, मोने खबर न काय ॥
मोने खबर न काय तिगारी,
मैं जोगीसर जटा – धारी ।
किणरी देखता फिरा मैं नारी,
पिण एक कहू हकीकत भारी ॥
जी माधवजी हो ॥

२ — धातकी-खड में हूँ गयो हो, भरत क्षेत्र के माय ।
अमर-कका नगरी भली हो, पद्मोत्तर महाराय ॥
पद्मोत्तर महाराय ज जाणी,
तिणरे तो छे सातसो राणी ।
सामल जे तू म्हारी बाणी,
एक कहू तोने बातज मीठी ।
पद्मनाभ रे राज में झबके से दीठी ॥जी०॥

ढाल-१६

[*राग—चद्रायण*]

१— स्वस्तिक देव कहे कृष्ण ने हो, समुद्र लाघी किम जायो ।
घातकी-खड सू आणने हो, द्रौादी धूँ पकड़ाय ॥
द्रौपदी ने सू पू लाय,
कहो तो पकडू पद्मोतर राय ।
ऋद्धि सहित अमर-कका उठाय,
लवण - समुद्र में दू डबकाय ।
जी माधव जी हो ॥

२— कृष्ण कहे देवता भणी हो, रखे करो ए वातो ।
मैं वचन दियो भूवा भणी हो, हूँ लासू हाथो हाथो ॥
हाथो हाथ दू पकड़ाय ।
समुद्र लाघी अमर - कका जाय ।
पाज बाधण री देव ! करो उपाय,
ज्यू छऊ रथां ने मारग थाय ॥जी०॥

३— जाय ने द्रौपदी तणी हो, स्वयंमंत्र करसू वारो ।
पद्मनाभ राजा तणी हो, आसूं इज्जत पाड़ो ॥
सेखी विखेरी इज्जत पाड़ी ।
जीत कर लाऊ द्रौपदी नारी,
कह्यो मान देव पाज पसारी ।
छऊ रथ गया पेले पारी ॥जी०॥

दोहे—

१— अमर-कका रा उद्यान में, छऊ रथां ने ठाय ।
दारुक नामे सारथी प्रते, कहे अमर-कका जाय ॥
२— कृष्ण पत्र लिखने दियो, तू कहे पद्मोतर ने जाय ।
द्रौपदी आण ने सौंपदे, जो इज्जत राखण री चाय ॥

४— सिंहासन ठोकर मार, अकल थारी किहां गई रे ।
काली अमावस रा ज्ञायो, कृष्ण इसडी कही रे ॥

५— द्रौपदी नार, राख्यो चाहे कायदो रे ।
कृष्णजी रो नाम, गिणे न भुलायदो रे ॥

६— कहे पद्मोत्तर राय, बात सुण एतली रे ।
आया द्रौपदी काज़, फोजां लाया केतली रे ॥

७— बोले इण पर दूत के, पराक्रमी छे अति घणा रे ।
पांच पाडव ने कृष्ण, आया अठे छे जणा रे ॥

८— सिंह रे मुंडा मांय, कांई घाले आगुली रे ।
असवारां री होड करे, डोशी पांगुली रे ॥

९— नहीं आपू द्रौपदी नार, बात कहे छती रे ।
वेगो हुइजे तयार, पाछ राखे मती रे ॥

१०—थारी जबा री पाण के, पूरो पाड़नो रे ।
नीति शास्त्र रे न्याय, दूत न मारणो रे ॥

११—पद्मोत्तर राय, त्रिशूलो चाढ़ियो रे ।
दूत ने धका दिराय, बारी कानी काढियो रे ॥

१२—मन मांहे दूत घणो पिछतावियो रे ।
आमण दूमण होय, माधव पासे आवियो रे ॥

दोहे—

१— दूत बात नृप ने कही, धक्का दे काढ्यो मोय ।
ओ नहीं आपे द्रौपदी, मूल गिणे नहीं तोय ॥

२— मद-छकियो राजा कहे, देऊ छवा ने ठेल ।
इतरे देख्यो दल आवतो, जाणो समुद्र-वेल ॥

३— पद्मोत्तर नृप देख ने, कहे पाडव ने वाय ॥
कहो राजा सू हूँ लड़ू, अथवा थे लड़ो माय ।

४—कहे पाडव लडसा अम्हे, देखो म्हारा हाथ ।
छत्र छाया आपरी, ए नर कितरी वात ॥

दोहे—

१— पाण्डव भागा नगर ने, हरि आवे आगे सूर ।
हिवे नामी जामो ऊठे, हरी द्वारका दूर ॥
२— मत नाठो, ऊभा रहो, आय पहुँचा स्याम ।
दूर थकी देखो तुमें, हिवे हमारा काम ॥

ढाल–२०

(राग—पास जिणदजी सूं मन लागा)

१— माधव बोल्या मूछ मरोड़,
ऊभो रहे रे पर-नारी रा चोर ।
तू तो काई जूझे रे,
कुमति ! पद्मनाभ ! काई जूझे रे ।
एकलो जाणे मत मोने आप,
तें अब छेड़्यो कालो साप ॥तू तो०॥
२— पाडव जीत मार्यो मति भूण,
तिण हूँ तोने करसू आटे लूण ॥तू तो०॥
हू तो आयो द्वारिका केरो नाथ,
मो आगे तू कितरीक बात ॥तू तो०॥
३— तू तो जाणे करूं मन री मोज,
तो देखतां देखतां बिखेर देऊ फोज ॥तू तो०॥
मो आगे थारो नहीं चाले गोर,
निपट नेम पर-त्रिया रो चोर ॥तू तो०॥
४— तू तो जाणे म्हारे किल्ला ने कोट,
हूँ तो उडाय देसू एकण चोट ॥तू तो०॥
तू तो जाणे करू मन री लेर,
नगरी कर देसू ढम ढेर ॥तू तो०॥

ढाल–२१

(राग—लडका)

१— देखजे हूँ हिवे, जय पामीस सही,
नहीं तूं पदमनाभ रायो ।

थर-हर कपे कोमल काय,
द्रौपदी रे शरणे नास ने जाय ॥तूं तो०॥

६— तुम शरणे छुटू निरधार,
द्रौपदी मुझने तू आधार ॥तूं तो०॥
द्रौपदी कहे घणी करतो मरोड़,
सो अब किहा गयो ताहरो जोर ॥तू तो०॥

ढाल—२२

(राग—वेग पधारो रे महल थी)

१— पद्मनाभ द्रौपदी कने, कर जोडी इम भाख ।
तू कहती जिके पुरुप आविया, अब शरणे मोने राख ।
मरणो दोरो ससार में ॥

२— तब बलती कहे द्रौपदी, त्रिया रूप बणाय ।
मोने आगल ले करी, लाग हरिजी ने पाय ॥
जो चाहीजे तोने जीवणो ॥

३— भीनी साड़ी पहिरने, वनिता रूप बणाय ।
न्यारू पल्ला घींसती भद्रा जिम चलि जाय ॥मरणो०॥

४— थाल भर माणक मोतिया, लारे लुगाया गीत गाय ।
आल्यो थांरी द्रौपदी, कर जोड़ी शीस नमाय ॥मरणो०॥

५— पराक्रम दीठो मैं आपरो, खमो म्हारो अपराध ।
रे मूरख ! जा इहा थकी, मेटी क्षत्रिय-मरजाद ॥मरणो०॥

६— बुलाय पाडवा ने इम कहे, आ लो द्रौपदी नार ।
हाथोहाथ ज सूप दी, मन में हरख्या मुमार ॥मरणो०॥

दोहा—

१— जबूद्वीप रा भरत में, जावा रो मन थाय ।
इतरा में इचरज थयो, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल—२३

(राग—खडका)

१— चालिया रग भर लवण समुद्र में,
शख वर पूरियो तत् खेवो ।

धातकी-खंड में भरत चंपा-धणी
कपिल नाम तिहां वासुदेवो ॥
क्षेप करी केशव अत पाछा वल्या ॥

१— श्री मुनि-सुव्रत स्वामी आगे तदा
त्रिभुवणी शब्द चमक्यो सुरिंदो ।
द्रोपदी निमहण सूत्र में करी
कह्या संबंध भाख्यो जिनंदो ॥क्षेम०॥

ढाल—२४

(*राग—कपूर हुवे अति उजलो*)

१— सुण जिनजी ने वलता करीजी
कपिल बोल्यो वाम ।
कृष्णजी मोटा पुरुष छे जी
देख मिलू तिणे जाय ।
जिनेश्वर ! धन्य तुमारो ज्ञान ॥

२— 'मुनि-सुव्रत' वलता कहेजी
हुई न होवे एह ।
माहो माहि क्यारे वासुजी
मिल देख न सके देह ॥जिनेश्वर ॥

३— तो पिण कपिल सांभलोजी
जातां समुद्र रे मांय ।
धजा रथ नी देखसो जी
इम सुण चाल्यो धाय ॥जिनेश्वर ॥

४— मो सरिखो उत्तम पुरुष आवनेजी
इम कृष्ण सुणवो सिणगार ।
स्यों विण शंख पाछा पूरियोजी
उत्तर पडुत्तर शंखो-शंख ॥जिनेश्वर ॥

५— कपिल अमर-कंका आवियोजी
कहे भागो नगर एह केम ।
पद्मनाभ वलतो कहे जी
आय कई हुई केम ॥जिनेश्वर ॥

दोहे—

१— जबू द्वीप ना भरत नो, कृष्ण वासुदेव आय ।
तुम आज्ञा परिलोप ने, विपत पाडी महाराय ॥

२— कहे कपिल झूठी कहे, बोल्यो ताम सेलाय ।
काली अमावस रा जण्या, एहवो करे अन्याय ॥

३— मो जिसा उत्तम पुरुष ने, ते उपजाई खेद ।
नीकल म्हारा देश थी, ऐसो कियो निखेद ॥

४— पद्मनाभ ना कुवर ने, ले बेसाण्यो राज ।
काछ-लपटी पुरुष नी, इम जावे छे लाज ॥

५— कृष्ण समुद्र उलघ ने, गयो गगा-नदी-तीर ।
पाच पाडव ने इम कहे, थे तो हुवो बहीर ॥

६— गगा नदी थे ऊतरो हूँ स्वस्तिक देव पे जाय ।
आज्ञा पाछी सूंप ने, मिल सू थांसू आय ॥

७— वचन कृष्ण नो सांभली, बैठा नान्ही नाव ।
गगा नदी ऊतर गया, खोटो चिवार्यो दाव ॥

ढाल-२५

(राग—चढो चढो लाडा वार म लावो)

१— चित चिंते हिवे नाथो
एक मतो छे मगले साथो ।
होणहार मेटयो नवि जाये,
सगला री मती सरिखी न थाये ॥होणहार०॥

२— कुड कुड रो न्यारो पाणी,
मुड मुड नी न्यारी वाणी ।
मस्तक मस्तक मति छे जुई,
पिण ए सहू नी एकज हुई ॥होणहार०॥

३— सहू सयाणा सोचो काई ?
भावी जोर सके न मिटाई ।
पाडवजी सरीखा जो चूका,
समित सरोवर तो कुण ढूका ॥होणहार०॥

५— गगा देवी तिण अवसरे,
कृष्ण थाको देखी रे।
गगा देवी विचे थल कियो,
दीधो गगा थाग विसेखी रे ॥होण०॥

६— मुहूर्त लग विश्रामो लेई,
गगा नदी उतरियो रे।
साढ़ा बासठ जोजन तणी,
जिहा पाडव तिहां संचरियो रे ॥होण०॥

दोहे—

१— कृष्ण कहे पांडव ! सुणो, तुम बलवत अपार।
गगा-जल भुज बल तिर्या, राणी लेकर लार॥

२— जल अंध विच हूं आवियो, अति ही थाको ताम।
गगा देवी माहरी, सानिध करी सकाम॥

३— हम थी पिण बलवंत तुमे, भाखे हरि ससनेह।
पद्मनाभ नृप आगले, हार्या अचभो एह॥

ढाल—वही

१— बलता पाडव इम कहे कृष्ण ने,
मैं उतर्या नावा होयो रे।
देखा कृष्ण भुजाऐ किम तिरे,
लेवा पराक्रम जोयो रे ॥होण०॥

२— इम कृष्ण सुणी ने कोपियां,
माथे त्रि-सूलो चाढी रे।
काली अमावस रा जण्या,
बोल्या राता लोचन काढी रे ॥होण०॥

३— लज्जा – लक्ष्मी रहित तुमें,
इत्यादिक बोल्या वाणी रे।
मैं लवण समुद्र ऊलघ ने,
थांने द्रौपदी दीधी आणी रे ॥होण०॥

४— जुध करता पाचू भाग ने,
दीधी पद्मनाभ ने पीठो रे।

६— भूवा ! किसो मुझ दोष, कुंती कहे तूं साचो ।
पिण होणी पदारथ होय, फिरे किम ही पाछो ॥

७— छोरू कुछोरू होय, बिगाने बातड़ी ।
पिण माविता रो रोष, उतरे इक लातडी ॥

८— तू साचो सा-पुरुष, जिण सू टालो कियो ।
दीन दयाल कृपाल, पाण्डव जीतब दियो ॥

९— वीरा नी आशा, भूवा ने घणी रहे ।
जाणे के दीधो वेश, हिवे ज्यू जाणे तिम कहे ॥

१०—अपणायत जाणी, करो कोई विचारो ।
अवगुण याद कियां, नाश होय हमारो ॥

११—भूवा ना दीन वचन, सुण हरि जीव दे ।
पांडव छे मुझ पूज्य, अपूज्य न हुई कदे ॥

१२—दक्षिण दिशी ने जाय, थे नगरी वसाव जो ।
पांडव-मथुरा नाम, नगरी रो दिराव जो ॥

१३—चिर लग करजो राज, पाण्डव ने या वायका ।
माहरी करजो सेव, अदृष्ट ऊठे थका ॥

१४—ऊनो पाणी ठार, पिण स्वाद वो ना रहे ।
डोरो तोडी फेर, जोड़यां गाठ ना मिटे ॥

१५--कुंती फिर घर आय, ऊचालो घालियो ।
ले अपणो परिवार, पाडु नृप चालियो ॥

दोहे—

१— आग्या मांग श्रीकृष्ण री समुद्र समीपे जाय ।
पांडव-मथुरा वसाय ने, राज करे सुख-दाय ॥
२— तिण अवसर द्रौपदी तणे, गर्भ रयो तत्काल ।
पूरे मासे जनमियो, रूपवत सुकुमाल ॥
३— पांच पाडव रो दीकरो, पांडव-सेन दियो नाम ।
आठ वरस जाफो थयो, युवराज पदवी पाम ॥
४— सुखे समाधे पांचू जणा, विलसे संसार ना भोग ।
एक मना थई सांभलो, किण विध लेवे जोग ॥

ढाल—२८

[तर्ज—भरत चरितालियो]

१ एक दिन जिनवर समोसर्या
पांडव वांदण जाय रे।
देशना सुण वैरागिया
भाई ! क्षणे क्षणे आयु जाय।
पांडव पांचू वांदतां मन मोह्या रे॥

२— इंद्र चक्रवर्ती जे हुआ
थिर नहीं रह्या भूप रे।
भो भव में सुख्या सभी
संसार नो विषम स्वरूप रे ॥पांडव०॥

३— संसार माहि भटकता
भाई ! लागे किम सुहावण रे।
जिनवर-वाणी सांभळी
म्हारा मन भव ना दुख जाय रे ॥पांडव ॥

४— पांच पांडव मन चिंतवे
धर्म लेसां संजम-भार रे।
पुत्र ने राज थापी करी
द्रौपदी सू करे विचार ॥पांडव०॥

५— तब बोलती सती द्रौपदी
इतां छोड सू संसार नो पास रे।
संत विदुषी कामणी
हुम भलो नहीं पर-वास ॥पांडव०॥

६— संजम-मारग आदर्यो
मुनि पाळे, निरतिचार रे।
शेष वेळा तिस ठाम ने
मुनि लेवे शुद्ध आहार रे ॥पांडव०॥

७— तप जप संजम पाळता
भाई मास-खमण मन रंग रे।
जब जप नेम धीरा नहीं
अभिग्रह कियो अभंग रे ॥पांडव ॥

८— हस्ति - कल्प पुर आविया,
पारणा नो जाण्यो प्रमाण रे।
नगर फिरता गोचरी
सुण्यो नेमजी रो निर्वाण रे ।।पांडव०।।

९— गुरा ने जाय इम कहे,
नेम पहुंता शिवपुर सार रे।
आहार करवो जुगतो नहीं,
आपण पे अणसण धार रे ।।पांडव०।।

१०— मन रा मनोरथ मन में रह्या,
नेम पहुता मुक्ति मझार रे।
आहार परठ्यो कुंभ-शाल में,
ऋषि पोहतो विमल-गिरि सार ।।पांडव०।।

११— मास एक सलेखणा,
कीधो पादोपगमन सथार रे।
पाच पांडव मुगते गया,
तब बरत्या जय-जय-कार ।।पांडव०।।

१२— द्रौपदी पिण साधवी
संजम पाल्यों मन रग रे।
गुरणी साथे विचरती,
आतो भणी इग्यारे अग ।।पांडव०।।

१३— अत समे अणसण करी,
पहुँची पचम देव-लोक रे।
महाविदेह में मुक्ति जावसी,
टाली ने आतम - दोष ।।पांडव०।।

१४— सपूता रा सिरी सहू,
ज्यांरी कथा घणी छे एन रे।
रिख 'जयमल्लजी' इम कहे,
चावा मुसलमान शिव जैन रे ।।पाडव०।।

(११)

❀ देवदत्ता ❀

दोहा—

१— ओंकार अरिहंत सिद्ध आचारज सुत्र-धार ।
सर्व साधु नमियां थकां वरते मंगलाचार ॥

२— इग्यार मां अंग में विसे दश कथा दुख-विपाक ।
भवि जीवां के सांभळो बांधे पाप कर आक ॥

३— नवमां अध्ययन तणो 'देवदत्ता' नाम भाव ।
ज्ञानी देव प्ररूपिया चतुर सुणो धर चाव ॥

४— तिण काळे ने तिण समे, 'जंबू' निश्चय जाण ।
'रोहीडा' नाम नगर हुंतो रिध समरथ प्रमाण ॥

५— 'पुढवी-वडंस' उद्यान थो धरण हुंतो तिहां यक्ष ।
'वैश्रमण-दत्त' राजा हुंतो श्री देवी प्रत्यक्ष ॥

६— 'पुस-नंदी' नामे कुंवर, पदवी हुंती-युवराज ।
तिहां 'दत्त' गाथापति वसे आढ समाज ॥

७— 'कृष्ण सिरि' तेहने भारिया देवदत्ता तेहनी जाय ।
शरीर उत्कृष्टो हुंतो रूप - कला अभराय ॥

ढाल—१

[राग—तिण अवसर मुनिराय]

१— तिण अवसर वर्द्धमान
रोहीडा नगर उद्यान-जिनेश्वर राय-
साधां संगाथ परवर्या ए ।

२— परिषदा वांदण जाय
देशना दीधी जिनराय-जिनेश्वर राय-
सांभळ ने पाछी गई ए ।

३— तिण अवसर तिण वार
'इन्द्रभूति अणगार-जिनेश्वर राय-
छठ तमण ने पारणे ए ।

४— प्रभुजी नी आज्ञा भग,
तीजे प्रहर उछरंग-जिणेसर राय-
भमता दीठा हाथी घोडला ए।

५— पुरुपा री भीड़ न माय,
एक स्त्री ने वध ले जाय-जिणेसर राय-
देखण भीड़ घणी मिली ए।

६— अवली मसकां वाध,
चवड़े चच्चर साध-जिणेसर राय-
राज पुरुप जावे घेरिया ए।

७— कान नाक काटे जोर,
सडाशा मास तोड-जिनेसर राय-
खवरावे नारी भणी ए॥

८— इसी विटबना कीध,
ले जाए शूली दीध-जिनेसर राय-
गौतम निजरा देखने ए॥

९— मनमां करे विचार
अहो अहो कर्म निरधार-जिनेसर राय-
इण पाछला पाप कैसा किया ए॥

१०— वीर समीपे आय,
सर्व कही जिम थाय-जिनेसर राय-
एक शूली दीधी असतरी ए॥

११— मोने कहो प्रभु आप,
एह ने किसा पेलतर पाप-जिनेसर राय-
पाछले भव ए कुण हुँती ए॥

१२— किसा नगर खेड़ा माय,
इण कुण सा पाप कराय-जिनेसर राय-
एसा पाप उदे हुवा ए॥

१३— वीर कहे इम वाण,
गौतम निश्चय जाण-सुणो चित्त लाय-
इणहीज जबू-द्वीप में ए॥

३— अवर राणी मन चिंतवे, जिहा निज थाय भात ।
'श्यामा' सूं द्वेष घणो करे, चिंतवे छिद्र बहु घात ॥

४— राजा इण सूं मूर्छित घणो, म्हारा शस्त्र विष जोग ।
'श्यामा' जो पूरी पडे, तो मिट जावे दुख ने सोग ॥

५— शोक तणा छिद्र जोवती, विचरत है इण भात ।
एक-मना थई साभलो, पड़े अपूठी रात ॥

ढाल—२

(राग—चद्रगुपत राजा सुणो)

१— श्यामा राणी बात साभली
सोका रखे मोने मारे रे ।
डरती आवी कोए घर मझे,
आख्या आसूड़ा झरे रे ॥

२— जोयजो रे शाल शोकां तणो,
शोका शूली सिरखी रे ।
शोका काम जिके किया—
ते निजरा लीधा निरखी रे ॥जो०॥

३— श्यामा सोच करती थकी,
बैठी आरत-ध्यानज ध्यावे रे ।
सिंहसेण बात साभली,
श्यामा पासे आवे रे ॥जो०॥

४— आरत ध्यान करती थकी,
राजा निजरां देखी रे ।
देवानुप्रिये इम किम करे,
मीठा वचन कह्या विसेखी रे ॥जो०॥

५— राय बतलाई राणी भणी,
रोवती बोले वायो रे ।
सोका चार से निलाणवे,
इतरी ज्यांकी थाय मायो रे ॥जो०॥

६— या को मोह म्हो ऊपरे,
शोकां ने लागे खेरो रे ।

बात म्हारी किलवे सहू—
म्हारा रखे मरको थावे म्हारो रे ।।जो०।।

७— सहू म्हारा सिर बोली रहे
म्हारा किम कुमोचे मारे रे ।
तिण सू आम पामी घणी
सहू बात कही विस्तारे रे ।।जो०।।

८— सिंहसेन राजा सुणी
इसड़ी बोल्यो वायो रे ।
सोच फिकर करजे मती
हूं करसू थीने सुख पाचो रे ।।जो ।।

९— थारे शरीर-बाधा नहीं व्यापसे
हूं इसड़ो करसू विचारो रे ।
आसासना दीधी घणी
विस्वास थारे – थारो रे ।।जो ।।

१०— महलां सू राय बारे नीकली
सेवग पुरुष बुलायो रे ।
जा तू शहर रे बाहिरे,
एक कूटागार-शाला करावो रे ।।जो ।।

११— अनेक थांभा लगाय ने
कर चतुराई चूंपो रे ।
लाख सेती रे लपेटिजे
कर आज्ञा पाछी सूंपो रे ।।जो ।।

१२— सेवग वचन प्रमाण करी
पश्चिम दिशा नगर बारे रे ।
एक कूटागार – शाला करे
अनेक थांभा लगावे रे ।।जो ।।

१३— 'सिंहसेन' राजा कन्हे
आज्ञा पाछी सूंपी सेवग आयो रे ।
राजा सुण राणी पाच सयांरी
आवजो म्हारे पासो रे ।।जो ।।

१४— चार से नीनाणु राणिया,
तेहनी धाय माई रे।
न्हाय धोय सिणगार करी,
राय ने हजूरे आई रे ॥जो०॥

१५— जाणो तूठो म्हांसू राजवी,
आज मोने बतलाई रे।
कर्मा रे वश सूझे नहीं,
मोतडी नेड़ी आई रे ॥जो०॥

१६— बारे जावो नवा महल मा,
धाय वडारण थाटो रे।
विचरो खावत पीवती,
माहरी जोयजो बाटो रे ॥जो०॥

१७— वचन सुणी हर्षित थकी,
जाय महलां वासो लीधो रे।
हिवे कर्मा के वश राजवी,
केहवो अकारज कीधो रे ॥जो०॥

१८— सेवग ने राजा इम कहे,
च्यारू आहार पोहचावो रे।
फल फूल गंध वस्त्र आद दे,
राण्या धाय ने सुंपावो रे।

१९— सेवग सूंप्या ले जायने,
राण्या जीमे च्यार आहारो रे।
छ जात ना दारू पीवती,
पड़े नाटिक – घु कारो रे ॥जो०॥

२०— रग राग करती थकी,
गधर्व-गीत गाती रे।
खाती पीती विलसती,
रग मां राती माती रे ॥जो०॥

२१— दोय कम सहस जणी,
इतरी सूत्र में दाखी रे।
गायक वडारण हुती जिका,
सूत्र में निरत न भाखी रे ॥जो०॥

६— न्यारसे निनाणू राणी रे,
धाय माता इमहिज जाणी ।
बल ने कर गई कालो रे,
लाख-महल कुडाग नी सालो ॥

७— चोथा आरा ने मायो रे,
इसडो सहार करायो ।
पंचमा काल रो स्यू केहणो रे,
इम जाणी ने सुध वेहणो ॥

८— राजा इमडा कर्म बाध्या भारी रे,
चउतीस से बरस आऊ विचारी ।
राजा सिंहसेण कर कालो रे,
पडियो छट्ठी नरक विकरालो ॥

९— बावीस सागर नी थितो रे,
दुख भोगवे नित नितो ।
तिहा माहो-मांहिनी मारो रे,
पाड़े तिहां चूब पुकारो ॥

१०— एक बार किया पापो रे,
बहु काल पड़े सतापो ।
इम जाणी ने पाप सू डरसी रे,
जिके राग - द्वेष परिहरसी ॥

दोहे—

१— छठी नरक सू नीसरी, रोहिड़ा नगर ने माय ।
दत्त स्वार्थवाह घरे, कृष्णसिरि भार्या थाय ॥
२— जेहनी कूख मां ऊपनी, छठी नरक थी आय ।
पूरे मास जनम थयो, जाव रूपवन्त कहाय ॥
३— मात पिता दिन बार में, निपजाया चऊ आहार ।
न्याती गोती जिमाय ने, दियो 'देवदत्ता' नाम सार ॥
४— पांच धायां कर वाधती, लेतां हाथोहाथ ।
सुखे समाधे वध रही, जिम चम्-लता साक्षात ॥

ढाल—९

(राग—नीदड़ली हो बैरण होय रही)

१— तिवारे पछे वे 'देवरत्ना'
    आल-भाव थी मुकावी रे ।
जोबन वय जब प्रगट थई
    लागे अमल आवी रे ॥

२— गोयम ! सांभल जिणवर कहे
    इण में फेर न कोई रे ।
जीव जैसा पाप किया होवे
    जिसका फल रस होई रे ।।गोयम ॥

३— देवरत्ना' स्नान भीम ने
    सिणगार करे बहु भांतो रे ।
दास्यां रे संगाते परवरी
    अमर प्रसाद आतो रे ।।गोयम॥

४— सोना रो चढियो हाथ में
    सांभल दडिया खिलावे रे ।
तव 'वैश्रमण' राय विभूषा करी
    घोड़े चढ मस्यां लारे आवे रे ।।गोयम ॥

५— नहीं लागो नहीं ढूकड़ो
    चढता मिनखां रे परिवारे रे ।
'देवरत्ना' नजरे पड़ी
    रूप लावण्य जोबन सारे रे ।।गोयम ॥

६— राजा रूप देखी ने मोहियो
    सेवग पुरुष ने तेड़ाई रे ।
कहे कुण नामे कैसी बीकरी
    किण री बेटी आई रे ।।गोयम॥

७— तब सेवग बालो कहे
    ए 'दत्त सार्थवाह' नी बेटी रे ।
ए 'कृष्णसिरी' नी अंग-जात है
    इणरा 'देवरत्ना' नाम भेटी रे ।।गोयम॥

८— उत्कृष्टो रूप शरीर छे,
राजा सुण हर्षित थायो रे ।
अलगो जाय पाछो वली,
अभ्यंतर पुरुष बुलायो रे ।।गोयम०।।

६— कहे जा तू देवानु-प्रिया !
आ 'दत्त' स्वार्थवाह नी धूया रे ।
जाय मागो 'फूसनंदी' निमिते,
परणावो कृष्णसिरी नी सुया रे ।।गोयम०।।

१०— थे धन ल्यो चाहिजे जिको
सुण सेवग हर्षित थायो रे ।
राजा जे बात सुणाई जिका,
आई दत्त ने सर्व सुणाई रे ।।गोयम०।।

११— राजा रा पुरुष ने देख ने,
'दत्त' उठ्यो आसण छोडी रे ।
सात आठ पग सामो अई,
किम पधार्या बोल्यो कर जोड़ी रे ।।गोयम०।।

१२— नआपप्रयोज किसेपधारिया,
तव राज-पुरुष कहे वायो रे ।
एह 'देवदत्ता' जे दीकरी,
राजा एहवो वचन फुरमायो रे ।।गोयम०।।

१३— परणावो 'फूसनंदी' भणी,
ए सगपण जुगतो प्रीतकारी रे ।
तमे जोइजे ते दाम लो,
सगपण प्रशसा भारी रे ।।गोयम०।।

१४— जव राज-पुरुष ने दत्त कहे,
महाराज कृपा करे मोसूं रे ।
तो हूं देवदत्ता ने परणावसू,
इण बात सू पाछो नहीं होसूं रे ।।गोयम०।।

१५— हूं सू क-धन ने स्यू करू,
जो राय करे महरबानी रे ।
इम पुरुष जिमाड़ी सतकार ने,
शिरपाव दियो बात मानी रे ।।गोयम०।।

१६— सीख दिवां की चाविनो,
'वैमसिष राय ने पायो रे।
विवाह माम्या की बातडी,
सब कियो पुरुष प्रकाशो रे ।।गोयम०।।

१७— तिवारे दत्त गाथापति
जिमायां च्यार आहारो रे।
मित्र ज्ञाति कुटुंब ने जिमाय ने,
बहू ने बहु-सत्कारो रे ।।गोयम ।।

१८— शुभ लगन करवा तिलोक मे।
कन्याने स्नान कीय सिणगारो।
सहस्र वाहिनी शीबिका में बेसाण ने
साथे कर बहु परिवारो रे ।।गोयम०।।

१९— बहु मेरी मारकातिक बाजतां
नाच गावनां मंगल-गीतो रे।
'रोहिडा' नगर ने मध्य थई,-
आवा राजा कन्हे इण रीतो रे ।।गोयम०।।

२०— हाथ जोडी राय ने वधाविनो
देवदत्ता ने सूंपी आयो रे।
राजा आई देख हर्षित थयो
मोटको विवाह तयो मंडायो रे ।।गोयम ।।

२१— च्यारे ही आहार निपजाय ने
बहू म्यात कुटुम्ब जिमावी रे।
सत्कारी सन्मान दे
कुंवर 'पुसनंदी' ने सिणगारी रे ।।गोयम०।।

२२— कियो अगन होम चंवरी मध्ये,
कुंवर ने पाणि-ग्रहण करावे रे।
दान दियो बापको मणी
भोग भोगवत बहुली गावे रे ।।गोयम ।।

२३— तात मात मंडाय सू
परणाव्यो रंग रलियां रे।
आपकां ने दान दियो बहु
परिवारवरी सगां ने बलियां रे ।।गोयम०।।

२४— देवदत्ता ना तात मात ने,
-च्यारे ही आहार जिमारी रे।
सीख दीधी सतकार ने,
सिर-पाव गहणा दे भारी रे।।गोयम०।।

२५— हिवे 'फूसनदी' देवदत्ता सूं,
विलसे तिहां भोग उदारो रे।
ऊपर महला छऊ ऋतु तणा,
बाजे मादल ना धुकारो रे।।गोयम०।।

दोहे—

१— हमें ते राजा 'वैश्रमण', काल समे कर काल।
मोटे मडाणे निहरण कियो, सोग थित काई पाल।।

२— 'फूसनदी' राजा थयो, तेज प्रताप-पडूर।
राज ऋध सुख भोगवे, पूर्व पुण्य अकूर।।

३— 'देवदत्ता' सुख भोग, जिहा लग पुण्य नी छाप।
एक चित्त थई साभलो, उदय हुवे किम पाप।।

ढाल—५

(राग - जम्बूद्वीप मझार)

१— 'फूसनदी' राजान,
सिरिदेवी मायनी-
भगती करे अति घणी ए।।

२— प्रथम ऊठ प्रभात,
माय ने पगा पड़े-
विनय भाव लुल लुल करे ए।।

३— पछे सहस्र-पाक शत-पाक,
सुगध तेले करी-
माय तणो मर्दन करे ए।।

४— हाड त्वचा रोम सुहाय-
केश तूटे नहीं-
पछे पाणी सू न्हवराय ने ए।।

१५— ताती अगन ने माहि,
डाडो लोह तणो-
फूल्या केशुला नी परे ए ॥

१६— सडाशा में भाल,
लाई लुकाय ने-
आई सिरी देवी कने ए ॥

१७— शरीर विवर अधो भाग-
माहे प्रखेपियो-
बलतो डाडो लोह तणो ए ॥

१८— मोटा मोटा शवद,
सिरी देवी किया-
वेदन थी काल कर गई ए ॥

१९— असी वरस नी नार,
देवदत्ता हुई-
विषय कर्म इसड़ा किया ए ॥

२०— तिण अवसर ने गम्य,
श्री देवी तणा-
दासी शब्दज सांभल्या ए ॥

२१— आई श्री देवी ने पास,
देवदत्ता भणी-
दीठी पाछी निकलती ए ॥

२२— पासे दासी आय,
श्री देवी भणी-
मूई देख हा हा करे ए ॥

२३— मोटो अकारज होय,
आवी रोवती-
फूसनदी राजा कने ए ॥

२४— राजा ने कहे एम,
श्री देवी भणी-
अकाले मारी सही ए ॥

३५— अस्सी वरस नी आव,
भोगव गोयमा-
रतन-प्रभा नरक जावसी ए ॥

३६— एक सागर नी थित-
मृगा लोढा नी परे-
जाव ससार भमसी घणी ए ॥

३७— भम ने गगापुर माय,
उपजस्ये हस पणे-
जे पखी ने मारसी ए ॥

३८— मार्यो गगापुर माय,
सेठ तणे कुले-
पुत्र पणे ए उपजसी ए ॥

३९— बोध वीज चारित्र पाय,
प्रथम देवलोके-
जाव महाविदेह में सीमस्ये ए ॥

४०— नवमों ए अध्ययन,
दु ख विपाक नो-
सुधर्म स्वामी जम्बू ने कहे ए ॥

४१— सबत अठारे पचवीस,
कार्तिक वद तीय-
'नागोर' रिख 'जयमलजी' कहे ए ॥

(१०)

❀ तेतली पुत्र ❀

दोहा—

१— 'तेतली-पुत्र' प्रधान रा आख्या अणगार भाव।
सूत्र ज्ञाता रे विषे ते सुणज्यो करि चाव॥

ढाल—१

(राग—धन्य हुवे मति उमता रे)

१— कनक-रथ राजा हुतो जी पद्मावती पटराण।
प्रधान तिण रा तेतली जी च्यारूं बुद्धि गये जाण हो—
जंबू भाखे सुधर्मा स्वाम॥

२— तिण 'तेतलीपुर' मे बिसेजी 'कलाद' सोनार नो पूत।
बसतो मूषा भारजा जी धन विनय भरपूर।हो जंबू॥

३— 'पोटिला' तिण रे दीकरी जी जोबन रूप उदार।
म्हाल जोय गवखा पहल मे जी दासी सूं रमे मदक मच्छरा।हो जं॥

४— सोनार नी कुंवरी देखने जी मोह्यो तेतली प्रधान।
सबके मन चटपट्यो जी जब स्वामी चतुर सुजाण॥हो जंबू॥

सोरठा

१— कहे प्रधान इम बात जावो सोनी ने कहो।
पुत्री पोटिला नाम सो परणावो प्रधान ने॥

२— सोनी सुखिया थया मन मांहि हरख्यो घणो।
वे छो म्हारा सेठ परणाई पुत्री आपरी॥

३— मोटे मंडाया ठाट मंगल बजारे चालियो।
विध तेतली न्ये गेह परणाई हरखे घणी॥

४— सोनी पुत्री परणाय पोहतो आपण रे घरे।
तेतली पोटिला हर्षित थाय संसार ना सुख भोगवे॥

५— हिवे 'कनक-रथ' राय मुरछ्यो राज में अति घणो।
करे दुःख अन्याय ते सुणज्यो चित थिर करी॥

ढाल—२

(राग—राजवियां ने राज पियारो)

१— एक एक पुत्र नो हाथ अगूठो
इमहिज आगुली-पाया ।
इमहिज कान ने अगुली छेदे,
इमहिज नाक छेदाया ॥
राजविया ने राज पियारो ॥

२— अग उपाग एक एक छेदे,
खडन बडन कराया ।
तिण कारण इण ने राज न आवे,
कह्यो केहनो न मनाया ॥राज०॥

३— 'पद्मावती' राजा ने इम जाणे,
मरणो कदे नहीं आसी ।
काल तणो कदे नहीं भरोसो
किण विरियां चल जासी ॥राज०॥

४— इसो विचार 'तेतली' ने तेड्यो,
सरव बात परकासी ।
राज-गृद्ध पुत्र-खोड लगावे,
कहो राज-धणी कुण थासी ॥राज०॥

दोहा—

१— प्रधान कहे राणी भणी थांरे हुवे जब पूत ।
म्हाने छाने तेडजो, राज रो बाधू सूत ॥

ढाल—वही

५ — राणी बुलायो ने प्रधान आयो,
कारण किसे बुलायो ।
राणी कहे म्हैं पूरे मासे,
आज पुत्र मैं जायो ॥राज०॥

६— तहत्त करि कुमर हाथे झाल्यो,
दियो 'पोटिला' ने कहे राणी जायो ।

'कमल-ध्वज' राज रो गुढि हुवो
तब संक्रम सुणायो ॥राज ॥

● — ते बेटी पोरिका री राणी मे दीधी
मूर्ई बेटी राणी आई।
राजा सुण ने मोग न कीनो
बेटा तारह विचार्ई ॥राज॰॥

ढाल–२

(कस्टी मिसरा रा विवास न कीजै)

१— प्रधान रा बेटा री बधाई आई
तब राजा हर्षित थायो जी ।
माचली प बंदीवान छुडायो
बोपत गुड करायो जी ॥
दश दिन रो राजा मोसव मांडयी ॥

२— ठीका गज ने साप बचायी
बे नगर ने साप सिणगारी जी ।
बधाइयां बरसीं एवो
गीत गावे करि सिणगारी जी ॥दश ॥

३— घर घर बंदर-माला बांधी
चंदन रा हाथा दिरायो जी ।
थाल भरी भरी गुड बांटी
इसडो मोछव करायो जी ॥दश ॥

दोहे—

१— प्रधान विषम स्थानमें पर मी बुद्धि राख ।
दिन बारमें कुटुम्ब ने जीमाड्यो ते सुविराख ॥

२— कमीवा में मन्त्री कहे, 'कनक-ध्वज' राजा रे धाम ।
जनम क्रिया-तिथि री गुरुी 'कनकरथ' नाम कहाय ॥

३— पांच धायां पालीजतो अच्छो ओलम बध थाय ।
कला सिखर आचार्य कने बहोतर कला भणाय ॥

ढाल-४

(राग—चढो चढो लाड़ा वार म लावो)

१— तेतली ने पोटिला मन में न मानी ,
हिवे जाय न फिरे तिहा कानी ।
जोइजो सभाव इण मन फेरो ॥

पहिलां लागती प्यारी ने ईठी ,
अवे नहीं सुहावे आख्या दीठी ॥जोइजो०॥

२— न सुहावे मा बाप गोत नो नाम,
तो काम-भोग मू केहवो काम ॥जोइजो०॥

किण विध सु पड़ गई अतराय,
सूत्र मे बात चाली नहीं काय ॥जोइजो०॥

३— आरत-ध्यान करे दिन रात,
वैठी देई गलोथे हाथ ॥जोइजो०॥

सोच देखी तेतली बतलावे ,
देवाणुपिया आरत किम ध्यावे ॥जोइजो०॥

४— घर में आवे तिण ने भिक्षा घाली ,
किणहीने मत मेले खाली ॥जोइजो०॥
तब 'सुव्रता' आर्या आई ,
विनय करी बोले 'पोटिला' बाई ॥जोइजो०॥

५— धणी ने हुँती हू कता इट्ठी ,
अबे नहीं सुहावू निजरां दीठी ॥जोइजो०॥
थे फिरो नगर पुर पाटण माय ,
थारो प्रवेश बडा घरा थाय ॥जोइजो०॥

६— थे काई छानो निमत्तज जाणो ,
चूर्ण जोग तणो प्रमाणो ॥जोइजो०॥
वशीकरण कोई राखड़ी डोरो ,
यंत्र मत्र ने जोग निचोड़ो ॥जोइजो०॥

७— जड़ी बूटी कांई गोली कर जाणो ,
म्हारा धणी ने म्हारे वश आणो ॥जोइजो०॥

ढाल—५

(*राग—यतनी*)

१— 'तेतली-पुत्र' सांभल इम वाणी ,
सिणगार सूप्यो कुंवर आणी ।
लोग कहे ए पुत्र साक्षात ,
'कनक-रथ' राय नो अग-जात ॥

२— कहे तेतली एह कुमार ,
राज – लक्षण जोग उदार ।
'कनक-ध्वज' थी अमें छानो राख्यो,
सहू राणा ने भेद भाख्यो ॥

३— इम सुण ने सहू हर्षित थाय ,
कुंवर ने अभिषेक कराय ।
सहू करी मोटे मंडाण ,
हर्ष करी ने राज्य वेसाण ॥

४— 'कनक – रथ' नाम कुमार ,
राज थाप्यो मिल परिवार ।
विचरे छे राज्य करतो ,
हुवो पर्वत जेम महंतो ॥

५— 'पद्मावती' पुत्र ने तेड़ी ,
दे भोलावण प्रधान केरी ।
एह राज कोठार भंडार ,
देश मुलक अतेवर सार ॥

६— एह छे तेतली नो उपगार ,
मोटो कीधो छाने वधार ।
तिण सू आदर घणो दीजे ,
तेतली सू मन माने जेम कीजे ॥

७— मीठो बोले लाज पाले ,
इण ने विमारो मत घाले ।
इण रो कुरब घणो वधारे ,
इण री बिगड़ी बात सुधारे ॥

८— इण भार्या री क्यों चाईजे
थांने जावा ने पहुंचाईजे ।
समझावो करीजे अति भारी
तू इण न नामजे भावी गारी ।।

९— मोटो भायां री बखर न कीजे
गजस्या सिर-पाव मत दीजे ।
प्रमाण करी बोल्यो भाई ।
हूं तो पहिली इण सूं बो राजी ।।

दोहे—

१— अंग कुरब बधियो घणो चाकर नफर करे सेव ।
तिण अवसर वचन रे बांधियो भावी पोट्टिल देव ।।

२— समझावे घणू तेतली अनेक वार - वार ।
राज - भंग डाकियो घणो गूंजे नहीं सिगार ।।

ढाल—६

(राग—धीर सुणो मोरी बीनती)

१— तब पोट्टिला देव मन चिंतवे
समझाऊं म्हो हूं तो किण विध फेर ।
तो मुझ ने सिरे घणो,
अनक-रस सो हो देई मन फेर ।
देव समझावे तेतली ।।

२— राजा बधावो सुआपणा
इण मे पूछी हो करे राज काम ।
राज - धुरंधर जाणियो
तिण सूं कर्मे हो नहीं भावे राज ।।देव।।

३— मनावे तेतली म्हाल ने
गजस्या हो सिर - पाव बखाण ।
घोड़े चढ़ ने नीसर्यो
घणा हुवे हो राज-मुजरे काम ।।देव ।।

४— मिरे वजार मा तेतली,
चाल्यो हो नग रे थाट।
आदर सन्मान देवे घणा,
बिरुदावली हो बोले चारण भाट ॥देव०॥

५— घणे आडंबरे नीसर्यो,
केई चाले हो आगे ने पूठ।
माडवी सेठ साह वाणिया,
मुजरो करे हो सहू ऊठ ऊठ ॥देव०॥

६— शहर माहे इण पर कहे,
कुण छे हो तेतली सम आज।
राऊ करे हो रूठो थको,
पूठो हो सारे वंछित काज ॥देव०॥

७— आयो राजा रे पाखती,
'कन-करथ' हो नहीं बतलाय।
भलो पण जाण्यो नहीं,
मुख फेरी हो बेठो छे राय ॥देव०॥

८— रूठो जाण मुजरो कियो,
नहीं दीधो हो पाछो जवाब।
तब देखी ने डरफियो,
सही गमावे हो माहरी आब ॥देव०॥

दोहा--

१— तब तेतली मन चिन्तवे, राजा रूठो आज।
छाती में धसको पड्यो, किण विध रहसी लाज॥

ढाल—७

(राग—जीव दयाधर्म पालो रे)

१— राणी दीधी भोलावण वाचा रे।
पिण राजा कान रा काचा।
कोई दुपमण काने लागो रे,
मोसू राजा रो मन भागो॥

२— मोने भ्रिय ही कुमोतक मारे रे
बरलो प्रधान विचारे ।
हलुवे हलुवे पाखो गिरियो रे,
भाय चोड़े ऊपर चढ़ियो ॥

३— तेतली-पुर में विचाल र
कोई बासर में नहीं पाले ।
भया विमर गया लोग पूछे रे
कोई बोरठे रा लोग नहीं छूटे ॥

४— कोई विकरावली नहीं बोले रे
सूने चित्त सू मारग डोले ।
चालि भांगण घरे भायो र
पाले भाषर्यां नहीं बतलायो ॥

५— मोहिली परीपरा में भायो रे
बहिन माई नहीं बतलायो ।
समझा रसे भायर नहीं दीपो रे
चित्त ही लटको नहीं कीयो ॥

६— सेजा भाव ने मन में विचारी रे
भासरा पड़ी मो में भारी ।
भातो कारण साकालो रे
भावतां री विगती बालो ॥

७— तो राजा यूरे दमाले मारे रे
तो हूँ किसो पड़ू पाव ने सारे ।
तेतलीपुत्र इम विचारी रे ।
तालपुट विष मन में धारी ॥

ढाल—८

[राग—जगत गुरु त्रिसला नंदन वीर]

१— तालपुट जहर भायनेजी
चाप्यो तालवे सोय ।
तो पिण जहर पाखो नहीं जी
असुत होम जाय ॥
तेतली करवो कवण विचार ॥

२— इमो विष खाधां थकांजी
मरे तीन ताली रे माय।
किण विध मोक्ष सिधावसीजी,
देव कर रयो साय ॥तेतली०॥

३— वीजल-सार तरवार ने जी,
मेली गले पूरे काढ।
बोदो लाकड होय गयोजी,
घणो लगायो छे वाढ ॥तेतली०॥

४— आसोग-वाडी में आयने जी,
गले पासी लीधी ऊठ।
बांधी डाल सू लट कियो जी,
ते पिण गई तूट ॥तेतली०॥

५— तब मोटी शिला बाधने जी,
बावड़ी जल में पडियो जाय।
तो पिण मोत आई नहीं जी,
शिला तूटी बाहिर आय ॥तेतली०॥

६— आग लगाई जुगत सू जी,
पड़ियो तामें जाय।
आग बुझी वा ततक्षणेजी,
टलियो एह उपाय ॥तेतली०॥

दोहा—

१— आरत ध्यान तेतली करे, आई न पाचों मोत।
किण विध जागी तेहनी, जीवन केरी जोत ॥

ढाल—६

[राग—राणी मांड्या ढपला ने सोगो ए]

१— तेतली बैठो आरत ध्याई रे,
पाच मोत तिके नहीं आई।
मैं तो पांच मोत करी छाने रे,
जिका समण माहण नहीं माने ॥

२— म्हारी गोदी खोल करमी हांसो रे,
जो जो 'तेतली नो तमासो।
इम चिंतवी आरत ध्यान रे
एतले पोटिला देवज आवे॥

३— रूप वैक्रिय बनाई रे
प्रधान ने बोले आई।
हाथ लाठी ले आगे आई रे
चित में राख्यो है दुख-दाई॥

४— सूझे नहीं चोर अंधारो रे,
तिण में किम हुवे छुटकारो।
गांव बले तो रन में जावे रे,
रन बले तो गामडे आवे॥

५— दोनों में लायक लागी रे
अब कठे जावगो भागी।
इम संसार में मती मुरझे रे
तेतली प्रधान ने बूझे॥

६— तेतली कहे मैं सूं करस्यो रे
बीहता ने दीक्षा रो सरणो।
भूखा ने भोजन तिरसा ने पाणी रे,
रोगिया ने औषध जाणी॥

७— थाक्या ने वाहण असवारी रे,
तिरयाने वाहण आधारी।
इत्यादिक कथा विचारी रे
सूत्र में भाख्यो अधिकारी॥

८— बीहता ने दीक्षा नो सरणो रे
क्षमा दया सूं पार उतरणो।
पोटिला देव कहे सुध धारी रे,
दीक्षा री मती 'विसारी॥

९— दियो तीन बार कान्ता पाखी रे
देव आयो निज थान थाकी।
तब तेतली पायो शुभ ध्यानो रे
उपनो जाति – समरण ज्ञानो॥

दोहे—

१— तिण अवसर 'तेतली' तणा, आया शुभ परिणाम ।
जाति - समरण ऊपनो, पूरव भव देख्यो ताम ॥

२— इणहिज जबूद्वीप मां, महाविदेह ने मांय ।
'पुखलावती' विजय ने विषे 'पुण्डरीकनी' नगरी कहवाय ॥

३— 'महापद्म' राजा हुवो, थिवरा पासे ली दीख ।
चवदे पूरव भणी करी, पाली गुरु नी सीख ॥

४— इक मासनी सलेखना, 'महाशुक्र' देव लोक ।
काल करीने ऊपनो, आऊ सतरे सागर थोक ॥

ढाल—१०

[राग —विरागी थयो]

१— सातमा स्वर्ग थी चव करी रे,
तेतलीपुर ने रे माय ।
तेतली मुहता ने घरे रे,
सुभद्रा नी कूखे ऊपनो आय रे ॥

२— धन धन जिन धर्म ने रे,
धर्म थकी सीझे काज रे ।
सुख सपदा मिले घणी रे,
पामें शिवपुर राज रे ॥धन०॥

३— तो सिरे मोने साधुपणो रे,
एहवो कीध विचार रे ।
स्वयमेव लोचन करी रे,
पच महाव्रत धार रे ॥धन०॥

४— आयो प्रमदा उद्यान में रे,
अशोक वृक्ष ने हेट ।
पुढवी-शिला-पट ऊपरे रे,
जिहा बेठो चिंता मेट रे ॥धन०॥

५— शुभ विचार करता थका रे,
पाछला भव रे माय ।

चवरे पूरब भक्तिया हुंता रे,
ते सहू गया कराय रे ॥धन०॥

६— ठेतलीपुत्र अणगार ने रे,
आयो रुड़ो ध्यान।
आवरण सब खपाय ने रे,
पायो केवल ज्ञान रे ॥धन ॥

७— तिण अवसर ठेतलीपुत्र ने रे
व्यंतर देवी आय।
केवल नी महिमा करी रे
देव – दुदुभी बजाय रे ॥धन ॥

८— पाँच वरण फूलां तणी रे,
विरखा कर तिण वार।
वाजिंत्र गीत नाटक करी रे,
महिमा करे अपार रे ॥धन ॥

९— 'कनकरथ' राजा सांभली रे,
ठेतली बणो अणगार।
केवल – महिमा सुर करे रे,
आय वंदू बारंबार रे ॥धन ॥

१०— आदर सनमान मैं ना दियो रे,
जाय खमाऊं इण वार।
इम विचारी राजा चालियो रे
चतुरंग सेना लार रे ॥धन ॥

११— प्रमदा – वन उद्यान में र
लिहां आयो महाराय।
ठेतलीपुत्र अणगार ने रे
वंदना करी खमाय रे ॥धन०॥

१२— राजा बेठो सेवा कर रे
मुनिवर दे उपदेश।
आगार ने अणगार नो रे,
बताओ धरम री रेश रे ॥धन०॥

१३— कनकरथ धर्म साभली रे,
ले श्रावक ना व्रत बार ।
जाण हुओ नव-तत्व नो रे,
तेतलीपुर - सरदार रे ॥धन०॥

१४— सामायिक पोसह करे रे,
कनकरथ बहु भाव ।
रागी हुवो जिन-धर्म नो रे,
मुगत जावण रो चाव रे ॥धन०॥

१५— घणा वरस सयम पालने रे,
तेतलीपुत्र मुनिराय ।
आठ करम खपाय ने रे,
मुगती विराज्या जाय रे ॥धन०॥

१६— सुधर्म कहे जबू ! सुणो रे,
एह 'ज्ञाता' ना भाव ।
भगवन्त निश्चय भाखिया रे,
भवि सुणो धर चाव रे ॥धन०॥

१७— सबत अठारे पच्चीस में रे,
नागोर कियो चौमास ।
ऋषि 'जयमलजी' जोड़ करी रे,
सूत्र अनुसारे भास रे ॥धन०॥

घड़िया माटा माटली जी,
बेचण तणो उम्मेद हो ॥जबू०॥

५— घी तेल री मूणा घडेजी,
कोठ्या बहु परमाण।
करवा ढाकण कूंडला जी,
इत्यादिक सब जाण हो ॥जबू०॥

६— दिन प्रते विकरो करे जी,
पोलासपुर रे मझार।
आजीविका करे इण परेजी,
विंभो जिणरे अपार हो ॥जबू०॥

७— गोशालक ना साधा प्रतेजी,
देवे अटलक दान।
उणां ने वदन करेजी,
सेवा पूजा दे सनमान हो ॥जबू०॥

८— जिण सद्दाल तणे हुती जी,
'अग्निमित्रा' नामे नार।
प्रीतम सू अति रागिणी जी,
जोवन रूप उदार हो ॥जबू०॥

दोहे—

१— एक दिवस 'सद्दाल' ते, जाय पाछले पोर।
अशोक-वाड़ी ने मझे, ध्यान करे दिल खोल॥

२— ध्यान गोशाला नो ध्यावता, देव आयो तिण ठाय।
आकाशे ऊभो थको, गुग्घरिया घमकाय॥

३— वचन कहे 'सद्दाल' ने, मीठा और विशाल।
महा-माहण पधार से, वादण जाजे काल॥

ढाल—२

(*राग—जगत गुरु०*)

१— इन्द्रों ना पुजनीक,
मोटा जिनवरू—
मुक्ति नगर ना दायका ए।

१२— गह विचार्यो तेह
वीर समोसर्या।
वादण ने अब जावणो ए।

१३— आभरण मज शिर-पाव,
वादण ने चाल्यो-
जाय ने वन्दणा करी ए।

१४— वीर लियो बतलाय,
तू वाडी मज्के ध्यान-
कर बैठो हुतो ए।

१५— देव कही तुम्क वात,
मुम्क वादण भणी-
तू गोसालो जाणियो ए।

१६— माने आया जाण,
तू देव तणे कह्यो-
वादण इहा आवियो ए।

१७— ए अर्थ समर्थ,
हता साच है-
देव कह्यो - मुम्क आसरे ए।

१८— श्री जिन अवसर देख,
धर्म कथा कही-
सुण सद्दाल हर्षित थयो ए।

१९— वन्दना कर कहे एम,
हाटा पाच से-
तिहा तुम आय समोसर्या ए।

२०— सेजा पाट सथार,
लीजे माहरा-
मन शुद्ध करने कहे ए।

दोहे—

१— प्रभु तीन काल ना जाण छे, छानी नहीं कोई वात ।
हेतु जुगत दृष्टांत दे, समजावे साक्षात ।।
२— वीर सरीखा गुरु मिल्या, अतिशय-धारी आप ।
वचन जिणा रा सरधिया, कटे अभ्यंतर पाप ।।

ढाल—४

[राग—अधर्मी अवनीत]

१— सुण सद्दाल ! तू वाय,
कोई सोटो ले नर आय ।
वासण ताहरे ए,
बटका बटका करे ए ।।

२— कर कर अधिको जोर,
पड पड नाखे फोड़ ।
अस्त्री ताहरी ए,
अग्निमित्रा परी ए ।।

३— पहिर ओढ जल-न्हाय,
सज सिणगार बणाय ।
शोभा गहणा तणी ए,
जलुसायत घणी ए ।।

४— कोई पुरुष अनेरो आय,
काम—भोग विलसाय ।
निजरे थारी पड़े ए,
दड कुण सो करे ए ।।

५— मारू कूट्ट स्वाम,
पाड्डू तिण री माम ।
शिर काटी धरू ए,
जीव-रहित करू ए ।।

६— रावले माहि रुकाय,
धन लू सर्व लुटाय ।

मन वचन काया करी,
पहिलो व्रत इम धारू जी।
वृत्ति करावो श्रावक तणी ॥

२— थापण हूँ राखू नहीं,
कन्या धरती ने गायो जी।
मोटो झूठ बोलू नहीं
कूडी साख न भरायो जी ॥वृत्ति०॥

३— ताले उपर कूची नहीं,
गाठ ने खातर फोडी जी।
लाधी वस्तु नटूं नहीं,
लाऊ न धाडो पाडी जी ॥वृत्ति०॥

४— अग्निमित्रा नारी मोकली,
बीजी रो पचखाणो जी।
बीजा ही त्याग तेविध किया,
आनन्द नी परे जाणो जी ॥वृत्ति०॥

५— बारे ही व्रत इम लिया
नव तत्व भेदज धारो जी।
वीर जिनन्द ने छोड ने,
आयो नगर मजारो जी ॥वृत्ति०॥

६ — इण परे आणे वीर पे,
अग्निमित्रा नारी जी।
धर्म तणी अणुरागिणी,
पति नी आज्ञा-कारी जी ॥वृत्ति०॥

दोहा —

१— नव तत्व हिवड़े में धरी, कर वनणा सन्मान।
धणी धणियानी व्रत लिया, देवे सुपातर दान॥
२— वीर सरीखा गुरु मिल्या, म्हारा मोटा भाग।
बात गोशाले साभली, जाणे लागी छाती में आग॥
३— पोलासपुर में जाय ने, लाऊ पाछो घेर।
वीर नी दृष्टि भमाय ने, म्हारे लाऊ लेर॥

न्हासता आसता जीव ने,
मुगत नगरे घाले हो ॥

८— इण अर्थे माहण कह्या,
सद्दाल सुण वाया हो ।
दूजो परसन पूछू इहा,
'महा-गोप' ज आया हो ॥

९— उत्तर रीतज पाछली,
गोहरी जगल जाय हो ।
गाया रा जतन बहु करे,
रखे कोई ले जाय हो ॥

१०— मोटो डाडो हाथ में,
गाया ने चार हो ।
चोर नाहर सू राख ने,
आण वाड़े दे वार हो ॥

११— इण रीते श्री वीरजी,
भव जीवज गाय हो ।
गोहरी जिम रक्षा करे,
घाले मोख मांय हो ॥

१२— महा-गोवाल इण कारणे,
वले स्वार्थ - वाह हो ।
गोसालो कहे आया हुँता,
अर्थ उणहीज राह हो ॥

१३— कोई सथवाड़ो साथ ले,
पाटण जाण उमावे हो ।
कोई क्रियाणा व्योपार ने,
मो साथे आवे हो ॥

१४— टोटो तो थांने नहीं छे,
नफा रे माय हो ।
इण रीते करार करी,
पाटण ले जाय हो ॥

१२— स्याद्-वाद स्यूं वीरजी
　　　　पाठ्यो जिम मोक्ष हो ।
सुखे समावे पहुंचाय दे
　　　　हाथी समता होय हो ॥

ढाल—७
(राग—स्वामी म्हारा राजा ने धर्म)

१— आया देवाणुप्पिया !
　　　　धर्म-धुराना-नायक हो-भविजण ।
सद्दाल कहे कुण महमा—
　　　　वीर जिणेसर ध्यायक हो-भविजण ।
　　　　　　वीर जिणेसर वंदिये ॥

२— संसार समस्त जीव ने
　　　　आठ करम नो भार हो-भविजण ।
हेतु युगल दृष्टांत दे
　　　　देव पार उतार हो-भविजण ॥वीर ॥

३— मार्ग तणा साथे करी
　　　　देव मोक्ष पहुंचाय हो-भविजण ।
इण भावे सोने कह्यो
　　　　अणगारी जिनराय हो-भविजण ॥वीर ॥

४— पोतमां परस्त इम कहे
　　　　आया महा-निर्याम हो-भविजण ।
सद्दाल कहे किण ने कह्यो
　　　　वीर जिणेसर स्वाम हो-भविजण ॥वीर ॥

५— वीर ने निर्याम किम कहे
　　　　पाछो गोशालो भाखे हो-भविजण ।
संसार समुद्र में डूबता
　　　　धर्म री नाव सूं राखे हो-भविजण ॥वीर ॥

६— जिम निर्याम नावा स्यूं
　　　　समुद्र पार उतारे हो-भविजण ।
तिम भगवंत नावा रोक ने
　　　　सब जीवां ने तारे हो-भविजण ॥वीर ॥

७— सद्दाल कहे थारी बुध घणी,
चतुराई सरसी हो-भवियण।
माहरा धर्माचारज वीरजी,
ज्या सू चरचा करसी हो-भवियण ।।वीर०।।

८— एह अरथ समरथ नहीं,
थाहरा गुरु छे भारी हो-भवियण।
वाद विवाद कर ना सकू,
सुण एक बात हमारी हो-भवियण ।।वीर०।।

९— कोई बलवन्त तरुणो पराक्रमी,
जिण में बहु चतुराई हो-भवियण।
छालो सूयर कूकडो,
तीतर बटेरो थाई हो-भवियण ।।वीर०।।

१०— चीडी कबूतर कागलो,
सिंचाणो वली थाय हो-भवियण।
हाथ पाव पांख पूछडी,
सींग लेवे समाय हो-भवियण ।।वीर०।।

११— रोम झाल सेंठो ग्रहे,
उड न सके चाल हो-भवियण।
तरुण पुरुष निबला प्रते,
सेंठो राखे झाल हो-भवियण ।।वीर०।।

१२— इण दृष्टाते वीरजी,
हेतु जुगत सू जकड़े हो-भवियण।
हूतो बोली ना सकू
कष्ट करी मोने पकड़े हो-भवियण ।।वीर०।।

१३— तिण कारण समरथ नहीं,
प्रभु सु करवा चरचा हो-भवियण।
कुमामदो हमडो करी,
लगाया ते परचा हो-भवियण ।।वीर०।।

१४— सद्दाल कहे मुझ गुरु तणा,
भाव साचा सुणाया हो-भवियण।
ते थानक ने पाटला,
उत्तर इणविध ठाया हो-भवियण ।।वीर०।।

५— धर्म - ध्यान विचारतां,
डरप्यो नहीं लिगारो जी ।
देव जाण्यो मैंठो घणो,
तब बोल्यो चोथी वारोजी ॥एहवा०॥

६— इभो अपत्य-पत्यिया,
काली अमावस रा जायाजी ।
जाव तोनें धर्म न भाजवो,
पिण हूँ भजावसू भायाजी ॥एहवा०॥

७— अग्गिमित्ता थारी भारजा
धर्म-साज देवण-हारी जी ।
डिगला ने मेंठो करे
सम सुख दुख सहन-वारीजी ॥एहवा०॥

८— थारे आगे मारसूं,
ते घरमा सू लायो जी ।
नव मुला कर मास ना,
कडायला माय तलायोजी ॥एहवा०॥

९— थारो गातज सींचसू,
मास लोही कर चालो जी ।
आहट दोहट वशे पड्यो,
तू ऊरजासी कालो जी ॥एहवा०॥

१०— पिण सद्दाल डर्यो नहीं,
धरम-ध्यान में सेंठो जी ।
दूजी तीजी वार जाणियो,
एतो म्हारे छे बेठो बेठो जी ॥एहवा०॥

११— इण तीन पुत्रां ने मारिया,
दुख दीधो तिण ठायो जी ।
मारी चाहे मुझ नार ने,
धर्म नो साहज दिरायो जी ॥एहवा०॥

———

ढाल—११

(राग—मनोरमा संभरजी हो सा)

१— तिण कारण सिरे मो भणी हो—भविअण
इण पुरुष ने छोडूं म्हाज ।
एम विचारी उठिया हो—भविअण
देव गयो उड भाज ॥
धन धन वीर ने हो—भविअण
दृढ़ धर्मी सद्दाल ॥

२— बेठ्या पछी सद्दाल ने हो—भविअण
थांभो पकड्यो आय ।
देव चली उडतो रह्यो हो—भविअण
शब्द कोलाहल कराय ॥धन ॥

३— 'अगिमित्रा' भार्या सुणयो हो—भविअण
इसो कीधो केम ।
अध निशा में किम थका हो—भविअण
तो भणी पुकार ने केम ॥धन ॥

४— भार्या ने नारी कहे हो—भविअण
कोलाहल केम कराय ।
बेटा नारी तणा हो—भविअण
सहु ही बात सुणाय ॥धन ॥

५— नारी कहे पुत्र तीनूं सुखी हो—भविअण
सूता छे घर मांय ।
है भाई भरि मन हो—भविअण
किसो उपसर्ग सुर कोई थाय ॥धन ॥

६— तिण कारण देवाणुप्पिया हो—भविअण
व्रत ने पोसह भाग ।
आलोयणा लो मन माह ने हो—भविअण
म्हारे वासू धर्म नो राग ॥धन ॥

७— ग्यान जाण प्रायश्चित लियो हो—भविअण
श्रावक प्रतिमा आराध ।

वीस वरस व्रत पालने हो-भविरयण,
निज आतम ने साध ॥धन०॥

८— एक मास अणसण करी हो-भवियण,
गयो प्रथम देवलोक।
च्यार पल्योपम आउखे हो-भवियण,
चवने जासी मोख ॥धन०॥

९— उपासक दशा मध्ये हो-भवियण,
अध्ययन सात में भाख।
तिण अनुसारे ऋषि 'जयमलजी' कही हो-भवियण,
वाचजो जयणा राख ॥धन०॥

१०— सवत अठारे पचीस में हो-भवियण,
नागोर शहर चौमास।
जोड करी ए जुगत सूं हो-भवियण,
श्री जिन वचन प्रकाश ॥धन०॥

---

(१४)

❀ श्रावक-महाशतक ❀

दोहा—

१— अरिहत देव आराधिये, गुरु गिरवा गुणधार।
अज्ञान - तिमिर दूरे हरे, पहुचावे भव-पार॥

२— राजगृही नामे नगर, श्रेणिक नामे राय।
'महाशतक' श्रावक वसे, रिद्धे दीपतो थाय॥

३— आठ कोटी धरती ममे आठ कोटि व्यापार।
आठ कोड घर-वीखरो, गाया अस्सी हजार॥

४— तेहरे तेने भारिया, रेवती देई आद।
पीहर थी तेरह जणी, ल्याई गाया जाद॥

ढाल—१

१— रेवती नामे नार,
निज पिहर थकी ल्याई।
आठ कोड़ी सोवन तणी प।

२— गायां अस्सी हजार
ल्याई पीहर थी।
शेष नार कोड़ि ही प॥

३— गायां दश हजार
ल्याई एकीकी—
पीहर सेती सुख भोगवै प।

४— तिण काल महावीर,
राजगृही तणां
गुण-शिल चैत्य समोसर्या प॥

५— महाशतक वंदण जाय
आणंद नी परे,
श्रावक धर्म सरध धारयों प॥

६— बारह व्रत लीना सार
शुद्ध मन तत्व व्रत धारने—
पोषद पडिकमणो करे प॥

७— विगयी रिध विसतार,
कहीजे आणंद थी—
सावधान करणी करे प॥

८— नित प्रति करे दान
दोय सोनैया तणी।
धर्म व्यापार, सुख भोगवो प॥

९— महाशतक हुओ श्रावक
चवदं प्रकार नो—
धन दान सुपात्रां प॥

१०— भगवन्त श्री महावीर,
विहार बाहिर कियो
भव जीवां उपगार मे प॥

११— हिवे रेवती नार,
आधी रात रा-
कुटुम्ब-जागरण जागतां ए ॥

१२— सकल्प विकल्प भाव,
मन में ऊपना-
शोका बारह म्हारे मावटी ए ॥

१३— म्होने पडे व्याघात,
भोग जे भोगवू-
वारो मोढो आवही ए ॥

१४— तो सिरे मोने ए शोक,
शस्त्र जहर थी-
जीविया ववरोविया करू ए ॥

१५— एहवी सोनैया नी कोड़,
गोकुल गाया ना-
हूँ स्वयमेव लेई विचरसू ए ॥

१६— एहवो मन में धार,
छल छिद्र जोवती-
विचरे झाकती ताकती ए ॥

१७— एक दिन अवसर देख,
छऊ शस्त्रे करी-
छऊ ए मारी जहरे करी ए ॥

१८— बारह सोवन कोडि,
गोकुल बारह सार-
रेवती आपण लिया ए ॥

१९— महाशतक श्रावक साथ,
भोग ससार ना-
भोगवती विचरे सही ए ॥

२०— श्रावक ऐसो गम्भीर,
मरम नारी तणो ए-
बाहिर बात फैली नहीं ए ॥

२१— श्रेणिक सरीखा राय
चोखा म्हारा मां-
मनरव इसड़ा म्हाना ए ॥

दोहे—

१— तिण अवसर है रेवती मांस नी लोलुप जाण ।
बेसवार पाक रांध मे शंका मूका जाण ॥
२— पीवे दारू व बात मा झाकी रहे दिन रात ।
घर नहीं पर-भव तणो निवरत है इण मांत ॥
३— तिण काले श्रेणिक तणो किधो ढिंढोरो सोय ।
राजगृही नगरी मझे, जीव म मारो कोय ॥
४— रेवती ने मांस बिन, चालमी रह्यो न जाय ।
अध्यवसाय तेहिज रहे कुपल हुवे बल जाय ॥

ढाल—२

(राग—रोप्यो है चंपापुर नगरी)

१— सेवक पुरुष ने तजने
रेवती हुक्म कराओ रे ।
पीहर मा गोकुल मझे
रोज बछड़ा वध लाओ रे ॥
२— जायजो रे करम विटंबना
है मावक मे घर मारी रे ।
संगत सू सुधरी नहीं
पोते करम है चीकणा भारी रे ॥जोवजो०॥
३— हुकम मे बेगा जाय वे
सेवक करे मनायो रे ।
नित नित दोय बाछड़ा मारने,
सूंपे रेवती ने लायो रे ॥जोवजो ॥
४— मांस तणा शूला करी
तले सेव मे खावे रे ।
इ प्रकार ना दारू पीवती थकी
इण पर काल गमावे रे ॥जोवजो०॥

५— हिवे महाशतक साहसिक घणू',
व्रत पाले मन रलिया रे।
क्रिया करतूत करतां थका,
चवदे बरस नीकलिया रे ॥जोयजो०॥

६— बरस पनरमें बरत ता थका,
न्यात जीमाय धन आपी रे।
काम काज भोलावियो,
घर-भार पुत्र ने थापी रे ॥जोयजो०॥

७— इग्यारे पड़िमां बहता थकां,
बैठो पोसह ठाई रे।
धरम - ध्यान धरता थका,
हिवे रेवती किण विध आई रे ॥जोइजो०॥

८— मद पीई ने छाकी थकी,
विखर्या मस्तक ना केशो रे।
आधे माथे ऊटणो,
पोषध-शाल कियो प्रवेशो रे ॥जोयजो०॥

९— जिहा 'महाशतक' श्रावक हुँतो,
आई है चलायो रे।
मोह माया फन करती थकी,
टिमकारी आख बोले वायो रे ॥जोयजो०॥

१०— हतो महाशतक श्रावक,
तू धर्म पुण्य नो कामी रे।
वले कामी स्वर्ग मोक्ष नो,
इम सारा नो इच्छुक नामी रे ॥जोयजो०॥

११— जो मो सू भोग न भोगवे,
तो किस्यू देवानुप्रिया रे।
धर्म पुण्य स्वर्ग मोक्ष छे,
जो मोसू भोग न किया रे ॥जोयजो०॥

१२— इम सुण 'महाशतक' श्रावके,
नो श्रद्धाई नो परजाणी रे।
दुष्ट भाव देखी करी,
मुख थकी न बोल्यो वाणी रे ॥जोयजो०॥

१३— धर्म-ध्यान ध्यातो रह्यो
तब भूखी तीजी वार बोली रे।
तो पिण मन काई रह्यो
मन न किन्यो डावा-डोली रे ॥ओयजो ॥

१४— आदर सम्मान न दीयो आवने
घाई ज्यू पाछी पाछी रे।
धरम में सेंठा रह्या
श्रो श्रावक नी गाथा नहीं काची रे ॥ओयजो

दोहा—

१— छिव ते महाशतक श्रावक, इग्यारे ही पडिम आराध।
सूत्र माहि कही जिमी सरब भाव सू साध ॥
२— उदार तप मोटो करी देही की कंकर-भूत।
अथ रात धर्म जागतां हुवा संथारा ना सूत ॥
३— देह हुई मम दूबली विचरत है जिन-राव।
धर्माचार्यजी माहरा तो हूं रे संथारो ठाम ॥
४— इम करी विचारणा पोषध-शाला आय।
डाभादिक बिछायन पर्यंकासन बेसाय ॥

ढाल-२

१— नमोत्थु णं दीय अरिहंत ने
कीजो सिद्धांनि दीधा जी।
च्यारूं आहार आव जीव पचखिया
त्रिविध त्रिविध व्रत कीधो जी ॥
२— घन घन करणी घन जिन-धर्म ने
जिण थी पामे मोक्षोजी।
आव जेवा मां रह रक्षो आफ में
रहे आय समता पोखोजी ॥घन ॥
३— न्हु कांत काया ने परीहरी
छेले मास ध्यासो जी।
आसार्द्र शुद्ध निराशव थइ
पद गुण्ठ नी आमेजी ॥घन ॥

४— इण रीते सथारे विचरता,
ध्यावत रूडो ध्यानों जी।
ईहापोह करत विचारणा,
ऊपनो अवधि - ज्ञानोजी ॥धन०॥

५— हजार जोजन देखे पूरव दिसे,
दक्षिण पश्चिम एमोजी।
उत्तर चूल-हेमवत पर्वत लगे,
प्रथम देवलोक-ध्वजा तेमोजी ॥धन०॥

६— हेठे देखे रतन - प्रभा तणो,
लोलुच्चय नरकावासो जी।
चौरासी सहस्र वरस ने आऊखे,
इतरो दीठो प्रकाशोजी ॥धन०॥

७— इण अवसर वली नारी रेवती,
आई महाशतक पासोजी।
वचन बोली जे पहले नी परे,
सर्व कह्या ते प्रकाशोजी ॥धन०॥

८— एक बोल्या क्षमता करी,
बोली दोय त्रण वारोजी।
महाशतक वचन ए सांभली,
ऊपनो क्रोध अपारोजी, ॥धन०॥

९— अवधि - ज्ञान प्रयू जी ने कहे,
दुष्ट निलज सुण नारो ए।
धणियाणी माठा लखण तणी,
अकृत-पुण्यनी अपारो ए ॥धन०॥

१०— अलस तणो रोगे व्यापी थकी,
सात दिवस ने माह्योजी।
काल ने अवसर काल पूरो करी,
पड़सी रतन-प्रभा नरक जायोजी ॥धन०॥

११— लोलुच्चय नरकावास मझे,
वरस चोरासी हजारो जी।
एहवी थिति ना दुख भोग से,
इम भमसी ससारोजी ॥धन०॥

दोहे—

१— पहला पचखाण सांभली पसीज रूपी नार।
मद सारो उतर गयो रूठो श्रावक अपार॥

२— हाय हाय करती थकी चिंतातुर हुई अपार।
किण विध मरस्यो आपसी श्रावक दीध सराप॥

३— रूपी त्रास पामी थकी पाछी हटके जाय।
आई निज आवास में बैठी चिंता मांय॥

४— तिण अवसर रेवती ने अलस नाम महारोग।
उपनो द्वार रूपां तणा आर्त्त-ध्यान परि सोग॥

५— काल करी ने रेवती रत्नप्रभा रे मांय।
सहस चौरासी बरस आऊखे, लोलुच्चय में उपजाय॥

ढाल–४

(राग—कपूर हुवे अति ऊजलो रे लाल)

१— राजगृही रा बाग में
भगवन्त श्री महावीर हो भविजन।
समोसर्या जिनराज जी
परिषदा गई तिहां जिहां वीर हो भविजन।

२— अणगारी इणरी कहे
रमण काढया न हुस हो भविजन।
कुछ साधु ने कुछ श्रावक
लिया सिखामण देख हो भविजन ॥उप॥

३— गौतम ने तेड़ी कहे
इण राजगृही रे मांय हो गौतम।
अतिवासी श्रावक माहरो
महाशतक श्रावक कहाय हो गौतम ॥उप॥

४— अब काल संलेखणा
पचखाण करे ही आहार हो गौतम।
अवधिज्ञान तेहने उपनो
मन भयो विस्तार हो गौतम ॥उप॥

५— रेवती उपसर्ग किया,
खमियो पहली वार हो गौतम ।
दूजे उपसर्गे क्रोध ऊपनो,
कह्या छता आख्या फाड हो गौतम ॥उप०॥

६— छता भाव कह्या तिणे,
तिण लागा मरम प्रहार हो गौतम ।
जा तू महाशतक ने घरे,
सर्व कहे इम वार हो गौतम ॥उप०॥

७— इन्द्रभूति प्रणाम कर,
गया महाशतक आवास हो भवियण ।
देखी ने हरस्यो घणो,
वन्दणा करी उल्लास हो भवियण ॥उप०॥

८— गौतम कहे देवाणुप्पिया !
क्रोधे बोल्यो सथारे ने माय हो भवियण ।
रेवती ने करडा लगा,
जेहनो प्रायछित लिराय हो-भवियण ॥उप०॥

९— गौतम ना वचन प्रमाण कर,
महाशतक प्रायछित लीध हो-भवियण ।
गौतम पाछा वल्या,
आय वीर ने वन्दणा कीध हो-भवियण ॥उप०॥

१०— वीस वरस श्रावक पणे,
इग्यारे पडिमा आराध हो भवियण ।
सथारो इक मास नो,
सरधा वैराग जाद हो भवियण ॥उप०॥

११— साठ भगत अणसण छेद ने,
काले अवसर कर काल हो भवियण ।
प्रथम देव लोगे ऊपनो,
अरुणावतसक विशाल हो-भवियण ॥उप०॥

१२— च्यार पल्योपम आउखे,
चवि महाविदेह क्षेत्र माय हो भवियण ।

मर्या मंझारां में रूपजे
छीजसी कर्म अपार हो—भविजण ।।ज० ।।

११— 'उवासग-दसा' सूत्र में,
आठमें अध्ययन रा भाव हो भविजण ।
ते अनुसारे पूज्य जयमलजी कहे
चतुर सुणो धरि भाव हो भविजण ।।ज० ।।

(१५)

❁ अर्जुनमाली ❁

दोहे—

१— वर्धमान जिनवर नमूं सब-जीव-सुखदाय ।
नाम सुणत सोभाग ह्वे भूल भवानी जाय ।।
२— जंबूद्वीप रे भरत में मगध-देश मझार ।
'राजगृही' रलियामणी रिद्धि तणो विसतार ।।
३— 'अर्जुन मालाकार तणो कहसूं चरित विशेष ।
एक-मना थइ सांभलो छोडो राग ने द्वेष ।।
४— राजगृही नगरी हुती 'श्रेणिक नामा राय ।
जेहने राणी 'चेलणा' 'गुणशिला' बाग कहाय ।।
५— 'अर्जुन' मालाकार वसे अतिवंत धनवंत ।
बंधुमती है भारजा रूपवती गुणवंत ।।
६— नगर बाहिर वाडी भली अर्जुन तणी थी एक ।
पांच वरण फूलां करी शोभ रही अतिरेक ।।
७— तिण पासे देवल हुतो 'मोगर' यक्ष नो वास ।
भर्यां पूजा नीम नो साचो देव प्रमाण ।।
८— दादा परदादा करी पर पीढ्यां लग लोप ।
अर्जुन पिण हमेसिज करे, विविध फूल पुज सोय ।।

ढाल-१

(राग—पुण्य तणा फल मीठा जाणो)

१— राजगृही नगरी अति सुन्दर,
माथा रा तिलक समान री माई।
एक कोड ने छरासठ लाख गाव,
लागे ज्यारी धूम री माई ॥पुण्य०॥

२— श्रेणिक राजा राज करे छे,
सुखिया वसे बहु लोग री माई।
'अतगड' सूतर माही चाल्यो,
तिण रो बहु विसतार री माई ॥पुण्य०॥

३— तिण मांही नालदो पाडो,
तिण रो छे बहु मान री माई।
चवदे तो चौमासा कीधा,
भगवन्त श्री वर्धमान री माई ॥पुण्य०॥

४— श्रेणिक राजा, चेलना राणी,
भलो ज्यारो अधिकार री माई।
तिण रे मूडा आगल हुता,
मत्री 'अभय' कुमार री माई ॥पुण्य०॥

५— लाखां घर ने घणा कोडी-धज,
एहवी रिध विस्तार री माई।
सेठ सेनापति वसे तिण ठामे,
शालिभद्र परिवार री माई ॥पुण्य०॥

६— पूरब भव गवालज केरे,
दियो दानज खीर री माई।
तिण सू पुण्यज इसड़ा वधिया
घाली 'गोभद्र' सेठ घरे सीर री माई ॥पुण्य०॥

७— सेठ सुदर्शन वसे तिण में,
धरम करण ने धीर री माई।
उण उपसर्ग में वादण जासी,
भगवत श्री महावीर री माई ॥पुण्य०॥

दोहे—

१— जिण काले ने तिण समै, छे गोठीला जाण ।
राज हुकम दीधो पछे न माने किण री काण ॥

२— धन जोबन अरु राजपद पामी ने बहुला साज ।
करे अकारज नगर में छोड़ी सगली लाज ॥

ढाल—२

(राग—[illegible])

१— हजार पगों नो करियो
बड़े सुन्दर रहे छे भरियो ।
आप करे नित अर्जुन पूजा
पछे काम करे कोई दूजा ॥

२— देव ने फल फूल चढ़ाय
पीछे शहर में बेचवा जाय ।
छह पुरुष छे गोठीला
बसे छे छेल छबीला ॥

३— 'ललिता' नाम मांहोमांही
छह मित्र ने पक्की कराई ।
छह आपस्ये करि चाले
श्रेणिक राजा नहीं पाले ॥

४— श्रेणिक पिण आज्ञा आपी
तिण सू विचरे आपी थापी ।
काम-लंपटी करे है अकाज
छोड़ी माय बाप नी लाज ॥

५— एकदा राजगृही में मोज
मनोज महोत्सव मंडाय ।
तिण अवसर अर्जुन माली
गयो पूजा ने दिन उजासी ॥

६— बंधुमती भामा भारी
फल फूल लिया तैयारी ।

बेहूँ जणा छाब भराई ,
जख देवल समीपे आई ॥

७— छऊ गोठीला आई ,
बैठा जाव देवल माई ।
माली मालण जातां दीठा ,
विषय जाणे आख्यां अदीठा ॥

८— माहोमाही बात बनावे ,
जख ने ओ जद फूल चढावे ।
हाथ लाबा कर देसी धोक ,
जब कर लेस्या दोनू रोक ॥

६— पछे भोगस्यां भोग उदारा ,
सगला मिलने इम धारा ।
छिप रहो छाने इण ठोरो ,
छींक खांस रो रहे न जोरो ॥

१०— इम कही ने लुक बैठा ,
माली मालण देवल में पैठा ।
जख ने फल फूल चढाय ,
धणी नीची नमाई काय ॥

११ — जख रो विनय कियो बहु भातो,
छहू निकल पकडया हाथो ।
बाधी ने अपूठो लीधो ,
इसड़ो अकारज कीधो ॥

१२— बधुमती नामे नारी ,
छहू भोगवे भोग उदारी ।
जे सेंठी होती नारी ,
तो कर न सकता जारी ॥

१३— छऊ मिल एको कीधो ,
तिहां जोर परीषो दीधो ।
वारी देखे छे आ नारी ,
नहीं राखी शील नी वाडी॥

२२— हूँतो याने नजर दिखाऊ ।
इण काची बात न जाऊ ॥
देव क्रोध तणे वश थायो ,
पैठो अर्जुन रा डील मायो ॥

२३— जख परतख कीधी सहाय ,
इण रे पेस गयो दिल माय ॥
सबलो कीधो जारो ,
तडक नाख्या बधण तोडो ॥

२४— सहस पल नो सहमाय ,
छऊ पुरुसाने नाख्या ढाय ॥
सातमी नारी ने मारी ,
मरने रुलिया ससारी ॥

२५— छऊ पुरुप सातमी नारी ,
इसी 'श्रेणिक'ने गई पुकारी ॥
श्रेणिक नो जोर न लागे ,
इण जख अर्जुन रे आगे ॥

दोहे—

१— बधण तो तूटा थका अर्जुन वो तिण वार ।
मुद्गर लीधो हाथ में, निकल्यो देवल बार ॥
२— राजगृही दोलो फिरे, घणाज मारग जाण ।
नरनारी वेहूँ तणी, फिरेज करतो हाण ॥
३— गोठीला ने बरज तो, श्रेणिक नामा राय ।
तो इतरा मिनखा तणो, कोने अनरथ थाय ॥
४— होण पदारथ ना मिटे, परतख देखो जोय ।
मोत आई मिनखां तणो, राख न सकिया कोय ॥
५— जाय राजा ने वीनव्यो, सांभलजो नृप ! बात ।
अर्जुन माली एहवो, करे घणा री घात ॥
६— श्रेणिक राजा सांभली, बीनो अथग अपार ।
लोगां ने बरजो परा, मती निकलजो बार ॥

७— श्रेणिक सेवक ने कहे राजगृही में जाय ।
इसी करो उद्घोषणा सावधान सब थाय ॥

८— काम काज फल फूल ने पाणी तृण कठ-भार ॥
नगर बार जो जावसी अर्जुन करसी मार ।

९— इसी करो उद्घोषणा शोक और भय भार ॥
आज्ञा पाछी सूंपजो बेठो निज में धार ।

१०— कर उद्घोषणा नगर में कहि श्रेणिक ने आय ।
बात सुदर्शन सेठजी ए सुणजो चित लाय ॥

ढाल-३

(राग—चन्द्र गुप्त राजा सुणो)

१— राजगृही नगरी मझे,
बसे 'सुदर्शन' सेठो रे ।
ऋद्धि दान करी दीपतो
धर्मा करमा सब हेठो रे ॥

२— श्रावक-करणी नो धणी
जिन वचने अनुरक्तो रे ।
समकित मां डेठो घणो
कोई पाखंडी नो भक्तो रे ॥श्रावक॥

३— साधो रो सेवग हुवो
श्रावक नव तत्व धारी रे ।
जीव अजीव ने ओलखता
पुण्य पाप सुविचारी रे ॥श्रावक०॥

४— आस्रव संवर निर्जरा
बंध मोक्ष रो जाणो रे ।
नव तत्व धारी निर्मलो
तरी सकिये जिण जाणो रे ॥श्रावक०॥

५— सुरासुर सब आयने
धरम सेती चलावे रे ।
पिण ते डिगाये ना डिगे
शूर वीर कहलावे रे ॥श्रावक॥

६— निर्मो फिटक ज्यों ऊजलो,
पोसा पडिकमणा सारा जी।
दान दे चवदे प्रकारनो,
खुला राखे अभग दुवाराजी ॥श्रावक०॥

दोहे—

१— तिण अवसर वर्धमान जिन, समोसर्या तिण ठाम।
उतर्या गुणशिल बाग में, सुण हर्ष्या जन ताम ॥
२— नगरी में वाता करे, नाम लिया निसतार।
दरसण नो कहियो किसो, इसडो करे विचार ॥
३— सुदर्शन लोगा कने, सुणी वीर नी वात।
समोसर्या है बाग में, एम सुणी हरसात ॥
४— मन में ऐसी ऊपनी, वादू वीर-सुपाय।
किण विध लेऊ आगन्या, मात तात सू जाय ॥

ढाल—४

(राग—तुम जोयजो रे स्वारथ नी सगाई)

१— वचन सुणी राय पुरुष ना, वीना लोग अमापो जी।
बारे कोई जावो मती, माहे रहो चुप-चापो जी ॥
तुम जोयजो रे भय मरवा तणो ॥
२— तिण काले ने तिण समे, भगवन्त श्री वर्धमानो जी।
राजगृही समोसर्या, पूरो ज्यारो ज्ञानो जी ॥तुम०॥
३— गौतम स्वामी आदि दे चवद सहस अणगारो जी।
चदनबाला आदि दे, छत्तीस सहस परिवारो जी ॥तुम०॥
४— इत्यादिक परिवार सू, उतर्या बाग रे मायो जी।
नाम गोतर सुणियां थका, पातक दूर पलायो जी ॥तुम०॥
५— मांहोमाही वाता करे, वीर पधार्या बागो जी।
बाहर न जावे वादवा, मरण तणो भय लागो जी ॥तुम०॥
६— सेठ सुदर्शन साभल्यो, वीर पधार्या आजो जी।
हरस हिये में ऊपनो, तारण-तिरण-जहाजो जी ॥तुम०॥

९— ए मदिर धन मालिया री, पाम्या अनती बार।
दरसण दोरो वीर नो रे, म्हारा जीव तणो आधार ॥रे मा० अ०॥

१०—आसता जिण धरम री ए,
जे मन में निश्चल होय।
देव दाणव कोई मानवी रे,
गञ न सके कोय ॥री मा० अ०॥

११ उत्तर पड्डुत्तर हुआ घणा जी, बाप ने वेटा जी माय।
जाव शवद आया पछे रे, कहे तुम सुख थाय॥
रे जाया मायडी दियो रे आदेश॥

दोहे—

१— मा बाप नी आज्ञा थकिं, हरख्यो मन रे मांय।
वीर प्रभू ने वादवा, चाह लगी दिल मांय॥
२— सीनान सपाड़ो कियो, भारी कपडा पहर।
गहणा पहर्या बहुविधा, निकल्यो मध्य शहर॥
३— उर दिन जाता सेठ रे, लारे हुता विशेष।
आज प्रभु ने वान्दवा, चाल्यो एकाएक॥
४— बीजो कोई न निकल्यो, वीर वान्दवा ग्राम।
लोक सहू देखी रह्या, बोले वाणी ताम॥

ढाल—६

(राग वे वे तो मुनिवर वहरण पांगुर्या रे)

१— कोई नर-नारी मुख सू इम कहे रे।
नाम करम को भूखो सेठ रे।
खबर पड़ेली बाहिर नीकल्या रे,
पडसी ओ अर्जुन माली री फेट रे॥

२— जोयजो रे अवगुण-गारा एहवा रे,
गुण, ने तो कर देवे छे दूर रे।
पिण साता बरतासी सारा नगर में रे,
पिण निन्दा सू विगड़े मुख नो नूर रे ॥जो०॥

११— अर्जुन सेठ आवतो देखने रे,
क्रोध में धम धमियो तिण वार रे।
सहसपल नो मुद्गर हाथे लई रे,
आयो छे राता लोयण काढ़ रे ॥जो०॥

१२— सूरो सुदर्शन अर्जुन देखने रे,
तरास्यो न डर्‌यो एक लिगार रे।
साहृ करू हिव मारी देहनी रे,
रखे अणचिंत्यो नाखे मार रे ॥जो०॥

दोहे—

१— एहो मुद्गर झाल ने, सामो आयो धाय।
सेठ अडिग रेयो किकर, ते सुणजो चित लाय ॥
२— उपसर्ग आयो एहवो, करडो बण्यो छे काम।
सागारी अणसण करू, मन राखी निज ठाम ॥
३— ज्ञानी जन ते जानिये, चेते अवसर पाय।
किण विध सथारो करे, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल-७

(राग – कपूर हुवे अति ऊजलो)

१— कपड़ा सू धरती पूजने रे,
ऊभो रह्यो तिण वार।
मुजने उपसर्ग आवियो रे,
देख रया जिण-राय ॥
जिणेसर आप तणो आधार ॥

२— इण उपसर्ग थी जो बचू जी,
तो लेणो अन-पाण।
नहिंतर मुझ ने आजथी जी,
जाव-जीव पचखाण ॥जि०॥

३— हिवडां व्रत म्हैं आदर्या जी,
थांरे मूडे सार।
हिवड़ा व्रत म्हारे इमीज छे जी,
त्रिविध त्रिविध प्रकार ॥जि०॥

२— भव-थित पाकी हो भव तणी,
रूडी समकित थाय हो ।
सा० तिणसू बिगड्यो सूधरे,
हीवे अमरापुर जाय हो ॥सा०॥

३— बलता सेठजी इम कहे,
सुदर्शन म्हारो नाम हो ।
साहिब-धरम-आचारज माहरा,
म्हैं जाऊ उण ठाम हो ॥सा०॥

४— गुणसिल नामा बाग में,
भगवन्त श्री वर्धमान हो ।
अर्जुन ! ज्या ने जी वादण जावणो
पूरो ज्यांरो ज्ञान हो ॥सा०॥

५— वदन करसू प्रभूजी ने,
सुण अर्जुन म्हारी बात हो ।
सा० वाछू देवाणुप्पिया !
वीर वादू तुम साथ हो ॥सा०॥

६— सेठ कहे ढील मत करो,
जिम सुधरे सारो काज हो ।
अ० जेज मत कर वीर वान्दवा
साथे चलो मम आज हो ॥

७— सेठ अर्जुन दोन्यू जणा,
चाल्या जाय सतुट्ठ हो ।
सा० राजगृही नगरी मझे,
हुई छूटा छूट हो ॥सा०॥

८— सेठ सुदर्शन एहवो,
नाख्यो सकट खोय हो ।
सा० लोगा में हुवो दीपतो,
दृढ धरमी विरला होय हो ॥सा०॥

दोहा—

१— गुणसिल नामा बाग में आया श्री जिन वीर ।
भाव – सहित वंदू करे सेवा साहस धीर ॥

२— सेठ सुखी पाछा गयो ऊभो अर्जुन आय ।
हाथ जोड़ ने इम कहे, अंतर बात बताय ॥

३— मन लागे संसार सी लेसू संजम भार ।
मनोरथी सू काढ दो मोटा गुण – भंडार ॥

४— वीर कहे जल्दी करो सुणने हर्षित थाय ।
स्वयं एक लुंचन करी सिर ईसाण आय ॥

५— जिण दिन दीक्षा धारली बलका करी प्रतीज ।
बेले बेले पारणो करायणो आव – जीव ॥

ढाल—६

[राग—चतुष्पदी]

१— वीर कहे जिम सुख सुख थाय
छठ छठ पारणो दियो कराय ।
पारणे वीर समीपे आय ।
आज्ञा लेवो जिम गोचरी जाय ॥

२— आज्ञा दीधी गोचरी जाय
तीजे पहर जिम गौतम मुनिराय ।
ऊंच नीच मध्यम कुल मांय ।
राजगृही में अटन कराय ॥

३— गोचरी करतां लोग लुगाई
बाल जवान वृद्ध मिल आई ।
इण मार्या मुझ पिता ने भाई
बहन भार्या पुत्र ने माई ॥

४— बेटा री बहू ने इण मारी
दीया सेवा सगा परिवारी ।
इम कही ने आक्रन्ता हुवा
निंदा कर कर आल विगोवा ॥

५— अवगुण बोल करे बहु कष्ट,
ताज ताजणा बहु दे कष्ट।
लोग लुगाई बोले करडा।
अर्जुन भाव रक्खे सरला॥

६— भात लाभे न लाभे पाणी,
पाणी मिले तो अन्न न जाणी।
मन वचन वश राखे काया।
ले गोचरी बाग में आया॥

७— मैं तो जीव सू मार्या इम जाणे,
गाल मार सू समता आणे।
राग-द्वेष रहित सिख वाणी,
नगरी में भिक्षा को समुदानी॥

८— आण गोचरी वीर ने दिखावे,
आज्ञा दीधां मूरछा रहित खावे।
आहार करता न लगावे पाप,
बिल माहे ज्यू धस जावे साप॥

९— अर्जुन इस्यो उग्र तप कीधो,
'अंतगड' माहे कह्यो प्रसिद्धो।
छ महिना लग चारित्र पाल्यो,
अर्धमास रो मथारो सभाल्यो॥

१०— तीस भत्तग रो अणसण कीधो,
आठू करमा ने निसिद्धो।
केवल लई गया शिवपुर माही,
जरा-मरण नो अत कराई॥

११— 'अतगड' माय कयो निचोडो,
तिण अनुसारे रिख जयमलजी' जोड़ो।
अट्ठारा सातविसा माय,
काती सुद पूनम शुभ ठाय॥

६— भाग्य-परीक्षा सेठजी कराय,
दालिद्र ने नाख दियो घर माय।
जिहा लिछमी भण्डारज होय,
तिण मे सेठजी मेलियो जाय॥

७— सेठजी रुपिया लीना तिण ठाय,
चल्यो आपणे घर ने जाय।
दिन बीतो ने रातज जाय,
सेठ सूतो मेला रे माय॥

ढाल—२

१— लिछमी आई तिण समे
बोले इमडी वाय हो।
सेठ सूतो के जागे छे,
सांभलजो चित्त लाय हो॥

२— अकल गई सेठ ताहरी,
दालिद्र दियो मो पे राली हो।
म्हारे दलद्र रे बणे नहीं,
हूँ तो थारा घर थी चाली हो॥

३— वलतो सेठ इसी कहे,
साभलजो चित्त लाय हो।
दलद्र ने तो हूँ कोई छोड़ नहिं,
तू तो नचिंत सिधाय हो॥

४— इतरा दिन मैं ताहरी,
सेवा घणी कराई हो।
अबे दलद्र सेवसा,
पाने पडियो आई हो॥

५— लक्ष्मी उठा सू नीकली,
आई शहरज माय हो।
इसो पुण्यवन्त दीसे नहीं,
वसू जिण घर जाय हो॥

६— सारा नगर में फिर करी,
लक्ष्मी पाछी आई हो॥

पुन्य बिना रे प्राणिया
नहिं पैसे घर मांई हो ॥

७— पाछी लक्ष्मी आई सेठ कने
बोले इणवी वाय हो ।
थारे घर में हूं आवसू
दीजो वर नहिं काय हो ॥

८— बकता सेठजी इम कहे,
सांभलजो चित्त लाय हो ।
मात पीहर्या कने आवे नहीं
तो थाहु घर मांय हो ॥

९— लक्ष्मी करार कर्यो तिहां
पाछी आइ घर मांय हो ।
गजब आयो सेठ कन
हूं तो परोहित जाय हो ॥

१०— बकतो सेठजी इम कहे
सांभल जो चित्त लाय हो ।
थारा पीहर्या कने आवे नहीं
तो निश्चित सिधाव हो ॥

११— रविर तो बकतो रह्या
लक्ष्मी रही घर मांई हो ।
थारा पुन्य पोते घणा
माहाणी घर में आई हो ॥

१२— पुन्यवन्त माणसी जगत में
आगे मालू मे राख हो ।
रिख जयमलजी इम कहे
मरा पुन्य साहाय हो ॥

(१)

❀ प्रतिमा-चर्चा ❀

१— भगवन्त पर उपकार ने हेते,
कोरो सारज काप्यो रे ।
सूत्र ना अर्थ कर ने अवला,
मूढ, हिंसा धर्म थाप्यो रे ॥

२— कुगुरू तणे उपदेशे भूला,
ए भगति न जाणे भोला रे ।
भगवन्ता नो नाम लेई ने,
पाप ना करे दढोला रे ॥

३— धर्म ठिकाणे जीव हणे ने,
जिके न माने पापो रे ।
सो तो वचन अनारज केरो,
कह्यो जिनेश्वर आपो रे ॥

४— भगवन्त नी चैत्य प्रतिमा हुवे तो,
अन्य तीर्थी लेई जायो रे ।
ते प्रतिमा आणन्द न वादे,
इसी परूपे वायो रे ॥

५— साधु ने किण पकड्यो देखे तो,
श्रावक वादे धरि रागो रे ।
अन्य तीर्थी ग्रही प्रतिमा न वादे,
किसो व्रत जदा भागो रे ॥

६— चैत्य शब्द जिणना साधु हुआ,
चाल्या छे आपणे छदे रे ।
'जमालि' परमुख सु मिलिया,
ज्याने 'आणन्द' न वदे रे ॥

७— प्रतिमा हुवे तो किम बतलावे,
किम वहिरावे अन पाणी रे ।
चैत्य शब्द ते साधु कही,
इम ही 'अबड' जाणी रे ॥

१६— चेइअ अट्ठे निज्जर अट्ठे,
तिहा पण प्रतिमा ठायो रे।
चेइअ अर्थ जे प्रतिमा हुवे तो,
श्रमणादिक किम खायो रे॥

१७— ज्ञानवन्त माधा नी सेवा,
किया निरजरा थायो जी।
तेहनो अर्थ पाधरो बोलो,
भोला छे कु-हेतु लगायो रे॥

१८— चारण-समण प्रतिमा वादी,
इसा भाव केई वंदे रे।
तो मान-क्षेत्रे नहीं चाल प्रतिमा,
तिहा कहोनी स्यू वंदे रे॥

१९— ज्ञानी देवे भाव परूप्या,
पर्वत कूट द्वीप ठामो रे।
जिहा दीठा तिहां जाय किया,
ज्ञान तणा गुण ग्रामो रे॥

२०— व्यारूइ छेद आचारग माहे,
ठाम ठाम प्रायश्चित चाल्यो रे।
प्रतिमा विण वाद्या दडज आवे,
इमडो किहाई न घाल्यो रे॥

२१— आलोयणा सुणावा कोई जो न हुवे तो,
ज्ञानी साख होय सूधो रे।
के कहे प्रतिमा पास आलोवे,
ते तो दीसे विरुद्धो रे॥

२२— तिहोत्तर फला नो लाभज ज्ञानी,
न्यारो न्यारो बतायो रे।
देहरो प्रतिमा वाद्या लाभ,
इसड़ो काहि न जतायो रे॥

२३— श्रावक भगवन्त वदन आवे,
जद सचित्तज अलगा काढे रे।
एकेक अरिहत नाम लेई ने,
सिर ही ऊपर चाढे रे॥

३२— सूत्र न्याय परूपणा करि ने,
कर्म उडावे जाडा रे।
जिहा पुरुपा सू हीणाचारी,
उलटा खड़े जे आड़ा रे॥

३३— रुधिर तणो जे खरड्यो वस्त्र,
रुधिर उज्वल न थायो रे।
इम ए जीव न हुवे ऊजलो,
हिंसा धर्म करायो रे॥

३४— करणी करतूतज माहे,
पोला नहीं पाप नी सको रे।
धर्मी पुरुष ने निजरे दीठा,
उलटी वलेज आखो रे॥

३५— अति दुष्ट हुवे हिंसा - धर्मी,
लाग रह्यो मत झूठे रे।
कोई खेंचा ताण साधा पे आवे,
तो अवगुण लेने उठे रे॥

३६— 'कमलप्रभ' नामे आचारज,
कह्यो परपदा मायो रे।
जिण तो पाप ना आला परूप्या,
तीर्थंकर गोत उडायो रे॥

३७— लिंगडा लिंगडया बले वुलायो,
डरते वचन ज फेर्यो रे।
उत्सर्ग ने अपवाद परूप्यो,
तीर्थंकर गोत विखेर्यो रे॥

३८— देहरा प्रतिमा पूज्यां सिद्ध हुआ,
एह सरधा छे जाकी रे।
ते देव तणा पूजा रा भोगज,
इहा महा-निसीथ छे साखी रे॥

३९— केतला एक कहे भगवत वादण,
आडम्बरे क्यू आयो रे।
सो तो छे आपणी ए इच्छा,
भगवत कदे वुलायो रे॥

(१)

❀ दोहावली ❀

जयमल्ल-बावनी

नमस्कार

१- नमो सिद्ध निरंजनं, नमूं श्री सत-गुरु-पाय ।
धन वाणी जिन-राज री, सुणियां पातिक जाय ॥

सब प्रकार के दोष-कालुष्य से रहित सिद्ध भगवान् को नमस्कार। श्री सद्गुरु के चरणों में नमस्कार। जिनेन्द्र देव की वाणी धन्य है जिसके सुनने से पाप टल जाते हैं।

महा-व्रत-विचार

२- पहलो तीजो ने चोथो, देश द्रव्य महाव्रत ।
सर्व-द्रव्य द्विक पांचमो, चाल्या 'कर्म-ग्रन्थ' ॥

कर्म-शास्त्र में यह प्रकरण चला है कि पहला, तीसरा और चौथा महाव्रत एक देश द्रव्याश्रयी हैं और दूसरा तथा पाचवा महाव्रत सर्व द्रव्याश्रित है।

तात्पर्य यह है कि प्रथम अहिंसा महाव्रत सिर्फ जीव की अपेक्षा रखता है, क्योकि उसमें जीव हिंसा का त्याग किया जाता है। तीसरा महाव्रत अस्तेय इच्छापूर्वक ग्रहण करने योग्य द्रव्यों से ही सबध रखता है और चौथे महाव्रत ब्रह्मचर्य का सबध मनुष्य, देव और तिर्यञ्च से ही होता है। परन्तु दूसरा सत्य महाव्रत सर्व द्रव्याश्रयी है और पाचवा अपरिग्रह महाव्रत भी समस्त द्रव्यों से सम्बन्ध रखता है, क्योंकि उसमें सब की ममता का त्याग किया जाता है।

गुण-स्थान-विचार

३- तेरे बारे तीसरे, नहीं करे गुण-ठाणे काल ।
चतुर पंच छठ सात में, गोत्र बांधे दीन दयाल ॥

तेरहवें (सयोगी केवली) बारहवें (क्षीण-कषाय) और तीसरे मिश्र गुण-स्थान में जीव की मृत्यु नहीं होती। चौथे, पाचवें, छठे और सातवें गुण-स्थान में ही तीर्थङ्कर नाम कर्म का बध होता है।

४- पहलो बीजो ने चोथो, चाले गुण ठाणा लार ।
पहलो चोथो पंच छठ तेरमो, सदा शाश्वता धार ॥

पहला दूसरा और चौथा गुण-स्थान परभव जीव के साथ जाता है है अर्थात् मिथ्या-दृष्टि सास्वादन सम्यग्दृष्टि और अविरत सम्यग्दृष्टि जीव मर कर पुनः कभी अवस्था में उत्पन्न हो सकता है।

प्रथम चौथा पाँचवां छठा और तेरहवां गुण-स्थान शाश्वत है। अर्थात् ऐसा कभी समय नहीं होता जब इन गुण-स्थानों में कोई जीव न हो।

५- तिक मिश्र सत अठ नव दश, एकादश बारह धार ।
नव गुण ठाणा अशाश्वता, शास्त्र में अधिकार ॥

दूसरा तीसरा सातवां आठवां नवां दशवां ग्यारहवां बारहवां और चौदहवां गुण-स्थान अशाश्वत है अर्थात् कभी ऐसा भी काल आ जाता है कि इन गुण-स्थानों में से किसी एक में कोई भी जीव न हो ऐसा शास्त्र में अधिकार है।

६- नियट्ठि-बादर सब जीव ना, सरिखा नहीं परिणाम ।
अनियट्ठि-बादर सब सरिखा, ए गुण ठाणा नाम ॥

नियट्टि-बादर नामक आठवें गुणस्थान के बहुत-से जीवों के परिणाम सदृश नहीं होते विसदृश होते हैं। परन्तु नौवें गुणस्थान-वर्ती जीवों के परिणाम समान होते हैं।

श्रद्धा प्रतीति रुचि

७- सद्दहणा नव पद द्रव्य ना आई प्रतीति पुण्य पाप ।
रुच्या व्रत साधु श्रावक तणा, करावो जिन आप ॥

हे जिन देव! मेरी छह द्रव्यों व नव—पदार्थ स्वरूप पर श्रद्धा की है पुण्य और पाप तत्त्व पर मुझे प्रतीति हो गई है और साधु तथा श्रावक के व्रतों पर रुचि उत्पन्न हुई है। अब आप मुझे अपना-सा कर दीजिए।

पुद्गल-विषयक विचारणा

८- जिसरा हाथ पाव नहीं, जिसरा चोर-पहरव ।
जीव-सहित ते योगमा, भी जिन-वाणी तत्व ॥

विस्रसा पुद्गल धूप, छाया आदि हाथ नहीं आते, मिश्र पुद्गल जीव के द्वारा त्यागे हुए होते हैं। जो पुद्गल जीव सहित हैं प्रयोगसा, कहलाते हैं। यह जिनेन्द्र की वाणी तथ्य सत्य है।

केवली - समुद्घात

९– [१]जोग उदारिक पहले आठ में, तूजे छठे सात में मिश्र जाण।
बाकी तीन कार्मण कह्या, समा आठ परमाण ॥

केवली समुद्घात आठ समयों में पूर्ण होता है। उसके प्रथम और आठवें समय में औदारिक काय-योग होता है, दूसरे छठे और सातवे समय में औदारिक मिश्र काय योग और शेष अर्थात् तीसरे, चौथे और पाचवें समय मे कार्मण योग होता है।

केवली-समुद्घात और आहारिक लब्धि

१०– [२]प्रत्येक सौ एकण समें, फोरवे समुद्घात।
प्रत्येक सहस आहारिक लब्ध, एक समा री बात ॥

एक समय में पृथक्त्व सौ जीव समुद्घात कर सकते हैं और पृथक्त्व सहस्र जीव आहारिक लब्धि का प्रयोग कर सकते हैं।

लोक-त्रय का मध्य भाग

११– [३]मझ ऊंचा ते लोक नो, स्वर्ग पांच में जाण।
तीजा प्रतर ने विसे, चाल्यो अरिष्ट-विमाण ॥

पाचवें ब्रह्मलोक नामक देवलोक के तीसरे प्रतर में अरिष्ट विमान में ऊर्ध्वलोक ना मध्य भाग है।

१२– मेरु रुचक प्रदेश में, तिरछा रो मझ थाय।
चोथी नरक नीचे, नीचा तणो, जोजन असंख्याकाश लग जाय।

---

१ प्रज्ञापना पद ३६ सू० २७। २ प्रत्येक-पृथक्त्व—दो से लेकर नौ तक की सख्या। ३ भगवती श० १३ उ० ४ सू० ४७९

मेरु पर्वत के मध्य-वर्ती रुचक-प्रदेशों में मध्यलोक का मध्य भाग है और चौथे नरक के नीचे असंख्य आकाश तक जाकर अधोलोक का मध्य भाग है।

सम्पूर्ण लोक का मध्यभाग

(१४ 'रज्जु' का मध्य)

१३—पहली नरक से लांघवे, योजन असंख्याकाश ।
चवदे राज तणो मध्य, सूत्र भगवती साख ॥

प्रथम नरक को लांघकर असंख्यात योजन आकाश को पार करने पर चौदह राजू लोक का मध्यभाग आता है। ऐसा भगवती सूत्र में प्रतिपादन किया गया है।

इन्द्रिय-विचार

१४—इन्द्रिये रूपि पोग्गली, जीव में रूप पोग्गल थाय ।
शतक आठ उद्देसे दशमें आख्यो भगवती मांय ॥

भगवती सूत्र के आठवें शतक के दसवें उद्देशक में यह विषय चला आ रहा है कि—जीव श्रोत्र आदि इन्द्रियों वाला होने से पुग्गली (पुद्गलवान्) है और जीव की अपेक्षा पुद्गल है।*

भगवान् के ज्ञान की विशालता

१५—एक अक्षर केवली तणो, जीके पजवा अनंत ।
एक पज्जव अनंत गमा, भाख्या श्री भगवंत ॥

केवली भगवान् के एक एक अक्षर के अनन्त पर्याय होते हैं और एक-एक पर्याय के अनन्त-अनन्त गम होते हैं ऐसा श्री भगवान् ने फरमाया है।

१६—एक गमो तिण मांयलो, जीके असंख्या भाग ।
एक भाग अनंता खंड, अहो अहो ज्ञान अथाग ॥

---

*भग० शत० १२ उ० ४ पृ० ५७८

* देखो-सूत्र १६

उन अनन्त गमों में से एक गम के असख्यात भाग होते हैं और उन भागों में से एक एक भाग के अनन्त-अनन्त खड होते हैं। अहा! केवली भगवान् का ज्ञान अथाह है!

१७—एक खंड तिण मांयलो, भाग संख्याता जाण ।
एक भाग तिण मांयलो, तेहनो सुनो प्रमाण ॥

उन अनन्त खडों में से एक खड लिया जाय और उसके भी सख्यात भाग कर दिये जाए तो उस ज्ञान का कितना परिमाण होगा सो सुनो-

१८—चार ज्ञान पूरब चवद, अंग उपांग सब जाण ।
मावे भागज एक में, धन धन भगवन्त रो ज्ञान ॥

चारों ज्ञान, चौदह पूर्व और सब अग उपाग उस एक ही भाग में समा जाएगे। केवली भगवान् का ज्ञान धन्य है धन्य है।

विशेष—केवली भगवान् के एक ही अक्षर में कितना विशाल ज्ञान निहित है, यह बात इन चार पद्यों में प्रदर्शित की गई है।

आठ अनन्त

१६—सिद्ध अलोक काल ज्ञान ते, जीव पुद्गल वणसई काय ।
निगोदिया जीव अनंता कह्या, ठाणे आठमें मांय ॥

स्थानांग सूत्र के आठवें स्थानक में आठ वस्तुए अनत कही गई हैं—(१) सिद्ध भगवान् (२) अलोकाकाश (३) काल (४) ज्ञान (५) जीव (६) पुद्गल (७) वनस्पतिकाय (८) निगोद के जीव।

अष्टधा लोक-स्थिति

२०—आकाश वायु दग पृथ्वी तस, थावर जीव होय।
अजीवा जीव-पइट्ठिया, जीवा कम्म-पइट्ठिया सोय ॥

२१—अजीवा जीव-संगहिया, जीवा कम्म--संगहिया तास ।
आठ बोल थित लोक नी, ठाणायंग इम भास ॥

उपर्युक्त शब्द, रूप आदि पाच स्थानो में आसक्ति के फलस्वरूप जीव को मरण और घात का शिकार होना पडता है। यथा-शब्द सम्बन्धी आसक्ति से मृग को, रूप की आसक्ति से पतग को, गधासक्ति से भ्रमर को, रसासक्ति से मत्स्य को और स्पर्श सम्बन्धी आसक्ति से हाथी को।

प्राण-भूत आदि विचार

२६–प्राण-विकलेन्द्रिय भूत-वनस्पति, जीव पंचेन्द्रिय जात।
चार स्थावर सत्वज कह्या, भगवन्ते साद्यात॥

विकलेन्द्रिय (द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय) जीव 'प्राण' कहलाते हैं। वनस्पतिकाय को 'भूत' कहते हैं, पचेन्द्रिय प्राणी जीव' कहलाते हैं और पृथ्वी-काय आदि चार स्थावर 'सत्व' कहलाते हैं।

शब्दादि ५ विषयों पर विचार

२७–पांच बोल जाण्यां विना, अह न अशुभ पचखाय।
अश्रेय आगल जाणिये, रुले चऊ-गति मांय॥
२८–शब्दादिक जाण्यां थकां, सुलटा चारों बोल।
करे परत संसार ने, पामे सुगति अमोल॥

पाच बोलों को न जानने से और अशुभ का प्रत्याख्यान न करने से भविष्य में अश्रेयस् होता है और जीव चार गतियों में भटकता है।

शब्दादिक पाचों को ज्ञ-परिज्ञा से जान लेने और प्रत्याख्यान-परिज्ञा से त्याग देने पर चारों बोल सीधे हो जाते हैं—चारों गतियों में भटकना बद हो जाता है। ऐसा जीव ससार को परीत करके अमूल्य मोक्ष-पद प्राप्त कर लेता है।

आस्रव और संवर

२९–आश्रव पांचे सेवतो, जीव पामे दुरगत्त।
पाचे संवर सेवतो, पामीजे सद्गत्त॥

हिंसा आदि पाच अथवा मिथ्यात्व, अविरति आदि पाच आस्रवो को सेवन करने वाला जीव दुर्गति प्राप्त करता है। परन्तु जो इन पांच आस्रवों के

निरोध कर पांच संवरों (अहिंसा आदि या सम्यक्त्व आदि) का सेवन करता है वह सद्गति पाता है।

लोक-संस्थान

१ —कर दोनों कटि ऊपरे, पुरुष फिरे चोफेर।
यो आकार तिहुँ लोक नो कल्पो ग्रन्थ निहेर॥

कमर पर दोनों हाथ रख कर चारों ओर फिरने वाले अर्थात् नाचने वाले पुरुष का जो आकार होता है, वैसा तीन लोक का आकार है। ग्रन्थों का अवलोकन करके यह बात जोड़ी गई है।

अति-क्रमादि-विचार

२१—अति क्रम इच्छा जाणिये, व्यतिक्रम वस्तु-प्रसंग।
अतिचार देश भंग है, अनाचार सब भंग॥

व्रत को भंग करने की इच्छा अतिक्रम है व्रतभंग की साधनभूत वस्तुओं को ग्रहण करना व्यतिक्रम है व्रत को आंशिक रूप से भंग करना अतिचार है और पूरी तरह भंग कर देना अनाचार है।

पांच स्थावरों के ५ नाम

१२—इंद्र ब्रह्म शिल्प सम्मित प्रजापति कहिवाय।
स्वामी पांच स्थावर तणा, कह्या ठाणांग मांय॥

ठाणांग सूत्र में पांच स्थावरों के नाम इस प्रकार कहे गये हैं—(१) इन्द्र-स्थावर काय (पृथ्वीकाय) (२) ब्रह्म-स्थावरकाय (अपकाय) (३) शिल्प स्थावरकाय (तेजस्काय), (४) सम्मति स्थावर काय (वायुकाय), (५) प्रजापति स्थावरकाय (वनस्पतिकाय)।

सद्य उत्पन्न अवधि दर्शन (ज्ञान) के सद्य विनाश के ५ कारण

२३—उपजवो दर्शन अवध, पांच यानके थाय।
उपजवान पाछे समे, खसना खोम पमाय॥

पाच कारणों मे अवधि-दर्श (और ज्ञान) उत्पन्न होते ही, प्रथम समय में जीव स्खलना (चचलता) को प्राप्त होता है। (उनका कथन आगे-किया गया है)

३५–देखे अलप पृथ्वी, तिहां भरी घणे जीव देख ।
आ किम छे सासे पड़्यो, खलना पहली रेक ॥
३६–कुंथुवा सर्पज मोटका, इन्द्र तणो किलोल ।
ठाम ठाम धन देखने, ए थया पांचूं बोल ॥

(१) अवधिज्ञानी अपने क्षयोपशम के अनुसार अनेक जीवों से सभृत थोडी–परिमिति पृथ्वी देखकर सोचता है–अरे यह क्या ? इस छोटी सी पृथ्वी में इतने जीव ? यह उसकी पहली स्खलना है। स्पष्टीकरण पहले सुन रक्खा था कि पृथ्वी बहुत विशाल है, पर अवधिज्ञान में थोडी दिखाई देती है अत क्षोभ होता है। (२) कु थु वा जैसे सूक्ष्म जीवों की राशि देख कर स्खलना होती है।

(३) बाहर के द्वीपों में बडे-बडे (एक हजार योजन तक के लम्बे) सर्प देखकर चलायमान होता है।

(४) इन्द्र (आदि देवों) की क्रीड़ा देखकर चकित हो जाता है।

(५) जगह-जगह धन से परिपूर्ण खजाने देखकर विस्मित होता है।

३६–मोह कर्म खीण नवि गयो, तिणसूं खलना पाम ।
केवल ज्ञान दर्शन, लह्या सुलटा पांचू नाम ॥

इस स्खलना का कारण मोहनीय कर्म का क्षय न होना है। जब मोह क्षीण होने पर केवल ज्ञान-दर्शन उत्पन्न होते हैं तो पूर्वोक्त पाचों कारणों से स्खलना नहीं होती।

प्रथम, चरम व २२ तीर्थङ्करों का समय

३७–वारे प्रथम चरम ने, सीखणो दुर्लभ होय ।
पांच बोल श्री जिन कह्या, सांभलजो सहू कोय ॥
३८–सूत्र कहवाये दुखे, दुखे समझे भेद-विज्ञान ।
जीवादिक देखाडवा, दुखे कह्या भगवान ॥
३९–परीषहादिके सहिवा, दुखे दुखे पाले आचार ।
सुलटो बावीसों तणे, पांचे ई इम धार ॥

प्रथम और अन्तिम तीर्थंकर के समय पांच बातें दुर्लभ कही गई हैं। उन्हें सब सुनो—

(१) श्रुत का कथन करने में कठिनाई और समझने में कठिनाई (२) भेद विज्ञान-आत्मा परमात्मा का ज्ञान होने में कठिनाई (३) जीव आदि को पहचान में कठिनाई (४) परीषह उपसर्ग सहन करने में कठिनाई और (५) आचार पालन में कठिनाई। मध्यम बीच के बाईस तीर्थंकरों के काल में यह पांचों बातें सुलभ रही हैं।

दश यति धर्म

५०—खंति मुत्ति अज्जव मद्दव, लाघव पांचमो जाण।
नित बतलाया मुनिराज ने भगवंत श्री वर्धमान॥

५१—सत्य संयम तपस्या तथा संवेग ने ब्रह्मचर्य।
आज्ञा छे जिन राज री सेवत सारे कज्ज॥

क्षान्ति मुक्ति (निर्लोभता), आर्जव (सरलता) मार्दव (नम्रता) और लाघव तथा सत्य संयम तपस्या संवेग और ब्रह्मचर्य यह पांच-पांच (दस) धर्म श्री वर्धमान भगवान ने मुनिराज के लिए कहे हैं। इनका सेवन करने से सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

पांच अभिग्रह

५२—पांच थानके वीरजी, आज्ञा दीवी एह।
अभिग्रह धारी साधुजी करे गवेषणा तेह॥

अभिग्रह धारी साधु को पांच स्थानों में आहार की गवेषणा करने की आज्ञा दी गई है।

५३—आप निमित्ते काढ्यो बाहिर, अथवा न काढ्यो बहार।
तीजे ग्रास ऊपर, पंत लूख सुख आहार॥

गृहस्थ द्वारा अपने लिए जो आहार भोजन के पात्र में से बाहर निकाला हो वही लेना, जो आहार बाहर न निकाला हो वही लेना तथा अन्त प्रान्त और रूक्ष आहार ही लेना (यह पांच अभिग्रह हैं।)

भित्ता-विचार

४४–अगन्यात कुल मुनिवर तजे, करे गोचरी छांडी काल ।
कर खरडे अणखरड़िये, धन ऋषि दीन दयाल ॥

मुनिराज अज्ञात कुल में गोचरी नहीं लेते, अकाल में गोचरी के लिए नहीं जाते, कोई खरड़े हुए हाथ से और कोई अनखरड़े हाथ से गोचरी लेते हैं। दीन–दयाल मुनि धन्य हैं ।

४५–कांइक रीते आहार आणियो, दोष बेयालिस रेत ।
शंका निजरे देखतो पांचमो पठे देत ॥

किसी विशेष परिश्रम से बयालीस दोषों से रहित आहार लाया गया हो और उसमें प्रत्यक्ष शका दिखाई दे तो साधु उसे परठ देता है ।

भित्ता–ग्रहण में भी तपश्चरण

४६ आयंबिल नीवी, पुरिमड्ढ, करे द्रव्य अनुमान ।
भिन्न – पिंडवाहए पांचमो, ए आज्ञा भगवान ॥

आयबिल करे, नीवी करे अर्थात् घृत आदि विगयों से रहित भोजन करे, पुरिमड्ढ करे अर्थात् पहिले के दो पहर तक आहार का त्याग करे। द्रव्य आदि का परिमाण करके परिमित आहार ले, और भिन्न-पिण्ड-पालिक हो अर्थात पूरी वस्तु न लेकर टुकड़े की हुई वस्तु ही ले, भगवान् ने इन पाच स्थानकों की आज्ञा दी है।

४७–अरस विरस अंत पंत लुह, ए चाल्या पंच आहार ।
ए जीमी जीवे मुनि, धन मोटा अणगार ॥

अरस (विना धार का) विरस (पुराने धान्य आदि का) अत (बची खुची चीजों का) प्रान्त (तुच्छ) और रुक्ष, यह पाच प्रकार के आहार कहे गए हैं, जिन्हें जीम कर साधु जीवन–यापन करते हैं। ऐसे महान् अनगार धन्य हैं ।

आसन पर विचार

४८–एक आसण अरु ऊकडू, पडिमा काउसग्ग रात ।
पद्मासन वीरासणे, रहे छकाया–नाथ ॥

पद्–काय जीवों के नाथ मुनिवरों के लिए पाँच स्थानक बतलाये हैं–एक आसन से कायोत्सर्ग करे उत्कटुक आसन से बैठे एक रात्रि की प्रतिमा अंगीकार करके कायोत्सर्ग में रहे, पद्मासन से बैठे और वीरासन से स्थित रहे।

४९–दांडा नी परे साधुजी, रहे पग पसार।
सुवे लाकडा नी परे, मस्तक भू लगाय॥

५०–तड़के ले आतापना शीत खमे शी–रात।
रीते खाज खिरा नहीं, ऐसो गुण कह्या न जात॥

कोई मुनिराज दंडे की तरह पैर फैला कर स्थित रहते हैं, वे 'दण्डायतिक' कहलाते हैं। कोई लगण्ड–शायी होते हैं जो कुबड़े–से होकर मस्तक और कोहनी को जमीन से लगा कर तथा पीठ को ऊपर रखते हुए सोते हैं। कोई धूप में आतापना लेते हैं वे आतापक कहलाते हैं। कोई शीतकाल में वस्त्र न रख कर शीत सहन करते हैं उन्हें अप्रावृतक कहते हैं। कोई शरीर में खुजली चलने पर भी खुजलाते नहीं हैं उन्हें अकण्डूयक कहते हैं।*

५१–पांच बोले मुनि–राजजी महा–निर्जरा पाम।
अंत करे संसार नो जो राखे शुभ परिणाम॥

उपर्युक्त पांच बातों का सेवन करके मुनिराज महान् निर्जरा प्राप्त करते हैं और यदि शुभ शुद्ध परिणाम रक्खें तो संसार का अंत करते हैं।

सात पदवियां

५२–आचारज उवज्झाय थविर, तपस्वी बहु–श्रुति जाण।
गणी गणावच्छेदक वली सात पदवी ये मान॥

आचार्य उपाध्याय स्थविर तपस्वी बहु–श्रुती गणी और गणावच्छेदक, यह मुनियों की सात पदवियां हैं।

---

* विशेष के लिए देखो स्थानांग सूत्र ठा० ५ उ० १ सूत्र ३९६।
ग्रंथकार ने यहां सामान्य कथन किया है। स्थानांग सूत्र में महानिर्जरा के पांच कारण आचार्य उपाध्याय स्थविर तपस्वी और ग्लान (बीमार) मुनि की सेवा करना बतलाया है।